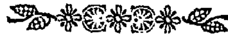
प्रस्तावना ।

श्रीमहर्षि कृष्णद्वैपायन वेदव्यासजीने नारदोपदेशसे सर्वपुराणोंमेंउत्त ज्ञान, भक्ति वैराग्यके विविध प्रसंगों युक्त और धर्म, अर्थ, काम, मोक्षकी दाता श्रीमद्भागवतनामक उत्तम पुराण रचतेभये और उसको १२ भागोंमें विभक्त किया जो द्वादश स्कंध कहाये इन द्वादश स्कंधोंमें साधन सहित मुक्तिका प्रतिपादन होनेते यह "एकादशस्कंध" अति श्रेष्ठ है इसमें अविद्या करके आरोपित कर्ता भाव आदिकको छोडके ब्रह्म स्वरूपमें स्थितिरूप मुक्ति है और इसमें ३१ अध्याय हैं इकतीसों अध्याय ज्ञान भक्ति और सदुपदेशोंसे भरे हैं ग्रंथ संस्कृत वाणी अति क्लिष्ट होनेते सर्व जननके सुलभार्थ श्री संतदासजीके शिष्य ज्ञान भक्ति राग्य संपन्न श्री साधु चतुरदासजी अत्यंत सरल श्रेष्ठ और अनुभव युक्त दोहा चौपाई छंद प्रबंधमें यह एकादश स्कंध रचा है यह ग्रंथ बहुत प्राचीन है इसके पठन श्रवण मात्रसे बडे २ पातक पुंज क्षण-मात्रसे लय होते हैं-भक्तोंकी छंदबद्धमें अधिक रुचि देख श्रीमद्भागवत-द्वादशों स्कन्ध अर्थात्-आनन्दाम्बुनिधि छन्दबद्ध कवितामें श्री महा राज श्री १०८ श्री रघुराज सिंहजी रीवांधिपति कृत हमारे यंत्रालयमें अत्युत्तम सुंदर टैप और चिकने कागजपर छपी है आप लोगोंके लाभदायक है।

पुस्तकें मिलनेका ठिकाना-
गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेंकटेश्वर" छापखाना,
कल्याण-मुंबई.

श्रीः ।

श्रीमद्भागवत एकादशस्कन्धभाषाकी अनुक्रमणिका।



अध्याय.	आशय.	पृष्ठांक.
१	विप्रशापके व्याजते मुसलाख्यान	.... ११
२	योगेश्वर जनक प्रति नारद और वसुदेव सम्वाद	.... १५
३	अन्तरिक्ष प्रबुद्धमुनि पिप्पलायन ऋषि सम्वाद	.... १३
४	नारायणावतार, लीला द्रुमिल जनक सम्वाद	.... २४
५	शुभाशुभ कर्मभजन विधि, ज्ञानसाधन करभाजन और चमस मुनि सम्वाद	.... २९
६	द्वारका वर्णन, ब्रह्मादि स्तुति, उद्धव प्रश्न	.... ३७
७	उद्धव प्रति श्रीकृष्णका ज्ञान कथन	.... ४४
८	भगवदुद्धव सम्वाद, पिंगलागीत	.... ६२
९	चतुर्विंशति गुरूपाख्यान, अवधूत इतिहास समाप्त	.... ६६
१०	आत्मतत्त्व और शुद्ध ज्ञानका सारवर्णन	.... ६७
११	बंध, मोक्ष, हरिभक्त लक्षण	.... ७३
१२	संगातिकी माहिमाते कर्मफलनको त्याग	.... ८३
१३	हंसरूपाख्यान	.... ८९
१४	भक्तिश्रेय कल्याण और साधन सहित प्रमाण	.... १०१
१५	सिद्धिधारणाधार	.... ११२
१६	विभक्ति कथन	.... ११८
१७	वर्णाश्रमकी रीति	.... १२३
१८	वर्णाश्रम धर्म निरूपण	.... १३२
१९	ज्ञान विज्ञान और भक्तिके लक्षण	.... १३९
२०	भक्ति क्रियात्मक ज्ञान	.... १४८
२१	द्रव्य, देश, गुण, दोष, वेदस्य ब्रह्मपरतत्त्व निरूपण	.... १५६
२२	तत्त्वनिर्णय प्रकृति पुरुष विवेक	.... १६४

अनुक्रमणिका।

अध्याय.	आशय.	पृष्ठाङ्क.
२३	भिक्षुकगीता कथन	१७५
२४	सांख्यनिरूपण	१८७
२५	गुणवृत्ति निरूपण	१९१
२६	ऐलगीतोपाख्यान	१९७
२७	महापुरुष पूजा विधि वर्णन	२०३
२८	परमार्थ निर्णय	२१०
२९	उद्धवमुक्ति निरूपण	२२१
३०	बलदेव निर्याण	२३२
३१	श्रीकृष्ण वैकुण्ठ प्रयाण	२४०
	नानकविलास	२४७

इति अनुक्रमणिका समाप्ता।

श्रीः।

चतुर्दासजीकृत।

एकादशस्कन्ध-भाषा।



प्रथमोऽध्यायः।

दोहा-संतदासहरिगुरुकृपा, ज्ञानामिलतसविवेक॥
इन्दुवह्नि (२१) अध्यायये, सुघरएकतेएक॥
एकादशश्रीव्यासकृत, भाषा कियो बिचार॥
सरल जान नर सब पढें, उतरे भवके पार॥

सोरठा-चतुर्दासकहिमान, श्रीधरप्रथमअध्यायमें॥
मूसलकोआख्यान, विप्रशापकेव्याजते॥

चौपाई।

संतदास सद्गुरुके चरणा। तिनकोगहौंसुदृढकरिशरणा॥
जातें उपजे ज्ञान बिचारा। छूटै भर्म कर्म व्यवहारा॥
बहुरोंजगतजन्मनाहिंआऊं। तिनको निजानंदपदपाऊं॥
तिनकीआज्ञाहिरदैधरिहौं। लोकहितारथभाषाकरिहौं॥
श्रीभगवानविरंचिहिभाष्यो। सोविरंचिनारदसोंआष्यो॥
सोनारदव्यासहिसमुझायो।व्यासव्यासकरिशुकहिपढायो।
सोशुककह्योपरीक्षितआगे। छूट्यो द्वैत स्वप्नज्यों जागे॥
सोईसूतअजहुँविस्तारिहैं। सहसअठ्यासीऋषिमनुहारिहैं॥

श्रीभगवतआपुयह भाष्यो । तातै नामभागवतराष्यो ॥
आपमिलनकोपंथवतायो । यामारगवहुतानिहारिपायो ॥
दोहा–व्यासदेव जो भागवत, भाष्यो द्वादशस्कंध ॥
तिनमें एकादशकहौ, नैन लहै ज्यों अंध ॥
एकादश इकतीस अध्याय । तिनकोव्यौरोकहैसुनाय ॥
यदुकुलनाशप्रथममेंगायो । बहुतभाँतिवैराग्य उपायो ॥
हरिपुरिपंथकह्योपुनिचारी । जनकाहियोगेश्वरनिविचारी ॥
सोनारदवसुदेवहिंकह्यो । पायो ज्ञानपरमपद लह्यो ॥
छठै कृष्ण उद्धव प्रस्तावा । ते इसकरनिजज्ञान सुनावा ॥
द्वैयादवविनाशविस्तारा । एइकतीसज्ञाननिज सारा ॥
श्रीशुकदेवकरतआरंभ । श्रोता नृपति परीक्षित अंभ ॥
तबशुकजीयहिकियोविचारा । ज्ञानविनानाहींउद्धारा ॥
तातें ब्रह्मज्ञान समझाऊं । प्रथमाहिं दृढ वैराग्यउपाऊं ॥
पंखी उडै पंखद्वै जैसे । ज्ञान वैराग्य मिलै हरि ऐसे
राजा सुनोजगतसुखजैसे । जिनसों लागीभ्रमतनर ऐसे ॥
भएकोटिछप्पनकुलयादव । ज्यौंघनघमंडचहूंदिशभादैंव ॥
तिनको बहुतभाँति विस्तारा । गनती करत लहैको पारा ॥
भवन आपनोकौलाकियो । नवनिधि तहाँबसेरालियो ॥
बहुरिसुधर्मासभामँगाई । बैठे जहाँ न व्यापै काई ॥
तिनकी समताकोनवताऊं । तीनलोकमें कहूं न पाऊं ॥
तिनकीबातकहतअबऐसी । पलकमाहिंसुपनकी जैसी ॥
च्यारि घरीमैं सब संहारे । ज्यों बुदबुदा पवनके मारे ॥

रामकृष्ण तहां कौतिकहार । आपुहिं आप सकलसंहार ॥
विप्रशापकोकीन्होंव्याजा । ये सब कृष्णदेवके काजा
लोकनिको वैराग्य जनायो । उद्धवादिद्वारासमुझायो ॥
प्रथमभीमअर्जुनदैअनी । दुष्ट नृपाति अरु सेनाहनी ॥
याविधिभूकोभारउतार्‍यो। नामरूप यशको विस्तार्‍यो ॥
जाको गहिपहुँचेभवपारा । आगे जे जन होहिं अपारा ॥
वहुत भाँतिकरिअद्भुतकर्मा । थाप्योजगतभागवतधर्मा ॥
या विधि सबके काज सँवारे । तब हरिजी वैकुंठपधारे ॥
दोहा—ऐसीसुनअद्भुतकथा, यदुकुलकोद्विजशाप ।
प्रश्न करी राजा तहाँ, लखवे तिनको पाप ॥

राजोवाच ।

तेतोविप्रभक्तिथे सारे । परमदानि अरु सेवक भारे ॥
विप्र कोपकीन्होंक्योंपूरण । जाते नाशभए सब तूरण ॥
कौनानिमित्तशापसों कौन । कहोकृपाकरिकरुणाभौन ॥
एकमना यादव तेसारे । आपुहि आपु कौनविधि मारे ॥

श्रीशुक उवाच ।

भूकोभारहरणके काजा । भू अवतार लयो व्रजराजा ॥
बहुविधिभूको भारउतार्‍यो। तबमनमेंगोपाल विचार्‍यो ॥
ज्यों लगिहै यादवकुलसारो । त्यौंलगि नाहिंभूभारउतार्‍यो
मम आधीन रहै ये सारे । ताते निजकर बनै न मारे ॥
दूजो कोई सकै न मारा । ताते कीजे यतन विचारा ॥
ज्यों बहुबांसबढैवनमाहीं । पवन निमित्तपाइघरषाहीं ॥

आपु आपुमें अग्निउपावैं । तासों लागि सकलजलजावैं ॥
त्योंहीइहाँपवनद्विजश्रापा । क्रोधअग्नितहँआपहिआपा ॥
करिविस्तारहोइसंहारा । यहि ठहरायो कृष्ण विचारा ॥
आए सकलऋषीश्वर भौन । निकट क्षेत्रकरवायो गौन ॥
कण्व अंगिरा विश्वामित्र । दुर्वासा भृगु अत्रि असित्त ॥
कश्यपवामदेव अरु नारद । और वहुतऋषिवहुतविशारद ॥
तहाँसवैमुनिसुखसोंवैठे । यदुकुमार तहँ छलकरि पैठे ॥
सांवहिवनिताभेषवनायो । वस्त्रादिकनि उदरअधिकायो ॥
अतिविनीतसे चरणनि लागे । पूछे प्रश्न खरे तिन आगे ॥
यहवनितापूछैद्विजराजा । सन्मुखहोतलागअतिलाजा ॥
निकटप्रसवआयोहैयाको । करो विचार आपमें ताको ॥
तुमत्रिकालदरशीसवजानौ । कहाजनहिसोहमैंहिवखानौ ॥
तव करि क्रोध वचनते भनै । कुलनाशन मूसल यह जनै ॥
याते तुम वहुमदसो माते । दुष्टबुद्धि होवो सव ह्याते ॥
वैनसुनत अतिभयमनआयो।तवहीताउदरहिछिटकायो॥
देख्योतहांलोहकोमूसल । तवतिनिजान्योनाहींकुसल ॥
ते सववहुतभाँति पछिताये । लियेमुसलराजापैआये ॥
उग्रसेनसों वोले वैन । अति मलीन नाहिं जोरे नैन ॥
सुन्योशापअरुमुसलहिदेख्यो।जीवनसवनिगयोकीरलेख्य ॥
मुसलरेत चूरण करवायो । कृष्ण न पूछे समुद्र वहायो ॥
रेततरह्योहुतोअति तुच्छ । ताकोनिगलगयो इकमच्छ ॥
ते चूरण लहरिनके मारे । आए तीर भए तृणभारे ॥

धीवर एक जालविस्तऱ्यो । और निसंगमच्छसोपऱ्यो ॥
ताके उदर लोहसो पायो । व्याध एकसोबाणबनायो ॥
हरिजीबातसकलसोजानी । बहुत भली हिरदै मैं मानी ॥
यद्यपिजोगअन्यथाकरनो । परिमनमाहिंसकलसंहरनो ॥
दोहा—यहवैराग्यनिरूपियो, ज्ञानकाजशुकदेव ।
ज्ञानकह्योंअबज्यौंलह्यो, नारदसों वसुदेव ।
इति श्रीभागवते महापुराणे अष्टादशसाहस्र्यां संहितायां एकादश स्कंधेभाषायां यदुकुलशापनिरूपणंनामप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

द्वितीयोऽध्यायः ।

दोहा—दूजे श्रीवसुदेवजी, पूंछ्यो नारद पास ।
तबयोगेश्वरजनकप्रति, कीन्हौंज्ञानप्रकाश ॥

श्रीशुक उवाच ।

द्वारावतीआपु जहँपालक । तहाँनंदक्षशापकोतालक ॥
नारद तहाँ निरंतर आवै । कृष्णदेवके दर्शन पावै ॥
जीवनमुक्तभजैनितजाको । बंध्योजीवतजैकोताको ॥
जाकोसकललोकमैंकाल । जहाँ तहाँ निशिदिनबेहाल ॥
मानव तन इंद्रिनसोंराजा । एतनी हरि सेवाकी साजा ॥
बंछै जाहि ब्रह्मसुर राजा । कृष्णदेव सेवाके काजा ॥
ऐसी देह भाग्यतें पावै । हरिकी सेवा को छिटकावै ॥
पलमें काटै कालके पास । हरिको पावै हरिको दास ॥

एकबारवसुदेवके भवन । नारद कियो कृपाकरिगमन ॥
तिन बहुविध पूजाविस्तरी ॥ ता पीछे बानी उच्चरी ॥

वसुदेव उवाच ।

हे प्रभुजी तुमरोआगमना । सबदेहिनकोसुखको भवना ।
उपमातुमहीकोनकीदीजे । जिनकेदरशसकलभयछीजै ॥
औरदेवदैवेसुखदुखकों । तुमसे साधु प्रगट पर सुखकों ॥
जिनके हृदय विराजै राम । तिनतेहोइकौन नहिं काम ॥
ऐसे फलदायक सब देवा । तेतौ लहै जिती करै सेवा ॥
ज्यों कर लै दरपनको कोई । आप करै आभासै सोई ॥
तुमसेसाधुसदासुखदाई । जिनकीमहिमाकहीन जाई ॥
यद्यपि दरशमें भयोकृतारथ । पूछौंदेवतथापिहितारथ ॥
जेभागवतधर्मसुनिजीव । जनम मरण तजि पावै पीव ॥
जिन आचरणनि तुमको देव । हरिप्रसन्न सो भाषो भेव ॥
पूरब जनम सेव मैं करी । माया मोह्यो समुझि न परी ॥
तब मैं हरिहि पुत्रकरि वर्यो । ताही हूतें नहीं उद्धर्यो ॥
तातें अब मैं तुमरी शरना।सोकछुकरौमिटै ज्यों मरना ॥
कहँ लौं कहौं जगतके दुख । जामें सुपनेहूं नाहिं सुख ॥
जहँ जहँ जायतहँ तहँ काल। हरि बिनजीवसदा बेहाल ॥
ऐसे वचन सुने जब नारद । तबते बोले परम विशारद ॥

श्रीनारद उवाच ।

धनवसुदेवधन्य तुम बानी । जा करि पूछे सारंगपानी ॥

कोईहोइसकलजग घातक। विष्णुधरमतें रहै न पातक ॥
श्रवणकीरतनआदर ध्यान। अनुमोदनऊंकरैसँधान ॥
सोपुनितिहोवें ततकाल। बहुरि परै नहिं यमके जाल ॥
तुमयहकियोबडोउपकार। मोहिसुमिरायोसिरजनहार ॥
जाको श्रवण कीरतन ऐसो। अंधकारके सूरज जैसो ॥
तुमसौं कहौं कथा इतिहास। जातें छूटै भवके पास ॥
ऋषभदेव सुत नवयोगेश। तिनते सुनियौंजनकनरेश ॥
सुनिकैब्रह्मपरायणभयो। जनम मरण संसार सबगयो ॥
अबउत्पत्तिकहतुहौंतिनकी। पूरणप्रीतिरामसोंजिनकी ॥
स्वायंभूमनु नृप सिरताजा। ताकौंतनयाप्रियव्रतराजा ॥
ताकैं आग्नीध्र सुत भयो। नाभि जनम ताहीतें लयो ॥
ताके ऋषभदेव अवतार। जिन प्रगटायो ब्रह्मविचार ॥
ताके पुत्र एकशत भए। सकल वेदके पारहिं गए ॥
तिनमैं बडो भरतसे नाम। जाके हिरदे बसै नितराम ॥
जाते भरतखंड यह कह्यो। तब अजनाभ नामतो लह्यो ॥
प्रथमहिबहुतभोगएभोग। समुझित्यागिपुनिलीन्होयोग॥
मन क्रम वचनकरीहरिभक्ती। तीजेजनमलहीतिनि मुक्ती ॥
तिनि मैं नवनव खंडनरेश। इक अरु असी करम उपदेश॥
नवते महाभाग अधिकारी। सब तजि सेवैं सदा मुरारी॥
तजै अनर्थ अर्थ विस्तारै। या विधि बहुत जीव निस्तारै
देह अतीत दिगंबरवेष। सदा हिरदैमैं एक अलेष ॥

कविहरिअंतरिक्षपरबुद्धि । पिप्पलायनआविहोत्र शुद्ध ॥
द्रुमिलचमसकरभाजननाम । इननवकियोब्रह्ममें धाम ॥
आपु आदि संसारपसारा । सबकों जाने सिरजनहारा ॥
द्वैतभावको कीनो खंड । या विधि विचरैं सब ब्रह्मंड ॥
सुर अरु सिद्ध साध्य गंधर्व । किन्नर यक्ष नाग नर सर्व ॥
सकललोकमैं इच्छाचारी । आडरहितसबमें अधिकारी ॥
निमिसेनामजनकके सत्रा । एक बारातिनिकीन्हो जत्रा ॥
रविसी शोभितजिनकी देहा । आवत देखेंनृपातिवि देहा ॥
राजा विप्र अग्नि उठि ध्याए । आगे ह्वै लेवेको आए ॥
क्रमक्रमआनिधरे सिंहासन । क्रमहीक्रमतेंबैठे आसन ॥
तबताहीक्रमपूजा कीनी । करिदंडवत्प्रदक्षिण दीनी ॥
स्रक् आभरण वस्त्र बहुरंगा । ते सबसोभे तिनके संगा ॥
ज्ञानविचार ब्रह्ममय ऐसे । ब्रह्मपुत्र सनकादिक जैसे ॥
तबकरजोरिभयो नृपठाढो । बोल्योवचनप्रेमअतिबाढो ॥

दोहा–तबनृपकेआनंदबढ्यो, कछुनहिंरहिसँभाल ॥
प्रेम मगन ह्वै बोलियो, बानी परम रसाल ॥

विदेह उवाच ।

तुम पारषद परमहरिजीके । मैं जाने सबहिनमें नीके ॥
जीवनिके उद्धरिवे कारज । सकललोकमेंविचरौआरज ॥
धनिमैं धनि मेरोअवतारा । जाते पायो दरशतुम्हारा ॥
नाना योनिजीवयहपावें । मानुष तन कबहूं एक आवें ॥

या विधि नरदेहौ बहु गहै। दुरलभ साधु संग नाहिं लहै ॥
जिनके संग मिटैं भवबंधा। नैन अनंत लहै नर अंधा ॥
प्राणनाथहरि हृदै विराजै। छूटै कर्म भरम भय भाजै ॥
आधौ छिन होवै सतसंगा। सोऊ करै जगत भय भंगा ॥
ताते मम संदेह मिटावौ। परम क्षेम सो मोहिं सुनावौ ॥
भगवत धर्मकहौ विस्तारी। जो मैं हौं सुनिबे अधिकारी ॥
जिनतैं मेटि जगत भय भारी। बहुरि आपको देतमुरारी ॥
एसुनि वचनसबनसुख पाए। तबहि मानदे बैनसुनाए ॥

कविरुवाच।

राजा प्रश्न कऱ्यो तुम ऐसी। बडभागी पूछत है जैसी ॥
निर्भय पद एकै है देवा। हरिके चरण कमलकी सेवा ॥
ताको छोडि करें नर जोई। दुखको मूल होत है सोई ॥
जहँ तहँ जाइ तहांदुखभारी। कालपास कहुँ टरै न टारी ॥
तातें कहों भागवतधर्मा। मिलै राम छूटै भव भर्मा ॥
श्रीमुख श्रीभगवानसुनायो। आपु मिलनको पंथ बतायो ॥
मूरखहू जे होवें कोई। इन पंथन हरि पावै सोई ॥
श्रम नहिं होइ विलंब न लागे। भर्म निसा सूतौ जिय जागे ॥
आंखि मूँदिउ ध्यावे कोई। या हरिपंथन कछु भय होई ॥
हरिकीभक्तिसबनितें न्यारी। कोटि विघनतें टरै न टारी ॥
हरिमिलनेको मारग एहा। हरिभजिमुक्ति होइ इहि देहा ॥
मन क्रम वचनबुद्धिअरुचित्त। होइ सुभावहु ते जो नित्त ॥

सो सब हरिहि समर्पणकरै । यों भगवत धर्म न विस्तरै ॥
जबयहजीवहरीहीबिसऱ्यो । तबहरिकीमायाआवऱ्यो ॥
तबआपनोस्वरूप भुलायो । आपु मानि तनमेंमनलायो ॥
द्वैतभाव तब तै ऊपन्यो । ताहीते यह मारि मारि जन्यौ ॥
तातें बुधसेवै हरिचरणा । जाते मिटै जन्म अरु मरणा ॥
सोधि लेइ उत्तम गुरुदेवा । हरिको जानि करै ता सेवा ॥
सोज्यौंज्यौंआचरन बतावें। त्योंहींत्यौं हरिसो हितलावें ॥
कपट न भजै तजै सब काम । छूटै जगत् मिलै तब राम ॥
द्वैत कछू है ऐ नहिं राजा । आभास्यो सो मनको काजा
जैसे मृषा मनोरथ सुपना । मनहीं कीरते दूनौ उपना ॥
हैकछुनाहिंपरिहैसोसोहै । ताके संग लागि सबु मोहै ॥
तौ संकल्प विकल्प न कीजै । मनदिृढराखिरामरसपीजै ॥
हरकेजनमकरमअरु नामा । सुने कहैं सुमरें सब जामा ॥
तजै लाज होवै निहसंगा । मगन रहे नित हरके रंगा ॥
ऐसे भजत प्रेम अधिकावै । सब तन रोम चित्त ह्वै आवै ॥
गद्गद शब्द अटपटै बैना । द्रवै चित्त जल बरषै नैना ॥
रोवै हँसै उच्च सुरगावै । कबहूँ मौन गहै रहि जावै ॥
लोकवेदकुललाजनजानै । ज्यों उनमत्त विवस यौचानै ॥
दशदिशि सरित सिंधुनगनागा।रविशशितारहंसअरुकागा
क्षितिजलपावनपवनअकासा । जो कछु देखै सो हरिदासा
हरिको रूप सकल को जानै। जहां तहां परनामहि ठानै ॥

कबहूं भूल न भासै आना । भयो अनन्य भजे भगवाना ॥
ज्योंज्यौंबढै कृष्ण अनुरागा।त्यौंत्यौंओर सकलकोत्यागा॥
त्यौंत्यौंअनुभवज्योंप्रतिग्रासा । तोषपोषअरुभूखविनासा॥
याविधि करते साधनभक्ति । हरिजीसों बाढै अनुरक्ति ॥
तब कछु ओर भूलि नाहिं भासैं । तबही हिरदे ब्रह्मप्रकासैं
ब्रह्म एक दशहूं दिशि देखे । द्वैतभाव कारि कबहुं न लेखे
ए [illegible] अंग भागवत माहीं । सो हरि मैं हैं जगमैं नाहीं ॥

दोहा–एसुनिकविजीकेबचन, कीन्होंप्रश्नविदेह ।
अबभाषौंभागवतके, लक्षन करुणागेह ॥

विदेह उवाच ।

प्रभुजीकहोभागवतलक्षन । जिनवशहोवे रासु विचक्षन ॥
कोन धर्म हिरदै दृढ राखे । क्योंआचरैकोन विधि भाखे
कौनस्वभावनिरंतर तिनके। द्वैतभाव नाहीं उर जिनके ॥
बोलें हरियोगेश्वर दूजे । नृपके वचन बहुत तिन पूजे ॥

हरिरुवाच ।

स्थावर जंगम सूक्षमथूला । एकैप्रकृति सकलको मूला॥
सो इकआतमके आधारा । सो आतमा असानिरहंकारा ॥
हरिजिते उपजै ए दोऊ । अंतलीन हरिही मैं होऊ ॥
ताते अबहूं हरिको जाने । द्वैतभाव कबहूं नहिं आने ॥
ज्यों सागर बुदबुदा तरंगा । यों सब जगत जगत पतिसंगा॥
याविधिजानिभयोजोथीरा सो हरिजन उत्तम है बीरा ॥

जाकोहरिसोंनिश्चल प्रेमा । अरुहरिजनसंगतिनितनेमा ॥
सबजीवनिपरिकरुणाआने । सब उद्धरै हृदय यो जाने ॥
जोकोइतापरदोषहिं ठानै । तहाँ तजेके ज्यों त्यों बानै ॥
निशिदिन रहै रामरँगराता । सो हरिजन मध्यम है ताता ॥
जो मूरतिमें हरिको जानै । मनक्रमवचनआननहिं आनै ॥
ताको पूजै हित चित लाई । कछू न माँगै सहज सुभाई ॥
पैहरिजननभजैहरि जानी । सद्गुरु विना नहीं पहिचानी ॥
सब आतमान हरिकर जानै । सो प्राकृत जनसाधुबखानै ॥
बहुरि कहूं उत्तमहरिभक्त । जाहि परखहू जे आसक्त ॥
दरशपरशतेंकारजसारैं । ते हरिजन भव दुःख निवारैं ॥
कृष्ण बसै जाके मन माहीं । और सत्य कछु जानै नाहीं ॥
जो कछु कहैसुनैअरुदेखैं । इंद्रियकृत माया सब लेखैं ॥
सो हरिजन उत्तम नरसेवा । तातें मिलै निरंजन भेवा ॥
जोजनब्रह्मविचारहि पायो । आपुहिबुझिसुखमाहिंसमायो ॥
जन्मऽरुमरणदेहकेजानै । क्षुधा तृषाको प्राणहि मानै ॥
तृष्णाबुद्धिरुभयसोमनको । यहलक्षणउत्तमहरिजनको ॥
कर्मवासनाअरुसबकामा । तिनको भूलि न जानै नामा ॥
वासुदेवमेंकीन्हों वास । सो कहिए उत्तम हरिदास ॥
जिनके जातिवरणकुलकर्मा । लोकन वेदनहींआसरमा ॥
भूलिदेहअभिमान नआवै । सो उत्तम हरिदास कहावै ॥
किसी वस्तुपर ममता नाहीं । अरुतनकोअभिमाननमाहीं

सबभूतानिपरसमताआनै।सो उत्तम हरिदास बखानै
आवैसिधित्रिभुवनसुख आवै। परिजे कबहूं मननडुलावै॥
लवनिमिषार्द्धतजहिंनाचरणा।गुणातीतनिर्भयपदशरणा॥
जाकोशिवविरंचिअरुदेवा। तन मन लाइ करैं नितसेवा॥
तेऊ जाके चरणनपावैं। ताको जन क्यों कारिछुटकावैं॥
हरिकेचरणचंद्रचितजाके। ईहां ताप उठै क्यों ताके॥
ऐसोहरिजनउत्तमकहिए। ताके संग परम पद लहिए॥
जाकोहरिजी निमिषनत्यागैं। प्रेमडोरि बाँधे क्यों भागै॥
सोकारि एउत्तम हरिदासा। कबहुँ न तजिए ताको पासा॥
दोहा–त्रिविधभक्तलक्षणकहैं, नृपसोंहरियोगेश।
तबमायाकेजानिबे, कीन्हों प्रश्ननरेश॥

इति श्री भागवतेमहापुराणे एकादशस्कंधे भाषायां वसुदेव नारदसंवादे जायंतेयोपाख्यानं नामाद्वितीयोऽध्यायः॥ २॥

तृतीयोऽध्यायः।

दोहा–कवी हरीके वचन सुनि, पूँछत हैं नृपराय।
अंतरिक्ष प्रबुद्ध मुनि, पिप्पलायन ऋषिराय॥

जनक उवाच।

अबकारिकृपाकहौहरिमाया। जिनिएसकललोकभरमाया॥
तुमरे मुख सरोजकी बानी। हरिकी कथाअमृत मैं जानी॥
ताकोपियततृप्तिहीमानो। सदा पियो ऐसी मन जानो॥

भवके ताप तपत जो देही । ताको परम ओषधी एही ॥
ऐसे सुनि नरपतिके बैना । वक्ताको उपजावन चैना ॥
तब बोले बानी अभिरामा । तीजे अंतरिक्षसे नामा ॥

अंतरिक्ष उवाच ।

प्रथमहि दूजो हुतो न नामा । आपुहि आप विराजै रामा ॥
दयासिंधु मनमाहिं बिचारा । तबयहकरचोसकलसंसारा ॥
पंचभूतकरि रचि यो देहा । बँध्यो तहां आत्मा एहा ॥
जाते पहिले भोगवे भोगा । बहुरौं दुखित होइभवरोगा ॥
ताते मोसो चित्त लगावे । मेरो निजानंद पद पावे ॥
मगन रहे मेरे आनंदा । बहुरि नहीं व्यापें दुख द्वंदा ॥
याहीतेयहभवविस्तारचो । भीतरअंश आपनो डारचो ॥
इंद्रियदशअरुमनाविस्तारें । बहुत भाँतिके विषयपसारें ॥
सोयहअंश इंद्रियनिमनसों । भोगभोगवे सबही तनसों ॥
आपुभूलि भोगनिमनदीनो । तबअभिमानदेहकोकीनों ॥
भोगनिमित्तकर्मविस्तारे । तिनकेफलसुखदुखभएभारे ॥
तिनकर्मनिते योनि अनंता । जन्ममरणको लहै न अंता ॥
प्रलयअवधिलौं भ्रमैनिरंतर । लीनहोइ पुनिमायाअंतर ॥
सृष्टिसमय बहुरोतनपावे । भवसागरको अंत न आवे ॥
भ्रमतभ्रमतप्रलयावधि आवै । तबसबनाशकालमनभावे ॥
तबसतवरष न बरषै जलधर । तेजतपैतहँद्वादशदिनकर ॥
बहुरचोअग्निशेषमुखनिसरै । प्रलयपवनमिलिजहँतहँपसरै ॥

सारे लोक भसम तब करै । बहुरौ प्रलय मेघ संचरै ॥
हाथी शूँडि धार जल वरषै । यों अखंड बीते सतवरषै ॥
तब होवै विराटको नासा । आतम करै प्रकृतिमें वासा ॥
जो अभक्त होवै ब्रह्माऊ । तौ हूं ब्रह्ममाहिं नाहिं ठाऊं ॥
जे हरिभक्त हरिहिते पावै । और प्रकृतिमें सकलसमावै ॥
पवन करें जब गंधाहि छीना । भूमिहाइ तब जलमें लीना ॥
त्योंहीं रसको हरै समीरा । ताते मिलै तेजमें नीरा ॥
अंधकार जब रूपहि हरै । तेज तबैं पवनहिं संचरै ॥
बहुरि सपरसहि हरै अकासा । पवनकरै तब नभमें वासा ॥
कालकियोजबशब्दहिछीना । तामसअहंकारनभलीना ॥
तामस अहंकार मन मिलै । राजस अहंकारदोऊगिलै ॥
इंद्रिय अरु राजसअहँकारही । तत्व अहंकीनोआहारही ॥
बुद्धिदेव सात्विक अहँकारा । महातत्व कीन्हों संहारा ॥
महातत्वसों प्रकृतिहि मिलै । याविधिकालसकलकोगिलै ।
ऐसीही विधि वारंवारा । उतपति परलै अंत न पारा ॥
यह सब हरिकी माया करै । उपजावें प्रतिपालै हरै ॥
मैं तुमको संक्षप सुनाई । बहुरो करो प्रश्न मनभाई ॥
दोहा–ऐसीसुनिमायाप्रबल, उपज्योनृपके भीति ।
तब पूँछी आधीन ह्वै, ता तरिवेकी रीति ॥

राजोवाच ।

ऐसी प्रबल ईशकी माया । जिन इह सकल लोकभरमाया ॥

ताको तुमसे ज्ञानी तरै । हमसे देही क्यों निस्तरै ॥
ताको सुखही तरिए देवा । सोकरि कृपा बतावहु भेवा ॥
एसुनि वचन नृपतिके शुद्धा । तब बोले चौथे परबुद्धा ॥

प्रबुद्ध उवाच ।

सकल मनुष्य सुखनिकेकाजा । करेकर्मआरंभहिराजा ॥
तिनतेकेवल दुखअधिकारा । अबहूंअरु आगे विस्तारा ॥
पाएहूंधनदुःख अपारा ॥ निशिदिनचिंताकोअधिकारा ॥
सोऊ अति दुर्लभ नहिं आवै । जोआयोतौथिरनरहावै ॥
त्योंही गृह कुटुंब सुतदारा । पलकमाहिंढहिजाइपसारा ॥
ज्योंपथमाहिं मिलनाहोई । घरिकमाहिंबिछुरेंसबकोई ॥
जे कछु इंहांकर्म कमावै । तिनिते योनि योनि दुखपावै ॥
इनमें कोई नाहिं छुडावै । आप आपुको सबको जावै ॥
यहिविधिनश्वरहैपरलोका । स्थिरनरहें विधिहूंकोवोका ॥
छोटेबडे नीच बहुभांती । तिनके मनकी मिटें न कांती ॥
मदमत्सर अरु चाहैं माना । कामक्रोधअरु लोभ समाना ॥
तृष्णाबंधे कछू नाहिं जाने । आपु अपुरमें युद्धहि ठाने ॥
काल पाई उंहांते परै । बहुरि आइ इहां अवतरै ॥
यों विचारिबैराग उपावैं । तबहि शोधिगुरुशरणहि आवैं ॥
शब्दब्रह्म सकल जो भाखै । परब्रह्म नित हृदयै राखै ॥
ऐसे गुरु बिन ज्ञान न पावै । ताते सोधि गुरूपै आवै ॥
ब्रह्म जानि ता सेवा ठानै । आलस कपट कामनाभानै ॥

तातें सीखें भक्तिके अंग । जिनतें हरिजी तजै न संगा ॥
सबतें मनको संग मिटावै । उलटिसाधुसंगतिसोंलावै ॥
अरु दीननपरकरुणाआनैं । समामित्रताउत्तमबहुमानैं ॥
शौचपाठतपमौनातितिक्षा । बहुविधिलेवैगुरुसोंशिक्षा ॥
ब्रह्मचर्यअरुकोमल रहना । हिंसात्यागिद्वन्द्वसबसहना ॥
एकाकी आशमन बांधै । वस्त्रटूकक वलकल सांधै ॥
जहँ तहँ आतमचेतनदेखै । परमातमा नियंता लेखै ॥
ग्रंथ भगतिकी श्रद्धा करैं । निंदा राग दोष परिहरैं ॥
देह वचन अरु मनको दंडै । शमदमसतसंतोषनछंडै ॥
जन्मकर्म अरु गुण हरिजीके । सदा सुनै उद्धारणजीके ॥
त्यौंहीकहै निरंतर ध्यावै । सोई करै हरिहिजो भावै ॥
जप तप योगयज्ञव्रतदाना । तनमनधनदारासुतप्राना ॥
जोकछुसोसबहरिहिंनिवेदै । याविधिसकलकर्मको छेदै ॥
स्थावर जंगम हरि मय जानै । परिसेवा साधुनकी ठानै॥
मिलेपरसपरहरिगुणगावै। निशिदिनकहतसुनतसुखपावै॥
पलपलप्रीतिबढैहियफूलै । गुणनि सँभालत तनको भूलै॥
दूजो भावन कबहूँ उपनै । प्रेम मगन जाग्रत अरु सुपनै॥
ऐसे प्रेमभगतिको पावै । पलपलतनपुलकितह्वैआवै ॥
कबहूंहरि चितवनतें रोवै । कबहूं हँसै अनंदित होवै ॥
कबहूं नाचै कबहूं गावै । लाजरहित ज्यों ज्यों मनभावै॥
कबहूंगुणसुमिरतमिलिजावै । श्वासशब्दबाहरनहिंआवै ॥

याविधिलेवैगुरुसों शिक्षा । गुरुशिष्यनिकीइहै परीक्षा ॥
ब्रह्मपरायणताजन केरे । माया भूलि न आवै नेरे ॥
दोहा–येसुनिवचनविदेहको, हृदयबढ्योआनंद ।
प्रश्नकरीतबब्रह्मकी, ज्यों छूटै भवफंद ॥

विदेह उवाच ।

ब्रह्मवेत्तनिमेंअतिअधिकारी । तुमहोयहमैंहृदयाविचारी ॥
ताते कहो ब्रह्मको रूपा । जानै जाहि मिटै गृहकूपा ॥
परमातमा ब्रह्मभगवाना । ये सब एक विधौं हैं नाना ॥
सबजीवानिकोअतिकरुणायन।तबबोलेपंचमपिप्पलायन ।

श्रीपिप्पलायन उवाच ।

सूक्ष्मथूलसकल संसारा । जाकीशक्तिशक्तिविस्तारा ॥
उतपातिप्रलैकरैवहयाको । काहू हुते जनम नहिं ताको ॥
जाग्रत स्वप्नसुषुप्तितुरिया । चहुमेंसदा एकरस पुरिया ॥
इंद्रिय देह हृदय अरु प्राणा । जाते चेतन ह्वै वरताना ॥
जैसे यह जड लोहावरतै । चुंबक संग बहुताविधिनिरतै॥
सो भगवान ब्रह्मपुनिसोई । सो परमात्मा जानै कोई ॥
मनअरुबुद्धिचित्तअरुप्राणा । इंद्रियदेहशब्दअभिमाना ॥
कोइ ताहि पहुँचि नहिं सकै । जात जात वरेंही थकै ॥
जैसे पावक लोह तपायो । पावक समतेज तिनिपायो ॥
सब परकास सबको जालै । परिपावकपर जोरनचालै ॥
यों सब इंद्रियहृदय अचेतन । ताके संगहुते ह्वै चेतन ॥

औरसकलअर्थनिकोजानै । कौनशक्तिजोताहिपिछानै ॥
लैलै अरथ बखानै वेदा । परिपरतक्ष न जानै भेदा ॥
यहनहिंयहनहिंयाहिनाहिं होई । यातैं परे सत्य है सोई ॥
सूक्षम थूल न जावैबरणि । गगनपवनपावक जलधरणि ॥
नहिंमनबुद्धि चित्त अहंकारा । चिदानंदमयसबकेपारा ॥
नासो बाल वृद्ध नहिं जुवा । नासो बिनसै नासो हुवा ॥
तिरियापुरुषकलीचनहोई । सुरनरनागअसुरनहिं सोई ॥
रक्तपीतसितअसितनहरिता।जातिवरनआश्रमंनधारिता ॥
शीतनउष्णचंदनहिंसूरा । दिवसन रातिनिकटनहिंदूरा ॥
सुखदुखरहितवसैसबमाहीं । आपुहिआपुलिपैकहुँनाहीं॥
बधैभावसोआत्माअंसा । शून्यसरोवर विलसै हंसा ॥
गगनपवनपावकअरुनीरा । धरनि बंधिसबाकिएशरीरा ॥
पंच बस्तुए पंचौबंधा । शब्द स्पर्श रूप रस गंधा ॥
इंद्रियदशअरुतिनके देवा । सात्विकराजसतामसभेवा ॥
मनबुद्धिचितमहतत्त्वअहँकाराएकप्रकृतिकोसकलपसारा ॥
एक ब्रह्महैताकोकारण । बिनइच्छासबकोविस तारण ॥
ज्यौंभूमै बहुघट उपजावै । भूमैरहि भू माहिं समावै ॥
तेसबघटदीसैविधिनाना । परिभूछोड़ि नहीं कछुआना ॥
त्यौंसबजगतआदिमध्यअंता । औरनकछूएकभगवंता ॥
सो नहिंउपज्यौबिनसै नाहीं । बाल्युवादिपरेनहिंछाहीं ॥
बढै न घटै चलैनहिं डोलै । रोष न तोष मौननहिंबोलै ॥

जहँ तहँ पूरणपरम अनूपा । चिदानंद विज्ञान सरूपा ॥
देहभेदबहुधासोसोहै । ज्ञान विना सारो जग मोहै ॥
जैसे पवन एकई प्राना । दशइंद्रिन संग दीसै नाना ॥
उदभिजस्वेदजजरायुजअंडा । चारिखानिपूरण अखंडा ॥
लिंगदेहजादेहहि जावै । प्राणवायु तहँ आनि समावै ॥
शब्द स्पर्श रूपरसगंधा । मन अहंकारबुद्धिचितबंधा ॥
लिंगदेह इनहीं नवकोहै । याकै मिटै निरंजन सोहै ॥
निद्रावशसुषुप्ति जब आवै । तबयहलिंगदेहछिटकावै ॥
अहंकारममताकछुनाहीं । मनअरु बुद्धिचित्तसबजाहीं ॥
तब अद्वैत एक है सोई । द्वैतभावको नांउ न कोई ॥
मन बुद्धिचित्तअहंकारन रहै । जागेप्रथमबातको कहै ॥
जोकरनातो जोतो कियो । आगे पीछे लीन्हो दियो ॥
ताते सो हरिजाननिहारा । याविधिकीजैब्रह्मविचारा ॥
परिवासनासहितही रहै । ताते देह फेरि करि लहै ॥
लिंगशरीर सहितवासना । ताहि मिटेनहिंभवशासना ॥
तातेहरिचरणनिचितलावै । औरसकलबंधन छिटकावै ॥
याविधिसकलचित्तमलनाशै । रविसमानतबब्रह्मप्रकाशै ॥
जोनरप्रथमभक्तिनाहिंजानै । तौ वह कर्म योगकोठानै ॥
कर्म योगते उपजै भक्ति । तब हरिचरण बढै आसक्ति ॥
ताते होइ ब्रह्मपरकाशा । छूटै काल जाल भव पाशा ॥
दोहा—पीपलायनबैनसुनि, करीप्रश्नमिथिलेश ।

कर्मयोगअबकरिकृपा, कहौपरमयोगेश ॥

विदेह उवाच ।

कर्मयोग अब कहौ गुसाईं । मैं आयो तुम्हरी शरनाईं ॥
जाके किएकटैं सब कर्मा । उपजे ज्ञान होइ निहकर्मा ॥
दूजी प्रश्न कहौ तुम एहा । याको मेरे अति संदेहा ॥
ब्रह्मपुत्र सनकादिक चारी । ब्रह्मपरायणब्रह्मविचारी ॥
एकबारकृपाकरि आए । पिता समीप दर्श मैं पाए ॥
इहै प्रश्नमैं तिनसोंकीन्ही । उतरुनदियोह्दैधरिलीन्ही ॥
नहिंबोलेसोकौनेकारण । यह भाषौ भवसागर तारण ॥
ऐसे वचन नृपति जबभाखै । आविरहोत्रछैठतबआखै ॥

आविहोत्र उवाच ।

राजासुनौकर्मगतिगहना । तातैं जहँ तहँ बनैनकहना ॥
यहज्योंहैत्योंवेदबखानै । ताते याहि न कोई जानै ॥
वेद प्रगट करता हरिदेवा । रिषिअरुपुरुषलहैंक्यूंभेवा ॥
भेव लहे बिनामिटैनमरणा । लहै भेव पावैं हरिचरणा ॥
तातेंतुमहोतेतबबाला । तातेकह्यो न कर्म विशाला ॥
अबमैंकहौंसुनौं चितलाई । जाने जाहिंज्ञानअधिकाई ॥
कर्मयोगहैतीनिप्रकारा । कर्म अकर्म विकर्म पसारा ॥
हरिनिमित्तसोकाहिएकर्मा । हरिविहीनसोसकलबिकर्मा ॥
सो अकर्म जो दोऊत्यागें । ज्ञानिबिनासुखइहांनआगें ॥
कर्म करत छूटैंसबकर्मा । उपजै ज्ञानमिटैभयभर्मा ॥

कर्मतजनकोकर्मग्रहावै । ताते वेद न समुझौ आवै ॥
पहिले स्वर्गादिकफल भाखै । आगेसकलदूरिकरिनाखै ॥
ज्योंकोइबालकरोगीहोवै । औषधकटुकनामसुनिरोवै ॥
ताकोलाडू पिता दिखावै । औषधकाज लोभ उपजावै ॥
औषधको फल लाडू नाहीं । औषध दिए रोग सब जाहीं ॥
त्योंस्वर्गादिकलोभ दिखावै । कर्मनाशको कर्मकरावै ॥
स्वर्गादिकफलपुहीपतवानी । तोरे पुहुपहोतफलहानी ॥
ताते करै वेदके कर्मा । हरिके हेत बडो यह धर्मा ॥
और कछू फलभूलि न आनै । हरिके हेतकर्मसब ठानै ॥
मैं करता यौंकदेनभाखै । जो कछुसोहरिकोकरिराखै ॥
याविधिप्रेमभक्तिउपजावै । तब सब कर्मआपुही जावै ॥
तबही प्रगटै ज्ञानप्रकाशा । मिलै रामछूटै भवपाशा ॥
वैदिकपंथकह्यो मैं तोसों । अबसुनितंत्रपंथपुनिमोसों ॥
हृदय गांठि काटी जो चाहै । सोविधिसों पूजाअवगाहै ॥
वेदामिलतभापतुहीं पूजा । जाते मिटै सकल भ्रमदूजा ॥
श्रीगुरुते परसादहि पावै । सो जैसे सब विधिहिबतावै ॥
जा मूरतिपरइच्छा होई । हरिहि जानि करिपूजै सोई ॥
अतिपवित्र ह्वै करै अस्नाना । मनकीतजैबासनानाना ॥
वायुअपानछौंकजसुहाई । औरपवन गुण उठै न काई ॥
सन्मुखबैठिकरैतन रक्षा । अंगन्यास मंत्र पढि अक्षा ॥
आसनसोधिसाधुसेवाकी । सब लै बैठै तजै न बाकी ॥

विष्णुरूप प्रतिमामैं आनै। अर्घपाद अरु विस्तरठानै ॥
मूलमंत्र करि पूजा करै। और न कछू वचन उच्चरै ॥
सकलअंगहरिजीके ध्यावै । शंख चक्र गदापद्मानल्यावै ॥
भूषणवसनपारषदसाहिता । हँसितबदनदेखतदुखदहिता॥
विविधभाँतिअस्नानकरावै ।कारितिलकादिवस्त्रपहिरावै॥
बहुसुगंधमालापहिरावै । बहुत भाँति कारि भोग लगावै॥
गधधूपआरतीसंवारै । घटा आदि शब्द विस्तारै ॥
याविधिमंत्रानिसों सब करै । ता पीछे अस्तुति विस्तरै ॥
बहुरि करै दंडौत प्रणामा । पढै मंत्र लेवै हरिनामा ॥
बाहरवस्तु मिलै ते आनैं । और निमनसों पूजा ठानैं ॥
तन्मय भए निरंतर सेवै । वह प्रसाद माथै करि लेवै ॥
बहुरि देवको हिरदैं धरै । मूरति शयन पिटारे करै ॥
याविधिहरिके आतमजानै । यथाशक्तिसब पूजा ठानै ॥
ज्ञानकाजएसाधन भक्ती । ज्ञान पाय तब होवे मुक्ती ॥
उभयप्रतिमाहरिकी सेवा । साधु प्रगटसोईहरि देवा ॥
ऐसे सेवत उपजै ज्ञाना । वेगहि आनि मिलैं भगवाना ॥
तब हरिका पूरणहोइ दासा । ऐसे सेवै हरिको पियासा॥
दोहा—एसुनिवचनविदेहके, बाढ्यो मनमें प्यार ॥
तबगुणअरुकर्मनिसहित, पूंछैहरिअवतार ॥

इति श्रीभागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधेभाषायां वसुदेवनारद संवादेजायंतेयोपाख्यानेतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

चतुर्थोऽध्यायः ।

दोहा–नारायणअवतारसब, लीलाआदिअनाद ।
श्रीधरचौथेध्यायमें, द्रुमिलजनकसम्वाद ॥

राजोवाच ।

अबअवतारकथाविस्तारौं । गुणअरुकर्मसहितउच्चारौं ॥
जेजेलिये लेहिंजे आगे । अब हैं सब भाषौं अनुरागे ॥
एसुनिजनकनृपतिके बैना । कृपासिंधु करुणाके ऐना ॥
तबसातएँद्रुमिलसे नामा । बोले वचनपरमअभिरामा ॥

द्रुमिल उवाच ।

जेअनंतके गुण अवतारा । तिनकोनृपतिलहै को पारा ॥
भूमि रेणुकार कोई गनै । सोऊ कहा सकलगुणभनै ॥
हरिके गुण अवतार अनंता । बालबुद्धि जो चाहै अंता ॥
तातें कछू एक मैं भाखौं । तेरे हृदय न शंका राखौं ॥
पंचभूतनिर्मित ब्रह्मंडा । रच्यो नीरमाहिंज्यों अंडा ॥
तामें अंश आपनो धारा । सोहै आदिपुरुष अवतारा ॥
जिनकी देहहुते सब देहा । देह माहिं वरतै सब एहा ॥
तिनके अंगनिते सब अंगा । इंद्रिय अहं बुद्धि बहुरंगा ॥
सतरजतमतेंसकलपसारा । उतपति अरु पालनसंहारा ॥
प्रथमहिंरजतेंब्रह्माकियो । सात्विकजन्मविष्णुकोदियो ॥
तामसकरिशंकरउपजाए । तिनसोंसकललोकनिपजाए ॥
ब्रह्मा रचै विष्णु प्रतिपालै । हरै रुद्र यों भव पँथ चालै ॥

बहुरिसुनोहरिके अवतारा । भवसागरके तारनि हारा ॥
धर्मपिताअरु मूरति माता । तहँनरनारायनविख्याता ॥
आत्मज्ञान भक्ति विस्तरैं । जासों लागि जीव निस्तरैं ॥
अवहूं प्रगट करै आचरणा । नारदादिनित सेवैचरणा ॥
एकबारसुरपतिमनआन्यौं । ममलोकहिलेहैंयोंजान्यौं ॥
तबतिनिआज्ञाकामहिंदीन्ही । कामसंगसेनासबलीन्ही ॥
रंभादिक अपसरा अपारा । त्रिविध पवन बसंत पसारा ॥
बदरी खंड सबै चल आए । नरनारायण बैठे पाए ॥
भरिभरि बानी हनेशरीरा । निहफलभएअग्निज्योंनीरा ॥
तबते मन्मथ बहु हैराने । शापअग्निजीवन गतमाने ॥
हरिअपराधइंद्रकृतजान्यो । हँसिबोलेतिनकोभयमान्यो ॥
मतिभय करौ पंचशर वीरा । देवनारि भवप्राण समीरा ॥
बैठोइहांआतिथ्यकरावौ । हम आशमसफलकरिजावौ ॥
ए सुनि अभयदानके बैना । ते सब जोरिसकैनाहिं नैना ॥
लज्जा भार नवाए शीसा । बोले वचन जानिजगदीसा ॥
हेप्रभुयहकछुनहीं अचभा । तुमहौप्रकृतिपुरुषकेथंभा ॥
निर्विकारनिर्गुणनिरभेदा । जिनकोजानिसकैनाहिं वेदा ॥
निजानंद पूरण मुनि सारे । ते सेवत हैं चरण तुम्हारे ॥
तुम्हरे चरणशरणजे आवैं । तिनको सुर बहुविघ्नपठावैं ॥
तिनको लोक दाब पग नीचे । गए चहैं तुम्हरेपदऊँचे ॥
ताते विघ्न करैं सब देवा । मिटते जानि आपनी सेवा ॥

और किसीको विघ्नकरहीं । जातेतिन्हैदंडसबभरहीं ॥
परितवजननहिं विघ्नसतावै । विघ्नानि शीसचरणदैजावै ॥
जोत्रिभुवनपतितुमरखवारे । कहाकरैतौ विघ्न विचारे ॥
ताते तुम्हरो कहा अचंभा । जाते मोहिसकीनाहिंरंभा ॥
क्षुधातृषाअरुआलसनिद्रा । शीत उष्णवरषाअरुतंद्रा ॥
जिह्वाशिश्नादिकविस्तारा । इनकेगुणतेजलधिअपारा ॥
ताको बहुत कष्ट कारि तरै । गोपद क्रोध बूडिते मरै ॥
तिनको तपसब मिथ्याहोई । दुहूंलोकमें एक न कोई ॥
ताते सब साधन जो करै । तुम्हरी भक्ति विनानाहितरै ॥
या विधि देववचन उच्चरैं । तब हरि एक अचंभा करैं ॥
अतिअद्भुतछविनारिअनेका । मनमोहनीएकते एका ॥
ते सब सेवा करत दिखाई । मानो रमासाखिनसौं आई ॥
तिनके गंधरूप सब मोहै । चंद्रउदै उडुगण ज्यौं सोहै ॥
तिनसौं हरिजी बोले बैना । इनमें एकलेहु तुम मैना ॥
स्वर्गलोकको भूषणरूपा । जाते ए सब परम अनूपा ॥
तिन सबहरिकोकियोप्रणामा । लीन्हीएकउर्वशीनामा ॥
कारि प्रणाम पुनि वारंवारा । पहुँचे सकल इंद्रदरबारा ॥
तिन इंद्रहि परसंगसुनायो । विस्मयत्रासइंद्रमन आयो ॥
बहुरिलियोहंस अवतारा । चारि भए सनकादिकुमारा ॥
दत्तकपिलअरुपितहमारा । आठहुब्रह्मरूप विस्तारा ॥
हयग्रीव मधु प्राण निवारे । ता कारि हरिन वेद उद्धारे ॥

सत्यव्रत राजा हरिभक्त । ताको हरिजी कियो विरक्त ॥
बिनहीप्रलयप्रलयादिखरायो।मच्छरूपज्ञानाहिसमुझायो ॥
बहुरिवराहरूपहरिधारयो।हिरण्याक्षअतिदुष्टहिमारयो ॥
बोरी हुती महीजल माहीं । सोऊ परथा पीपल ताहीं ॥
कूरमह्वैमंदरागिरिधरयो ।अमियकाढिसुरकारजकरयो ॥
ग्राहगह्योगजराजपुकारयो ।तबहरिजीतत्कालउबारयो ॥
बालखिलादिकजेऋषिराजा । अंगुष्ठसमआकारविराजा ॥
कश्यपके काजे इकबारा ।समिधनिको ते वनहि पधारा ॥
तहांगाइकेपगजलभरिया । तिनमेंआपुआपुसबपरिया ॥
हाँसी करै इंद्र तहँ खरो । तब तिनि हिरदै हरि सम्हरो ॥
जबआत्माको कोईनाहीं । तबतुमनाथउधारनमाहीं ॥
ताते अब हम भए अनाथा । करुणासिंधुगह्योकरहाथा ॥
इतनीसुनिआरतकी बाणी । तहँ उठि धाये शारँगपाणी ॥
तबहरिकरगहिसबनिउधारा।बालखिल्यउधरणअवतारा ॥
ब्रह्महत्याभयइंद्रसम्हारयो । तबहीहरिजीप्रगटिउधारयो ॥
सुरवनिता जबअसुरनिहरी । तबतेहरिसरणहिअनुसरी ॥
तबहरिजीतेसकलउधारी ।असुरमारिसबबिपतिनिवारी ॥
पुनिनरसिंहरूपहरिधारयो।असुरहिरण्यकशिपुजिनमारयो ॥
जनप्रहलादहिलीन्होराखी । जाकीप्रगटकहै सब साखी ॥
जबजबअसुरप्रबलअतिभये । देवनिकेअस्थलहरिलये ॥
तबतबसबमन्वंतर माहीं । विष्णुकला अवतारधराहीं ॥

मारिअसुरसबदुःखमिटावैं । शरणागतसुरनरसुखपावैं ॥
वामनरूपइंद्रके काजा । भिक्षाछलछलियो बलिराजा ॥
तीनि लोक लै इंद्रहि दए । बलिकीभक्तिआपुबशभए ॥
बहुरिअधर्मी उपजे राजा । परशुराम प्रगटे तिनिकाजा ॥
इकइश बार करी निहक्षत्री । जगमें कहूँनराख्यो क्षत्री ॥
बहुरिभएदशरथसुतरामा । जैहै प्रगटलोक अभिरामा ॥
सागर उपर शैल जिनितारे । रावण आदिदुष्ट संहारे ॥
आगे रामकृष्ण अवतारा । भूको प्रबल हराहिंगे भारा ॥
यदुकुलजनमिकर्मतेकारिहैं । जिनसोंलागिजीवनिस्तरिहैं ॥
असुरदोखियज्ञकेकरता । जीवनि मारि उदरके भरता ॥
बुद्धरूप हरिजी तबधारिहैं । यज्ञ निंदिपाखंडविस्तरिहैं ॥
बहुरिधरहिंगेकलकीरूपा । अतिअपराधकराहिंजनभूपा ॥
कलिकेअंतसकलसंहारिहैं । बहुरिप्रवृत्तसत्ययुगकारिहैं ॥
ऐसे विष्णु कर्म अवतारा । कोइ कहत न पावै पारा ॥
कछूएकमैं तुमसों कहे । औरै कोटि अनंतनि रहे ॥
इनको कहैं सुनैं जो गावै । प्रेमसहित निशिवासरध्यावै ॥
सो भवसागरमें नाहिं रहै । पावै ज्ञान परमपदलहै ॥

दोहा–एवंनासुनिद्रुमिलके, कीन्हों प्रश्ननरिंद ।
प्रभुजीतिनकीकौनगति, जेनभजैं गोविंद ॥

इति श्रीभागवते महापुराणे एकादशस्कंधेभाषायां वसुदेवनारद संवादे जायंतेयोपाख्यानेचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

पञ्चमोऽध्यायः ।

दोहा–कर्मशुभाशुभभजनविधि, साधनज्ञानदृढाहिं ।
करभाजनअरुचमसमुनि, कही पाँचवें माहिं ॥

विदेह उवाच ।

जेनकरैंहरिजीकीसेवा । तिनकी कहो कौन गतिदेवा ॥
तिनकोतृपतिनसुपनेआवै । निशिदिनतृष्णाअग्निजलावै ॥
पर जो बहुविधिधर्मउपावैं । तो मुहि कहो कछू सुखपावैं ॥
एकाहि वचन जनक जब रहै । अष्टमचमसनामतबकहै ॥

चमस उवाच ।

हरिजी विप्र वदनते करे । बाहुनते क्षत्री विसतरे ॥
जंघनिहुते वैश्य उपजाए । शूद्र तिमैं चरणनिते आए ॥
याही भाँति किए आश्रमां । ताते भजनसबनिकोधर्मा ॥
ते आपुही करैं प्रतिपाला । आपुहि पोषै दीनदयाला ॥
ऐसे प्रभुको जे बीसरैं । ते अपार अपराधनि करैं ॥
तई गुरुद्रोही पितृद्रोही । स्वामी द्रोहकृतघन ओही ॥
तिनिअपराधनिअधगतिजावैं।कबहूँभूलिसुखहिंनहिंपावैं॥
शूद्रयोषिताअंत्यजआदि । तिनको दूरिकथाश्रवणादि ॥
तेमनमें अभिमान न धरैं । ताते तुमसे किरपा करैं ॥
याते इनको है उद्धारा । परऊँचेनको वार न पारा ॥
विप्ररुक्षत्री वैश्यत्रिवरना । उपनयनादि वेदमखकरना ॥
इनसबहिंनिकेते अधिकारी । तातेहोहिंबहुतअहँकारी ॥

तातपर्यको जाने नाहीं । पुहुपित बानीमें भरमाहीं ॥
विष्णुभजनउत्तमअधिकारा । पायोताहिनलखाहिंगँवारा ॥
कर्मअकर्मविकर्मनजानैं । अति कठोर आपुहि बहुमानैं ॥
हमपंडितयज्ञनिकेकारक । औरबहुतकर्मनिविस्तारक ॥
आपु भ्रमें औरनि भरमावैं । प्रियबानी बहुभाँतिसुनावैं ॥
कामरुअर्थअर्थकरिमानैं । पढि पढि वेदसाक्षिबहुआनैं ॥
बहुसंकल्प करैं मन माहीं । बहुत बहुत आरंभकराहीं ॥
त्यौंहीत्यौंराजसअधिकारा । कामरुक्रोधलोभअहँकारा ॥
दंभ कपट चतुराई आनैं । हरिभगतनिकी हांसी ठानैं ॥
आपुआपुबैठैंमिलिजबहीं । गृहके सुखनिसराहैं तबहीं ॥
जिनमेंआनंदइकक्षणनाहीं । दंभमानसों यज्ञ कराहीं ॥
बहुतपशुनिमारैंअज्ञानी । तिनअपराधनिसकैंनजानी ॥
एतनो धन आयो यह ऐहै । एतो मिलिए तो तबह्वै है ॥
कुलसंपति विद्या ठकुराई । त्यागरूप बल कर्म बढाई ॥
इनकोमदबाढ्योअधिकाई । तातेंहृदयसमुझिनाहिंआई ॥
हरिभगतनिसोंठानेहांसी । मगहरमरैंछोडिखलकासी ॥
थावरजंगमसबघटमाहीं । हरिपूरण खाली कहुं नाहीं ॥
ज्यों आकाशलिप्तनहिं होई । त्यों हरिवेदकहतुहैसोई ॥
परिवेमूढनकबहूंजानैं । जात हरिभगतनि नहिं मानैं ॥
बहुतमनोरथनिशदिन करै । तृष्णातापजलनिनहिं टरै ॥
मद्यपान अरु मांसअहारा । नारीनेहसहितजगसारा ॥

तासकलहिंत्यागिवेनिमित्ता । विधिमेंवेदलगायोचित्ता ॥
संगकरै तौ नारि विवाहीं । ताहू मैं बहुत तिथि नाहीं ॥
बहुरिकह्योदेवैऋतुदाना । प्रजानिमित्तचित्तनहिंआना ॥
याबिधिक्रमक्रमबहुतछुडावे । बहुरिवेदसबत्यागबतावै ॥
ऐसाह आमिष अरु मदपाना। यज्ञमाहिं नाहींकहुंआना॥
बहुरो ऊंहाहुते छुडावै । ऐसो तात परम को पावै ॥
हरिकी शरणहिंआवे कोई । सारीविधिसमुझेइकसोई ॥
कैजोतिनकी शरणहिआवे । अभिप्रायसारो सो पावै ॥
वेहरिजनअरुहरिहिं नजानैं।आपुहिंको पंडित करिमानैं ॥
तातेतातपर्यनाहिं जानैं । पढिपाढि वेदअनर्थनि ठानैं ॥
धन ऐसो जो करै उदारा । सो धन खोवै वृथा गँवारा ॥
जो धन हरिके काज लगावै । सो तब प्रेमभक्तिको पावै॥
तात होइ ज्ञान परकासा । तब हरि मिलै छुटै भवपासा॥
ऐसोधनते मूढ अयाना । देहकाज खोवैं भरमाना ॥
काल निरंतरहरत न देखैं । बहुमदमत्त दूरि करि लेखैं ॥
मद्यमांसमखमें आनीजे । और भूलिकहुँ नाउनलीजे ॥
तहँऊं आपु लेइ अघाना । खान पानते अधगतिजाना ॥
त्योंवनिताऋतुदानाइ देवै । और भूलिकहुँनाउनलेवै ॥
सोऊजो लगि इकसुत होई । सुतक भएत्यागए सोई ॥
ऐसो सकलवरणकोधर्मा । ताको भूलि न पावै ममा ॥
मर्महीनश्रुतिसुमृतिबखानै । मूरखआपुहिंपंडितमानैं ॥

तातें बहुत कर्म आरंभैं । इंद्रिय मनहिं कदे नाहिं थंभैं ॥
द्रोहकरैं बहुजीवनिमारैं । ते बहु जन्म तिन्हहिं संहारैं ॥
थावरजंगमसबघट माहीं । एकहरि दूजा का नाहीं ॥
तिनको द्रोहकरै तनपोषैं । दारासुतनि आनि संतोषैं ॥
नहिंमूरखनाहिंतत्वज्ञानी । पढिपढिग्रंथहोहिंअभिमानी ॥
ते असाधिरोगी सब जानी । तिनसोज्ञाननमांडै ज्ञानी ॥
तेसबकरैं आपनों घाता । सुपनेहूँ न लहैं कुशलाता ॥
कर्मपंथमेंसुखको चाहैं । अमृतदेकरि विषहि बिसाहैं ॥
नाना ताप तपत ते रहैं । करैं मनोरथ फलहिं न लहैं ॥
बहुतभाँतिश्रमकरिउपजाये। सुतवितदारसकलमनभाए॥
तिनसबहिंनकोछोडिइहाहीं । बँधे आयुयमद्वारेंजाहीं ॥
यमके दूतनरक भोगवावैं । तहँके दुःख कहेनहिं जावैं ॥
तिनकोकोनहिंराखनिहारा । हरिरक्षकसोंनाहिंसँभारा ॥
कहाकहौंकछुकहेनजाहीं । हरिबिनकहूँपलकसुखनाहीं ॥
दोहा–चमसवचनसुनिभूपके, बढ्योत्रासअरुप्यार ।
तबयुगयुगकोपूछियो, हरिको भजनप्रकार ॥

राजोवाच ।

कौन समैं कैसो अवतारा । कैसो वर्ण नाम आकारा ॥
किहिंविधिभजैंवरनआश्रमा । कहो ज्ञानके साधनधर्मा ॥
जिनते ज्ञानलैहसबत्यागै । नितहरिचरणकवल अनुरागै॥
सुनिनृपबैनभगतिके भाजन । तबबोलेनवमें करभाजन ॥

करभाजन उवाच ।

सतत्रेताद्वापरकलिकाला । बहुतभाँतिभजिएगोपाला ॥
बहुविधिवर्णबहुतआकारा । बहुतनामबहुभजनप्रकारा ॥
सतयुगशुक्लवर्णभुजचारी । शिशजटातनवल्कलधारी ॥
कठजनेऊकरजपमाला । दंड कमंडलु अरु मृगछाला ॥
तब मनुष्य होवैं सब शुद्धा । सम निरवैर सुहृद परबुद्धा ॥
अस्थिरकरिइंद्रियमनप्राना । करैंसबैनितिहरिकोध्याना ॥
हंस सुपर्ण धर्मयोगीश्वर । निर्मल परमात्मा अरु ईश्वर ॥
पुरुषोत्तम वैकुंठ अव्यक्ता । तिनके नाम होहिं एव्यक्ता ॥
रक्तवर्ण त्रेतायुग माहीं । त्रिगुण मेखला कटि पहिराहीं ॥
पतिकेशसुरुवादिकहाथा । ऋगूयजुसामत्रयीमयनाथा ॥
तब तिन हित यज्ञादिक करैं । वेदविहित कर्म विस्तरैं ॥
सवदेवमय हरिको जानैं । तब सब यों हरिपूजा ठानै ॥
प्रश्न गर्भ उरुगाय कहीजै । विष्णु वृषाकपि यज्ञ भनीजै ॥
सर्ववेद उरुक्रम विजयंता । ऐसे नाम कहै सब संता ॥
द्वापरपीतवसनघनश्यामा । शंखादिकआयुधआभिरामा ॥
चारि बाहु भृगुलत्ताधरणा । लक्ष्मीचिह्नबहुतआभरणा ॥
चामर छत्र आदि बहुसेना । महाराजलक्षण सुखदेना ॥
वेद तंत्र पथसेवा करैं । सब अर्पण पूजा विस्तरैं ॥
वासुदेव संकर्षण देवा । श्रीप्रद्युम्नअनिरुद्ध अभेवा ॥
नारायण भगवान अनंता । जिनिको कोइ लहै न अंता ॥

विश्वरूप विश्वेश्वरस्वामी । सर्वात्मा सब अंतर्यामी ॥
बहुतभाँति अस्तुतिविस्तरैं । विधिसों द्वापर पूजाकरैं ॥
कलियुगपीत पीतांबरधारी । कृष्णदेव घनश्याममुरारी ॥
सहित पारषद् बहुआभरना । श्रवणकीरतनपूजाकरना ॥
इंद्रिय मन बहु भरे विकारा । तिनते राखैंचरण तुम्हारा ॥
सबाबाधि सबतीरथको वासा । सुमिरतहींपुरवैसबआसा ॥
शिव विरंचि सुर नरमुनि ध्यावैं । जाकोभेदभेदनहिंपावैं ॥
राखिलेतशरणहि जोआवैं । जन्म मरणसबदुःखमिटावैं ॥
केवल दीन होत उद्धारैं । भवसागरके पार उतारैं ॥
ऐसो चरण तुम्हारो गायो । ताकी शरणदीन मैं आयो ॥
अतिदुस्त्यज सुरबछे जाको । ऐसोराजछोडिकरिताको ॥
दशरथभक्तवचनसतिकरना । वनकोगवनकियोजिनिचरना ॥
हेममिरग दयितामनभायो । जो ताके पीछे उठिधायो ॥
जो भक्तनिके यों आधीना । ऐसे चरण शरण मैं लीना ॥
ऐसी विधिकलिअस्तुतिकरैं । बहुविधिहरिनामनिउच्चरैं ॥
सुनै कहै सुमिरैं अरु ध्यावैं । ते तत्काल तत्त्वकोपावैं ॥
याविधिजेयुगयुगहरिसेवैं । तिनितानिकोहरिज्ञानहिंदेवैं ॥
ज्ञानपाइ निजतत्त्वसमावैं । जहांजाई बहुरयोनहिंआवैं ॥
जेकलियुगकेगुनकोजानत । तेबहुविधिअस्तुतिकोठानत ॥
जैसो परमसार कलि माहीं । ऐसो औरयुगनमें नाहीं ॥
सतयुग ध्यानयज्ञ त्रेतामाहिं । द्वापरप्रतिमा पूजैं रामहिं ॥

कलिकेवलनामादिकगावैं। सोसो फलतत्कालहिं पावैं ॥
याभवसागरमाहि निरंतर। दुःखितजीवपरैं नहिं अंतर ॥
तामैंहरिगुण नामउचारण। एकजहाज सकलको तारण ॥
पापअपार घोर कलिमाहीं। जामें पुण्यलेश कहुँ नाहीं॥
तामें जे हरिगुणनि उचारैं। ते नर आप औरको तारैं ॥
ते कृतकृत्यतेई बडभागी। जेकलिहरिकीरति अनुरागी॥
आपुसुमिरिऔरनिसुमिरावैं। तेजगजनमिबहुरिनाहिंआवैं॥
सत त्रेता द्वापर अवतरहीं। ते कलियुगकी बंछा करहीं॥
कलिकछुसाधनअरुश्रमनाहीं। हरिगुणगावतहरिहिंसमाहीं
अरुकहुकहु कोईदेश विशुद्धा। द्राविडादि मानव तहँ बुद्धा
जे उपजैं ते भक्तिहि करैं। तातें तहाँ बहुत उद्धरैं ॥
अरुजहँताम्रपरणिकृतमाला। कावेरी पयस्विनीविशाला॥
औरसरस्वति पश्चिम वाहिनी। गंगाआदि दुरित दाहिनी
जे मानवपीवैं जल उनको। दूरिहोइ हिरदै मल तिनको॥
ते सर्वथा होहिं हरिभक्ता। साधुसंग होवैं आसक्ता ॥
भूत कुटुंब पितर ऋषि देवा। इनके ऋणी करैं सबसेवा
सोनऋणी नहिं सेवाकरई। जोसबतजिहरिको अनुसरई ॥
जेविधितजि हरिचरणनि आवैं। तिनकेमल हरिदूरिबहावैं
बहुरचो मल उपजै नहिं कोई। उपजै कदेहरैहरि सोई ॥
तातेसबविधिको फल एका। गहियेहरिपद छाँडिअनेका।
सबकेप्रभुसमहीं सुखदाता। शरणागत पालकविख्याता।

जबजबजोंजोशरणहिआयोतबहींतबतिनितिनिहरिपायो
तातें और सकल परिहरिए । श्रीभगवान चरणचितधरिए
ऐसे सुनि नवहूंके बैना । जनकहृदै अति उपज्यो चैना ॥
संशयमिट्यो सकलभ्रमभाग्यो । ब्रह्मजानि सूतोसोजाग्यो
तबतिनकोबहुपूजाकीन्हीं । विप्रनिसहितप्रदक्षिणदीन्हीं।
या विधि दरशन पाए सबहीं । अंतर्धान भए ते तबहीं ॥
जनकबिदेहऔरसबत्याग्यो । हरिकेचरणकमलअनुराग्यो
या विधि ब्रह्मपरायण भयो । तरि भवसिंधु ब्रह्ममें गयो ॥
याहीविधितुमहूं बडभागी । ह्वैकरिहरिचरणनि अनुरागी
और सकलको तजिहौ संगा । तब पाइहौ ब्रह्मप्रसंगा ॥
अरुतुमतौदेवकी वसुदेवा । भए कृतारथकरि हरिसेवा ॥
तुम्हरेयशपूरचो जगसारा । जिनके हरिलीन्हौंअवतारा ॥
दर्शनआलिंगनआलापा । आशनभोजनशयनमिलापा॥
हरिसोंपुत्रजानिचितदीन्हों । तातेंसकलभजनतुमकीन्हों।
कपटवासुदेवरुशिशुपाला । दंतवक्र शाल्वादि कराला ॥
वैरभावकृष्णहि चित धारचो । तिनहूंको हरिदेवउधारचो
तौजे प्रेम प्रीतिसों सेवैं । तिनको क्यों न परमपद देवैं ॥
अवतुमपुत्र बुद्धिमतिआनौ । कृष्णदेवको ब्रह्महिं जानौ ॥
मायाकरि धारी नरदेही । परब्रह्म तुम जानो एही ॥
वढ्योदेखिभुवमें अघभारा । मेटनकाज धरचोअवतारा ॥
परमपुनीतयशहिविस्तरहीं । जासोंलागिजीवनिस्तरहीं ॥

जेजे इनसों हेत लगावैं। तत सकल परमपद पावैं ॥
ऐसी सुनिनारदकी बानी। वसुदेवदेवकी अद्भुतमानी ॥
आपुहिंदुहूंमुक्तकरिजान्यो। हरिसंभावब्रह्मको आन्यो ॥
यहइतिहासकथा जो भाखै। सावधानसुनि हिरदैंराखै ॥
सोसबभवबंधन छिटकावैं। उपजै ज्ञानपरमपद पावैं ॥

दोहा—भगवद्धर्मरुभक्तचित, मायातरणउपाय।
ब्रह्मकर्मअवतारपुनि, भजनकर्मयुगगाय ॥
यह भाष्योसंक्षेपसों, हरिमिलनेको द्वार ॥
हरिउद्धवसंवाद अब, वर्णनकरि विस्तार ॥

इति श्रीभागवते महापुराणे एकादशस्कंधे भाषायां वसुदेव नारद संवादे जायंतेयोपाख्याने पंचमोऽध्यायः॥ ५ ॥

षष्ठोऽध्यायः।

अथ कृष्णोद्धवसंवादः प्रस्तूयते।

दोहा—छठयें वरणीद्वारिका, श्रीधरमुखश्रीकृश्न।
ब्रह्मादिस्तुतिकरचले, उद्धवकीन्हों प्रश्न ॥

श्रीशुकउवाच।

बहुरि सुनो नृप आतमविद्या। जाकेजानेमिटैअविद्या ॥
मिटैअविद्या ब्रह्महिंपावै। ब्रह्महिं पाइ फेर नहिं आवै ॥
तब ब्रह्मासनकादिक संगा। नारदादि रंगे हरि रंगा ॥
सकलप्रजापतिभृगुमरिच्यादिक।महादेवलीन्हेंभूतादिक॥
सुर समूहसंगलै सुरपती। पवन अश्वितीसुत ग्रहपती ॥

वसुअंगिरा रुद्ररिभुदेवा । साध्यादिक अरु विश्वेदेवा ॥
ऋषिगंधर्वपितर अरु नागा । चारणसिद्ध भरे अनुरागा ॥
अप्सर अरु गुह्यक विद्याधर । किन्नर यक्षादिक मायाधर ॥
कृष्ण देखिबे कारण सारे । आनंदित द्वारिका पधारे ॥
कोई नाच कोई गावैं । कोई बाजे बहुत बजावैं ॥
कोई जयजयशब्द उचारैं । कोई कृष्ण यशहिं विस्तारैं ॥
याविधिकरैं बहुत उत्साहा । मगनभये हरिप्रेम प्रवाहा ॥
श्रीभगवान मनुजतनु धारी । दर्शनसब मनहरण मुरारी ॥
लोकनिमाहिंयशहिंविस्तारैं।श्रवणादिकनिसकलअघजारैं
निधि ऋधि पूरण द्वारावती । जाके सम नाहिं अमरावती ॥
तामें ब्रह्मादिक चलि आये । कृष्णदेवक दर्शन पा ॥
स्वर्गवृक्ष फूलनिके माला । छादित कीन्हें दीनदयाला ॥
पावतदर्शन नृपति नहिं होवैं । चित्र लिखेसे सन्मुख जोवैं ॥
चतुवेंदानि बहु अस्तुति करैं । उत्तम अरथनि यशविस्तरैं ॥
सहित विनिती अरु परनामा । दर्शनभये सब पूरण कामा ॥

देवाऊचुः ।

हे प्रभुचरणसरोजतुम्हारा । मनक्रमवचनचित्तअहंकारा ॥
इंद्रिय बुद्धि प्राण अरु देहा । वदतहु हम परगट येहा ॥
जाको प्राण वचनमन साधै । सावधान निशिदिनआराधै ॥
भावसहित अभिअंतरध्यावैं । तेऊ या विधि प्रगट नपावैं ॥
धनिधनिहम धनिभागहमारे परगट देखे चरण तुम्हारे ॥

जिनकेध्यानकीरतन श्रवना । बहुरिनहोवैआवागवना ॥
तुम अद्वैतद्वैत यह करौ । अपनी माया सब बिस्तरौ ॥
तुमहींमें उपजे संसारा । सदा रहै तुम्हरी आधारा ॥
तुमहींमाहिंलीन सबहोई । तुमकोपरासिसकै नाहिं कोई ॥
रागरहित आनंदस्वरूपा । अजितअमित चिद्रूपअनूपा ॥
बहुअध्ययनश्रवणअरुदाना । क्रियाउपासअरुतपस्नाना ॥
त्याग योग यागादिक जेते । आतमशुद्ध करै नाहिं येते ॥
तवगुण श्रवण परतअघनाशै । ज्योंतममाहिंसूरपरकाशै ॥
तातै जनम करम तुम धारौ । दीनबंधु दीनन उद्धारौ ॥
जोतुमचरणकमलसुनिध्यावैं।भयभयभीतनपलछिटकावैं॥
अरु निजभक्त निरंतर सेवैं। भयनहिंसमझ नाहिं कछुलेवैं॥
अरु एकै बैकुंठ निमित्ता। हृदय धरैं ता चरणहिं नित्ता ॥
बहुरि एक सेवैं सहकामा । एक भये चाहैं निहकामा ॥
जीवनमुक्त भये इक सेवै । प्रेमभावसो अतिसुख लेवै ॥
एकै यज्ञादिनसों भजैं। सर्वदेवमय तुमको जजैं ॥
एकै बरण आदि आश्रमी । तुमरे हेतु करैं सब धर्मा ॥
एकैएक रूपकरि ध्यावैं । द्वैतभाव कबहूं नाहिं ल्यावैं ॥
एकै तुवप्रतिमाको सेवैं । एकै नाम निरंतरलेवैं ॥
एकै श्रवण कीरतन ध्याना । कहांलगि कहिये विधिनाना ॥
योजेजे तुव चरणहिं सेवैं । तेते सब बांछितफल लेवैं ॥
सो तुवचरणप्रगट हमपायो । तातै अबदीजै मन भायो ॥

यह मम बांछापूरणकरो । अपने चरणकमल चितधरो ॥
भसमकरौ दूजी वासना । जनते उपजै भवशासना ॥
परमदयाल भक्त हितकारी । इच्छापूरक देव मुरारी ॥
इच्छापूरणकरौ हमारी । निश्चलउपजै भक्ति तुम्हारी ॥
जो तुवजन वनमाला करै । प्रेमसहित तुव आगे धरै ॥
कमलादेखि सपर्धा आनै । ताको आपु सपतिनीजानै ॥
परतुम ऐसे दीनदयाला । भक्तअधीन करन प्रतिपाला ॥
तब इंदिरा निरादर करौ । वनमाला ता ऊपर धरौ ॥
जोतुवचरण भक्त सुरकारण । दुष्ट असुरसेना संहारण ॥
असुरनको अधगतिकोदाता । सुरन स्वर्गदीसैविख्याता ॥
अभयदान अघनाशनवानो । लोकवेद यहप्रगटबखानो ॥
बांधी ध्वजा गंगातिंहु लोका । जाके दर्शमिटै भयशोका ॥
ब्रह्मादिकसुरनर अधिकारी । तुम्हरेचरणकमलवशचारी ॥
ज्यों अतिबली बैलमद भीना । नाथेनाक धनी आधीना ॥
जबजब असुरनतेदुखपावैं । तबतब शरणचरणकीआवैं ॥
तबहीं सुखउपजै दुखभाजै । अपने अपने ठौर विराजै ॥
प्रकृतिपुरुषमह तत्वनियंता । तुम इनकेकारणभगवंता ॥
तुमतेपुरुषसकतिजबपावै । प्रकृतिहिमिलिमहतत्वउपावै ॥
ताते उपजै यह ब्रह्मंडा । जलआधार तिरै ज्यों अंडा ॥
स्थावरजंगम विविध प्रकारा । तातेंहोइसकलविस्तारा ॥
ताते तुमयासबकेकरता । उपजावनप्रतिपालन हरता ॥

तुमआधारसकलकेस्वामी । तुम करुणाता अंतरयामी ॥
जोकछुहोयसकलजगमाहीं । तुमकरतादूजाकोइनाहीं ॥
परिकहुँ लिप्तहोहु नहिंदेवा । कोईलखि नसकै तुव भेवा ॥
सोलहसहसएकशतआठा । जिनकेहृदयप्रेमअतिकाठा ॥
हावभावसों प्रीति बढावैं । मदनबाण बहुभाँतिचलावैं ॥
तुमतोहू वशहोवो नाहीं । निश्चल निजानंद पद माहीं ॥
और छोडिहू बैठे कोई । करत वासना बंधै सोई ॥
येद्वैनदीप्रगट तुम कीन्हीं । जिनकीमहिमा परैनचीन्ही ॥
एक गंगचरणनको नीरा । परसत निर्मल करै शरीरा ॥
दूजीतुवकीरतिकीसरिता । त्रिभुवनजहांतहांविस्तरिता ॥
श्रवणकरत अंतरमल नाशै । निर्मल हृदयब्रह्मपरकाशै ॥
ब्रह्मप्रकाश भयेभय नाहीं । खेलै एकमेक मिलिमाहीं ॥
इनद्वैनदिनभजैंजे पंडित । तिनको कालकरैनहिंखंडित ॥
ताते नाथकृपा अब कीजै । साधुसंगह हमकोनितदीजै ॥
जिनमें कथानदीहम पावैं । जाते तुवचरणन चितलावैं ॥

श्रीशुक उवाच ।

योंलैशिवशक्रादिक संगा । अस्तुतिकरीबहुतपरसंगा ॥
बहुरोंविधियेवचनसुनाये । जाकेकाजसकलमिलिआये ॥

ब्रह्मोवाच ।

हेप्रभुहमतबविनती कीन्हीं । धरणीभारभरीजबचीन्हीं ॥
तातेतुमलीन्हों अवतारा । सकलउतार्‍योभुवकोभारा ॥
मेटिअधर्मधर्म बिस्तार्‍यो।सबसंतनको कारजसार्‍यो ॥

अरुकीरति बहुविधि विस्तरी । भवसागरतारिबेकोतरी ॥
लैअवतारभूप यदुवंशा । सकल जननिकोमेटचोसंशा ॥
बहुविधि कीन्हेंकर्मअपारा । जिनसोंलँघिजैहैंभवपारा ॥
अरुयदुकुलद्विजश्रापबिनास्यो । नहिंरहिहैंदिनद्वैभास्यो ॥
तातेदेवकाज सबकऱ्यो । करवेको कछु नाहीं उबऱ्यो ॥
गईबरषशतअधिक पचीसा । तातेहम विनवें जगदीसा ॥
अब करिकृपा चलौनिजलोका । करे पुनीतहमारेवोका ॥
हमहैं दास तुम्हारे देवा निशिदिनकरैं तुम्हारी सेवा ॥
ऐसी सुनि ब्रह्माकी बानी । तबहँसिबोल शारँगपानी ॥

श्रीभगवानुवाच ।

मैं सब सुनी तुम्हारीबानी । तुम्हरो काजभयोयहजानी ॥
परियदुकुल योहीं परिहरौं । तौ क्षयसकल भुवनकोकरौं ॥
ये सब यादव बहु मदमत्ता । न ये रहैं सोमेरी सत्ता ॥
मोहिं तजे सबपर लपटानैं । ज्योंसागरमऱ्यादा भानैं ॥
ताते नाशहेतु उपजायो । श्रापसबै विप्रनिते पायो ॥
अनइनसबहिनकोबिनसाऊं । पछितुवलोकनिमेंआऊं ॥
ऐसेसुनि हरिजीके बैना । हृदय बढचोसबहिनकेचैना ॥
करिप्रणपात वीनती सारे । अपने अपने लोक पधारे ॥
तब नरपतिकी सभामँझारी । बैठे यदुकुलसहितमुरारी ॥
द्वारावती उठे उतपाता । तिनको देख कही हरिबाता ॥

श्रीभगवानुवाच ।

ये उतपात उठैं चहुओरा । अति भयदायक दीसैंघोरा ॥

अरुद्विजश्रापभयो कुलमाहीं । तातेभली देखियेनाहीं ॥
तातेअब इहांनाहिं रहिये । तजियेबेगि जिये जो चहिये ॥
अतिपुनीत क्षेत्रपरभासा । तहां बेगि चलिकीजे बासा ॥
एकबार दक्षश्रापहिं दयो । शशिके क्षयीरोग तब भयो ॥
जबसोशशिपरभासअन्हायो । छूट्योशापपरमसुखपायो ॥
तातेअब परभास चलीजे । तहां जाय अस्नानाहिं कीजे ॥
तृपतदेवपितरनकोकरिये । विप्रभोजबहुबिधिबिस्तारिये ॥
तिनको दानबहुतबिधिदीजे । श्रद्धासहितप्रणामहिं कीजे ॥
तिनप्रसाद दुःखपरिहरिये । ज्यों नौकमसों सायर तरिये ॥
ऐसी सुनिहरिजीकी बानी । सबयादवन भलीकरि जानी ॥
तब चलिवेको सकलबिचारैं । अपने अपनेरथनिसँवारैं ॥
तबउद्धवहरिकोनिजदासा । देखिसकलबिधिभयोउदासा ॥
चलिइकांतहरिजीपै आयो । चरणनिपरिकैवचनसुनायो ॥

उद्धव उवाच ।

देवदेव ईश्वर योगेश । श्रवणकीरतन हरन कलेश ॥
यदुकुलकोसंहाराहिकरिहौ । अबतुममृत्युलोकपरिहरिहौ ॥
विप्रश्राप मेटन समरत्था । नाहिं मेटौ सोइहै अरत्था ॥
मेरे जीवन चरन तुम्हारा । जैसे मीन उदक आधारा ॥
प्राणनाथ अब ऐसी कीजे । संगआपने मोको लीजे ॥
तुम्हरेसबआचरणअनूपा । सबकोअतिकल्याणसरूपा ॥
जिनकोपाय औरसबत्यागे । त्रिभुवनके सुखदुखसेलागे ॥
आसनगवनअसनअस्नाना । जागतअरुसोवतबिधिनाना ॥

सदानिरंतरको मैं दासा । क्यों पलतजौं तुम्हारोपासा ॥
यह मायाभयते नहिं कहौं । तुमविन अर्धनिमेष न रहौं॥
गंधवसन माला आभरना । तुव उत्तीरण कौने धरना ॥
महाप्रसादनिरंतरपोष्यो । दरशपरशबहुबिधिसंतोष्यो ॥
ऐसोमैं निजदास तुम्हारो । माया करिहै कहा हमारो ॥
मायाभय अरु तुम्हरे हेता । होहिं दिगंवर ऊरधरेता ॥
इंद्रियदेह प्राणमन साधैं । सावधान तुमको आराधैं ॥
ब्रह्मविचार सदा मनलावैं । ते निजरूप तुम्हारो पावैं ॥
हम कछुकर्म अकर्म न जानैं । हृदयज्ञान वैराग न आनैं॥
तुम्हरेभक्तनिके मिलिसंगा । भवतरिहैं सुनि तुवपरसंगा ॥
तुम्हरेकरमवचन परिहासा । आसनगवनरूप परकासा॥
कहतसुनतसुमिरतसुखमाहीं । भवसागरहमरहिहैंनाहीं ॥
तातेमाया भय नहिंआनौं । आपुहिंसदामुक्तिकरिमानौं॥
परितुमविनाप्राणतजिजाहीं । तातेमोहिंछोडिये नाहीं ॥
दोहा--येउद्धव निज भक्तके, सुने वचन गोपाल ।
तबकरुणामयकरिकृपा, बोलेवचनरसाल ॥
इति श्रीभागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधे भाषायां
श्रीभगवदुद्धवसंवादे षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

सप्तमोऽध्यायः ।

दोहा--उद्धवप्रतिश्रीकृष्णजी, कह्योसातमेंज्ञान ।
दत्त यदू संवादमें, शिक्षा आठ वखान ॥

श्रीभगवानुवाच ।

महाभाग उद्धवयह योंहीं । ज्यों तूकही बातहै त्योंहीं ॥
शिवविरंचि शक्रादि दिवेशा । बांछैमम वैकुंठ प्रवेशा ॥
भूमैभारबढ्यो जब भारी । तब भूब्रह्मा पास पुकारी ॥
ब्रह्मादिकने विनती करी । ताते मनुजदेह मैं धरी ॥
अबभूकोसबभारउतार्यो । सकलसुरनकोकारजसार्यो ॥
अरुकीन्हों यशको विस्तारा । जाते जीवजाहिं भवपारा ।
यदुकुल श्रापलह्यो द्विजपासा । आपु आपुमें ह्वै है नासा
आजुहिंते सप्तमदिनमाहीं । सिंधु द्वारिका राखै नाहीं ॥
जबहीमैं तजिहो यहलोका । तबपावै गोदुख भयशोका ।
कलियुगआनि अधिष्ठितहोई । ताते अघकरिहैं सबकोई
ताते सुनिउद्धव बडभागा । अब तूकरिसबहीको त्यागा
मौनेसदा चित्त थिर करा । समदर्शी ह्वै भुवमें विचरो ॥
जो कछुकहनसुननमें आवै । अरुमनबहुरिजहांलगुजावै ॥
सोयहसबमनको कृतजानो । क्षणभंगुर मायाकरि मानो
जिनयहसकल सत्यकरिजाना । तिनके भेदभयेहैं नाना
ताभेदाहिं भ्रमकरि नाहिंजानैं। बिधिनिषेध ताहीते ठानै ॥
विधिनिषेध जो भाषै वेदा । सो ताको जाकेहै भेदा ॥
भेदामिटै बिनुकरैन त्यागा । ताते येद्वै किये विभागा ॥
ज्यों ज्यों तजै सुखी त्यों होई । तातेवेद बतावै दोई ॥
आवे जायँ छुडावैं सारे । जे आपुही हुते विस्तारें ॥

तातें यहसब मिथ्याजानों । ऊंचनीचगुणदोष न मानों ॥
इंद्रियअरु मननिश्चल करौ । अहंकारममता परिहरौ ॥
सूक्ष्मस्थूल सकलविस्तारा । एकहि आत्माके आधारा ॥
सो आधारब्रह्मके जानो । ऐसी बिधि भवके भयमानो ॥
याविधिवेदअर्थकोजानो । बहुरिहृदयनिश्चलकरिआनो ॥
दुहूंलोककी आशा छंडौ । या विधिअंतराय सब खंडौ ॥
जितनी याके आशा होई । तितनो विघनकरै सब कोई ॥
ज्योंज्योंतजते जावैं आशा त्योंत्योंमिटै विघनके पाशा ॥
जबयहहोय आत्मारामा । तबतहँनाहिं आशाको धामा ॥
तब विघननके करता देवा । तेई उलटि करैं तासेवा ॥
तातेंबिधिनिषेध सबनाखो । आशाछोडि हृदैहरि राखो
एकब्रह्मकरि सबको देखो । दूजो कबहु भूलिनहिं लेखो
अरुजिनिपायो ब्रह्मज्ञाना । तिनिके बिधिनिषेध नहिंनाना
परितनके नितहीं बिधि होई । कहेनिषिद्ध नपरसै कोई
वैसुखदुख गुणदोष न जानैं । बालकसम आचरणन ठानैं ॥
परविधि सारी सेवा करैं । अरु निषेध आपुहि परिहरैं ॥
ब्रह्मपरसुहृदसदाअतिशांत । ज्ञानविज्ञानसहितानितदांत ।
सबजग ब्रह्मजानि थिर होई । बहुरो जनम न पावे सोई ॥
ऐसेसुनि हरिजीके बैना । अतिदुष्कर अरु अतिसुखदैना
तत्वसुननकी बाढी प्यासा । तब बोले उद्धव निजदासा

उद्धवउवाच ।

योगस्वरूप योगउपजावन । योगदानि योगेश्वर भावन ॥

तुम यहत्यागकह्यौमेरेहित । सोदुखकरआवैनाहींचित ॥
क्योंहोवैविषयिनको त्यागा । पुत्रकलत्रादिक अनुरागा ॥
यहतन यहधन ये सुत मेरे । ये वनिता ये गृह ये चेरे ॥
याविधिमम अहंकारसमुद्रा । बूडिरह्योमैं मतिको क्षुद्रा ॥
तुम्हरीमाया अतिभरमायो । ताते ज्ञानहृदयनहिंआयो ॥
अबतुममोशिष्याहि उपदेश्यो । मेरेउर कछुज्ञानप्रवेश्यो ॥
तातेअबबहुविधिसमुझायो । ममउरपूरण ज्ञानबढायो ॥
जातेसबतजितुमकोपाऊं । बहुरोजगतजनमिनहिंआऊं ॥
अरु दूजो ऐसो नहिं कोई । जाते लाभ ज्ञानको होई ॥
ब्रह्मादिक तनुधारी जेते । तुव मायावश कीन्हें तेते ॥
ताते मायाहीको देखैं । कर्मऽरुभोग भलेकारि लेखैं ॥
तातेमैं जनतुम्हरी शरना । सो कीजै पाऊं तुवचरना ॥
तुम्हरो आदि न अंतनपारा । ज्ञानरूप सबहींते न्यारा ॥
सोईतरै गहौकर जाको । माया कछुनसकै करिताको ॥
तुमहींते उपज्यो यह जीवा । जस अग्निहुते बहुदीवा ॥
सदारहै तुम्हरी आधारा । नितउठि पोषै सिरजनहारा ॥
ऐसे प्रभुको सेवै नाहीं । ताते परै परमदुख माहीं ॥
याभवके दुखकहैन जाहीं परचोनिरंतर म तिनमाहीं ॥
अबमोको शरणागतजानो । देकरज्ञानसकलभयमानो ॥
मेरे तनमनधन तुवचरणा । मनवचक्रम आयोमैं शरणा ॥
ऐसे सुनि उद्धवके बैना । हँसिकरि बोले अम्बुजनैना ॥

श्रीभगवानुवाच ।

उद्धवमैं कहिदेवों ज्ञाना । सत्य कहतहौं नाहीं आना ॥
या जगसाधु भयेहैं जेते । आपुहि आपु उद्धरे तेते ॥
आपुहिं भलो बुरो पहिचानै । छोडैं बुरोभलेको टानै ॥
गुरुआपनों आपुहीं होई । पशुपक्षी भावै जो कोई ॥
परनरतन ऐसोहै नीको । ब्रह्माआदि सबनिको टीको ॥
जाते ब्रह्मविचारहि पावैं । बहुरो जगतजननि नहिं आवैं॥
इकपद द्वैपद त्रयपद एका । चौपदादि बहुपाद अनेका॥
मैंबहुभाँति सृष्टि विस्तारी । तिनमें प्रियनरदेह हमारी ॥
मुँहिपावै सोयाकरिपावै । औरसबनि सुखदुःखभोगावै ॥
यामें मेरो करै बिचारा । सावधानहै बहुत प्रकारा ॥
भाई यहतो जडहै देहा । इंद्रियादि अरु सकल सनेहा ॥
अपने अपने अर्थनि गहैं । सोयंशक्ति कौनकी लहैं ॥
अरुसोवत जब सुपनापावैं । तबतौ इंद्रिय तनछिटकावैं॥
सुपनमाहिं सुखदुखको लहै । जागेबात सकलको कहै ॥
ताते मैंतो यह तन नाहीं । मैंतो वासकियो या माहीं ॥
त्योंबनितासुतबितपरिवारा । मेरोतौनहिंसकलपसारा॥
येतो सकल देह सँगजाहीं । सो यहदेह कबहुं मैं नाहीं ॥
जाते सुपनमाहिं नाहिं कोई । ऊंहां सकल औरई होई ॥
अरु भाइमैंतो वह नाहीं । जो तनदीसै सुपने माहीं ॥
जातेवह ऊथिरनरहावै । वाको तजि यामें फिरि आवै ॥

बातें यह याते वह झूठी । यह दृढज्ञान गह्योमैं मूठी ॥
जो इनदुहू देहको लहै । इंद्रिन ह्वै सब अर्थनि गहै ॥
इंद्रियबुद्ध्यादिकअरुबानी । जाकोकोईसकै न जानी ॥
सामैं नित्यनिरंतर एका । उपजै बिनशै देह अनेका ॥
भाईसोमैंकहते आयो । किनतनदीन्ह्यो किनउपजायो ॥
अबतोमैं द्वैदेहअधारा । पलको रहि नसकौं निरधारा ॥
ये दोऊ तजि कामैं रहौं । सोहै सत्य ताहि दृढ गहौं ॥
ऐसे बहुविधि करै विचारा । त्यागै देहादिक परिवारा ॥
सो जहँ तहँते लेवै ज्ञाना । कबहूँ कछू न जानै आना ॥
याविधि आपु आपुको तारैं । लहैब्रह्म भवदूष निवारैं ॥
यह विचार मानव तन होई । दूजो भूलि न पावै कोई ॥
तातेतू मानवतन पायो । अरुकछुइकमैं तोहिलखायो ॥
तातेतजौ सकलको संगा । मनक्रमवचन होहुनिहसंगा ॥
सबते परे आपुको जानों । सो आधार ब्रह्मके मानों ॥
जहांतहां लेवौ उपदेशा । या विधिकरौ ब्रह्मपरवेशा ॥
ऐसे जहांतहां लैज्ञाना । बहुतक भये ब्रह्मपरवाना ॥
तिनमेंकहौ एककीबाता । जोइतिहासकथाविख्याता ॥
दत्तादिगंबर अरु यदुभूपा । तिनको है संवाद अनूपा ॥

दोहा–सुनिउद्धवइतिहासअब, भाषौंपरमअनूप ।
वक्ता दत्तात्रेय जहँ, अरु पृच्छक यदुभूप ॥

एकसमैभूपतियदुनामा । गयेसिकारछोडिनिजधामा ॥

रुवतानगरनिकटहै सूता । देख्यो एकपरम अवधूता ॥
निर्भयनिश्चलइच्छाचारी । तेज निधानतरुणतनधारी ॥
करिपरनामबहुतपरकारा । यदुभूपतितबवचन उचारा ॥

यदुरुवाच ।

हेप्रभुपूरण परमदयाला । कहौ कृपाकरि होउ कृपाला ॥
ऐसीबुद्धि कहां तुमपाई । जाते बिचरौ सहज सुभाई ॥
भये अकर्त्ता इच्छाचारी । बालकसम सबचिंता टारी ॥
सबजगनिशिदिन यहै विचारै । धर्मरुअर्थकामाविस्तारै॥
सोई नहिंउपजै दुखपावैं । तिनसों लगिसब आपुगवाँवैं ॥
तुमसमरथसबईविधिजानौ।क्रियानिपुणाप्रियबैनबखानौ ॥
सबविधि सरसतरुण तनसुंदर । तुष्टपुष्टकोलिपै न दुंदर ॥
नाकछु बंछो नानकछु करौ । जडउनमत्तजिमैं वीचरौ ॥
तृष्णाकामलोभ दवलागी । सकललोक दाहैतिन आगी॥
तुम अनंदमय दाहैं नाहीं । ज्यों गयंद गंगोदक माहीं ॥
देहअर्थ सबहीके त्यागे । रहौ अनंदित सोकिहि लागे ॥
संग न कोई राखौ देवा । कोई लहि न सकै तुवभेवा ॥
ताते कहो कृपाकरि नाथा । भवजलबूडत पकरो हाथा ॥
योंयदुभूपति विनती करी । तब अवधूतगिरा उच्चरी ॥

अवधूत उवाच ।

सुनियदुभूपपरमबडभागी । जाकीमतिहरिसोंअनुरागी ॥
बहुतै हैं मेरे गुरुदेवा । जिनते मैं सब जान्यों भेवा ॥

परमैमतोआप्तुते लीन्ह्यों । तिनमें सोकिनहूंनहिंचीन्ह्यों॥
तेगुरुसकलसुनौतुममोसों । हरिजनजानिकहतुहौंतोसों ॥
धरनीपवनगगनअरुपानी । अनलचंद्ररविकपोतहिजानी॥
अजगरसिंधु पतंग रु भृंगा । कुंजर मधुहरता रु कुरंगा॥
मीनिपिंगलाकुरर रुबाला । कन्यासरकरता अरुव्याला ॥
मकरी भृंगी ये चौबीसा । इनते सीख्यो सुनहुँ महीसा ॥
प्रथमैं धरणीमें गुणदेख्यो । सोमैं परमतत्त्वकारिलेख्यो ॥
सबैरहैं धरणी आधारा । तापर मूढकरैं अपकारा ॥
ठौरठौर अतिउत्तम अंगा तिनको करै बहुतविधिभंगा ॥
ताके पर्वत वृक्ष अनंता । परउपकार सबै बरतंता ॥
परअपराध कछू नाहिं जानै । उलटिआप उपकारहिंठानै॥
ऐसी सीखधरणिकी लेवै । जो जन हरिचरणनको सेवै ॥
प्राणवायुज्यों लेइ अहारा । स्वादकुस्वाद न कोईप्यारा ॥
ज्योंहरिजनआहारहिलेवै । स्वादकुस्वाद नहीं चितदेवै ॥
विनआहारविचारनआवै । स्वादकुस्वाद न मन ठहरावै॥
ताते येतो लेइ अहारा । जेतो होवै प्राण अधारा ॥
अरुज्योंपवनफिरैजगमाहीं । शुद्धअशुद्धलिपैकछुनाहीं ॥
नाना भेदनमें संचरै । प्रिय अप्रिय गुण दोष न धरै ॥
ज्योंविषयानि गृहतेहूं योगी । मनक्रमवचन न होवैभोगी ॥
भेद अनेकनमें अनुसरै । पर कछुभेद हृदय नाहिं धरै ॥
अरु ज्यों पवन गंध संयोगा । लिप्तभयो जानैसबलोगा ॥

परसो पवनसदा इक रूपा । लिपैनकबहूं सोइ अनूपा ॥
पंचभूत निरमित त्योंदेहा । सकल विकार नहीं कोगेहा ॥
तामें योगी लिप्त न होई । और लिपतजानै सब कोई ॥
ज्योंसबहिनमें एकअकासा । अरुसबहिनकोतामैंवासा ॥
सब उपजैंविनसैंवरताहीं । गगननालिपै कालतिहुँमाहीं ॥
त्योंबहूविधिसबजगतपसारा । मुनिदेखेआतमआधारा ॥
जो कछुदीसै जडहै सोई । जाके सँगते चेतन होई ॥
ज्यों आतमदेहनिमें देखै । त्यों परमात्म जहाँतहँ लेखै ॥
एकअनंतनकहुँ आवरना । लिपैनछिपैजनमनहिंमरना ॥
सो परमातम आतम एका । कबहुँ नदेखैभूलि अनेका ॥
ज्योंज्यों गगन घटनमें होई । बाहरहूं पुनि जहँतहँ सोई ॥
कहिवेको द्वैनांतर एका । यों आतम अरु ब्रह्मविवेका ॥
ज्यों बहुमेहपवन दामिनी । बरषै बहु वासर यामिनी ॥
परिनभालिप्त कबहुँ नाहिं होई। और लिप्तजानैं सबकोई ॥
त्यों आतममें देह अनंता । उपजैं वरतै पावै अंता ॥
परआत्मालिप्त कहुँ नाहीं । साधुबिचारै यों मनमाहीं ॥
यहअंबरगुण तोहिं सुनायों । अब भाषौं जोजलतेपायों ॥
नितनिर्मल औरन मलहरै । तापमेटि शीतलता करै ॥
सब सुखदायक हितरसवंता । ये गुणजलके सीखे संता ॥
तेजवंत अतिदीपति युक्ता । क्षोभरहित जहँतहँनिर्मुक्ता ॥
स्वादरहित सब भक्षणकरै । अग्निनालिपै संचि नाहिं धरै ॥

त्योंहीं ज्ञान तेजमय होई। इंद्रियादि कृशदीपतिसोई॥
यद्यपिबहुविधि भोजनकरै। स्वादरहित गुणदोषनधरै॥
काहूहुते क्षोभ नाहिं होई। काहूके गुणमिलैं न सोई॥
उदरप्रमाण लेइ आहारा। कछुनहिं जानैं संचय सारा॥
गुप्तरहै नहिं भूलि जनावै। किन्हें प्रगट प्रगटह्वै आवै॥
परइच्छा आहुतिको लेई। तिनके पापरहैं नहिं देई॥
त्यों मुनिगुप्त आपुते रहै। खोजि लेइ ताको भ्रमदहै॥
उत्तम भोजनादिहू होई। परइच्छाते लेवै सोई॥
बहुरोंअग्नि एकरस एका। बहुविधिदीसैं काठअनेका॥
त्यों आत्माएक सबमाहीं। भेद देहकृत साँचे नाहीं॥
दिवामशाल प्रगटज्यों होई। ज्वालाजात लखैसबकोई॥
परसेदीसैं ज्योंके त्योंहीं। प्रतिदिन देहजातहै योंहीं॥
जैसे शशिके बाढैकला। त्योंत्यों दिनादिनदीसै भला॥
पूरणह्वै करिदिनादिन नाशै। सकलमिटेते नहीं प्रकाशै॥
त्योंबालादिअवस्थाआवै। ह्वैकरितरुणक्रमाहिंक्रमजावै॥
तब आत्मादेखिये नाहीं। परिहै सदा कालतिहुँमाहीं॥
ज्यों रविकिरणनिसोंजललेवै। समयपाय बहुरासबदेवै॥
परकबहूंअभिमाननआनै। लियोदियोआपुहिनाहिंमानै॥
ज्योंमुनिकहैसुनै अरुदेखैं। सकलअर्थ इंद्रिय कृतलेखैं॥
नितआत्मा अकर्त्ता जानैं। सबतजिब्रह्मविचारहिठानैं॥
ज्यों घटजल प्रतिबिंबित सूरा। लिखदेखियेपरिहै दूरा॥
त्यों आत्मा देह सम्बंधा। थूलदृष्टि जानतहै बंधा॥

गुरुरुवाच ।

अबकपोतकी कथा सुनाऊं । तेरेमनके भ्रमहिमिटाऊं ॥
एक कपोत कपोतीसंगा । वनमें कीन्हों गृहपरसंगा ॥
आपुआपुमें अति आसक्ता । आठपहरमेंपलुनविरक्ता ॥
मनसों मन अंगनसों अंगा । नैननैन बन्धो बहुरंगा ॥
आसनगवन अशन असथाना । सैनबैनसारीविधिनाना ॥
मिले सकल कर्मनको करैं । निरभयरहैं न कबहूं डरैं ॥
सोकपोतवनितावशकियो । हावभावतनमनहरिलियो ॥
वनिता जो बंछैसोलावै । कष्टसहित जाही विधिपावै ॥
सोअस्त्रीजितज्योतुमराजा । अपनोलखैनकाजअकाजा ॥
तनमय भयो निरंतर रहै । प्राणनहूंते ताहि प्रियकहै ॥
ताकीत्रिया अंड उपजाये । तिनमें मनहूंनो मिलिलाये ॥
तब हरिमाया शिशुनिमये । कोमल अंग रोमते भये ॥
तबदोऊमिलितिनकोपोषैं । बहुतभांतिनिशिदिनसंतोषैं ॥
कोमलवचन सुनैं मुखदरशैं । अपने अंगअंगसोंपरशैं ॥
हरिकी मायाबहुत भुलाये । आपुआपुमें सकलबँधाये ॥
पुत्रस्नेह रहैं अनुरागे । शिरपरकाल न लखैं अभागे ॥
एकबार बालनके कारण । चारालेन गयेते आरण ॥
ताहीसमयव्याधइकआयो । बालकदेखिजालविथरायो ॥
देख्योकनानिनदेख्योजाला । बंधेआनिसकलखगबाला ॥
तबदोऊ चाराको ल्याये । तिन गृहमाहिंनबालकपाये ॥

तब देखे माताते बाला । बंधेजाल महा बेहाला ॥
तबसो तहाँ पुकारत धाई । जालमाहिं सुतहेत बँधाई ॥
तब कपोतदेखै सबबंधे । हरिमाया कीन्हें अति अंधे ॥
तबसो बहुविधिकरे विलापा । लेखै बहुत आपनेपापा ॥
हाहा पाप कौन मैं कीन्हें । ऐसे दुःख दईमोंहि दीन्हें ॥
जाकी यह पतिव्रता नारी । पुत्रनलै सुरलोक सिधारी ॥
मोहिं छोडि सूने गृहमाहीं । सब मिलिआपुइंद्रपुरजाहीं ॥
नामैंसुखभोग्यो इहिलोका । नहिंसाधनपायोंपरलोका ॥
धर्म रु अर्थकाम सब जामें । कछुवेनहीं रह्यो गृहतामें ॥
अबप्राणनराखै कछुनाहीं । घरीघरीमें दुखअधिकाहीं ॥
याविधिभयो बहुत बेहाला । बँधदेखिवनिताअरुबाला ॥
व्याकुलबुद्धिविचारनकर्‍यो । आपुहिआयजालमैंपर्‍यो ॥
सहितकुटुंबकपोतहिपायो । तबही भयोव्याधमनभायो ॥
ऐसा मैं कपोतकहदेखी । तब अपने हिरदय यहलेखी ॥
यों कुटुंब होवै जाहीके । तृष्णा राग बढै ताहीके ॥
जीवतअति आरंभनिकरै । सहितकुटुंब काल मुखपरै ॥
याविधिजो मानवतन पावै । सोतो द्वारब्रह्मके आवै ॥
ताहूपर जो गृहहित करै । सो नर ब्रह्मद्वार चटपरै ॥
तातेभोग कुटुंब रु गेहा । तिनको जीव लहै प्रतिदेहा ॥
ऐसो मानव तन न गँवैये । जाकरिदेव निरंजन पइये ॥

दोहा-यह भाषी गुरुआटकी, शिक्षा मैं तुव पास
अबऔरनिकीकहतहौं, ज्यों छूटैं भवपास ॥

इति श्रीभागवतेमहापुराणएकादशस्कंधेभगवदुद्धवसंवादे
अवधूतेतिहासोपाख्यानेसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

अष्टमोऽध्यायः ।

दोहा-शिक्षा नवमीआदिले, कही आठवेंमाहिं ।
ज्योंज्योंभाषतदत्तजी, त्यों यदुमनहर्षाहिं ॥

अवधूतउवाच ।

जे इंद्रियसुखकछुक कहावैं । तेतोस्वरगहुनरकहुआवैं ॥
ज्यों शूकरकूकरसुख माहीं । त्योंहींदेवऔरकछुनाहीं ॥
अरुसोसुखआपुहिंते आवै । कर्मलिखोसोकोइनमिटावै॥
ज्यों कोई दुखको नहिंचहै । परदुखआय आपुहींरहै ॥
त्योंही सुखआपुहिंते आवैं । विनजाने नर बहुदुखपावैं ॥
तातेबुध सुखनाम न लेवै । होइ अकर्त्ता हरिपद सेवै ॥
स्वादकुस्वादबहुतकैथोरा । जो हरिजापठवैतिसओरा ॥
ताको भक्षै रहै उदासा । अजगरवृत्ति गहै यह दासा ॥
जो कबहूँ आहार न आवै । तौथिररहै न कछु मनलावै॥
कर्मअधीन देहको जानैं । मनक्रमवचन न उद्यमठानैं ॥
अतिसमर्थ इंद्रिय मनदेहा । परकछु उद्यम करै न येहा ॥
निश्चलब्रह्म निरंतर सेवै । यहशिक्षा अजगरते लेवै ॥

दरशपरशकारिपरमगँभीरा। अधिकअगाधज्ञानसोंनीरा॥
वारपार काइ थाह न लहै। ये गुण मुनि सायरके गहै॥
ज्योंवरषा बहु नीरप्रवेशा। सायर कबहूँ बढै न लेशा॥
ग्रीषममें कछु हीन न होई। सदासमृद्ध आपुते सोई॥
त्योंकोई बहुविधि अरचावै। भोजनवस्त्रादिक पहिरावै॥
अस्तुतिमान बडाई देवैं। बहुतभांति बहुतै मिलि सेवै॥
अरु एकैलैजाहिं उतारी। निंदादिक ठानै इकभारी॥
परिनारायणमय मुनिमाहीं। रागद्वेष कछु उपजै नाहीं॥
वनितावस्त्रकनकआभरना। बहुविधिमायाकेउपकरना॥
इनमें आय परै जो कोई। अग्निपतंग समां सो होई॥
जौंलगिमुनिसमुझै निजदेहा। जांचिअहार लेइबहुगेहा॥
जातेकहुँ अनुराग न बढै। यह शिक्षा मधुकरते पढै॥
छोटे बडे बहुताविधि ग्रंथा। तिनते सार गहै हरिपंथा॥
ज्योंमधुकरबहु फूलनि माहीं। वासगहै फूलनकोनाहीं॥
सोमधुकरद्वैविधिको कहिये। दुहूंपासते शिक्षालहिये॥
बहुत गृहानिते लेइ अहारा। उदरप्रमाण एकहीं बारा॥
दूजेको कछु संचि न धरै। निरभयब्रह्म विचारहि करै॥
संग्रहभूलिकरै जो कबहीं। मधुमाखी ज्यों विनशतवहीं॥
पुतली काठहुंकी जो होई। पगहूं छुधपरसै सतिकोई॥
परसकरत होवै दृढ बंधा। ज्यों करिंदकरनी संबंधा॥
मृत्युजानि वनिताको तजै। पंडित कबहूं भूलि न भजै॥

भजतेहोवैंकरी समाना । एकहिं मिलिमारहिंगजनाना ॥
जो कोई धन संग्रह करै । सो कोई औरै परिहरै ॥
ज्यों मधुमाखी मधुसंग्रहहै । मधुहासो उद्यम विनुलहै ॥
हरिविनुगति सुनैनाहिं औरा । गयोचहै जो हरिके ठौरा ॥
और सुनतहोवै गति ऐसी । व्याधगीत हरिणाकी जैसी ॥
सुनौहरिणगतिसुनिवहुरंगा । शृंगीऋषिज्योंगणिकासंगा ॥
अवलाधीन मुक्तऊ होई । तिनके शब्दसुनै जो कोई ॥
मुनिजिह्वा आशक्तिनकरै स्वादकुस्वादसकलपरिहरै ॥
जिह्वा रसते होवै काला । जैसे मीन मरै ततकाला ॥
जे मुनि सब अर्थनि परिहरैं । जाय इकंत वासको करैं ॥
सहजहोहि इंद्रिय सबक्षीना । परिरसना नाहिंहोयअधीना ॥
रसना सबको फेरि जियावै । जबहीं रससंयोगहि पावै ॥
जो सब इंद्रिय जीतै कोई । परिरसना करमैंनहिं होई ॥
तेलगिसकलवृथा करिजानी । रसनाजीतिजीतिकरिमानी ॥
ताते मुनि रसनावश करै । और सकल साधन परिहरै ॥
एजो एक एक वश भये । ते सब यमके द्वारे गये ॥
परिजो एक पंचवशहोई । ताके दुख जानैगा सोई ॥
वहुरिएक गणिका पिंगला । तातेमैं सीख्यों गुनि भला ॥
सो तुमसों भाषतहौं राजा । जातेसरैं तुम्हारे काजा ॥
जनक विदेहपुरीमें वासा । नाम पिंगलारूपनिवासा ॥
एकवार शृंगार वनायो । धनीपुरुष मनमें ठहरायो ॥

बैठीनिकासि भवनके द्वारा । आगेचलैं लोग बाजारा ॥
कोई भलौ आवत दे‍खै । यह आवैगो यों करि लेखै ॥
जब वह आगेको चलिजावै । तबपिंगला औरको ध्यावै॥
औरौंआयआय चलिजाहीं । त्योंत्योंयहदुख पावैमाहीं ॥
कबहू उठिभीतरको जावै । कबहूं व्याकुल बाहर आवै॥
अर्धरात्रि ऐसी विधिभयो । लोगबजार चलत रहिगयो॥
तब वह भगनमनोरथ भई। चिंतादुःख अनलअन भई ॥
अपनोतिरस्कारकरिमान्यो ।सबतेहीन आपुकोजान्यो॥
तब ताको कोई बड भागा । जाते उपज्यो दृढवैरागा ॥
जोलगिनहिं उपजैनिरवेदा । तौलगिनाहिंमिटै भवखेदा ॥
याभवनखशिखदुःखअनेका । तामैं परम रतनसुखएका ॥
बंधन बँध्यो जीव अपारा । तिनको हरिजी रच्यो कुटारा॥
ताकीमहिमा कही न जावै । जाके भागबडे सो पावै ॥
जाको नाम कहैं वैरागा । सोतो हरिको दियो सुहागा ॥
जाहिदेहिं सोई येपावै । भवभय छोडि ब्रह्ममें जावै ॥
तातेमानव सब छिटकावै । ज्योंत्योंकरि वैराग उपावै ॥
तब पिंगला वचनउच्चारै । बहुतभांति आपुहिंधिक्कारै ॥
गये दिननको अतिपछतावै । सबते दृढवैराग उपावै ॥

पिंगलोवाच ।

अहो एक मेरो अज्ञाना । जाके हृदयबढ्यो भ्रमनाना ॥
जलबुदबुदसमजोनरदेहा । तासांसुखाहिताकियो सनेहा ॥

सरवरजलपूरणतजिपासा। मृगजलधायकरीजलआसा॥
चारिपदारथ दाहकदेवा। सदानिकटको लह्यो न भेवा॥
सत्यसदासुखदायकस्वामी।सोछोड्योनिजपतिघननामी॥
झूठो सदा कालसुखमाहीं। जातेदुःखशोकअधिकाहीं॥
ऐसो पुरुष ताहि मैंभज्यो। आपुहिदुःख आपुको सज्यो॥
देहबेचि मैं देहहि पोष्यो। याहीभांति मनहि संतोष्यो॥
स्त्रीलंपट तृष्णा दाह्यो।। दुःखितनरसों मैं सुखचाह्यो॥
हाडमेद मज्जा अरु अंत। मास रुधृत्वच रोम अनंत॥
विष्ठा मूत्र स्वेद कृमिगेहा। झरै द्वारनव ऐसी देहा॥
तामें कहा रमितको होई। मोसों मूढ और नहिंकोई॥
यापुरमाहिंजनकनृपऐसे। सुखअधिकारसुरेसुरजैसे॥
ताहूपर सब सुखको तजैं। ह्वै विदेह हरिचरणनिभजैं॥
अरुसबप्रजाभजैंहरिचरणा। जातेमिटैंजन्मअरुमरणा॥
जाको भजैं ब्रह्मशिव शेषा। परसो तिनहूं कबहुं न देषा॥
ऐसे प्रभुको जे नरसेवैं। तिनको रीझि आपुको देवैं॥
ऐसोप्रभुमैं नहिंआराध्यो। कियोअनर्थअर्थनहिंसाध्यो॥
अबमैं आपु निवेदनकरौं। और सकल उरते परिहरौं॥
अपने पति हरिजीके संगा। सदारमौं ज्यों श्रीअरधंगा॥
कहा और सुरनर प्रियकरिहैं। जेबापुरे आपुहीं मरिहैं॥
अरुते सुखकाई थिर नाहीं। देखतसकलपलकमें जाहीं॥
मेरी दृष्टिदुखी सब आवैं। कालअधीन कहा सुखपावैं॥

तातेयह मैं निहचय जानी । कृपा करी है शारँगपानी ॥
जिन मेरे वैराग उपायो । अपने चरणकमल चितलायो ॥
यह हरिकृपा विना नाहिं होई । जो वैराग लहै नर कोई ॥
जातेसब भवबंधन नाशै । हृदय रमापति आपु प्रकाशै ॥
मैंतो मंदभागिनी ऐसी । त्रिभुवनमाहिं नहींको जैसी ॥
ताको कैसो हरिकोभजनो । कैसो कालजालको तजनो ॥
परते दीनबंधु गोपाला । पतित उधारन परमदयाला ॥
तिनहीं आपु कृपाहै करी । जिन मेरे उर ऐसी धरी ॥
अबलैयापरसादहिंशीशा । निशिदिनभजोंचरणजगदीशा ॥
जितने या देहहि निरबाहौं । सोऊ नाहि आरंभ संबाहौं ॥
सहजमाहिं जो हरिजी लावैं । ताकरिया देहहि बरतावैं ॥
याभवकूपपऱ्यो नितप्रानी । विषय आवरण दृष्टिछिपानी ॥
तापरअजगर कालगरास्यो । ये नरबहुत पाशसों पास्यो ॥
ताकोहरिविन कौन छुडावै । आपुहिंको नहिंछूटनपावै ॥
अरु आपुहीं आपुको राषै । जबसब वस्तु हृदयते नाषै ॥
जबहीं हरिकी शरणहि आवै । तबहींआपुहिंआपुछुडावै ॥
वे प्रभु निजानंदमयदेवा । कहा करेको तिनकी सेवा ॥
परसबजगतकालछिटकावै । हरिकीशरणआपुसुखपावै ॥
ताते और सकलको तजौं । प्रेमभाव हरिचरननि भजौं ॥
याविधआपुहिं आपुउधारौं । अबनाहिं भवसागरमें डारौं ॥
जो पिंगला परमगति पाई दुहूंलोककी आश मिटाई ॥

शीतल है शय्यामें गई । परमअनंदहिं प्रातः भई ॥
यहशिक्षा मैं ताते लीन्हीं । भलीजानिउरआस्थिरकीन्हीं॥
जौलगि आशकरै नर कोई । तौलगिसुखीकबहुँ नहिंहोई॥
जबहींसकल आशछिटकावै । तब ततकाल परमपदपावै॥
दोहा–यह गुरु सत्रहकी कही, शिक्षा मैं समुझाइ ।
अब औरनिकीकहतहौं, सुनियोहितचितलाइ ॥

इतिश्रीभागवतेमहापुराणे एकादशस्कंधेभगवदुद्धवसंवादेअ-
वधूतेतिहासोपाख्याने पिंगलागीतनामाष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

नवमोऽध्यायः ।

दोहा–श्रीधरनवमें ध्यायमें, शिक्षाकही अनूप ।
गुणचौवीसौसुनतही, भयोकृतारथभूप ॥

अवधूत उवाच ।

जो जोहितकारि संग्रहकरै । सोईसोअति दुख विस्तरै ॥
जबहींहितसंग्रह छिटकावै । तब अपारसुखसागर पावै ॥
कुररपक्षिकहुँआमिष पायो । सोलैउड्योबहुतहितलायो॥
तब बहुते कुररनि दुखदयो । आमिषतज्योसुखीतबभयो॥
यह मैं सीख कुररते पाई । जाते संग्रहकरौं न काई ॥
बहुरि सीख बालकते लई । मेरे उर जाते मति भई ॥
न मैंमानअपमानहिं जानौं । चिंताकछूचित्तनहिंआनौं॥
निशिदिनरहौं आत्मा रामा । कबहूं कछू न उपजै कामा॥

याभवमें द्वैहीको सुख है । और सकलजीवनको दुख है ॥
उद्यमरहितबालमतिहीना । अरु जो गुणातीतपदलीना॥
एक विप्रके हुती कुमारी । ता विवाहकी विप्र विचारी॥
ताके मात पिता इक बारा । औरगांवकहुँकामसिधारा ॥
समाचारइकविप्रने पाये । व्याहकाजद्विजके गृहआये ॥
कन्यावचनकिसीसोंभाषे । तिनते द्विजआदर करिराषे ॥
तबतिनके भोजनकीधारी । चावरकूटन लगी कुमारी ॥
तब ताके कर ज्यों ज्योंडोलैं। त्योंहींत्यों करकंकनबोलैं॥
तिन लज्जित ह्वै सकल उतारे । द्वै द्वै दुहूं हाथमें धारे ॥
बहुरि लगी जब चावर छरने । तोहूं लगे शब्दते करने ॥
तबतिनएकएकई राष्यो । चुपकरिरहैबहुरिनाहिंभाष्यो ॥
मैं विचरत तो इच्छाचारी । ताते देखि हृदयमें धारी ॥
बहुतनि संग बढै बकवादा । द्विजहूते होवे अनुवादा ॥
ताते रहै अकेला योगी । सदा विचार ब्रह्मरस भोगी ॥
आसन प्राण देह मन बंधैं । दृढ वैराग हृदयमें संधैं ॥
निह्चलह्वैनितब्रह्मविचारै । ज्योंक्रमक्रमरजतमको जारै ॥
त्योंत्योंनिह्चलबढैसमाधि। तजते जावैं सकल उपाधि॥
तब ज्यों पावक इंधनहीना । त्यौं होवैनिजपदमें लीना ॥
तबकबहूं कछुद्वैत न जानै। शिलासमान देहगुनभानै ॥
ज्यों आगे ह्वै नरपति गयो । सेनाशब्द बहुत विधि भयो
परसरकारभेद नहिंपायो । याविधिसरमें चित्त लगायो ॥

ऐसी सीख लईमैं ताते । निश्चलबुद्धि भई मम जाते ॥
ज्यों लोगनते डरै भुवंगा । वसै गुहामें रहै असंगा ॥
सावधान अतिथोरोबोलै । गत्यादिकअंतर नहिं खोलै॥
गृहआरंभ दुःखको मूला । ते आरंभै जे नरभूला ॥
सर्पपराये गृहमें रहै । या विधिमुनि अहि शिक्षागहै ॥
एकहि आपु निरंजन देवा । जाको कोई लहै न भेवा॥
आपुहिंते माया विस्तारै । सतरजतम बहु भेद पसारै ॥
बहुरि आपुहीं सब संग्रहै । निजानंदमें एकै रहै ॥
ताते यह सबमिथ्या जानै । याको करत्तासो सतिमानै ॥
यह शिक्षा मकरीते लेवै । सबते परे ब्रह्मको सेवै ॥
जहांजहां यह मनको धारै । निशिवासर कबहूं नहिंटारै॥
रागदोष भय कोही होई । होत रूप ताहीको सोई ॥
भृंगीकीटहुते यह लीन्हों । तो मनहरिचरणन थिरकीन्हों
यह चौवीस गुरुनकी शिक्षा । तोसोंमैं भाषी दृढदिक्षा ॥
अब तनते सीख्यों सो कहौं । तेरे सब अज्ञानहि दहौं॥
मेरी देह मोहिं समुझावै । हृदयज्ञान वैराग उपावै ॥
ज्यों बालापन गयो बिलाई । त्योंहीं अब यह यौवन जाई
आवै जरामरण ता आगे । बहुविधि दुःखदेहसों लागे ॥
श्वान शृगालनिको यह भक्षा । तासों प्रीति न जोरै दक्षा
पुत्र कलत्र अर्थ पशु गेहा । कुलकुटुंब बहुसेवक जेहा ॥
तिनसों मिलिया देहहिं सेवै । सोई अंत महादुख देवै ॥

आगेको बहुकर्म उपावै । अब यमके दरबार पठावै ॥
रसनिमित्तखैंचे नितरसना । प्राणसदाचाहै जलअसना ॥
नयनरूपअरुशब्दहिंश्रवना । इंद्रियचहै नारिकौरवना ॥
त्वचास्पर्श नासा बहुगंधा । वरनवरनकर करिहैधंधा ॥
या विधिसबमिलि लूटैंताको । बँध्यौ देहसों देखें जाको ॥
ताते नेह देहको तजिये । सदा निरंतर हरिको भजिये ॥
हरि जब मायागुन बिस्तारे । तब नानाविधि देहसवाँरे ॥
तिन तिनमन संतुष्ट न भयो । बहुरौं मानवतननिरमयो ॥
ताकोदेखि बहुत सुखपायो । तामें अपनो धामबनायो ॥
तब हरिजी बोले यह बानी । जो परगटहै वेदबखानी ॥
मोहिलहै सो या करि लहै । या करि सब भवबंधन दहै ॥
जब मेरेहित करै उपाया । तबमैं याको करों सहाया ॥
तातेयहअति दुर्लभदेहा । श्रीभगवान रच्यो निजगेहा ॥
अतिदुर्लभकहुंजतन न पावै । जो पायोतौथिर न रहावै ॥
प्रतिदिनमृत्यु निरंतरग्रासै । एकादिना ततकाल बिनासै ॥
जरारोग भयशोकनिधाना । जामें पलकसुखीनहिंप्राना ॥
ताते ताहि पाय करिराजा । करिलीजियेआपनोकाजा ॥
जाते यह छूटै संसारा । जाके दुखको वार न पारा ॥
निशिदिनदेवनिरंजनभजिये । ह्वैभयभीतविषैसबतजिये ॥
विषया खान पान सुत दारा । ए सब देहनिबारंबारा ॥
ताते त्यागसकलको कीजे । हरिकेचरणकमलचित दीजे ॥
या विधि इनते शिक्षा पाई । तबमैंऔरसकलछिटकाई ॥
भूमें बिचरौं ह्वै निहसंगा । या तनहूंको छोड्यो संगा ॥

सदा रहौं हरिचरणनिवासा। बहुविधि देखौं सकल तमासा॥
बहुत गुरुनते पूरणज्ञाना। जहँ तहँ लेवै साधु सुजाना॥
छूटै अहंकार अरु ममता। हिरदै आन विराजै समता॥
निर्गुण सगुण भेद पहिचानैं। सार असार अथिर थिर जानैं॥
जहां तहां लै लै दृष्टांत। संशय द्वैत मिटावै संत॥
पर ये परमारथ गुरु नाहीं। ये सब गुरु हैं सतगुरु माहीं॥
सतगुरुते जब ज्ञानहु पावै। तब सारो जग ज्ञान सिखावै॥
तातें मेरे सदा अनंदा। हृदय बिराजैं परमानंदा॥
याबिधि जेई हरिको सेवैं। तिनको हरि निजचरणनि देवैं॥
ऐसे यदुको बचन सुनाये। मनके भ्रम संदेह गँवाये॥
राजा बहुविधि पूजा कीन्हीं। करि प्रणिपात प्रदक्षिण दीन्हीं॥
तब राजाको करि सनमाना। दत्तात्रेय मुनि कियो पयाना॥
राजा बचन धारि उरमाहीं। सबको संग तज्यो क्षणताहीं॥
ब्रह्मदृष्टि सबहीं मैं आनी। ऐसो भयो परम विज्ञानी॥
सो राजा यदु बडो हमारो। जिन अपनो भवसंकट टारो॥
तातें उद्धव और न कोई। गुरु आपनो आपुही होई॥
आपुहि बूडै आपुहि तरै। आपुहि जीवै आपुहि मरै॥
दोहा-यह भाष्यो विज्ञान मैं, सब अद्वैत उपाय।
अवताको साधन कहौं, बहुत भाँति समुझाय॥
इति श्रीभागवते महापुराणे एकादशस्कंधेभाषायां श्रीभगवदुद्धव संवादे चतुर्विंशति गुरूपाख्यानंनाम नवमोऽध्यायः॥ ९॥
इति अवधूतेतिहासोपाख्यानं संपूर्णम्।

दशमोऽध्यायः ।

दोहा–होत देहसम्बन्धते, याको संसृति काल ।
श्रीधरदशयेंध्यायमें, वरणत कृष्णकृपाल ॥
साससुसाधन बोधको, आतमतत्त्व विचार ।
सो पुनिवरणन होयगो, शुद्ध ज्ञानको सार ॥

श्रीभगवानुवाच ।

सुन उद्धव अब साधन कहौं । तेरे सब संदेहहिं दहौं ॥
जाते उपजै ब्रह्मज्ञाना । छूटै और सकल भ्रमनाना ॥
ममभक्तन जे मारग भाषे । ते सब हृदयबीठिमें आषे ॥
ते कहिये आतमके धरमा । और सबै बंधनके करमा ॥
तिनको सावधन ह्वै जानै । वर्णाश्रम कुल मिथ्यामानै ॥
जेज बहु आरंभनि करैं । सुखचाहैं निशिदिन दुखभरैं ॥
आगेको बंधन उपजावैं । जिनके संग यमद्वारे जावैं ॥
यों बिचारि आरंभनितजै । ह्वै निष्काम चरण मम भजै ॥
जहां लगेहैं नाना बुद्धी । सो सब उद्धव जानि कुबुद्धी ॥
द्वैतभावसोभ्रमकरिजानो । स्वप्नमनोरथसमकरिमानो ॥
ताते और कम सबतजै । नित नैमित्तिककछु इकभजै ॥
तेऊ कछू सत्यनाहिं जानैं । करैं तो करैं नहींतो भानैं ॥
भक्तिमाहिं जो अंतर परै । तौ ते भूलि न कबहूं करै ॥
जो जासमय नअंतर जानै । तौ तासमय सहजमें ठानै ॥
यमनमाहिं निहचल । चितधरै नियमनिको भावैत्योकरै ॥

ब्रह्मविज्ञ गुरुशरणहिं जावै । जाते भेद सकलको पावै ॥
यम अरु नियम कछूनहिं सेवै । सतगुरुकहैसीखसोलेवै॥
मानरहित मत्सर नहिंजानै । तन मनआपप्रीतिकोठानै॥
जहँ तहँ ते ममता परिहरै । सावधान आलस नहिंकरै ॥
तजै असूया वृथा न बोलै । तनमननिश्चलकबहुँनडोलै॥
श्रद्धासहित आसतिकहोई । गुरुचरणन सेवै शिषसोई॥
दारा सुत वितदेह कुटुंबा । सकलभूतआत्मापितुअंबा॥
तिन सबहिंनको समकरिदेखै । मैंमेरोकरिकबहुँनलेखै ॥
रहै उदास आस परिहरै । निशिदिन ब्रह्ममाहिं मनधरै ॥
सूक्षम थूल देह द्वै जेहैं । भरमरूप मायाके तेहैं ॥
इन दूनोंते आतम दूरी । स्वप्रकाश चेतन भरपूरी ॥
स्थूलशरीर प्रगट जडएहा । चेतनकरै ताहिं वह देहा ॥
सो वह ऊतन जडहै अंगा । चेतन होय आत्मासंगा ॥
सो आत्मा दुहूंनते न्यारा । दुहूं प्रकाशक दुहू अँधारा॥
ज्यों इककाठ अनल परिजरै। सो दूजोहिं प्रकाशित करै॥
परसो अनलदुहूंते न्यारा । स्वप्रकाश आत्मा आधारा॥
बहुधासों बहुकाठनिसंगा । पावै उतपतिथितिअरुभंगा॥
त्यों द्वैतन हरिमाया किये । ते आत्मा आपुकरिलिये ॥
तिनसँगजनम मरणदुखपावै । लहै अनंदजबहिंछिटकावै॥
ताते बहु विधि करै विचारा । आत्मा जानै सबतेन्यारा॥
एक अजन्मा अरु अविनासी । चेतनघनपूरणसुखरासी॥

तनउपजै बिनशै बरताई । परमअशुद्ध शुद्धनहिंकाई ॥
सकल विकारनिको संघाता । परगटदीसै आवतजाता ।
मोसों यासो कैसो संगा । मैं चेतन यह जड बहुरंगा ॥
योंविचारि त्यागैतनममता । आत्मादृष्टिसकलमैंसमता ॥
याविधि हृदय होय थिरज्ञाना । मिलैब्रह्मछूटैसबनाना ॥
प्रथमशरणि अस्थिरगुरुदेवा । दूजीशिष्यकैरानितसेवा ॥
गुरुके वचन श्रवणमंथाना । याविधिउपजैपावकज्ञाना ॥
उपजिकाठ तनके गुनदहै । कर्मबीज कोई नाहिं रहै ॥
तब ज्यों पावकतेज समावै । इंधनाबिना न पलकरहावै ॥
त्यों आत्मा ब्रह्ममय होई । इंधन कर्म भस्म करिसोई ॥
अरुजे मूढ न यह विधिजानैं । ते बहुविधि कर्मनकोठानै ॥
ते कर्मनके फलन भुगावै । जनम मरनको अंतन पावै ॥
जहँजहँजाहिंतहींतहँकाला । निशिदिन सदारहैबेहाला ॥
यह जग दीसै ज्योंको त्योंहीं । पर एकोपल रहै नयोंहीं ॥
औरै और होहिंआकारा । तिनसंगति मन बहुपरकारा ॥
कबहुँज्ञानाहिरदयनहिंआवै।जनमिजनमिमारिमारिदुखपावै।
कर्म रूजो कर्मनिआचरै। सुख अरु जोदुख भोगनिकरै॥
ए चारौं दीसैं परतंत्रा । ताते सब तजिये यह मंत्रा ॥
जे पंडित श्रुतिस्मृति जानैं। तत्वलहैं बिनु कर्मनिठानैं॥
ते मूरुख देहा अभिमानी । आपुहिं आपु कहावैंज्ञानी॥
हरिजन संग न कबहूं करैं। तत्व न सुनैं कर्म विस्तरैं ॥

तिनतेभलेजोकछुनहिंजानैं । तत्वबचनसुनिहिरदयआनैं ॥
यद्यपि अंत सुखनको जानैं । अरु क्षणभंगुरदेहनिमानैं ॥
परसो तत्व न समझै तेऊ । जाते लहैं भक्तिको भेऊ ॥
कालमृत्यु जाको नित ग्रसै । ताको कहौ कहांसुखबसै ॥
ज्यों कोई मारनको लीज । शूली निकट परोलै कीजै ॥
अरु ताकोंबहुभोग भोगावै । सोधौं कहौकैसोसुखपावै ॥
अरुत्योंहीनस्वरगपरलोका । मदमत्सरनिंदाभयशोका ॥
तिनके हेत जतनबहु करैं । सिद्ध न होहिंबिघनआतिपरैं ॥
ज्यों खेतीमेंबिघनअनेका । त्योंस्वरगादि लहैकोइएका ॥
अरुजोलह्योतऊथिरनाहीं । देखत बिनाशिजायपलमाहीं ॥
ईहां यज्ञ करै बहु कोई अरु जो अंतराय नाहिं होई ॥
तब सो स्वर्गलोकको जावै । ह्वैकै देव देव सुख पावै ॥
अपनेपुण्यनिकोउपजायो । उत्तमजायबिमानहिंपायो ॥
बहु गंधर्व गानको करैं । बहु सुंदरी नारि मनहरैं ॥
इच्छाहोयतहाँ चलिजावै । सहितबिमानविलंबनलावै ॥
अमृतपान तहाँ नित करैं । वस्त्राभरण देह बहु धरैं ॥
योंनितमगनबहुतसुखपावै । पारिबेकीकछुचित्तन आवै ॥
जेतो पुण्य इहाँको होई । तेतो रहै स्वर्गमें सोई ॥
पुण्यक्षीण होवै पुनि जबहीं । काल तहांते ढाहै तबहीं ॥
सोसुखकहोतजोक्योंजावै । तादुखकीकछुकहतनआवै ॥
रह्योचहै पर क्यों कर रहै । काल अधीन महादुखलहै ॥

कोई सुखपावै कहुँ जेतौ । छीनिलिये होवै दुख तेतौ ॥
सो ताजि स्वर्ग भूमिमें आवै । पीछे योनि अनंत नपावै ॥
यहभाषीविधिकीगतितोसों। अबनिषेधकीसुनियोंमोसों॥
जो कुसंगमें प्राणी परै । तौ बहुभाँति अधर्मनि करै ॥
बशैं काम इंद्रिय आधीन । स्त्री लंपट लोभी अरुदीन ॥
बहु जीवनिकी हिंसा करै । प्रेत भूत गणको अनुसरै ॥
मैंहीं एक बसौं सबमाहीं । तिनके द्रोह नरकमें जाहीं ॥
बहुरि आनि थावर तनु लहैं । जन्म जन्म बहुसंकटसहैं॥
ताते विधि निषेध जे करैं । ते सब जन्म मरणमें परैं ॥
कर्म करैं तिनते तन धरैं । तन धरि धरि बहु दुखसोंमरैं ॥
ताते सुख प्रवर्तिमें नाहीं । भावै ब्रह्मलोक किन जाहीं ॥
लोकपाल सब लोक समेता । इतनो रहै ब्रह्मदिनजेता ॥
सो ब्रह्माऊ अंत न रहै । तीतर बाज काल त्यों गहै ॥
अग्नि रहै मेरे भयमाहीं । पवनबहै निश्चल पलनाहीं ॥
सूरज चंद एकरस चलैं । मरयादाते सिंधु न टलैं ॥
मृत्यु निरंतर सबको ग्रासै मेरे काल रूपते त्रासै ॥
ताते कहूं न सुख परवृत्ति । सुखचाहै सो गहै निवृत्ति ॥
अरुये इंद्रिय कर्म उपावैं । तिनको सत रजतमबरतावैं ॥
सो आत्मा इंद्रिय बश होई । ताते सुख दुखपावैंसोई ॥
परआतमा अकर्त्ता जानौं । भोग रहित ताहीतेमानौं ॥
कर्म रुभोगादिक हैं जेते । इंद्रिय अरु गुणकृत सबतेते ॥

जो लगियहइंद्रिय गुनबंधा । तौलगि मिटैन तनसंबंधा ॥
तनसंबंध मिटै नहिंजौलौं । नानाभावबहुतविधितौलौं ॥
नाना भाव रहै जबलगे । पराधीन आत्मा तब लगे ॥
पराधीन जौलगि यह रहै । तौलगि काल निरंतरगहै ॥
ताते जे प्रवृत्ति रत होवैं । युग युग जन्म जन्मते रोवैं ॥
प्रथमहु तौ मैंएक निरंजन । ताहीते उपज्यो यह अंजन ॥
काल आत्मालोक रुवेद । धर्म स्वभावबहुताबिधिभेद ॥
ये सब माया सत्य न कोई । ताते बुध अनुरक्त न होई ॥
एक निरंजन आतम जाने । तब सब संकटभवक भाने ॥
लोक रु वेद बासना तजै । इंद्रिय देह बिषै नहिं भजै ॥
मन पहुँचै सो मिथ्या लेखै । मन अतीत सो जहँतहँदेखै ॥
ब्रह्मरुआत्माएकबिचारै । याविधि सकल उपाधिहिंजारै ॥
तबहीं एक ब्रह्मको पावै । छूटै द्वैत बहुरि नहिं आवै ॥
यह आत्माअरु देह विवेका । याकोजानि एकको एका ॥
ऐसे बचन कहे जब कृष्ण । उद्धवदास करीतबप्रश्ण ॥

उद्धव उवाच ।

हे प्रभु जो यह सारो भर्मा । इंद्रियदेह बिषै गुण कर्मा ॥
अरुआत्मा अनीहअबंधा । ताकेभयोकोनाबिधिबंधा ॥
अरु जो बहुरि ज्ञानको लहै । छोडि उपाधि देहमें रहै ॥
सो बहुरों क्यों लिप्त न होई । अरु क्योंकरिजानीजैसोई ॥
कैसे बिचरै कैसे रहै । कैसे जेवै कैसे कहै ॥

कैसे पहिरै कैसे सोवै । कैसे सुनै कौन विधि जोवै ॥
अरु आत्मा एकै द्वै नाहीं । एक मुक्ति क्यों एक बँधाहीं ॥
एक बँधै एकै क्यों मुक्ता । येतौ बहुत एक क्यों उक्ता ॥
गुन अनादि आत्मा अनादि । ताते यहतौबंधनआदि ॥
नित्यमुक्त क्यों कहिये देवा । याको मोहिं बतावो भेवा ॥
दोहा—एउद्धवनिजभक्तके, सुनिकरिनिर्मलबैन ।
ताकोप्रत्युत्तर कह्यो, हरिजी करुणा ऐन ॥

इति श्रीभागवते महापुराणे एकादशस्कंधे श्रीभगवदुद्धव
संवादे भाषायां दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

एकादशोऽध्यायः ।

दोहा—बंधमोक्षहरिभक्तिभक्त, इनकेलक्षणसार ।
कहे ग्यारवें ध्यायमें, श्रीधर नंदकुमार ॥

श्रीभगवानुवाच ।

सुनि उद्धव अब परमज्ञाना । जाते भेद मिटैतुव नाना ॥
बंध रु मुक्त तोहि समुझाऊं । तेरो सबअज्ञान मिटाऊं ॥
बंधमुक्त जो कहिये कोई । सोतौ सकलगुणनि ते होई ॥
ते सब गुन मायाके जानौ । इनते दूरि आत्मा मानौ ॥
सोकरमोह जन्मअरुसुख । भयअरुमरणादिकबहु दुख ॥
एसारे मायाकृत केवल । सदा एक आत्मा निःकेवल ॥
ज्योंसुखमेंसुखदुःखअनेका । तिनमेंआत्माकोनहिंएका ॥

ते सब बुद्धिरु मनको होवैं। इंद्रिय देह प्रगटते सोवैं॥
पुनिबुद्ध्यादिककछुनाहिंरहै।जाकोपरगटसुखपति कहै॥
तब आत्मा निरंतर होई। पर ताको सुखदुखनाहिंकोई॥
जो सुषुप्तिमें आत्मा रहै। ता व्यवहार पीछिले कहै॥
पर ताको कोई न विकारा। ए सब मायाकू व्यवहारा॥
परआत्मा आपने मानै। तातेसुखदुखबहु विधि जानै॥
परआत्मा एक रस नित्य। बंध मोक्ष ए सकलअनित्य॥
उद्धव जानौ एक अविद्या। अरुदूजीजो कहियो विद्या॥
ये दोऊ हैं मेरी शक्ति। इनमें सबहिनकी आशक्ति॥
बंधन करो चहौंमैं जाको प्रेरि अविद्या पठऊं ताको॥
अरु जाको बंधननि मिटाऊं। ताकोविद्याशक्तिपठाऊं॥
ए जे दोय मुक्त अरु बंधा। ते मम शक्तिनके संबंधा॥
आत्मा है सो मेरो रूप। सबते न्यारो परम अनूप॥
ज्योंशशिकेप्रतिबिंबअनेका। परतेबहुतनहींसबएका॥
अरु जो जाको घटबिनसाई। सोईसोशशिमाहिंसमाई॥
त्यौं सब आत्मा मेरो अंशा। परमघटसंगलहैदुखसंशा॥
विद्याशक्ति जाहि द्यौं जबहीं। घटकोनाशकरैसोतबहीं॥
सोई सो तब मोको लहै। और सकल भवहीमें रहै॥
अरुप्रतिबिंबघटानिहूंमाहीं। सदा अलिप्त लिप्तकहुंनाहीं॥
परघट संग लिप्तसे होवैं। अरु त्यों लिप्त औरऊ जोवैं॥
त्योंआत्मासकलतेन्यारा। सदाअलिप्तनालिपै विकारा॥

परिया तनमैं आपु बँधाना । ताके संग लहै दुख नाना ॥
अब मैं बंध मुक्तिकी कहौं । तेरे सब संदेहहिं दहौं ॥
एक देहमैं द्वैको बासा । परमातम आतमके पासा ॥
ज्यौं द्वै पंखिरहैं तरुमाहीं । तरुते भिन्न लिप्त कहुँ नाहीं ॥
दोऊ चेतन एक समाना । सखारूप एकहि अस्थाना ॥
आपुहुतेतिनबासाकियो । तिनमेंएकतरुहिंचितदियो ॥
देह वृक्षके सुख फलखावै । ताते दुःख आपुहीं आवै ॥
तबताकाज कर्म बहु करै । तिनते युग युग जनमै मरै ॥
देह मरे मरनो करि जानै । देह जन्मते जन्महिं मानै ॥
ऐसे सदा बहुत दुख पावै । द्वैमेंसो आतमा कहावै ॥
परमातमा देह तरुमाहीं । सुखफल कबहूं खावै नाहीं ॥
ताते कछू कर्म नाहिं गहै । निजानंदमय निहचल रहै ॥
यों परमातम आतम जानै । देह अतीत दुहूंको मानै ॥
सुखफल अरु आरंभनि तजै । मुक्त होइ परमात्मा भजै ॥
ज्योंतनमाहिंमुक्तपरमातम । बिद्यापाइबसै त्योंआतम ॥
तनमैं है परतनमें नाहीं ॥ आपुहिंजानिभयोथिरमाहीं ॥
स्वप्नदेखि ज्यों जागै कोई । सो सो स्वप्न विचारै सोई ॥
पर सो स्वप्न देहअरुसुपना । मिथ्याजानैं भ्रमते अपना ॥
अरु जैसाहित अविद्या होई । सो तनमें नाइपारहै सोई ॥
ज्यों सोवत सुप्त तन पावै । ताको आपजानिमनलावै ॥
तनमें बद्ध मुक्तजे जीवा । बंध जीव मुक्त सो सीवा ॥

बहुरौं कहौं मुक्तकेलक्षण । जिनकोजाने होय विचक्षण ॥
देखै सुनै कहै कछु करै । सो कछूक दिन हिरदै धरै ॥
सकल अर्थ इंद्रियकृत जानै । आपुहिं एक अकर्त्तामानै ॥
पूर्व कर्म आधीन शरीरा । कर्म करै इंद्रिय मन सीरा ॥
तिनमेंबासकियो नहिं जानै । मूरखआपुहिंकर्त्तामानै ॥
बहुरि मुक्त ऐसी विधि रहै । अहंकार या तनको दहै ॥
आसनअसनअटनअरुशयना । दर्शपर्शअघ्रानरुबयना ॥
इनिमें इंद्रिनको वरतावै । आपु न कबहूं प्रीति लगावै ॥
रहै माहिपरिलिप्त न होई ज्यों आकाश पवन रवि तोई ॥
विद्या नाम सैहथी पाई । दृढ बैराग सान धरवाई ॥
तासों काटे संशय सारे । जागि सकल भ्रम भेद निवारे ॥
इंद्रिय प्राण बुद्धि मनमाहीं । कबहू कछू बासनानाहीं ॥
सो यद्यपि तनहूमें दर्शै । परसो मुक्तइ नाहिं नाहिं पर्शै ॥
एक दुष्ट तन पीडा करै । एक बहुत पूजा विस्तरै ॥
परबुध रोष तोष नहिं आनै । सकलदेहकृतामिथ्याजानै ॥
विधि निषेध जो कोई करै । किंवा कहै ग्रंथ विस्तरै ॥
सुनिकछुभलोबुरोनाहिंदेखै । गुणअरुदोषरहितसमलेखै ॥
विधि निषेध नाहि कछु करै । ना कछु कहैन हिरदैधरै ॥
निशिदिन रहै ब्रह्मरस मत्त । इच्छामें ज्यों जड उनमत्त ॥
ऐसे चिह्न मुक्तके मानौ । अरु मुमुक्षुको साधन जानौ ॥
मुक्त भयो जो चाहै कोई । ए सब साधन साधै सोई ॥

जिनसबशब्दब्रह्महैजान्यो । परनिजतंत्वनहींपहिचान्यो॥
इनसाधननिमाहिं रतनाहीं । ताके श्रमसबमिथ्याजाहीं॥
शब्दब्रह्म ब्रह्मके काजा । हरिजी अरु हरिभक्त न साजा॥
ताते ब्रह्म बिना श्रम ऐसे । बंध्यागाइ सेइये जैसे॥
वंध्यागाइ दूध बिनु होई । पराधीन तन राखै कोई॥
असतीनारि पुत्र अन्याई । धर्म बिहीनों धन अधिकाई॥
ज्यों इनतेदिनदिन दुखहोई । कबहू सुख पावै नहिं कोई॥
मोहिंबिनात्योंबहुविधि वानी । केवल बंधनहीकोजानी॥
मोतेजगउतपातिसंहारा । सबप्रतिपालन बिबिधप्रकारा॥
किंवा जन्म कर्म बहुतेरे । जाबानीमें नाहीं मेरे॥
मेरे नाना बिधि संबंधा । जाबानाम नाहीं बंधा॥
बंध्याबानी ताहि बिचारै । निःफलजान न पंडितधारै॥
याविधिजानिबहुतपरकारा। बहुतभाँतिकरिबहुतबिचारा॥
जहांजहांते मनहि निवारै । पूरण एक ब्रह्ममें धारै॥
जो ताजि दूजे नाना अर्थ । मन धारणको नहा समर्थ॥
सो ममहेत कर्म सब करै । प्रेममगन फल जस परिहरै॥
औरै कर्म अकर्म बिकर्मा । बंधन जान तजै सब भर्मा॥
जाहतें उपजै मम भक्ति । ताहीमें राखै अनुरक्ति॥
श्रद्धासहित सुनै गुण मेरे । जिनते कर्म न आवैं नेरे॥
गावैसुमिरैअस्तुतिकरै । प्रेमसहितनिशिदिनाविस्तरै॥
जे कछु धर्म काम अरु अर्थ । करै सकलते मेरे अर्थ॥

ममआधीन निरंतर रहैं । मम॰कृमवचन आन नहिंगहैं ॥
याबिधिहोवैनिहचलभक्ति । औरसकलतेसहजबिरक्ति ॥
तब मेरे निज रूपहि जानैं । ताते नाना भेदहि भानैं ॥
तब ताही पदमाहिं समावै । जाते जन्मफेरि नहिं पावै ॥
पर यह सतसंगतिते होई । सतसंगति विन लहै न कोई ॥
भक्तन बिना भक्तिनहिंपावै ॥ भक्तिबिना नहिं मोमैं आवै
ताते सत संगतिको करै । दूजो जतन सकल परिहरै ॥
दोहा-एसुनिहरिजीकेबचन, बाढीमनमैंप्यास ।
तबभक्तिनिअरुभक्तिके, लक्षणपूछेदास ॥

उद्धव उवाच ।

हे प्रभुपूरण परम अनंता । या जगबहुत भांतिके संता ॥
जाको संत कहो तुम देवा । ताको मोहि बतावो भेवा ॥
अरुसो भक्ति कवनजा ठानै । जाते तुव निजरूपहि जानै॥
तब उद्धवको दै बहु माना । कृपासिंधु बोले भगवाना॥

श्रीभगवानुवाच ।

परमकृपालु द्रोह नहिं जानैं । क्षमावंत अरुसत्य बखानैं॥
निंदारहित द्वंदसब समता । परउपकारी हृदय न ममता॥
आपे काम बुद्धि थिर रहै । इंद्रियजित कोमलता गहै ॥
सदाचार संग्रह नहि जानै । लघुआहार न इंहा आनै ॥
शीतल हृदय बिचारहिं करै । धर्म आपने दृढता धरै ॥
सावधान अरुरहित बिकारा । धीरजवंत दयाअधिकारा॥

शोकमोह अरु क्षुधापिपासा । जरामृत्यु जीते षटपासा ॥
आपमान अपमान न जानैं । औरनको बहुमानहि ठानैं ॥
जो कोई शरणागत आवै । ताके ज्यों त्यों ज्ञान उपावै ॥
सबको मित्रशुभाशुभ जानै । दृढबिश्वास सकलभ्रमभानैं ।
मम आधीन दीन. ह्वै रहै । साधनको बल कबहुँ न गहै ॥
मोहींको करत करि जानै । कबहूं भूलिन आपो आनै ॥
यद्यपि वेदरूप मैं गाए । वर्णा श्रम कुलधर्म बताए ॥
तौहूंविधि निषेध सब तैजैः। दृढनिश्चय मम चरणनि भजे।
ऐसो भक्त निजभक्त कहावै । ताके संग भक्तिको पावै ॥
देश रुकाल रहित सर्वातम । चिदानदमय प्रभुपरमातम ।
एसो जानि जानि मोहिं भजै । और सकलसंकल्पनितजै ।
सो मेरो कहिये निजभक्त । तासों नित हूजे अनुरक्त ॥
अरु जे ऐसो मोहिं न जानैं । पर अत्यंत प्रीतिको ठानैं ॥
लकारि मोहिं सकल परिहरैं । ते जन मोहिं आपु वशकरैं।
एभक्तनिके लक्षण कहिये । मेरी कृपा हुए ते लहिये ॥
तिनको पायभक्तिको पावै । भक्तिपाइ ममचरणनिआवै ॥
तातें मोहिं चहै जो कोई । मम संतनिको सेवै सोई ॥
अब मैं कहूं भक्तिक अंगा । तातें पावै मेरो संगा ॥
मम प्रतिमामें मोको भजै । मनक्रमवचन फलादिकतजै ॥
हितसोंदर्शपरसपरचर्य्या । अस्तुतिअरुदंडवतसपर्य्या ॥
मेरीकथाविषे अति श्रद्धा । मो विनकछु न करै पल अर्द्धा।

मेरे जन्म कर्म गुण गावै । सदा निरंतर मोकों ध्यावै ॥
तन अरु तनके पीछे जेते । मोकों सकल समर्पै तेते ॥
जन्माष्टमी आदि जे पर्वा । बहुत उछाह करै ते सर्वा ॥
नृत्यगीतअरुबहुबिधिबाजा । मंदिररूपबहुतविधिसाजा ।
कथाकीरतनबहुबिधिचरचा ।जागरणादिबहुतविधिअरचा
ऐसे बहुत भांति उच्छाहा । सबपर्वणिसबाविधिनिरवाहा ।
मथुरादिक हरिधामनिजावै । बहुतभाँति करिप्रेमबढावै
औरनिको आचरण सिखावै । ठौरठौर प्रतिमा पधरावै॥
बहुविधि करै बाग फुलवाई । क्रीडाथानसहितचतुराई ॥
पुरमंदिर बहुभांति करावै । ज्यों हरिअरुहरिभक्तनिभावै।
आपुमाहिं जो शक्ति न होई । तौहू उद्यम ठानै सोई ॥
बहुविधि महिमाकहिकहावै । औरनिसों मिलिकैकरवावै ॥
मंदिरादि बहु भांति बुहारै । बहुविधि सोचै धूलिनिवारै।
चित्रविचित्र चौक विस्तरै । ह्वै करि दास आपुहीं करै ॥
मानरहित कछु दंभ न जानै । जोकछुकरै सोनहींबखानै।
मोकों करै आरती जासों । और कछू नाहिं देखे तासों ॥
ममपरसाद प्रीतिसों लेवै । प्रीतिहीन जीवन नहिं देवै ॥
योंही ज्यौं ज्यौं उपजै प्रेम । त्यौंत्यौं अधिक बढावैनेम ॥
ममभक्तनिके रहै अधीन । तन मन धनसों नितलवलीन।
अरु एकादश ठौरनि भद्र । मम पूजा करि हरै अभद्र ॥
सूरज आग्नि विप्र अरु गाई । भक्तवेष आकाश रु बाई ॥

जलअरुधरणिआपुमेंत्योंहीं । सबनिमांहिममपूजायोंहीं ॥
विद्यात्रय सूरजकी पूजा । मोंको छोडि न जानै दूजा ॥
बरषाराजस कारि उपजावे । सात्विकसीतसबनिबरतावे ॥
तामसग्रीषमसकलविनाशै । सकलजगतकोआपुप्रकाशै ॥
ताते मेरी परम विभूती । ऐसे जानि करै प्रस्तूती ॥
पावकमाहिं होम करिजजे । विप्रन अतिथिभावसोंभजे ॥
तृण जलादि गाइनकी पूजा । भक्तबेषमें और न दूजा ॥
भक्तवेष निज बंधव जानैं । अति प्रसन्न ह्वै पूजा ठानैं ॥
ज्यों आपने बंधु संबंधी । तिनसोंप्रीति सबनि है बंधी ॥
तिनकोबहुतभाँतिकारिसेवैं । तनमनधनानिहचलकारिदेवैं ॥
त्योंहीं भक्त आपने भाई । ऐसे जानि करै अधिकाई ॥
तन मन धनसों प्रीति बढावे । जिनते मेरे भेदहि पावे ॥
हृदयाकाश ध्यानसो सेवे । सब आधारपवन चितदेवे ॥
जलको जल अरु फूलफलादी । भूधरणी पूजे मंत्रादी ॥
भोगनिसों निज देहहि भजे । मोबिचअंतराइसो तजे ॥
सब भूतनमें मोंको जाने । समदरशन यह पूजा ठानैं ॥
इनि सब ठौरनि पूजा करै । मेरो रूप हृदयमें धरै ॥
रूपचतुर्भुज आयुध चारी । श्याम शरीर पितंबरधारी ॥
शीशमुकुटशुभकुंडलकरणाकौस्तुभादिबहुविधिआभरणा
ऐसो रूप सबनिमें ध्यावै । सावधान ह्वै प्रीति बढावे ॥
या विधि बाइ कूप सरबाग । जप तपदानदयाव्रतयाग ॥

मेरे हेत कर्म जो करै । मो बिनु और हृदय नहिं धरै ॥
इन साधनानि करै नर जाइ । प्रेम भक्ति मम पावै सोइ ॥
एसाधन करते यहि भाँती । साधुमिलाप होइ दिनराती ॥
तिनते ऐसी युक्तिहि पावै । जाते ज्ञान भक्तिउर आवै ॥
ताते ज्ञान भक्तिको कारण । एक भक्त भवसागरतारण ॥
ताते भक्तनिसों हित लावै । जिनते मेरी भक्तिहि पावै ॥
तिनके बनिज भक्तिको नित्त । कबहूं और न आवैचित्त ॥
मैं उनको मेरे है सोइ । ऐसो भेद न जाने कोई ॥
जो कछु कहैं करौं मैं सोई । यद्यपि मेरे मन नहि होई ॥
मोहिंमिलनकोएकउपाया । बहुविधिखोजतऔरनपाया ॥
साधुसंग मिलि भक्तिहि करइ । सोइएकजगतजलतरई ॥
भक्तन बिना भक्ति नहिंपावै । भक्तिबिनानाहिंमोमेंआवै ॥
मोबिन और जहां जहँ जाइ । तह तहँकालनिरंतरखाई ॥
यह अतिगोप्य मतौ है मेरो । अरु मेरे अधीन चिततेरो ॥
ताते मैं यह तोसों कह्यो । आगे कछु कहिबे नहिं रह्यो ॥

दोहा-बहुरिगोप्यअपनोमतो, कह्यौताहिसमुझाय ।
जाते छूटै जगत भय, मो म रहै समाय ॥

इति श्रीभागवते महापुराणे एकादशस्कंधे श्रीभगवदुद्धव संवादेभाषायां एकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

द्वादशोऽध्यायः।

दोहा--महिमासंगतिसारते, कर्मफलनको त्याग।
कहि बारहवें ध्यायमें, यथा व्यवस्था लाग॥

श्रीभगवानुवाच।

उद्धव मतो गोप्य सुनि मेरो। पावै मोहिं मिटै भवफेरो॥
आशु मिलनको पंथ दिखाऊं। औरौ सकल कुपंथ मिटाऊं॥
योग कहहिं जे अष्टप्रकारा। सांख्यप्रकृति अरु पुरुषविचारा॥
बहु विधि वर्णाश्रमके धर्मा। सकलत्यागि ह्वैबो निहकर्मा॥
वेदादिक बहु विद्या पाठा। जहाँ लगेहै तप अतिकाठा॥
होम यज्ञ सर वापी कूपा। इच्छादान समय अनुरूपा॥
एकादशी आदि व्रत जेते। गुप्त मंत्र मेरे हैं तेते॥
ममप्रतिमापूजाआचरना। तीरथअटनानियमयमकरना॥
औरौ शमदमआदिक जेते। साधन सकल मुक्तिके तेते॥
इन सबहिनते मोहिं न पावे। साधूजन पलमाहिं मिलावे॥
उनत मनको संग न छूटै। मम चरणनमें चित नचिहूटै॥
ताते मोहिं न पावै उनतें। पावै वचन साधुके सुनतें॥
साधू ऐसे वचन सुनावें। शत्रुमित्रसुख दुःख जनावें॥
सार असार कालनिःकाला। साधुदिखावैंसबततकाला॥
सबते मनको संग मिटावैं। मेरे चरणकमल लपटावें॥
ऐसी विधि भवसागर तारैं। मेरे जन ततकाल उधारैं॥
जेते तरे तरैंगे जेते। अरु अबहूं तरते हैं केते॥

ते सब साधु संगते जानौ। दूजो और उपाय न मानौ ॥
खगमृगयातुधानअसुरादिक। चारणसिद्धनागगुह्यादिक॥
अप्सर विद्याधर गंधर्बा। जिन जिन पायो ते ते सर्बा ॥
वैश्यशूद्रअंत्यजअरुनारी। बहुराजसतामसअधिकारी ॥
युग युग जे सतसंगति आये। तिनहीं तिन मेरे पदपाये॥
वृत्रासुर वृषपर्वा बाना। बलि प्रह्लाद विभीषण जाना ॥
मयसुग्रीवऋक्ष हनुमंता। गज अरु गीधव्याध अघवंता॥
तुलाधार कुब्जा ब्रजगोपी। धर्मनकी सीमाजिन लोपी ॥
यज्ञवंत विप्रनकी वनिता। पुरुषनिकीकीन्हीअवमनिता॥
औरअनेककहाँलौंकहिये। कहतकहतकहुँअंतनलहिये ॥
तिन कछु विद्या वेदनजाने। सांख्यरुयोगनहींपहिंचाने ॥
जपतप यज्ञ व्रतादि न कीन्हें। औरौ धर्मनकोई चीन्हें ॥
पर जो साधुसंग तिन पाये। तौ सब मेरे चरणन आये॥
अरुतुम उद्धवयों मति जानौ। तिनकीसंगतिमेरीमानौ॥
उद्धव संत रु मैं द्वै नाहीं। मैंही हौं संतन उर माहीं ॥
किनहूंमिलौंधारिकैतनको।मिलकरिशोधौंतिनकेमनको।
ऐसी विधि एकनिको तारौं। एकनसाधुरूपउद्धारौं ॥
साधुन ह्वै मनके मल हरौं। सो मन अपनेचरणनधरौं ॥
ऐसी विधि तिनको उद्धारौं। जहँतारौंतहँ मैंहीं तारौं ॥
साधु संग सो मेरो संग। साधु सकल है मेरो अंग ॥
ताते दोउ साधु संग जानौ। केतौ दोतनु मेरे मानौ ॥

गोपी गाय वृक्ष नग नागा । औरो मूढबुद्धि बड भागा॥
ममसतसंगप्रेम तिनबाँध्यों । भावभक्ति मोंकोआराध्यो॥
औरकछूसाधननहिंजान्यो । अरुनहिंब्रह्मरूपकरिमान्यो॥
पशतिनको हित मोसों भयो।ताते सब मनको मलगयो॥
श्रमहीविनतिनमोंकोपायो। अतिअपारभवदुःखमिटायो॥
जाको योगसांख्य व्रत दाना । यज्ञवेदविद्याविधिनाना ॥
करिसंन्यास बहुत दुख सहैं । तेऊ मोंको कबहुँ नलहैं ॥
ताको तिन सुखहीमैं पायो । जो केवलमनमोसोंलायो ॥
रामसहित मुहिंपायो जवहीं । चलेअक्रूरमधुपुरीतबहीं ॥
तबते गोपी मेरे हेत । पाइ मूरछा भई अचेत ॥
बहुरोससुझिमहादुखपावैं । निशिवासरममचरणनध्यावैं॥
मोहिंछोडिसबदुखमय देखैं । लोकवेद कुलकछूनलेखैं ॥
जेनिशिमोसँग पलसबितैं । तेई तिनको कल्पव्यतीतैं ॥
मेरे गुण न सुनैं अरुगावैं । लीला रूप हृदयमें ध्यावैं ॥
कबहूं विरह महादुख रोवैं । कबहू तपैं दशोदिशिजोवैं॥
कबहूं प्राणतजनकी भाषैं । ममदर्शन आशा ते राषैं ॥
नींदभूखतिन सकल गँवाई । और देहगुण रह्योनकाई ॥
तिनके दुख तेइपै जानैं । कैमैं तीजो कहा बखानैं ॥
विरहप्रचंडअनलअधिकारा। सकलविकारभयेजरिछारा॥
प्रेमप्रवाह सकल मलछाले । योंमों बिचके अंतरटाले ॥
तबयह उपजीपरम अनूपा । भूलीआपु भई ममरूपा ॥

ज्यों योगेश्वर ब्रह्महि ध्यावैं । ह्वै करिब्रह्म आपुविसरावैं ॥
अरुज्योंसरितासिंधु समावै । नानारूप गुणभेद गँवावै ॥
त्योंवै भई रूप सब मेरो । द्वैतभाव कहुँ रह्यो न नेरो ॥
पापयोनि अबलाते सारी । अरुश्रुतिकी मरयादाटारी ॥
निजपतिछोडिकियोव्यभिचारा। अरुतिनमोंकोजान्योजारा
ब्रह्मभावकबहूंनहिंजान्यो।नितपरपुरुषमोहितिनमान्यों ॥
परतोहूं भवसिंधु मिटायो । सदा सनातनममपदपायो ॥
तातेसुनउद्धवबड भागा । लोकवेद सबकोकरित्यागा ॥
जोहैसुन्यौ सुननको जोई । प्रवृति निवृत्तिजोकछुहोई ॥
सब तजिएकशरणममआवो । द्वैतभावमनतेविसरावो ॥
जहांतहां ममरूपहिदेखौ आपापर कछु और न लेखौ ॥
ऐसे ह्वै करि मोको पैहा । जाते जगत जनमिनाहिंऐहो ॥
यों हरि जब वाणी विस्तरी । तब उद्धव आशंका करी॥

उद्धवउवाच ।

प्रभु तुम त्याग वेदको कह्यो । सो मेरें उरसंशय रह्यो ॥
तुम्हरी आज्ञा वेदकहावै । ताहि छोडि कैसे सुख पावै ॥
तुमहीं श्रुतिमें करणे भाषे। तुमहीं इहां दूरि करि नाषे ॥
तातें मन भरमत है मेरो । थिरकीजे अपने जन केरो ॥
किधौं वैसत्यकिधौं ये देवा । याको मोहिं बतावोभेवा ॥
तब गोपाल वचनउच्चारे । ज्यों रवि उदयमध्यअँधियारे ॥

श्रीभगवानुवाच ।

उद्धव अब सुनउत्तम ज्ञाना । जाते तुव छूटै भ्रमनाना ॥
प्रथमहिआपुनिरंजन एका । औरकछूनहिंहुतोअनेका ॥
बहुरिकियोमाया विस्तारा । रच्योदेह बहुअंगप्रकारा ॥
तामें आपुप्रवेशहि कियो । प्राणरु शब्दसंगकरि लियो ॥
सोता शब्द चक्र आधारा । परानाम कीन्ह्यो आगारा ॥
मणिपूरक पश्यंती नामा । चक्र विशुद्ध मध्यमाधामा ॥
बाहर प्रगट वैषरी बानी । जो यहलोक रुवेद बखानी ॥
स्वर लघुमातर अक्षर जते । नानाभांति विस्तरे तेते ॥
लोकमाहि थोरे विस्तारे । वेदमाहिं तिरसठि हैं सारे ॥
परातिनको बहु विधि विस्तारा । जाकोकोईलहैनपारा ॥
जैसेअनल काठ मथिकाढ्यो । ईंधन पवनसंगबहुवाढ्यो ॥
यों ममवाणीको विस्तारा । जाते प्रगटचोसकलपसारा ॥
यह विस्तार शब्दको सारो । जामें चेतन रूपहमारो ॥
इंद्रियउपजीदशपरकारा । सूत्ररुमनबुधिचितअहंकारा ॥
सतरजतममायागुणजानौ । सबविस्तारतिन्हींकोमानौ ॥
जो अद्वैत एकनिरधारा । तिन कीन्ह्योमाया विस्तारा ॥
तिनमेंबहुतभांतिआभास्यो । उत्तममध्यमनीचप्रकास्यो ॥
विधिनिषेध ताते करि लये । सुखदुखद्वौतिनकेफलभये ॥
यह संसार एकते ऐसे । एक बीजते बहु वन जैसे ॥
तातेयह सबएक अधारा । अरु एकहिकोसकलपसारा ॥

जैसे वस्त्र तंतुमय होई । ओत पोत दूजा नहिं कोई ॥
ऐसे यह भवतरु है एका । द्वैफल फूलअरु शाखअनेका ॥
यह सब मम चेतन आधारा । परतोहूं चेतनते न्यारा ॥
सो चेतन है मेरो अंशा । यामें भूलि न आनौ संशा ॥
यह संसार वृक्ष है जैसो । मैं भाषतहौं सुनियो तैसो ॥
पाप रु पुण्य बीज द्वै याके । मूल अपार वासनाताके ॥
आदिहिके त्रयगुणत्रयशाखा । तिनतेपंचभूतपरशाखा ॥
उपशाखामनअरुइंद्रियदश । शब्दादिकसरवै पंचोरस ॥
कफअरुबातापित्तत्रयवलकला सुखअरुदुःखप्रगटएद्वैफल ॥
तामें द्वै पक्षिनको वासा । परमातम अरु आतमपासा ॥
जे मूरख यह भेद न जानैं । ते बहुभाँति वेदविधिठानैं ॥
तिनते होवैं बहु विधि बंधा । युग युग दुख पावैंतेअंधा ॥
जे यह देह वृक्ष करि जानैं । आपुहि पक्षन्यारो मानैं ॥
वेद सुमृतिसब माया देखैं । सकल अतीतआपुकोलेखैं ॥
तबयहविधिनिषेधछिटकावैं सुखअरुदुखकोनिकटनआवैं ।
सकल माहिं आपुहिंको मानैं । भेददेहकृतमायाजानैं ॥
चेतनशक्ति ब्रह्मकारि देखैं । और सकलमायाकरिलेखै ॥
परयहसकलभेदतबपावै । जबसतगुरुकीशरणहिआवै ॥
सतगुरु बिना न पावै कोई । ब्रह्मादिक भावै सोहोई ॥
ताते गुरुकी शरणहिं आवै । दृढ उपासनाभक्तिबढावै ॥
गुरुसेवाको इसो प्रभाव । जाते उपजै मेरो भाव ॥

गुरु सेवाते पावै भक्ति । गुरु सेवाते सकल विरक्ति ॥
गुरु सेवाते ज्ञानहि लहै । गुरु सेवाते कर्मनि दहै ॥
गुरुसेवाते परम प्रकासा । गुरुसेवा मम चरण निवासा ॥
मोहिं मिलनको यही उपाई । गुरुसेवा विन औरनकाई॥
ताते गुरुकी शरणहिं आवै । तन मन धनसो हेत लगावै॥
ताते उपजै ज्ञान कुठारा । सब पाशनको काटन हारा ॥
त्रयगुण लिंग शरार उपाधी । जो आतमको लागी व्याधी
ज्ञान कुठार सकलसो हरै । या विधि आतम निर्मल करै॥
पीछे ज्ञान ध्यान सब त्यागै । निशिदिनएकब्रह्मअनुरागै॥
तब सो ब्रह्महि माहिं समावै । बहुरो जगत जनमनहिंआवै
ताते तुमसबसाधन त्यागौ । निशिदिनएकब्रह्मअनुरागौ ॥

दोहा–यहउद्धवतोसोंकह्यो, भवमोचनममज्ञान ।
अबबहुरोसाधनसहित, भाषोपरमनिधान ॥

इति श्रीभागवते महापुराणे एकादशस्कंधे श्रीभगवदुद्धव संवादे भाषायां द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

त्रयोदशोऽध्यायः ।

दोहा–होतसत्त्वगुणवृद्धिकर, ज्ञानउदयक्रमजान ।
कह्यो तेरहें ध्यायमें, हंसरूप आख्यान ॥

श्रीभगवानुवाच ।

सुनउद्धव अब परम गियाना । जाते पावै परम निधाना॥
जाते ज्ञान होय सो कहौ । या विधितुवअज्ञानहिं दहौ ॥

सात्त्विक राजस तामस जेहैं । उद्धवते गुण मायाके हैं ॥
सुखदुख सब तिनहींके जानौ । तिनते परेआत्मामानौ ॥
ताते नरसात्त्विकको गहै । सात्त्विक करि रजतमकोदहै ॥
पीछे ब्रह्म माहिं थिर होई । सात्त्विकऊ तबत्यागै सोई ॥
ऐसी विधि तीनों गुण दहै । तब ह्वै ब्रह्म ब्रह्ममें रहै ॥
ज्योंज्योंहोयसत्वअधिकारा । त्योंत्योंप्रेमभक्तिविस्तारा ॥
सकलवस्तुसात्विकजबभजै । तबहींसात्त्विकगुणऊपजै ॥
सात्त्विकज्योंज्योंत्योंत्योंभक्ति । त्योंहीत्योंअन्यत्रविरक्ति ।
तबरजतम दोऊ मिटिजावैं । तातेतिनके गुणनाहिं आवैं ॥
हर्षरु शोक मान अपमाना । निद्रा आलस गर्व गुमाना ॥
राग द्वेष आदिक हैं जेते । द्वंद्व सकल रज तमके तेते ॥
ताते जब ये रज तम जाहीं । तब तिनके गुणउपजै नाहीं ॥
ताते सात्त्विक संगति करै । रज तमकी संगति परिहरै ॥
मूल सकलको संगति कारण । संगति बोरैसंगति तारण ॥
पवित्रदेश काल जल पान । ग्रंथ रु कर्म जन्मअरु ध्यान ॥
गर्भाधान आद संस्कार । मंत्र जाप ये दश परकार ॥
ये दश जाको होवें जैसे । गुण विस्तारैं ताको तैसे ॥
सात्त्विकतौ सात्त्विक उपजावै । राजसतौ राजसअधिकावै ।
तामस तौ तामस विस्तरै । जैसे ये दश तैसो करै ॥
जाही जामें जो गुण होई । सो सो उत्तम जानै सोई ॥
पर जो उत्तम साधु बखानै । सो वह सात्त्विकउत्तमजानै ॥

जो अतिनिंद्य तमोगुणसोहै । सो राजसकछुमध्यम जोहै॥
ताते ये दश सात्त्विक सेवै । राजस तामस नामन लेवै ॥
राजस तामस जो हित होई । तौहूं सब छिटकावै सोई ॥
सात्त्विक संगति उपजै सत्त्व । त्योंत्योंलहैभक्तिको तत्त्व॥
जो लगि दृढ उपजै विज्ञान । देखै सकल एक भगवान ॥
अरु दोनों देहनिभ्रम जानै । सब विस्तारस्वप्नसममानैं ॥
तब यह ब्रह्ममाहिं थिर होवै। सात्त्विकहूंकी ओरन जोवै ॥
ज्यों बासनितें उपजै अनल । अरु होवै मारुतते प्रबल ॥
सब वासनको दाहै सोई । आपुहि बहुरिउपशांमितहोई ॥
त्यों साधन या तनते होवै । ह्वै प्रचंड या तनको खोवै ॥
बहुरि आपु उपशांमितहोई। साधनलेश रहै नाहिंकोई ॥
गुणातीत सो कहिये योगी । तीनोंकाल ब्रह्मरस भोगी॥
सो बहुरो भवमें नाहिं आवै। मोहिं मिल्योमोमाहिंसमावै॥
ताते सब साधन छिटकावौ । एक निरंजन मोंकोध्यावौ॥
तब हरिकीसुनि अद्भुतबानी । जन उद्धव यह प्रश्नबखानी

उद्धव उवाच ।

हे प्रभुईहांऐसे कहिये । ज्ञानादिकहित जे सुख लहिये ॥
परजे विषयसुखनकोचाहै । ताते बहु आरंभ सबाहै ॥
तेबापुरे सदादुखसहैं । कबहूं भूलि न सुखको लहैं ॥
परते तौविषयनिदुख जानैं । जानिबूझिक्योंउद्यमठानैं ॥
ज्योंबकरा मारनको लियो । ल छेरिनमें ठाढो कियो ॥

वहानिर्लज्ज कछूनहिंजानैं । तिनसोंमिलिविषयादिकठानै॥
अरु जैसे गर्द्दभ अरु कूता । तिरस्कार ते सहैं बहूता ॥
सुखके हेत सबन आधीना । सदा हृदयदुर्बलअतिदीना॥
वेतौ मूढ कछू नाहिं जानैं । ताते विषय उद्यम न ठानै ॥
एतौ नर जानै सब बाता । देख जगत चलो सब जाता ॥
प्रथमैं तो सुख आवै नाहीं । जो आवै तौ थिरन रहाहीं ॥
अरु जो दिनाचारिं नाह जावै । कालहुते तौखाननपावै॥
कालनिरंतर ग्रसते जावै । एक दिना यमद्वार पठावै ॥
तहां नरक है बहुत प्रकारा । जिनके दुखकोअंतन पारा॥
आगे चौरासी भय भारे । विषयिनको बहुदुख विस्तारे॥
या भवजलक दुःख अपारा । कहौं कहाँलौं वार नपारा॥
ऐसी सब विधि मानव जानै । तौहू क्यों आरंभनि ठानै ॥
आपु आपुको दुख उपजावै । आपु आपु यमद्वार पठावै॥
सो यह सकल कृपा करि कहौ । मेरे उरका संशय दहौ॥
यों कहिकै उद्धव जब रहैं । तब हरिजी प्रत्युत्तर कहैं ॥

श्रीभगवानुवाच ।

उद्धव यह आतम अविनाशी । ज्ञानस्वरूप परमसुखरासी
सो जबहीं या तनुमें आवैं। तब स्वाधीन विषै सुखपावै॥
बहुरो तिन हित उद्यम गहै। नहिं पावै तौ दुखको लहै ॥
या विधि सुख दुख जबहीं जानै । तबहींदेहआपुकरिमानै
ऐसे बढे देह अहंकारा । तबहीं राजसको अधिकारा ॥

राजस सहित जबहिं मन होई । तब एई सुख जानै सोई॥
तबसंकल्पविकल्पनि करै । निशिदिनहृदयाविषैसुखधरै॥
जबजासुखहिसुनैअरु देखै । तब वशह्वैनिजसुखकारि लेखै
तब हिरदैमें बाढै काम । ज्ञान विचार न राखै नाम ॥
ताते बहु राजस अधिकारा । राजसते मन गहै विकारा ॥
तब राजसको वेग प्रचंडा । ज्ञानहि मारिकरैशतखंडा ॥
ताते ज्ञान सुनै अरु जानै । अरु औरनसों आपुबखानै॥
पर सो काम नहीं ठहरावै । लैकारि पकारि कर्म करवावै॥
पर यद्यपि यानरकी बुद्धि । रज तमते नहिं पावै शुद्धि ॥
तौहूं निशिदिनदोष विचारै । उरते सकल कामनाटारै ॥
सावधान आलस नहिं करै । क्रमक्रम मम चरणचितधरै ॥
आसनजीतिकरैवशप्राना । निशिदिनउरराखैममध्याना॥
अरुममशिष्यचारिसनकादि।सकलतत्वज्ञाननिकीआदि।
तिनविचारकरियोगहिभाष्यो ।सोतौइहैऔरसबनाष्यौ ॥
ज्योंही ज्यों मनदूजा तजै । अरुज्योंज्योंममचरणनभजै ॥
याहीते सब मिटै विकारा । याहीते छूटै ससारा ॥
याहीते मम चरणन पावै । बहुरो जगत जन्मनहिंआवै ॥
ताते परमयोग यह राष्यो । जाते मेरे शिष्यन भाष्यो ॥
जब यह वाणी बोले कृष्ण । तब उद्धव जन कीन्होंप्रश्ण॥

उद्धवउवाच ।

हे प्रभुकौनसमय या रूपा । तुमभाष्योयहज्ञानअनूपा ॥

सनकादिकन कौन विधिलह्यो। क्योंपूछ्योकैसेतुमकह्यो॥
ज्ञानसहित सब मोसों कहौ । मेरे उरको संशय दहौ ॥
जब यह उद्धवकीन्हो प्रश्न । तब बोलेकरुणामयकृष्ण ॥

श्रीकृष्ण उवाच ।

ब्रह्मपुत्र सनकादिक चारी । मनते उपजे ब्रह्म विचारी ॥
जन्महिते जिनगहीनिवृत्ति । मनवचक्रमसोंतजीप्रवृत्ति
प्रश्नकरी तिन ब्रह्मा आगे । ऐस भेद ज्यों सोवत जागे ॥
अति सूक्षम जानी नहिं परै । उत्तर कहौ कौन उच्चरै ॥

सनकादयऊचुः ।

हे प्रभु ब्रह्म ब्रह्ममय देवा । याको हमैं बतावो भेवा ॥
विषयवासनाचित्तहिगह्यो । चित्तप्रीतिकारिकैमिलिरह्यो ॥
दोऊ मिले आपुमें ऐसे । नीर रु क्षीर परस्पर जैसे ॥
भिन्न भये बिन मुक्ति न होई।क्यों करिभिन्नहोंहिंयेदोई ॥
यह वाणी ब्रह्मा उर धारी । उत्तर देनको बहुत विचारी॥
पर तौहूं उत्तर नहिं आयो । जाते कर्मनसों मन लायो ॥
तब ब्रह्मा यह बुद्धि विचारी । जाहिनकोईताहिमुरारी ॥
ताते कऱ्यो चिंतवन मेरो । हंसरूप मैं प्रगटचो नेरो ॥
हंसरूप ताते दिखरायो । जाते यह आशय समुझायो ॥
कैजो हंस वृत्तिको गहै । सोई याके भेदहिं लहै ॥
तबतिनमोहिंदेखिसुखपायो ।ब्रह्मामिलिउठिमाथोनायो ॥
करिविनतीतबबचनबखाने । हेप्रभुतुमकोहमनहिंजाने ॥

तब तिनसोंमैं जो कछुकह्यों । तिनकेउरकोसंशयदह्यों ॥
तेई वचन कहौं अब तोसों । सावधानह्वै सुनियोमोसों ॥
तुमको ह्येयों पूछ्यो जबहीं ।ज्ञानकह्यौं उत्तरमैं तबहीं ॥
मनको संशय सबहि मिटायो।विद्यमान परब्रह्म बतायो ॥
हंसहरी जब हँसकरबोले । कृपानिधी तब अंतर खोले॥

हंस उवाच ।

विग्रहु प्रश्न करी तुम जैसी । करने नहीं संभवै तैसी ॥
वस्तु विचार द्वैत नहिं कोई । तो याकोउत्तर क्योंहोई ॥
अरु जो देहरूपऊ कहिये । तौहूं कछू द्वैतनाहिंलहिये ॥
पंचभूत निर्मित तनु सारे । जे कछु जहाँ लगे विस्तारे ॥
ताते सकल एक द्वै नाहीं । दूजो कौन विचारौ माहीं ॥
पुरुष दृष्टि देखे ते एका । प्रकृति दृष्टिहूं नहीं अनेका ॥
ताते प्रश्न करी तुम ऐसी । बहुतानि माहिं करीजे जैसी ॥
अरुजोदीसेतत्वविचारा । तौनहिंप्रकृतिपुरुषविस्तारा ॥
जो कछु दीसै सुनिये कहिये।मनअरुबुद्धिजहांलौ लहिये॥
सो सबमैंहीं दूजो नाहीं । ऐसो ज्ञान धरौ उरमाहीं ॥
नामरूपते सकल विकारा । आदिअंतमाधिमाटीसारा ॥
त्योंहींआदिअंतमाधिमाहीं । मैंहौं एक द्वैत कछु नाहीं ॥
द्वैत दृष्टिसो दुखको कारण ।ब्रह्मदृष्टिनिजसुखविस्तारण॥
लगे तरंगनिसों दुख लहै । तब सुख जबते ताज जलगहै॥
त्यौंही द्वैत दृष्टिसों दुःख । एक दृष्टि सोई निज सुःख ॥

अरु तुम प्रश्न विरंचिसों करी । सो मैं हृदय आपने धरी ॥
विषयनिमाहिंचित्तामिलिरह्योअरुविषयनिचित्त हिंदृढगह्यो
हे पुत्रहु यह योंहीं सत्य । परते आतम माहिं असत्य ॥
विषय चित्त ए दोऊ माया । आतम ब्रह्मनिरंजनराया ॥
विषयनिसोंजबचित्तलगावे । तबहिंचित्त तिनतेसुखपावै ॥
तबविषयनिको ध्यानहिकरै।तिनके हेत कर्म विस्तरै ॥
ताते एक मेक मिलिरहै । ऐसे जन्म जन्म दुख सहै ॥
ताते आतम मेरो अंशा । मेरी शरण गहै तजि संशा ॥
बाहिरहूंतेविषयपरिहरै । अरु चितसोंचितवननहिंकरै ॥
विषयअरुचित्तवृथाकरिजाने।तिनते परे आपुको माने ॥
ब्रह्म स्वरूप एक अविनासी । ज्ञानरूपचेतन सुखरासी ॥
मनअरुबुद्धि चित्तअहंकारा । इंद्रिय विषयदेहविस्तारा ॥
यहभ्रमरूपसकलहै माया । भूलि आतमाआपुबँधाया ॥
ऐसेजानिसकल छिटकावै । आपुहिमोहिंएककरिध्यावै ॥
जाग्रतस्वप्नसुषुप्ति बखानौं । त आचरणबुद्धिकोजानौं ॥
तिनते परे आत्मा रूप । सदा एकरस परम अनूप ॥
सात्विकहुते जागनो होई राजस स्वप्न लहै सब कोई ॥
सुषुप्ति तामस गुणते आवै । मन अरु बुद्धितिहूंकोपावै ॥
एकरूप आतम तिहुँ माहीं । साक्षी भूत लियेकहुनाहीं ॥
ताते तिहूं गुणानिते न्यारो । निजानंदमय रूपहमारो ॥
तामें थिरहै करै विचारा । सहजहि छूटै त्रिगुणपसारा ॥

देहविषे बाध्यौ अभिमाना । ताते भेद उव्यो यहनाना॥
ताते निजानंद विसरायो । कालअसांखिमहा दुखपायो॥
ऐसे जानि तजै अभिमाना । कबहुँनकरैसुखनकोध्याना॥
तिहूं गुणनते करै विरक्ति । चौथे पद बाँधै आसक्ति ॥
तब सहजै मो माहिं समावै । बहुरो देहकबहुँ नहिंपावै॥
अरु जो सकल ग्रंथ विस्तरै । वेदधर्म नानाविधि करै ॥
प्रवृत्तिमाहिंबहुत विधिजागै । परजोजानिद्वैतनाहिंत्यागै॥
सो नित सोवत जागत जानौं । ताकोमैंदृष्टांतबखानौं ॥
जैसे शयन करै नरकोई । सोवत स्वप्नलहै पुनि सोई॥
वहुतक भाँति करै व्यवहारा । लेन देनजलपानअहारा॥
वहुरो रैनि भये ते सोवै । दिवस भये त्योंहीं उठिजोवै॥
ऐसी विधिकैयौदिन बीतैं । जागत सोवतसकलव्यतीतैं॥
बहुरो वह ऐसी मन आनै । रातिहु दिनकी निद्रा भानै॥
कबहुँ न सोवैं जागत रहै । सावधान आलस नहिं गहै ॥
ऐसे काज आपनो करै । चौरादिक धनको नाहिं हरै ॥
पर जब यहांजागिकरिदेखै । तबवहसकलवृथाकरिलेखै ॥
सोवत जागत सब व्यवहारा । जाके हित जागैसो सारा॥
आपुहि सब मिथ्या करिजानै।कबहूंभूलिसत्यनहिंमानै ॥
त्योंहीं वेद धर्मआचरना । अरुतेसुखजिनकोहितकरना ॥
ते सब स्वप्नरूप व्यवहारा । पंडित छोंडै सकलपसारा ॥
भ्रमते धरयो देह अभिमाना । तातेवर्णाश्रमविधिनाना ॥

तातें करै बहुत विधि कर्मा। सुखनिमित्त विस्तारैधर्मा॥
परतें सकलवृथाकारिजानौ। स्वप्नजागरणसमकरिमानौ॥
जो देहादिक सकल पसारा। चेतन करि वरतावनहारा॥
सुखदुखभोग करैअरुजानै। आपुहिसुखीदुखीकरिमानै॥
बहुरो जबहिं स्वप्नको पावै। बहुव्यवहारनसों मनलावै॥
तबहूं जानै सकलपसारा। आपापर सुखदुखव्यवहारा॥
बहुरिसुषुप्तिमाहिंसबजाई। मनबुधिचितअहंकारनकाई॥
तब आतमा निरंतर रहै। जागे सकल बात जो कहै॥
लियो दियो अरुआयोगयो। जहाँलगे पीछे अनुभयो॥
सो आतमा एक रस रहै। तिहूंकालकी बातैं कहै॥
यों अविनाशी आतम एक। दूजे माया भेद अनेक॥
तीनि अवस्थाहैं ये मनकी। मनमें आभासी है तनकी॥
तन तिनको तीनों गुण जेहैं। तीनों गुण मायाके तेहैं॥
ऐसी विधिनिश्चयसोजानैं।निशिदिनहृदयविचाराठानैं॥
सकल उपाधिनको आगारा। ज्ञानखड्गकाटैअहंकारा॥
हृदयमाहिं मैं ताको भजै। सावधान ह्वै कबहुं न तजै॥
यह सारोजगभ्रमकरिजानै। मनकोकृतमिथ्याकरिमानै॥
ज्यों एकनको उपजत देखै। अरुविनशतएकनकोपेखै॥
सोई रीति सकलकी जानै। स्वप्नसमान हृदयमें मानै॥
अग्निसहित ज्यों लकरी होई। बालक लै करिफेरैकोई॥
और भाँति है दीसै और। थिर पीर चंचल लहै न ठौर।

त्योंयहजगतरहैथिर नित्त । परअतिचंचलसकलअनित्त ॥
एक ब्रह्ममें सबआभास्यो । त्रिगुणपाइबहुभेदप्रकास्यो॥
स्वप्न रूप गुणमें ज्यों भोगी । योंबहुभाँति विचारैयोगी॥
ताते जगते दृष्टि उतारै । साँचो जानि हृदयनहिं धारै ॥
तृष्णा छोडै निश्चल रहै । मन वच क्रम कछु कर्मन गहै ॥
इहारहित ब्रह्मरस भोगी । निजानंदमय होवै योगी ॥
ऐसे वृथाजानि सब त्यागै । निश्चल हृदयब्रह्म अनुरागै॥
सो जब रहै देहहूं माहीं । तौहूं फिरि भ्रम उपजै नाहीं ॥
जो यह देह जाय कहुँ आवै । बैठै उठै पियै अरु खावै ॥
औरौ कछू करै व्यवहारा । परसो सिद्ध न जानै सारा ॥
निश्चल रहै निरंजन माहीं । देहादिक कछु जानै नाहीं ॥
ज्यों कोई तन वस्त्रनि धरै । बहुरो सुरापान कहुँ करै ॥
सो तिन वस्त्रनि जानै नाहीं । प्रथम बँधेताते नहिं जाहीं ॥
कर्मरहै या तनुके जौलौं । सहित इंद्रिय न वरतै तौलौं ॥
कर्मैंताके तनुको पोषै । खान पानसों नित संतोषै ॥
योगी ब्रह्ममाहिं थिर रहै । देहादिककी सुद्धि न लहै ॥
जैसे स्वप्नदेखि करि जागै । ता स्वपना सो नहिं अनुरागै॥
तैसे मोह निशाते जाग्यो । कबहुँ न लियेब्रह्मअनुराग्यो ॥
इहथका ब्रह्महिमिलिरह्यो । भवकोसकलबीजातिनदह्यो॥
सो बहुरोभवमें नाहिं आवै । ब्रह्म मिल्यो सो ब्रह्मसमावै ॥
ताते देह आदिविस्तारा । भ्रमकरितजौत्रिगुणमयसारा॥

त्रिगुण अतीत ब्रह्मकोसेवौ । विषयनकोकछुनामनलेवौ ॥
विषयचित्त दोऊ भ्रम जानौ । ब्रह्ममाहिं रहि दोनोंभानौ ॥
सकल अतीत आपुको देखौ । सबघटएकद्वैतनहिंलेखौ ॥
ब्रह्मरुआपएककरिमानौ । द्वैतभाव कबहूं जिनि आनौ ॥
निशिदिन ब्रह्मविचारहि करौ । परबल मेरो उरमेंधरौ ॥
मम आधीन निरंतर रहौ । या विधि जगतबीजसबदहौ ॥
जाते बहुरि न भवमें आवौ । ब्रह्मरूप ह्वै ब्रह्म समावौ ॥
यहमैंतुमसोंकह्योविचारा। सांख्यअरुयोगसकलकोसारा॥
मेरो गुह्यमतोअति जानौ । बहुतभाँति हृदयमें आनौ ॥
तुम्हरोहितमनमाहिंविचाऱ्यो । मैंहौंविष्णुहंसतरुधाऱ्यो ॥
मैंहौं ब्रह्म सकलको ईश । मो विनु और सकलअनीश ॥
सांख्य रु सत्यतेज तपयोग । प्रियशमदमश्रीकीरतिभोग ॥
औरौवस्तु जहाँलौं सार । ते समस्त मेरे आधार ॥
ताते जो मम शरणहि आवै । उत्तम वस्तुसकलसो पावै ॥
मो विन बहु साधनहूं गहै । तोहू कबहुँ न सुखकोलहै ॥
मैं निर्गुण पर सब गुणसेवैं । मैं निरपेक्ष सकल चितदेवैं ॥
कछू न चहौं करौं उपकार । सबकोहितसबकोआधार ॥
सब उपजाऊं सब प्रतिपालौं । सबपोषौं सबसंकटटालौं ॥
ताते मोहिं तजे दुख पावैं । तबहीं सुखीशरणजबआवै ॥
शरणागतको वेगि उधारौं । आपु मिलाऊंभवभयटारौं ॥
ताते सब तजि मोको भजौ । पावोमोहिंजगतभयतजौ ॥

उद्धवमैं यह ज्ञान सुनायो । सनकादिकनपेरमसुखपायो॥
हृदय रह्यो संदेह न काई।मोहिं मिलनकी विधिसबपाई॥
बहुतभाँति मम पूजाकरी । बहुतभाँति स्तुतिविस्तरी ॥
मेरोभजनहृदयमें धाऱ्यो । औरसकलततकालनिवाऱ्यो ॥
आपुकृतारथकारितिनमान्यो।द्वैतभावताजिब्रह्मपिछान्यो॥
तब तिनके प्रस्तुति करतेहीं । ब्रह्माकेदेखत आगेहीं ॥
सबहिनको आनंद बढायो । तबमैं अपनेधामसिधायो ॥
ताते उद्धव यह तुम जानो । अपने परम भागकरिमानो ॥
सनकादिकन समा तुम किये । तेई वचन तुम्हैं मैं दिये॥
ताते यहै ज्ञान उरधारौ । ब्रह्म जानि सब द्वैत निवारौ ॥
मम आधीन सदाहीं रहो । दूजी सकल वासना दहो ॥
ऐसे ह्वै निजपदको पैहो । जाते जगत बहुरि नहिं ऐहो ॥
दोहा-यहउद्धवतोसोंकह्यौं, परम ज्ञाननिजसार ।
याको गहिनिज पदलहै, छूटै सब संसार ॥
हंसगीतजो जनपढै, और सुनै चितलाय ।
सोपावैनिजतत्त्वको, सदाकृष्णतिहिंसाय ॥
इतिश्रीभागवतेमहापुराणे एकादशस्कंधे भाषायां श्रीभगवदुद्धव
संवादे हंसगीतायां त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

चतुर्दशोऽध्यायः ।

दोहा-श्रीधरचौदहऽध्यायमें, भक्तिश्रेयकल्याण ।
ध्यानयोगहरिकहतहैं, साधनसहितप्रमाण

श्रीशुक उवाच ।

ऐसो सुनि हरिजीसों ज्ञान । भक्तिउधारकश्रमसबभान ॥
यह उद्धव हढकारि उरधारी । परकछु प्रश्नकृष्णसों करी ॥

उद्धव उवाच ।

परमदयालु दयानिधि देवा । मोको बडो बतायोभेवा ॥
भक्तिहुते पैये तुव चरणा । छूटैं जगत जन्म अरुमरणा ॥
पर अब एक प्रश्नको कहौ । मेरे या संदेहहि दहौ ॥
जे बहुविधि श्रुतिस्मृतिजानैं । ते तौ बहुसाधननबखानैं ॥
मुक्तिहेतु बहु पंथन कहैं । अरु तेऊ बहुते मिलि गहैं ॥
ताते तेऊ पंथ अशेष । भक्ति समानाकि कछू विशेष ॥
जोजो पंथ तुम्हें प्रभुपैये । बहुरो भवसागर नाहिं ऐये ॥
सो सोपंथ कृपा करि कहौ । मेरी सकल मूढता दहौ ।
तुम विन यह दूजो नाहिं कहै । ज्ञानलहै सो तुमते लहै ।
उद्धव ऐसी पूछी वाणी । तब उद्धवकी प्रश्न बखानी ॥

श्रीभगवानुवाच ।

उद्धव कल्प समय जब भयो । तब यहतत्त्वलीनह्वैगयो ॥
पुनि मैं सृष्टिसमययहज्ञाना । ब्रह्मासोंश्रुतितत्त्वबखाना ॥
सोई श्रुति पुनि ब्रह्मपढायो । भृगु आदिकस्वायंभूपायो ॥
सात महाऋषिभृगुजिन्हआदि । अरुस्वायंभूमनुमन्वादि ॥
तिन अष्टनते यह विस्तारा । नानाविधिकेभेदविचारा ॥
सुर नर असुर सिद्ध गंधर्व । विद्याधर यक्षादिक सर्व ॥

सप्तद्वीप नर बहु परकारा । किंनर किंपुरुषादिअपारा ॥
सत रज तमतिनकीउत्पात्ति । ताते बहुविधिभईप्रकृति ॥
तिनते भये बहुत विधि भेद । तिनतै सेई जाने वेद ॥
वेदतत्वसो कतहूं रह्यो । आप स्वभावसमा तिनकह्यो ॥
ज्योंज्योंतिनकेभएस्वभाव । त्योंत्योंजान्योश्रुतिकोभाव ॥
त्योंही त्योंआचरणनिकरै । त्योंत्योंआपुस्मृतिविस्तरै ॥
परम पराजे तिनते होवैं । ते तिनके कृत स्मृति जोवैं ॥
तिनते आपु करै बहुग्रंथा । नाना भांति चलावै पंथा ॥
ऐसी विधि उपजे पाखंडा । ज्ञान रु धर्महोहिशतखंडा ॥
मम माया करि मोहितहोवै । ताते तत्व पंथनाहिं जोवै ॥
अपनी अपनी रुचि अनुमाना । करै कर्मअरुभाषैज्ञाना ॥
नानाविधि साधन सुनावै । तिनतिनतेकल्याणबतावै ॥
एकै बहुविधि हुर्मानि भाषै । तिनते भुक्तिमुक्तिकोआषै ॥
एकै कहैं यशहि विस्तरिये । जाते सकलदुखनतेतारिये ॥
जाको यश या जगमें जौलौं । सो नर रहै स्वर्गमेंतौलौं ॥
एक यहाँही काम बखानै । आगे स्वर्ग नरक नाहिंजानै ॥
जो तन यहां करै भोगनको । ईहां छोडिजायतातनको ॥
आगे सुखदुखलहै न कोई । ताते भोग करौ सबकोई ॥
ऐसे ग्रंथनि कहि भरमावैं । धर्मरायकी खबरि नपावैं ॥
एक कहै शमदम अरु सत्य । दूजे साधनसकलअसत्य ॥
योग ग्रंथ बहु साखि बखानैं । तिनतेमूढमुक्तिकोजानैं ॥

सामरुदाम दंड अरु भेद । इनको गहैं एक पढि वेद ॥
न्यायसहित सब उद्यम करैं । उत्तम धर्म जानि उरधरैं ॥
दानभोग उत्तम करि भाषैं । यहै मुक्तिसाधनकरिरापैं ॥
एकै यज्ञ दान तप गहैं । एकै यम नेमन संग्रहैं ॥
एकै तीरथ व्रत मन धरैं । कहौं कहांलौं बहु विधिकरैं ॥
तिनते स्वर्गादिकसुख पावैं । क्षीण भये इहांफिरिआवैं ॥
बहुरो नीच योनि बहुलहैं । नरकनमेंकै यों युग रहैं ॥
अरु जब रहैं स्वर्गहू माहीं । तबहु कछु सुखपावैं नाहीं ॥
काम क्रोध निंदा अपमान । रागद्वेष इच्छा अभिमान ॥
इत्यादिक निग्रसे नितरहै । ताते कौन भांति सुखलहैं ॥
भक्ति विनाविधिलोकहिजावैं । कालतहांतेउलटिढहावैं ॥
ताते उद्धव भ्रम है सारा । सुख मम चरणनकीआधारा ॥
जिनमेरेचरणनाचितधऱ्यो । साधनसाध्यसकलपरिहऱ्यो ॥
तिनको उद्धव जो सुख होई । सो सुख कहूं नपावैकोई ॥
सो सुख कह्यो सुन्यो नहिं आवै । सोइपै जानै जोपावै ॥
सो पावै जो मोसों मांगै । और सकल आशयकोत्यागै ॥
मम आधीन निरंतर रहै । दूजी सकल कामना दहै ॥
सकल वस्तुकोकीन्हों त्याग । अंतःकरण खरो वैराग ॥
समदरशीनितशीतलचित्त ॥ ममचिंतवनहृदयदृढवित्त ॥
ताको दशौंदिशासुखरूप । सो सुखजोअतिपरमअनूप ॥
जो जन मेरे सुखको जानै । ताको मन कतहूंनहिंमानै ॥

ताके सब आधीने रहै । परसो मो बिन कछुनहिं गहै ॥
ब्रह्मलोकको कबहुँ न लेवैं । इंद्रलोक पलचित्त न देवैं ॥
सब भूराज नैन नहिं देखैं । सप्त पतालसुखनतृणलेखैं ॥
योगसिद्धि अणिमादिक अष्ट । योगीजिनहितसाधैंकष्ट ॥
तिनहूंको कबहूं नहिं लेईं । आपुहिते नित सेवैं तेईं ॥
मुक्ति निकटही रहै सदाई । पर मेरो जन छुवै न काई ॥
मैंहीं एक सदाप्रियताको । ममचरणनचितरातोजाको ॥
ताहीते मेरे प्रिय सोई । ता बिन और नहीं प्रियकोई ॥
त्यों मेरोसुत विधिनहिंप्यारो । नहिंशंकरजोरूप हमारो ॥
नहिं प्रियत्यों संकर्षण भाई । श्रीअर्धंगत्यों नहिंसाई ॥
यों नहिं प्रिय मेरे मम देह । जैसो तुमसों परम सनेह ॥
तुमसों भक्त महा प्रिय मेरे । ताके रहौं निरंतर नेरे ॥
इच्छारहितअरुशीतलहृदय । सबनिरवैरसबनिपरसदय ॥
ब्रह्मदृष्टि देखै सब माहीं । ब्रह्म विचार तजै पल नाहीं ॥
मैंताकोप्रथमहिंयोंकरचो । त्रिगुणपाशबंधनविस्तरचो ॥
परताके ऐसो बल भारी । काटी माया शक्ति हमारी ॥
एतेपरसब अवगुणतज्यो । उलटिआयममचरणनभज्यो ॥
अरु सब सुखताकेवश रहैं । सो तजिमोहिंकछूनाहिंगहैं ॥
बहुतनके भवबंधन दहैं । नामप्रगट करि मेरो कहैं ॥
तिन तिनकोममचरणनिलावैं । सदासबनतेआपुछिपावैं ॥
अहंकार ममत्ता नहिं आनैं । मोहिंछोडिदूजोनहिंजानैं ॥

गुणातीत ता जनके पाछे । यह तनु धरे फिरौं मैं आछे ॥
सात्विक गुण धारी यह देह । करौं शुद्धता चरणनखेह ॥
निःकिंचन तनहूं नाहिं रक्त । मोहींसों नितहीं अनुरक्त ॥
शीतल हृदयविगतअभिमान । कृपावंतसब एकसमान ॥
केहूं काम चलै नहिं बुद्धि । मोहिं सेइपाई अति शुद्धि ॥
मुक्तिहुते नित निस्पृह रहैं । ते जन मेरे सुखको लहैं ॥
वासुखको सुखजानैं तेई । और सकल समुझैनाहिं केई ॥
निस्पृहजननिस्पृहसुख पावै । स्पृहावंतके निकटनआवै ॥
विषयनके वशमानव होई । इंद्रिय जीति सकैनाहिंसोई ॥
परिआधीनहोइममजवहीं । विषयाकछुनसकैकरितवहीं ॥
विषय शत्रुमैंसकलनिवारौं । आपु मिलाऊंभवभयटारौं ॥
पावक प्रगट करौं लैअस्म । होय प्रचंड करै सबभस्म ॥
त्यों मम भक्ति प्रगट जो होई । जारै पाप रहैनाहिंकोई ॥
बहुरिपापकोनिकट नआवै । भक्ति प्रतापमोहिंसोपावै ॥
साधै सिद्धि योग अष्टांग । बहु विधि यज्ञहोहिजोसांग ॥
सांख्यविचार सकलजो जानैं । वेद पढैं देवैं सब दानैं ॥
तपहि करै इंद्रियमन बाँधैं । और सकल धर्मनकोसाधैं ॥
तौहूं मोहिंकबहुँनाहिंपावै । भक्ति मोहिंततकालमिलावै ॥
एक भक्ति मोको वश करै । दूजे ते अति अंतर परै ॥
श्रद्धासहित करैमन भक्ति । तासों मेरी अति आसक्ति ॥
मैं ब्रह्मादि सवनको ईश । मो विन औरै सकलअनीश ॥

सो मैं भक्तनके आधीन । ते मोसों ज्यों जलसों मीन ॥
जो चंडाल भक्तिमें आवै । ताही तनु निर्मलता पावै ॥
वर्णाश्रम सब वंदनकरैं । ता पदरेणु शीश पर धरैं ॥
तीनों भुवन दास वशताके । मेरी भक्ति विराजै जाके ॥
विद्यापढै धर्म बहुकरै । जीव दयाबहु विधि विस्तरै ॥
सत्यवंतअरुदृढ संतोष । कबहूं कहूं करै नहिं रोष ॥
कष्टसहितपूरणतपसाधै । मनइंद्रिय देहादिक बाधै ॥
तीरथव्रतनआदिदै जेते । सब आचरन करै जो तेते ॥
परजो मेरी भक्ति न होई । तौ निर्मल नाहिं होवै कोई ॥
विन रोमांच द्रवे विनचेत । आनंदाश्रु कला विननेत ॥
तौलौं साधुभक्तिनहिंकहैं । भक्तिविनाउरशुद्धि नलहैं ॥
द्रवै प्रेमते जाको चेत । कबहूं रोवैं मेरे हेत ॥
कबहूं गदगद बाणी होई । कबहूं ऊंचे गावै सोई ॥
कबहूं मधुरमधुरस्वरगावै । कबहूं प्रेममगन रहिजावै ॥
कबहूं नृत्यप्रेमवशकरै । कबहूं हँसै गुणन विस्तरै ॥
लोकवेदकी लाजनजानै । ज्यों उनमत्त विवशयों ठानै ॥
सो ऐसो मेरो जन होई । त्रिभुवन शुद्ध करत है सोई ॥
सकलभुवनकेपापनिवारै । सकलभुवनकोसोजन तारै ॥
जैसे हेममलिनताहोई । बहु जल माहिं धोइये सोई ॥
औरौजतनबहुतविधिकीजे । हेमहिबहुतकसौटी दीजै ॥
परकौनिहुविधिशुद्ध न होई । कोटिनजतनकरैजो कोई ॥

सोई हेम अग्निमें दीजै। दे करि फूँक तप्त अतिकीजै॥
ताते कोई मल नहिं रहै। अपने शुद्ध रूपको गहै॥
त्योंहींजतनकरैबहुकोई। परआत्मानाहिं निर्मलहोई॥
मेरीभक्तिमाहिंजबआवै॥ तबसबकर्ममलिनाछिटकावै॥
निर्मल होय लहै निजरूप। पावै मोहिं तजै भवकूप॥
ज्योंज्यों मेरी भक्तिहि करै। मेरे गुणन हृदयमें धरै॥
श्रवणकीर्तनसुमिरणठानै। ज्योंज्योंऔरवासनाभानै॥
त्योंत्योंहृदयप्रकाशै ज्ञान। देखै ब्रह्म मिटै सब आन॥
द्वैतभाव कतहूं नहिं रहै। निर्भय निजानंद पद लहै॥
नैनन माहि रोग ज्यों होई। ताते कछू न देखै सोई॥
पुनिज्योंज्योंओषधिहिलगावै।त्योंत्योंदृष्टिहोतनितआवै॥
त्योंत्योंसकलवस्तुकोदेखै। आपुहि परमसुखीकरिलेखै॥
ताते भक्ति रूप दृढ अंजन। जाते देखे देव निरंजन॥
जो संसार सुखनको ध्यावै। सोसंसार माहिंवहि जावै॥
अरु जो ध्यावै मेरे चरणा। पावै मोहिं मिटै भवमरणा॥
ताते सबसाधन भ्रम जानौ। स्वप्नसमानद्वैतसबमानौ॥
मनक्रमवचनसकलकोत्यागौ।निशिदिनममचरणनअनुरागौ॥
जोयाभवहिंचहैछिटकायो। अरुचाहैममचरणन आयो॥
तेतिनकी संगति परिहरैं। जेनरयुवती संगति करैं॥
युवतीसुखनसुनै नाहिं श्रवना। नैनन देखै करै न गवना॥
कबहूं भूलि हृदयनाहिं आनै। मनक्रमवचनानिरंतरभानै॥

ऐसो बंधन कहूं न होई । कोटिन संग करै जो कोई ॥
ज्यों योषितअरुजोसितसंगी । बंधनकरै होत परसंगी ॥
ताते तिनके संगहि तजै । सावधान मम चरणन भजै ॥
निर्भय ठौर करै स्थान । मो विनसंग तजै सब आन ॥
मेरो ध्यान निरंतर करै । प्रेमसहित हित हृदय धरै ॥
कृष्णवचनसुनि हृदयराखै । उद्धव और प्रश्नके भाखै ॥

उद्धव उवाच ।

हेप्रभुतुम्हैंकौनविधिध्यावै । कौन रूपमें चित्त लगावै ॥
मैं तोमुक्ति सेइ तुवचरणा । परजोचहै मिटायो मरणा ॥
कृपासिंधुतुमकरुणाकरौ । ध्यान योग वाणी विस्तरौ ॥
सुनिउद्धवनिजजनकीवानी । तबश्रीहरिजीआपुबखानी ॥

श्रीभगवानुवाच ।

उद्धवतो कोध्यानसुनाऊं । योगसहित सबअंगबताऊं ॥
योगसहितजाध्यानहि करै । तौमन वेगिरजहिपरिहरै ॥
सम आसनमें स्थिरहोई । जंघनि पराख कर दोई ॥
देहसमान चलै नहिं डोलै । नासा दृष्टि कछू नहिं बोलै ॥
इडापूरिकुंभक थिर धारै । पुनि रेचक पिंगलानिसारै ॥
बहुरो पूरि पिंगला द्वार । इडा निसारै वारं वार ॥
इंद्रिय अर्थसकलपरिहरै । मेरो हेत हृदयमें धरै ॥
उद्धवद्वैविध योग कहावै । ता भेदहि सतगुरुते पावै ॥
मंत्रसहित सो नामसगर्भ । मंत्र विना सोकहिय अगर्भ ॥

तातें जो सगर्भ सो नाम । सो उत्तम है प्राणायाम ॥
पूरै राखै रेचक करै । ओंकार मंत्र उर धरै ॥
घंटानादतुल्यउर ध्यावैं । तासों मिलिकरिप्राणचलावै ॥
योंत्रिकाल अभ्यासै कोई । प्राणमासहीमें थिर होई ॥
बहुरोहृदयकमलको ध्यावै । अष्टपाखुड़ी सोविगसावैं ॥
औंधे मुखते ऊरध करै । ताके मध्य सूर्यही धरै ॥
सूरजमें पूरणशशि आनै । शशिमेंअनलतेजमयमानै ॥
अनलमध्यममरूपहिध्यावै । परमप्रीतिसों मनहिलगावै ॥
अंगुष्ठसमानचतुर्भुजरूप । अतिशीतलसुखदानिअनूप ॥
नूतनसजलमेघतनुश्याम । ताडिततुल्यअंबररुचि धाम ॥
मंदहासशोभानिधिआनन।मकराकृतकुंडलशुभकानन ॥
कंठकौस्तुभमणिबनमाला । उरभृगुलताळाक्षिविशाला ॥
शंख रु चक्र गदा अरु पद्म । हस्त चारिहूं शोभासद्म ॥
हेममुकुटहीरामणिजर्‍यो । अतिशोभायमानशिरधर्‍यो ॥
भालतिलकअंबुजबरनैन । भक्त प्रसाद सुधाको ऐन ॥
करकंकण अंगदमुद्रिका । पगनूपुर कटिमें क्षुद्रिका ॥
अंकुशवज्रध्वजाअरविंद । चिह्नितचरणहरणदुखद्वंद ॥
नखमणिगणअतिप्रभाप्रकाश । उरअज्ञानअंधतमनाश ॥
औरसकलअंगनवसुभूषण । जिनकेध्यानामिटैसबदूषण ॥
वयस किशोर परम सुकुमार । नखशिख ध्यावै वारंवार ॥
चरणनते प्रतिअंगहि ध्यावै । एकगहैएकहि छिटकावै ॥

योंलैनखतें शिखपर्यंत । निशिदिन हृदय सुध्यावैसंत ॥
और वासना सब परिहरै । मेरो रूप अडिगमन धरै ॥
याविधिजबमननिहचलहोई । तबफिरिअंगनध्यावैकोई ॥
अतिसुंदर मुखमें मनधारै । औरसकलचिंतवनानिवारै ॥
या विधि मन अपने वशहोई । तब बिराटमैंधारै सोई ॥
सकल विराटरूपममजानै । मोते भिन्न कछू नाहिंमानै ॥
योंविराटममरूपहिजानि । निहचलभयाभेदकोभानि ॥
तबताहूते मनहि निवारै । शुद्ध निरंजन ब्रह्म विचारै ॥
ब्रह्म विचार निरंतर करै । सब आकार दूरि परि हरै ॥
आत्माब्रह्मएककरि देखै । चेतन रूप अखंडित लेखै ॥
निजानंदनिहचल निरधार । सत्यस्वरूपवारनाहिं पार ॥
एकअजन्माआपै आप । सुखदुखरहितपुण्यनाहिं पाप ॥
कालनकर्म जीवनहिं माया । आपै आपनिरंजनराया ॥
जैसे अग्नि अखंडित होई । ताते उठै पतंगा कोई ॥
बहुरि अग्निही माहिंसमावै । तबहिं पतंगा नामगमावै ॥
ऐसे आतम ब्रह्मविचारै । एक जानि करि द्वैत निवारै ॥
ऐसीभाँतिविचाराहिकरते । निशिदिनब्रह्ममाहिंमनधरते ॥
त्रिगुणाकारसकलभ्रमभागै । होय ब्रह्मसोवतसो जागै ॥
ह्वैकरिब्रह्मब्रह्ममिलिजावै । बहुरिवहाँ ते फिरिनाहिंआवै ॥
ऐसी विधि भव दुःखनदहै । मेरो निजानंद पद लहै ॥

दोहा–यहपैडौतोसोंकह्यौं, जाकरिहरिपुरजाय ।
परयामें बहुविघ्नहैं, तेभाषो समुझाय ॥

इति श्रीभागवते महापुराणेएकादशस्कंधेभाषायां श्रीभगवदुद्धव संवादे चतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥

पंचदशोऽध्यायः ।

दोहा–कहोंपन्द्रहेंऽध्यायमें, सिद्धिधारणाधार ।
परमज्ञानमें ऊपजै, अंतरायतिनलार ॥

श्रीभगवानुवाच ।

उद्धवयोग पंथ समुझाऊं । तामें बहुते विघ्न बताऊं ॥
जोइंद्रिय मन प्राणहि बाधै । सावधान ह्वै योगहिसाधै ॥
मोमेंधरै आपनो चित्त । ताको सिद्धि विघ्न है नित्त ॥
जोतिनासिद्धिनकोपरिहरै । सो ममचरणनको अनुसरै ॥
तिनसों कबहूं रहै भुलाई । तौ श्रमसकल वृथाहीजाई ॥
ऐसे कृष्ण वचन मनधारि । उद्धव कीन्हीं प्रश्नविचारि ॥

उद्धव उवाच ।

कैपरकार धारणा देव । अरु सिद्धिनको कैविधि भेव ॥
तिनके नामकृपाकरिकहौ । योगिनके विघ्नको दहौ ॥
तुवआधीनासिद्धिहैंसकल । तुम्हरी कृपाहोयजनअकल ॥
उद्धव प्रश्न हृदयमें धारी । तब बोले गोपालमुरारी ॥

श्रीभगवानुवाच ।

उद्धव सिद्धि अठारहकहिये । ममधारणाकरे जे लहिये ॥
तिनमें अष्टसिद्धिपरधान । दश मध्यमते करौं बखान ॥
जाते देह रूप अनुहोई । कतहूं नहीं आवरण कोई ॥
अणिमानाम सिद्धियहजानौ । महामोहनीमायामानौ ॥
जोतनुकरैमहा विस्तार । जहां तहां कछु वार न पार ॥
महिमानामासिद्धिसोंकहिये । कबहूंभूलिनताकोगहिये ॥
जो या देहहि अतिलघु करै । मुष्टि न आवै हाष्टि नपरै ॥
सोयहलघिमासिद्धिकहावै । मम जनयाके निकटनआवै॥
जे जे इंद्रिय भोगनिकरै । जहाँ कहूं विषयानि विस्तरै ॥
तिनसबभोगनिजाकरिलहिये ।प्रापतिनामासिद्धिसोकहिये ॥
एक ठौर हूं बैठो रहै । देखै सुनै सकलकी कहै ॥
ताहिअगोचररहै न काई । सो परकाशक सिद्धिकहाई ॥
इंद्रियदेहबुद्धि मन प्राण । तिहूंलोक जिनको स्थान ॥
तिनको त्योंप्रेरै जो जानैं । ताहि ईशिता सिद्धिबखानैं ॥
विषयसुखनकोकबहुँनगहै । जाते अति आनंदित रहै ॥
नामअवशितासिद्धि कहावै । मेराभक्तनिकटनहिंजावै ॥
जो जो इच्छा मनमें लावै । सोसो सकल पलकमेंआवै ॥
बसितानाम सिद्धि है सोई । मेरो जन आदरै न कोई ॥
अष्टसिद्धिये अतिपरधान । इनसे मध्यम भाषौ आन ॥
तनकेगुणव्यापैनाहिं कोई । नाम अनूरमि कहिये सोई ॥

दूरविश्रवण सुनै सब बैन। दूर दर्शदेखै सब नैन॥
मनके वेग मनो जब धावै। कामरूप बहुरूप बनावै॥
परके तनुमें करै प्रवेश। सिद्धि छठी परकाय प्रवेश॥
निज इच्छाते तजै शरीर। सो स्वच्छंद मृत्यु है बीर॥
मिलै अप्सरन विचरै देवा। देखै तिनहिं लहै सब भेवा॥
सोसुरक्रीडादर्शनकहिये। मिथ्याफलहै कबहुँनगहिये॥
जो संकल्प करै सो होई। यथा संकल्प कहिये सोई॥
जहाँ गयो चाहै तहँजावै। अप्रतिहत गतिसिद्धिकहावै॥
येदशमिलिअष्टादशकहिये। औरौपंचतुच्छनहिंगहिये॥

अथ पंचतुच्छसिद्धि।

वर्त्तमान अरुभूतभविष्य। सबकछुजानै लक्ष्यअलक्ष्य॥
यह है सिद्धित्रिकालज्ञान। आगे सिद्धि बखानौ आन॥
शीतउष्णआदिकजे द्वंद्व। तिनहि निवारै सो अद्वंद्व॥
विषअरुअग्नि सूर्यजलथंभा। जाते होवै ऐस अचंभा॥
प्रतिष्टंभसोसिद्धिकहावै। हरिजनताके निकटन आवै॥
वैअष्टादश अरुए पंचा। मिलिते ईस सकल परपंचा॥
ऐसे मूल रूपउच्चारी। शाखा बहुत नहीं विस्तारी॥
ममधारणाकरेते आवैं। योगिनको बहुविधिबिचलावैं॥
जोतिनते बिचलै नहिंकबहीं। तौममचरणनपावैतबहीं॥
जाहि धारणाते जो आवै। जैसे योगीको बिचलावै॥
सो सब उद्धव तोसों कहौं। योगपंथके विघ्न न दहौं॥

सगुणरूपजोकछुविस्तारा । सोनानाविधिरूपहमारा ॥
ताहीताहि माहिं मनलावै । तैसी तैसी सिद्धिहि पावै ॥

अथ सिद्धिसाधनतेईस ।

शब्द स्पर्श रूप रस गंध । पंचभूतके सूक्षम बंध ॥
तिनमें जाजामें मन लावै । ताताकेरूपहि मिलि जावै ॥
महातत्वमें मन हि लगावै । पंचभूतशाखा करिध्यावै ॥
जाजा शाखामें मन धारै । ताही ता सम देह बधारै ॥
पंचभूतके जे परमानू । तिनमें योगी धारैं ध्यानू ॥
तातासम लघुदेहहि करै । काहूसों कहुँ गह्यो न परै ॥
सात्त्विकअहंकार मन धारै । ताको मेरोरूप विचारै ॥
तब जेइंद्रियभोगनकरै । बहुत भाँति विषय विस्तरै ॥
तेते सुखयहयोगी पावै । सो यह प्रापति सिद्धिकहावै ॥
मेरो सूक्ष्मरूपमन आनै । ताते त्रिभुवनकी गतिजानै ॥
ज्योंकरदीवालै घर देखै । यों त्रिभुवन आचरणनि पेखै ॥
मेरो कालरूप मन धारै । सब व्यापक सब ईशविचारै ॥
ताते सिद्धि ईशता पावै । त्रिभुवन जानै त्यों बरतावै ॥
जाहिसों जोई करवावै । ताके अंतर त्यों उपजावै ॥
आदि पुरुष जो मेरो रूप । तामें धारै चित्त अनूप ॥
ताते सिद्धि अवाशितापावै । विषयनाबिनआनंदबढावै ॥
निर्गुणब्रह्ममाहिंमनधारै । सब करता सब ईशविचारै ॥
ताते बासितासिद्धिहि लहै । सोई सो पावै जो चहै ॥

शुद्धसत्वमयमोहि विचारै । तामें योगी मनको धारै ॥
ताते शुद्ध आपुहू होई । षटउरमी नहिं व्यापै कोई ॥
गगनाधारप्राणमनधारै । शब्द रूप उरमाहिं बिचारै ॥
तबजहँलगेपवन आकास । सुनै तहाँ लौंबचनानिपास ॥
नैननमें सूरजको धारै । अरु सूरजमें नैन विचारै ॥
अपरिच्छिन्नमोहिं को लेखै । तबसो तिहूंलोककोदेखै ॥
पवनसहित मोमें मनधारै । जहां तहां ममरूप विचारै ॥
ऐसे मनको जहांचलावै । मनके वेग तहांही जावै ॥
सारे मेरे रूप बिचारै । तिनही तिनमें मनको धारै ॥
चाहै भयो रूप तब जोई । बार न लागै होवै सोई ॥
कियोप्रवेशहि चाहै जामें । ध्यानआपनो आनै तामें ॥
तब ता तनमें जावै ऐसे । भृंग फूलते फूलहि जैसे ॥
मूलद्वार पगबंध लगावै । प्राण चलाइ शीशमें लावै ॥
ब्रह्म रंध्र है गगनहि करै । जो मन होय ताहि अनुसरै ॥
स्वर्ग देवसुर वनिता ध्यावै । मेरो रूप जानि मन लावै ॥
तबते सहित बिमाननि आवैं । ता योगीको सुखउपजावैं ॥
जो जो वस्तुहृदयमें धारै । ताताको प्रभु मोहिविचारै ॥
सोई सोपावै ततकाल । जबहीं चाहै काल अकाल ॥
सकलनियंतासबकोईश । नितस्वाधीन सकलकेशीश ॥
योगी ऐसो मोको ध्यावै । ताकी आन न कोइ मिटावै ॥
ज्ञान रूप सबअंतरयामी । ध्यावैमोहिंसकलकोस्वामी ॥

अपनीजानैजन्ममरनकी। ज्ञानत्रिकालअरुसबकेमनकी॥
प्रकृतगुणनतेन्यारोजानै। अरुतिनकोस्वामीकरि मानै॥
ध्यावै मोहि सदा अद्वंद्व। तब कोई नाहिं व्यापै द्वंद्व॥
सबमेंव्यापकसकलअतीत। लियेनसूरअग्निजल शीत॥
ऐसो मोको ध्यावै जोई। ऐसो लक्षण पावै सोई॥
जो मेरे अवतारन ध्यावै। आयुध छत्र चमरमनल्यावै॥
ताकोकहुँ न पराजय होई। सबहिनमाहिं बिराजै सोई॥
यों धारणा करै मन जोई। सिद्धि न पावै योगी सोई॥
पर ए अंतराय हैं सारे। मेरे भक्त न दूरि निवारे॥
मोतें ए इनते मैं नाहीं। ताते मम जन निकट न जाहीं॥
मोहि न लहैं इनहि जे लेवैं। मोहि भजै तिनको ए सेवैं॥
मोहीतेउतपातिसबहिनकी। मैंप्रतिपालकरौंतिनातिनकी॥
ममआधीनासिद्धिअरुयोग। सांख्यरु ज्ञानधर्मधनभोग॥
सबकोजनकसकलकोस्वामी। मैंसबहिनकोअंतरयामी॥
सबमें बाहर भीतर एक। मोमैं बरतैं सकल अनेक॥
पंचभूत सब भूतनि माहीं। बाहर भीतर दूजो नाहीं॥
त्यों सब मैंही नाहीं आन। आन दृष्टि सोई अज्ञान॥
ताते द्वैतभावनहिं आनै। मेरो रूपसकल करि जानै॥
साधन सिद्धि सकल भ्रम तजै। मेरे चरण निरंतरभजै॥
ममप्रसादममचरणनिआवै। अतिअपारभवदुःखमिटावै॥
यह मैं तोसों भाष्यो ज्ञान। याते और सकल अज्ञान॥

दोहा–एकब्रह्मकरिदेखनों, यहसुनिदुष्करज्ञान ।
पूछीविष्णुविभूतितब, उद्धवपरमसुजान ॥

इति श्रीभागवते महापुराणे एकादशस्कंधे श्रीभगवदुद्धव संवादे
भाषायां पंचदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥

षोडशोऽध्यायः ।

दोहा–कहतसोलहेंध्यायमें, प्रगटरूपयहदेश ।
ज्ञानवीर्यपरभावसब, वर्णनकरीविशेश ॥

उद्धव उवाच ।

तुमहोपरमब्रह्मअविनाशी । चिदानंद विज्ञान प्रकाशी ॥
आदि न अंतमध्यनाहिंजाको । कोई भेदलहैनहिंताको ॥
तुमहीसकलजगतउपजावो । तुमप्रतिपालोतुमविनसावो ॥
तुमसबबाहरअरुसबमाहीं । सदा अलिप्तलिपौकहुँ नाहीं ॥
जहां तहां तुमहीं हो एक । यह सब ब्रह्म जोदृष्टिअनेक ॥
हेप्रभुयहजगअतिविस्तारा । ऊंचनीचअरुविविधप्रकारा ॥
अरुयाजीवसत्यकरिमान्यो । विषयनिसोंबहुभाँतिवधान्यो ॥
याके एक दृष्टिक्यों आवै । कैसे सकल ब्रह्मकरि ध्यावै ॥
ज्ञानवंत तुव जन हैं जेते । ब्रह्मदृष्टि देखत हैं तेते ॥
तातेतुमअबकरुणाकरौ । निजविभूति मोसों विस्तरौ ॥
तिनमें देखि सबनिमें देखै । तब अद्वैत ब्रह्म करिलेखै ॥
सुनि उद्धवके उत्तम बैन । बोले हरिजी करुणा ऐन ॥

श्रीभगवानुवाच ।

उद्धवप्रश्नभलीतुमकीन्ही । जाते परै ब्रह्मगतिचीन्ही ॥
इहै प्रश्न अर्जुनने करी । तासो मैं जा विधि उच्चरी ॥
ताही विधि अबतोहिं सुनाऊं । ऐसे ब्रह्मदृष्टि उपजाऊं ॥
कौरवअरुपांडवकुरुखेत । जबहिं जुरे भारतके हेत ॥
तब अर्जुन कौरव सब देखे । सकलबंधुअपने करिलेखे॥
इन सब हिनको जोमैं मारौं । आपुहिंआपुनरकतौंडारौं॥
ऐसी विधि आन्यो अहंकार । आपुहिमान्योमारनहार॥
तबमैं ताहिज्ञान समुझायो । ताको सब अज्ञानमिटायो॥
प्रश्न करी अर्जुन तब ऐसी । तुम मोसोंकीन्ही है जैसी ॥
ताते उत्तरको उच्चरौ । या विधि ब्रह्म दृष्टिको करौ ॥
उद्धवमैंसबहिनको स्वामी। अरुसबहिनकोअंतरयामी ॥
आपुहितेसबकोउपजाऊं । सब पोषौं सबको बरताऊं ॥
सकल रहैं मेरे आधीन। मोहीमैं सब होवै लीन ॥
ताते सबमैं दूजा नाहीं । यों विभूति जानौ मन माहीं ॥
परतोसों विशेषसो कहौं। तेरी द्वैत दृष्टिको दहौं ॥
सबरक्षकनमाहिं मैं रक्षक। तिनमेंकालसकलजेभक्षक ॥
सो मैं प्रकृति त्रिगुणकी आदि । पंचभूतमें मैं भूतादि ॥
सूत्रकल बंधनमें जानौं । बडे माहिं महतत्वहिं मानौं ॥
सूक्ष्मनिमाहिंजीवमोहिंदेखो।सबदुर्जयनिमाहिमनलेखो ॥
वेदज्ञानिमें ब्रह्मा जानौ। ओंकार मंत्रनमें मानौ ॥

छंदनिमें गाइत्री छंद । मैं अकार अक्षरके वृंद ॥
सबदेवनिकेमध्यपुरंदर । सकल वस्तुनिमें मैं बैसुंदर ॥
नीलकंठएकादशहरमें । विष्णुनामद्वादश दिनकरमें ॥
तिनमें भृगुजे सप्तमहर्षी । तिनमें मनुजे सब राजर्षी ॥
देवऋषिनमेंनारदजानौ । कामधेनु धेनुनमें मानौ ॥
सिद्धनिमेंमैंकपिलस्वरूप । पक्षिन माहिंगरुडममरूप ॥
प्रजापतिनमें मैं हौं दक्ष । तिनमें मकर जहाँलौं मक्ष ॥
वादनिमें अध्यातमवाद । सब असुरनमें मैं प्रह्लाद ॥
ततप्रकाशकमाहिंदिनेश । यक्षरक्षगणमाहिं धनेश ॥
तिनमें सोमसकलजेउडुगन । सबधातुनमें मैं हौंकंचन ॥
गजनमाहिं मैं गजऐरावत । मैं अनंगजे सृष्टि उपावत ॥
तहां वरुणजे सब जलजंत । नागनमें ममरूप अनंत ॥
नरन माहिं ममरूप नरेश । सर्पनमें वासुकि सर्पेश ॥
उच्चैःश्रवाहयनिमें जानौ । दंडधरनतिनमें यममानौ ॥
सकलमृगनमे मैं मृगराज । सरितनमें गंगा शिरताज ॥
सबआश्रमनि माहिंसंन्यास । वर्णनिमाहिंविप्रममवास ॥
सकलसरनमेंरूपसमुद्र । सकल धनुष धारिनमें रुद्र ॥
मैं हौं धनुष आयुधन माहीं । परमनिवास मेरुतेनाहीं ॥
जेअतिगहनहिमालयतिनमें । मैं पीपलसबवनसघनमें ॥
मैं पुरोहितन माहिं वशिष्ठ । तहां बृहस्पतिजे ब्रह्मिष्ठ ॥
सेनापतिन माहिं सेनानी । धर्मप्रवर्त्तक ब्रह्मा जानी ॥

सकलऔषधिनमेंजवजानौ । पितरनमाहिंअर्यमामानौ ॥
ब्रह्मयज्ञसवयज्ञननमाहीं । व्रत अद्रोह समाको नाहीं ॥
वायु अग्नि जलसूरजवानी । अरुमनयेषट्शोधकजानी ॥
चतुरनमाहींआत्मविचार । ब्रह्मचारिनमेंसनतकुमार ॥
इस्त्रिनमें सतरूपा रानी । पुरुषनमें स्वायंभू जाना ॥
सावधान तिनमें संवत्सर । अभयठौरतिनमें उरअंतर ॥
मैं हौं धर्म अभयकोदान । गुह्य नहा प्रिय मौन समान ॥
त्रियापुरुष संयोगी जेते । ब्रह्माहुते बेरं सब तेते ॥
सकल वानरनिमैं हनुमंत । ऋतुनमाहिं मम रूपवसंत ॥
मारगसिरमासनमें जानौ । नक्षत्रनमें अभिजितमानौ ॥
देवलअसितरहितजेकुंदर । कमलकोषसबहिनमें सुंदर ॥
युगन माहिं सतयुगसे नाम । वेदन माहिं वेदमैं साम ॥
व्यासनमाहिंव्यासद्वैपायन । तिनमें तुमजेविष्णुपरायन ॥
कविनमाहिंकविशुक्रहिजानौ।शक्तिवंतममयहतनमाना ॥
विद्याधरतिनमाहिंसुदर्शन । पद्मराग तिनमेजेमणिगन ॥
सबतृणजातिनमें कुशजानौ । होमवस्तुमेंगोघृतमानौ ॥
तिनमें धनजेसबव्यवसाय । जयमारगसबतिनमें न्याय ॥
संग समाधि योग अंगनमें । मैं हौं क्षमा क्षमावंतनमें ॥
धीरजमें जे धीरजवंत । मैं बल तिनमें जे बलवंत ॥
छलन माहिं छल मैं हूं जूप । मेरे हेत कर्म मम रूप ॥
वासुदेव संकरषणवीर । प्रद्युम्न अरु अनिरुद्ध शरीर ॥

नारायणहयग्रीवमहीधर । नरहरिअरुजमदग्निपुत्रवर ॥
व्यूहार्चननवपूजा जानौ । वासुदेव तहँ मोको मानौ ॥
तिनमेंथिरताजेसबभूधर । पूरव चित्त नाममें अप्सर ॥
मैं हौं विश्वावसु गंधर्वा । धरणी माहिं गंधमें सर्वा ॥
रसजलमाहिंशब्दआकाश । रविशशितारनमेंपरकाश ॥
तेजस्विनमेंपावकजानौ । विप्रभक्त तिनमें बलिमानौ ॥
बीरनमें अर्जुन बहुसार । मैं सब उतपाति थितिसंहार ॥
इंद्रिय मन बुद्ध्यादिक जेते । मेरी शक्ति प्रवर्ते तेते ॥
सब हेतू है अर्थ न गहौं । ते जड तिनमें चेतन रहौं ॥
शब्द स्पर्श रूप रस गंध । तिनते पंचभूत सब बंध ॥
इंद्रियमनमहत्वअहंकार । त्रिगुणसहितयेप्रकृतिविकार ॥
प्रकृतीपुरुषजहांकछुजेतो । मेरो रूप सकल है तेतो ॥
मो बिन कहूं कछू है नाहीं । मैंहीप्रगटि रह्यो सब माहीं ॥
जो परमाणु गनौं मैं कबहीं । तौतिनपारनपाऊंतबहीं ॥
पर मम निर्मित जे ब्रह्मंड । तिनको गिनत परैनहिंखंड ॥
ताते कहूं बिभूति कहाँलौं । जो कछु मेरो रूपतहाँलौं ॥
अरुअवयुक्तिविभूतिहि कहौ । द्वैतदृष्टि ऐसीविधिदहौ ॥
लज्जाते यक्षमा धनदान । सुंदरता ऐश्वर्य रु ज्ञान ॥
बलसौभाग्यधैर्यजहँ जहाँ । मम बिभूति जानौतहँतहाँ ॥
एविभूति तोसों कछुकही । अति अपार कहिबेको रही ॥
मनथिरकरणकाजएजानौ । यहअज्ञानकबहुँमतिमानौ ॥

इंद्रिय बुद्धि देह मनप्रान । निश्चल कारि देखो भगवान ॥
मनते सब आकार उतारो । चेतन मेरो रूप विचारो ॥
एक अखंडित जहँ तहँ सोई । आपापार दूजा नाहिंकोई ॥
ऐसो जानि ब्रह्मको पावो । ब्रह्महि पाइजगतनाहिंआवो ॥
तनमनइंद्रियअरुबुधिप्रान।थिरकारिजिननधर्‍योममध्यान॥
ताकेबहुतभाँतिआचरना । जपतपदानब्रतादिककरना ॥
काचे कलश भरो जलजैसे । पलपलश्रविजावे सबतैसे ॥
ताते बचन काय मन प्रान । सबको बांधिकरैममध्यान ॥
मोहिं ध्याइ मोमाहिंसमावै । तबसंसारमाहिंनाहिं आवै ॥
दोहा—ज्योंउद्धवतोसों कह्यो, यहविभूतिकोज्ञान ।
त्योंही सूक्षम थूल सब, देखो श्रीभगवान ॥
इति श्रीभागवते महापुराणे एकादशस्कंधे श्रीभगवदुद्धव
संवादे भाषायां विभूतिकथनंनामषोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥

सप्तदशोऽध्यायः ।

दोहा—हंसउक्तस्वधर्मपुनि, भक्तिलक्षणप्रीति
कही सत्रहें ध्यायमें, वर्णाश्रमकी रीति ॥
दासनमें उद्धव निजदास । जाके हिरदे ज्ञान प्रकाश ॥
तिन जीवनकी हित्त मनधरी । ताते प्रश्नकृष्णसों करी ॥

उद्धव उवाच ।

प्रभुतुमकल्पआदिउच्चार्‍यो ।भक्तिनिमित्तधर्मविस्तार्‍यो॥

वर्णाश्रमआदिकनरजेते । तिन धर्मनसों लागे तेते ॥
तिनमें कोई भक्तिहि पावै । कोई कर्म सिंधुवाहि जावै ॥
ताते तुम करुणामय देवा । भाषौ नर धर्मनको भेवा ॥
धर्म करतज्योंउपजै भक्ति । तुम्हरे चरणबढै अनुरक्ति ॥
छूटै कालजाल भवकूप । लहै तुम्हारो ब्रह्मस्वरूप ॥
यद्यपिपुनिविधिसोविस्तार्यो।जबप्रभुहंसरूपतुमधार्यौ।
परबहुकाल कहेते भयौ । ताते धर्मलीन ह्वै गयौ ॥
है कछु और करैं कछु और । ताते जीव न पावै ठौर ॥
ताते तुम करुणा करि भाषौ । बहेजाततेजीव न राषौ ॥
अरु यह तुमहीं जानौ देवा । तुम बिन दूजो लहैनभेवा ॥
तुमहीं कहौ सुनौ उरधरौ । तुमहीं राखौ तुमहीं करौ ॥
ब्रह्माहूंकी सभा मझारी । बेद जहां निर्तिमूरतिधारी ॥
तहऊं यह कोई नहिं जानै । ज्यों बंधे त्यौं सबै बखानै ॥
अरु यह कैसे करि मन आवै । कर्म करेते भक्तिहिपावै॥
अरु तुमयाहीकोतनधारौ । जातै निज धर्महिविस्तारौ ॥
जो बैकुंठ प्रयाणो करिहौ । यह निज धर्मनहींउच्चरिहौ ॥
ता पीछे कोई नहिं कहि हैं । यहनिजधर्मगुप्तहीरहि है ॥
ताते तुमअबकरुणाकरौ । यह निजधर्मबेगि बिस्तरौ ॥
ऐसी सुनि उद्धवकी वाणी । आपुन बोले शारंगपाणी ॥

श्रीभगवानुवाच ।

धन्य धन्य उद्धव जन मेरे । दूजो नहीं बराबरि तेरे ॥

मेरो निजजन कहिये सोई। इत पराये वरतै जोई ॥
ताते तुम परकारज कऱ्यो। मोते परमधर्मविस्तऱ्यो ॥
उद्धव परम धर्ममम भक्ति। और सकलते करे विरक्ति ॥
भक्ति विना जो कोई धर्म। सो सब जानौ परम अधर्म ॥
जबमैं प्रथमाकियासंसारा। तबनाहिंहुतोकर्म विस्तारा ॥
जेई जे मानव तन धरैं। मोहिं सेइ ते ते उद्धरैं ॥
ह्वै कृतकृत्य लहैं मम धाम। ताते सो कृतयुगसे नाम ॥
तब ॐ काररूप सब वेद। ऐसे कछू हुते नहिं भेद ॥
सब इंद्रिय मन निश्चल करैं। मेरो ध्यान निरंतर धरैं ॥
ऐसे सब पापनि परिहरैं। सब मेरे चरणन अनुसरैं ॥
त्रेताविषे भये मतिमंद। विषयिनते मानैं आनंद ॥
तिनि निमित्त बहु उद्यम करैं। राजसते पापनिविस्तरैं ॥
तब तिनहेत,बेदविस्तारे। बहुतभाँतिके कर्मनिवारे ॥
वर्णाश्रमके भेद उपाये। न्यारे न्यारे कर्म ग्रहाये ॥
अपनो धर्म त्याग जो करै। सो नर जाय नरकमें परै ॥
ऐसे बहुविधिभयहि दिखायो। थोरे कर्मनमें ठहरायो ॥
तामेंभाष्योआतमभजन। मोबिनसकलकर्मकोतजन ॥
बहुरो बहु आरंभनि चहै। राजसते नहिं निश्चल रहै ॥
तिनके हेतयज्ञउपजायो। विष्णुरूपकहिसबनसुनायो ॥
विष्णु भजन कीजै तामाहीं। द्वैतदृष्टि आनीजै नाहीं ॥
मैं मुखहूतें विप्र उपायो। क्षत्रिय बाहुनहूँते बनायो ॥

जंघनिवैश्य पदनतें शुद्र । पदनीचे औरे सब क्षुद्र ॥
पुनिगृहस्थ जंघनिते कियो । ब्रह्मचर्य उरसंभव लियो ॥
वक्षस्थल उपज्योबनवास । मस्तकहूँते रच्योसंन्यास ॥
ताते सकल पितामें एक । मोते उपजे सकल अनेक ॥
ताते मोहिं मेटि जो करै । सोसो सब बंधन विस्तरै ॥
ज्योंज्योंअंगहुतेजोउपज्यो । त्योंत्योंताकोलक्षणनिपज्यो ॥
ऊँचे अंगहुते सो ऊँचो । नीचे अंगहुते सो नीचो ॥
तिनकेबहुविधिभयेस्वभाव । ताते उपजेनानाभाव ॥
शमदम सत्यक्षमा संतोष । सदा दयालु न उपजे रोष ॥
तपअरुशौच नम्रमम भक्त । इनलक्षणन विप्र अनुरक्त ॥
क्षमा तेज बल उद्यम धीर । शूर उदार अचल गंभीर ॥
विप्रभक्त मेरो दृढभाव । ये क्षत्रियके भये स्वभाव ॥
शुद्धीआस्तिकदानअदंभ । विप्र भक्त उद्यम आरंभ ॥
वैश्य भयो लीन्हेंये लक्षण । मंदबुद्धि परमहा विचक्षण ॥
गाई अरु तिहुँ वर्णको सेवै । इनतें कछू लहै सो लेवै ॥
सत संतोष कपटता नाहीं । ऐसे लक्षण शूद्रनिं माहीं ॥
मिथ्यावादअशौचरुचोरी । बुद्धिनास्तिकहृदयकठोरी ॥
कामक्रोधअरुलोभविकारा । वर्ण नीचके यही प्रकारा ॥
कामक्रोधमदतृष्णारहित । सत्यक्षमापरस्वारथसहित ॥
जीव दया अरु तजै अधर्म । यह सबको साधारण धर्म ॥
ब्रह्मचर्यके धर्महि कहौं । जाते भक्ति उपाई चहौं ॥

विप्र क्षत्रि अरु वैश्यत्रिवरना । इनकोसकल वेदविधिकरना
गर्भाधानादिक संस्कार । तिहूं वरणको यह आचार ॥
जबतें बहुरि जनेऊ पावै । तबते गुरुके निकट रहावै ॥
बहुविधि गुरुकी सेवा करै । वेद पढै अर्थहि उरधरै ॥
जनौ मेखला कर जपमाला । दंड कमंडल अरुमृगछाला॥
दंत वस्त्र तन:मलन निवारै । शीश जटाहस्तनिकुशधारै॥
आसन चंचल कबहुं न करै । लोक वार्त्ता हिय नाहिं धरै॥
मूत्रपुरीषत्यागअस्नाना । होम रु जपभोजनजल पाना ॥
इनिमें वचन नहीं उच्चरै । नख केशादिक दूर न करै ॥
सदा निरंतर दृढ व्रत धारै । कबहूं भूलि बिंदु नहिं डारै॥
जो आपुहि ते जावै कबहीं । बहुत भांति पछितावैतबहीं॥
कारि अस्नान रु प्राणायाम । जाप करै त्रिपदासे नाम ॥
अग्नि अर्कगुरु विप्ररुगाई । सुरमुनि वृद्धननवनिकराई ॥
संध्योपासन करै त्रिकाल । वचन न बोलै हालनचाल ॥
गुरुको मेरे रूपहि जानै । नरकी बुद्धि कबहुँ नहिं आनै॥
सर्वदेवमय गुरुको लेखै । तनके कछु आचरण न देखै ॥
भिक्षा आदि और कछु जोई । गुरुको आनिसमर्पै सोई॥
जब गुरु ताको आज्ञा देवै । तब परसाद आपुहू लेवै ॥
बैठे ठाढे आवत जात । भोजन शयन राति परभात ॥
नीच भाँति गुरुसेवा करै । अंजलिसों पीछे अनुसरै ॥
ऐसे व्रतहि अखंडित धारै । मनहूंमें नाहिं भोग विचारै ॥

ऐसे गुरुकुल वरतै सोई । जौं लगि वेद समापत होई ॥
पुनिब्रह्माके लोकहि चाहै । तौ गृहस्थता नाहिंसंवाहै ॥
गुरुको देह समर्पण करै । वेद विचार हृदयमें धरै ॥
गुरुअरुअग्निआपुसबमाहीं । सेवैमोहिंऔर कछु नाहीं ॥
युवतीअरुयुवतिनके संगी । इनको कबहुं नहोय प्रसंगी ॥
दर्श पर्श वाणी परिहास । त्यागै दूरि मानि अतित्रास ॥
शौच आचमनअरुस्नान । संध्योपासन गत अभिमान ॥
तीरथसे वाजपतपभिच्छा । तजै दर्श संभाषण इच्छा ॥
मन अरु वचन देह वश करै । मेरे चरण हृदयमें धरै ॥
अरुनमभजनसबनिको धर्म । भजनविनासबधर्म अधर्म ॥
ऐसो ब्रह्मचर्य व्रतधारी । दृढ तप निशिदिन वेद विचारी ॥
विगत पाप ऐसी विधि होई । मेरी भक्ति लहै तब सोई ॥
ऐसी विधि भवसागर तजै । मेरे परमरूपको भजै ॥
अरु जो कोहू होय सकाम । तासों करै युवति अरुधाम ॥
कैनिःकामगहै बनवास । कै अधिकारपाय संन्यास ॥
अरु जो उपजै मेरी भक्ति । तौ नहिं करै कहूं आसक्ति ॥
यह है ब्रह्मचर्यको धर्म । याते दूजो सकल अधर्म ॥
अबगृहस्थकोधर्म सुनाऊं । सकलगृहस्थनिकोसमुझाऊं ॥
ब्रह्मचर्य जो नाहिं ठहरावै । तौ गृहस्थ आश्रममें आवै ॥
गुरुते वेद पढै सब जबहीं । गुरु दक्षिणादेइ पुनि तबहीं ॥
गुरुते आज्ञा लै उरधरै । तब विधिसों अस्नानहि करै ॥

तबदेखैउत्तमकुललक्षण । करै विवाहाहित्रियाविचक्षण ॥
ज्यों देखै अपनोअधिकार । त्योंहीं करै विवाह विचार ॥
विप्र विवाहै चारों वरना । विप्र छोडि क्षत्रीको करना ॥
वैश्य विवाहै वैश्य रु शुद्र । शूद्र एक ऊंचन क्षुद्र ॥
उत्तमसोजोएकाहि करै । बहु तिनि कष्ट नहीं विस्तरै ॥
श्रुतिअध्ययनयज्ञअरुदान । तिहूंवरणको एक समान ॥
दान ग्रहण यज्ञकरवावन । अधिकाविप्रको वेद पढावन ॥
पर एती निवृत्ति है ऐसे । अग्निमध्य जल वरषा जैसे ॥
इनते ब्रह्मतेज नहिं रहै । ताते इनको विप्र न ग्रहै ॥
कारिकै शिला देह निरवाहै । ताते अधिको नाहिंसंबाहै॥
विप्रदेह पूरण तपपैये । सो विषयानि लगि नहीं गँवैये ॥
बहुतभाँतितपकष्टहिकारिये।हरिभजिहरिहीकोअनुसरिये।
शिलावृत्ति कारि राखै देह । नहिं ममता युवती सुत गेह॥
अतिथिपालनोरजतमनाहीं । मोहींको देखै सबमाहीं ॥
जीवनमुक्त होयसो विप्र । मेरे चरणन पावै क्षिप्र ॥
जो कोई मम भक्तिहि करै । ताको कछू आपदापरै ॥
सो आपदा मिटावै कोई । सो मेरो हितकारी होई ॥
ताकोमैं उद्धारौं ऐसे । नावनिसों अंभोनिधि जैसे ॥
परक्षत्री निजधर्म विचारै । सकल पालना हिरदै धारै ॥
क्षत्री सबके दुःखन हरै । सकल जीव प्रतिपालन करै ॥
सो क्षत्री सुरलोकहि जावै । वासव सहित महासुखपावै॥

जो आपदा विप्रको परै। तोसो वनिजवृत्तिको करै ॥
यद्यपिखड्गवृत्तिहै ऊंची। परिसो अतिहिंसा तेनीची ॥
जो क्षत्रीकोपरै विपत्ति। तोसो गहै बनिजकी वृत्ति ॥
किंवाविप्रवृत्तिको गहै। अथवा मृग याकारिनिरबहै ॥
वैश्यहि परै आपदा जबहीं। शूद्रवृत्तिसो टारै तबही ॥
अरु जो विपतिशूद्रकोपरै। तौ प्रतिलोमजवृत्तिहिकरै ॥
पंचयज्ञ ये प्रतिदिन करने। गृहस्थको नाहीं परिहरने ॥
करिकैपाठ ऋषिनको जजै। करि कछुहोमदेवतनिभजै ॥
भूतनिबलिस्वधासोपितर। जलअन्नादि शक्तिसोंदेनर ॥
तिनसबहिनमेंमोकोजानै। और सबनपर करुणाआनै ॥
जोसहजही कहूं धनपावै। किवा न्यायहुते उपजावै ॥
तासों लोक आपने पोषै। और यज्ञकरि मोहिं संतोषै ॥
जेती लागति घरमें होई। त तोई धन राखै सोई ॥
और सकल ममहेत लगावै। भूलि न दूज मारग जावै ॥
यद्यपि रहै कुटुंबहि माहीं। तौ हूंलिपै कबहु कहुं नाहीं ॥
निशिदिनहिरदेकरैविचार। मिथ्या मानै सबपरिवार ॥
स्त्री पुत्र बंधु सब ऐसे। जलक निकट बटाऊ जैसें ॥
ये सबयोंप्रतिदेहहि आवै। ज्योंनिद्राप्रतिस्वप्ना पावैं ॥
ज्यों ज्यौं जागै वारंवार। त्यौं त्यौं मिटै स्वप्नव्यवहार ॥
योंही ये प्रतिदेहहि आवै। देह तजै सब जितातितजावैं ॥

अरु योंही स्वर्गादिक लोक। पाये हर्षगये अतिशोक॥
ताते सकल वासना दहै। अतिथि समान भवनमें रहै॥
अहंकारममतानहिं आनै। सब माया बंधनकरिजानै॥
सब कर्मनि मेरे हित करै। मो बिच अंतराय परिहरै॥
प्रेमभाव दृढ उरमें राखै। और सकल हृदयते नाखै॥
ऐसो पुत्र भये वन जावै। किंवा गृहही माहिं रहावै॥
ऐसो गृही मुक्त करि मानौं। और कछू हिरदैनहिंआनौ॥
अरुजोहोयभवनआसक्त। युवतिसुतादिनसो अनुरक्त॥
विषयालंपट तृष्णा आतुर। ज्ञानरहित कर्मनमें चातुर॥
आपुहिंपरवशताहिनजानै। औरनिकी चिंता उरआनै॥
माई वृद्ध पिता हैं मेरे। मो विन. दुःख लहैं बहुतेरे॥
यहअबलालघुसंततिजाकी। मोविनहोइकहागतिताकी॥
ये अनाथ मो विनसबबाला। क्योंकरजीवैंअतिबेहाला॥
मोविनइनाहिकौनप्रतिपालै।कौनाविविधदुःखनिकोटालै॥
ऐसे निशिदिन आन चिंता। कबहूं नहिं होवैनिश्चिंता॥
कबहुँ न सुखपावै यालोक। ग्रस्योरहै चिंताभयशोक॥
या विधि चिंता करत अपार। नरकहि जावै बारंबार॥

दोहा--ब्रह्मचर्यगृहचर्यको, मैं भाष्यों यह धर्म।
यातेउद्धवऔरकछु, सोसबजानिअधर्म॥

इति श्रीभागवते महापुराणेएकादशस्कंधे श्रीभगवदुद्धव संवादे भाषायां आश्रमधर्मनिरूपणं नामसप्तदशोऽध्यायः॥ १७॥

अष्टादशोऽध्यायः ।

दोहा–अष्टादशअध्यायमें, वानप्रस्थ संन्यास ।
अरुअधिकारविशेषकर, तद्गतकरतप्रकास ॥

श्रीभगवानुवाच ।

अब मैं कहौंधर्मवनवास । अरुअधिकारसहितसंन्यास ॥
जाते मेरी भक्तिहि पावै । भक्ति पाय मम चरणनआवै ॥
वर्ष पचासहुते उपरंत । तब पनजाय रहै एकंत ॥
नारि सुतनमें रहने देई । जो विधि वनै संगतौ लेई ॥
कंदमूलफलवृत्तिहि करै । वल्कल मृगछालातनधरै ॥
तृण पर्णनिकी सेजहँ वारै । इंद्रिनके सब अर्थ निवारै ॥
केश रोम नख दूरि न करै । देह दंतमल नाहिं परिहरै ॥
भूमिशयनात्रियकालस्नान । मलनउतारैमुसलनसमान ॥
ग्रीषम ऋतु पंचाग्नी साधै । वर्षामें छाया नहिं बाधै ॥
शीश सकल जलधारा सहै । शीतकाल जलशायरिहै ॥
ऐसी भाँति करैतपदुष्कर । द्वंद्वनव्यापैज्योंजलपुष्कर ॥
अग्निपक्कऋतुपक्क फलादी । भोजनलघुपवित्र अन्नादि ॥
मूशल ऊखलकै माषान । कै दंतनसों खोटै धान ॥
देहजीवकाआपुहिं आनै । अधिक न ग्रहै नर्सचयजानै ॥
तिनहीं तिनसों मोको जजै । और यज्ञ वनवासी तजै ॥
अग्निहोत्र अरु पूरणमास । त्यौंहींदर्श अरु चातुरमास ॥
इन सबहिनको ममहितकरै । मोबिनऔरहृदयनहिंधरै ॥

यों तपकरि मोको आराधे । प्राणदेह इंद्रिय मन बांधै ॥
यों ह्वैशुद्धलहै मम भक्ति । और त्रिगुण विस्तार विरक्ति ॥
यों तबहीं मम चरणन पावै । कै क्रम ब्रह्मलोकहै आवै ॥
अरु जो ऐसे कष्टहिं करै । परकामना हृदयमें धरै ॥
तासम मूरख दूजो नाहीं । ताके वृथासकलश्रम जाहीं ॥
यों पचहत्तरि वरषन पाछे । गहै शुद्ध संन्यासहिं आछे ॥
सकलक्रियाकोत्यागहि करै । मनसों मम सेवाअनुसरै ॥
कर्म रचित सबलोकन जानै । ताते क्षणभंगुरकरि मानै ॥
ताही हुते करै सब त्याग । मन वच कर्मसों दृढवैराग ॥
वेद विहित विधि मोंको जजै । ऋत्विजको सर्वसुदैतजै ॥
जबकोई संन्यासहि करै । तबहीं सुराविघ्नानि विस्तरै ॥
पर यह विघ्नगनै कछु नाहीं । मेरे चरण धरैं उरमाहीं ॥
जो कबहूं कछु वस्त्रहिरावै । तौकौपीन और सबनावै ॥
दंडकमंडलुकरमें धारै । ज्योंमलत्योंनहिं और विचारै ॥
देखि देखि धरणी पगधरै । वस्त्र छानि जल पानहि करै ॥
सत्यवतं वाणीको बोलै । हृदय विचारकरै नहिं डोलै ॥
मौन धारि वाणीका दंडै । अरु कायाके कर्म न खंडै ॥
प्राणायाम मनहिं सब करै । सबइंद्रियअर्थन परि हरै ॥
अरु ये चिह्न नहीं जामाहीं । भेष धरे यती सो नाहीं ॥
भिक्षाकरै सतघर विप्र । और कछू कहुँ गहै न क्षिप्र ॥
सोऊ बिप्र चतुर्विध जेते । जानी रहै विप्रको तेते ॥

विप्रकही जे दशपरकार । तिनको तुमसों कहौं विचार ॥
देवविप्रऋषिविप्रहिजानौं । विप्र विप्र अरुक्षत्री मानौं ॥
वैश्यशूद्र अरु एक बिडाल । पशुमलेच्छ विप्रचंडाल ॥
भिक्षानित्य अरु पढैपढावै । सकल अर्थ अरु तत्व बतावै ॥
इंद्रियाजित शीतल संतोष । देव विप्रसो निर्गतरोष ॥
तप अरु सत्य न हिंसा करै । दिनदिनषटकर्म न अनुसरै ॥
काललोपकबहूंनहिं होइ । ऋषिब्राह्मणयेकहियतु सोई ॥
विन हिंसा फलमूल न ल्यावै । तिनहीं सोदेहहिंवरतावै ॥
वरषा शीत उष्ण सब सहै । विप्र विप्र नित श्रद्धागहै ॥
अश्वादिक न करे आरोह । रणमें शूर तजै तन मोह ॥
नीति सहित ठाने आरंभ । क्षत्री विप्र हृदय नहिं दंभ ॥
अरु जो उत्तम वनिजहि करै । पशुराखै खेती विस्तरै ॥
सो वह वैश्यब्राह्मण कहिये । तातैंभिक्षा नहिं गहिये ॥
तेललोन घृत दूधरुलक्षा । तिलअरुनील महीमधुमक्षा ॥
इनको वनिज करत है जोई । शूद्र विप्र कहियतुहैसोई ॥
सब भूतनकै द्रोहहि करै । सबके छिद्र न देखत फिरै ॥
प्रतिदिन हिंसा सो अधिकार । विप्रकहावै सो मंजार ॥
भक्ष्यअभक्ष्यअकारजकारज।गम्यअगम्यनलखैअनारज ॥
कृतधनसकलपशुनिकेलक्षण।सोपशुब्राह्मणकहौंविचक्षण ॥
वापी कूप तडाग पुरावै । वनबागादिक नाश करावै ॥
संध्या अरु अस्नान न जानै । ऐसो विप्र मलेच्छबखानै ॥

निंदक लोभी परधन हरै । निर्दयक्रूर पिशुनता करै ॥
सोचंडाल विप्रकारि मानै । ऐसे दशविधिविप्रउजानै ॥
ताते उत्तम भिक्षा करै । और सकल दूजे परिहरै ॥
सात घरनते भिक्षा पावै । ताही कार संतोष उपावै ॥
सो लै जावै नदी तडाग । ताते कछूक करै विभाग ॥
कोई माँगै ताको देई । की जलमाहिं प्रवाह करेई ॥
विचरै धरणी ह्वै निःसंग । कबहूं कछु न सँवारै अंग ॥
तन मन इंद्रिय निग्रह करै । मेरारूप हृदयमें धरै ॥
निशिदिनरहैआत्मा राम । विषयसुखनको सुनैन नाम ॥
समदरशी अरु धीरजवंत । सदा रहै निर्भय एकंत ॥
मेराभाव भयोअतिशुद्ध । परमविवेकी ज्यों जलबुद्ध ॥
आपुहि माहिं विचारै एक । कबहुं न देखै भूलअनेक ॥
आतम अंश ब्रह्मको जानै । बंधमुक्त दोऊ भ्रममानै ॥
बंधन जब इंद्रियन वशहोई । मुक्तिइंद्रियन बंधै सोई ॥
ऐसेजानइंद्रियन जीतै । मोहि सुमिरते काल व्यतीतै ॥
दुहूं लोकते होइ विरक्त । तनहूं नाहिं होवै आसक्त ॥
पुरग्रामादि आय जो परै । भिक्षाअर्थ प्रवेशहि करै ॥
देशपवित्रशैल वनसरिता । वानप्रस्थजहां आचरिता ॥
तहांतहांनितहीं चलिजावै । तिनआश्रमनीभिक्षा पावै ॥
तिनके लहै शिलाको अन्न । ताते होवै मन परसन्न ॥
ताहाते निर्मलता लहै । उपजै ज्ञान सकल मल दहै ॥

इंद्रिय अर्थनि सत्य न देखै । क्षणभंगुर सब नश्वरलेखै ॥
तातें सबते गहै विरक्ति । नहिं उद्यम न विषै आसक्ति ॥
यह सब अहंकारकृतजानै । आतमविषैस्वपनसममानै ॥
कबहुँ नहृदय चिंतवनकरै । मनक्रमवचन दूरिपरिहरै ॥
ऐसी विधिजब उपजै ज्ञान । होयविरक्ततजै सबआन ॥
मेरी भक्तिहृदयमें आवै । तब सब वर्णाश्रम छिटकावै ॥
विधिनिषेध दोऊ भ्रमजानैं । वेदस्मृतिकीशंकनमानैं ॥
अतिबुध परबालकसमरहै । विधि निषेधकछुकहैनगहै ॥
सब जानै परज्यौं उनमत्त । चेतन मय दीसै जडवंत ॥
पुष्पित वाणी रतनहिं होई । कबहूं वाद न ठानै सोई ॥
बाहर मध्य एकसम रहै । कबहूं कोई पक्ष न गहै ॥
ज्योंज्योंकहै सुनैत्योंत्योंही । तत्वमतोनहिंत्यागैक्योंही ॥
काहूते उद्वेग न आनै । अरु काहूको आपु न ठानै ॥
निंदा आदि सहै दुखैन । अंतरधरै निरंतर चैन ॥
काहूको अपमान न करै । मन क्रम वचन मान विस्तरै ॥
पशुसमानवैरादि न ठानै । सकल विकार देहके मानै ॥
जो आतम अपने तन माहीं । सोई सबमें दूजो नाहीं ॥
ज्योंबहुघटनमाहिंशशिएक । घटनसंगजानिये अनेक ॥
तातें इष्ट अनिष्टहिं करै । सो सब आपुहिको विस्तरै ॥
तातें आतम शुद्धहिं राखै । भेद देहकृतते सब नाखै ॥
समयपाय भोजन नहिं आवै । तोहूं कछूनमनमें ल्यावै ॥

कर्मरचितसबदेहनि जानै। तिनहितेसबसुखदुख मानै ॥
तेसबसुखदुखकर्मशरीर। यों आतममैं ज्यों मृगनीर ॥
केवलआहारहि नहिं नाखै। उद्यमहूकरिप्राणहिं राखै ॥
प्राणन राखे होय विचार। लहै मोहिं छूटै संसार ॥
जो मेरी इच्छाते आवै। उत्तम मध्यम सो कछु पावै ॥
यों अस नहिं वस्त्रादिक चहै। जैसो आवै तैसो गहै ॥
प्रिय अप्रियकी बुद्धि न आनै। ये दोऊ मिथ्याकरि मानै ॥
कोई टेक न मनमें धरै। मोबिन और सकल परिहरै ॥
शौच आचमन अरु स्नाना। औरो कछू आचरणनाना ॥
ते कछु शंका तेनहिं करै। जो कछु सो इच्छा आचरै ॥
ज्योंमेरेश्रुतिको भयनाहीं। दोऊ भ्रमजानतुहौं माहीं ॥
परितथापिकर्मन आचरौं। लोकनको हितमनमें धरौं ॥
त्यौंज्ञानीविधिकिंकरनाहीं। विधिनिषेधभ्रमजानै माहीं॥
पर अपनी इच्छा आचरै। लोकनकोहित हृदय धरै ॥
ताके भेद दृष्टि कहुँ नाहीं। ज्ञानदृष्टि देखत है माहीं ॥
पूरवसंसकार है जौलौं। देह माहिं सो बरतै तौलौं ॥
बहुरोसोभवमें नहिं आवै। मेरो निज निर्मलपदपावै ॥
अरु जाके उपजै वैराग। करो चहै या भवको त्याग ॥
परममभजनयुक्तिनहिं पावै। सोसतगुरुकीशरणहिआवै ॥
श्रमही विना लहै सो युक्ति। पावै मोहिं होय भवमुक्ति॥
गुरुको ब्रह्मरूप करि देखै। मानव बुद्धिकबहुँनहिं लेखै ॥

श्रद्धासहितअसूयातजै । मन क्रम वचन निरंतरभजै ॥
जौंलगिब्रह्म विचारहि पावै । तौलगि गुरुतजिकहूंन जावै ॥
पीछे ज्यों जानै त्यों रहै । परमहंसके धर्मनि गहै ॥
परजिनषटरिपुजीतेनाहीं । इंद्रियअर्थ विचारत माहीं ॥
चंचलवुद्धिनज्ञानविराग । ताको सकल वृथाहै त्याग ॥
भेष दिखाय जीविका करै । ताको दोष कह्यो नहिंपरै ॥
देवपतिरऋषिभूतननाखै । तिनकोऋणअपनेशिरराखै ॥
अंतरगतमें ताहि छिपावै । आपुहि बंचै बंध उपावै ॥
सोसुखकहुँनलहै या लोक । अरु त्यों भ्रष्टहोयपरलोक ॥
ये हैं वर्णाश्रमके धर्म । इनितें भक्ति लहैं दहिकर्म ॥
अब चारोंके धर्म प्रधान । न्यारे न्यारे करौं बखान ॥
समरुअहिंसासंन्यासीको । श्रुतिविचारतप वनवासीको ॥
गृहमें दया यज्ञ मम कर्म । द्विज आचारजा सेवाधर्म ॥
ब्रह्मचर्य तप शौचसंतोष । सकलसुहृदकतहूंनाहिं रोष ॥
मेरोभजनसकलभ्रम कारण । येही धर्म सबके साधरण ॥
गृहीदेइवनिताऋतुदान । भूलि न गमन करै दिन आन ॥
याविधि अपने अपने धर्म । मेरे हेत करै सब कर्म ॥
सममें जानै मेरो भाव । काहूपर नाहिं धरै अभाव ॥
सो पावै मेरी दृढ भक्ति । और सकलतें करै विरक्ति ॥
ताते उपजै मेरो ज्ञान । देखै मोहिं मिटै सब आन ॥
ऐसो ह्वै पावै मम रूप । बहुरि न आवै या भव कूप ॥

जेहैं सकल वर्ण आश्रम। तिनके ये मैं भाषे धर्म ॥
भक्ति सहितये मोहिंमिलावैं। भक्तिविनाभवसिंधुबहावैं ॥
ऐसो तत्त्व लहैते तरैं। और सकल नित जनमें मरैं ॥
दोहा--यहउद्धवतोसोंकह्यो; वर्णाश्रमको धर्म।
जातें ममभक्तिहिलहैं, छूटै बंधन कर्म ॥
इतिश्रीभागवते महापुराणे एकादशस्कंधे श्रीभगवदुद्धव संवादे भाषायां वर्णाश्रमधर्मनिरूपणं नामाष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥

एकोनविंशोऽध्यायः।

दोहा--पूर्वहिं आश्रम धर्मते, निर्णय ज्ञान सुभाग।
उनविंशति अध्यायमें, ज्ञानादिक ते त्याग ॥
ज्ञान विज्ञान रु भक्तिहू, ताके लक्षण सार।
प्रश्नोत्तर पचतीसजू, सामुसुभलप्रकार ॥

श्रीभगवानुवाच।

उद्धव यहि वर्ण आशर्म। तिनके मैं सब भाषे धर्म ॥
इनमें रहि मम भक्ति उपावै। ताते मेरे ज्ञानहि पावै ॥
ज्ञानहिपायसकलभ्रम जानै। वर्णाश्रममिथ्याकरिमानै ॥
सबसाधनतजिमोकोध्यावै। और कछूहृदयनाहिंल्यावै ॥
ज्ञानीके मैंही हौं साधन। अरु मेरोई नित आराधन ॥
मोहीं कारि मोंको आराधै। तन मन इंद्रिय मोसोंसाधै ॥
मो बिन स्वर्गादिक नाहिं लेई। मेरेही चरणन चितदेई ॥

मो विन मुक्ति कबहुँनाहिंगहै । मोविनसकलवासनादहै ॥
मैंहींहितमैंहीताके प्रिय । मोबिनऔरसकलअतिअप्रिय ॥
जेहैं साहित ज्ञान विज्ञान । तेई जानैं मोहिं सुजान ॥
ज्ञानीते मेरे प्रिय नाहीं । सदा वसे मेरे मन माहीं ॥
मताको मेरो है सोई । दूजो नहीं परस्पर कोई ॥
जपतपतीरथव्रतअरुदाना । कहौंकहालगिजेविधिनाना ॥
ते सबकरैं नहीं फल ऐसो । ज्ञान कलाते होवै जैसो ॥
ताते ज्ञान हृदयमें धारौ । औरै साधन सकलनिवारौ ॥
सबमें रूप आपनो जानौ । मोहिं जानि प्रभुसेवाठानौ ॥
द्वै करसहित ज्ञान विज्ञान । देखैं सकल एक भगवान ॥
बहुरो मम निजरूप समावे । जहांजाय कबहूंनहिं आवे ॥
जबहीं प्राणी ज्ञानहि पावै । तबहीं ममनिजरूपसमावै ॥
ज्ञान विना नाहिं पावैमोहीं । यह निजमतोकहतहौंतोहीं ॥
उद्धवतो मैं विविध विकार । जन्ममरणसुखदुखपरकार ॥
ते समस्त या तनके जानौ । सोतनमायाभ्रमकरिमानौ ॥
आपुहि शुद्ध निरंजन देखौ । द्वैत अतीत एकही लेखौ ॥
ये जे प्रगट सकल देहादि । ते आतममें हुते न आदि ॥
अरु अंतहूं रहै कछु नाहीं । अब अज्ञानहुतेवरताहीं ॥
ज्ञानदृष्टिकरि देखै जबहीं । त्रिगुणरहित आपुहै तबहीं ॥
जैसे रज्जु माहिं अहिकहै । आदि न हुतो अंत नाहिंरहै ॥
भ्रमते मध्य मंदमति मानै । है नाहीं परहै सो जानै ॥

त्यौं देहादि सकलभ्रम देखौ । आपुहि सदाब्रह्ममयलेखौ ॥
ऐसोसुनिहरिजीसोंज्ञानाहि । उद्धवजनपूछ्यौभगवानहि ॥

उद्धव उवाच ।

हे प्रभु ज्ञान कृपा करि कहौ । मेरे नाना भ्रमको दहौ ॥
अरु त्यौंही भाषौविज्ञान । भक्ति आपनी परमनिदान ॥
जाको चाहैं सकल महंत । जाते होय जगतको अंत ॥
जाविनज्ञानध्यानकछुनाहीं । साधनसकलवृथाश्रमजाहीं ॥
जाको पाइ मुक्ति नहिं लेवै । और सुखनपर दृष्टि न देवै ॥
ऐसी भक्ति कृपाकरि कहौ । अपने जनहि ओर निरखहौ ॥
यह भव मारग बिकट अनंत । जामें भ्रमत न आवैं अंत ॥
तापर तपै त्रिविध संताप । तिनिमें परै आपही आप ॥
ताते जीव महादुख पावै । सुखठानै सो दुख ह्वै आवै ॥
ताको दूजो रक्षक नाहीं । मैं विचारि देख्यों उरमाहीं ॥
तुम्हरे चरण क्षत्रशिरधारै । सो समस्त संताप निवारै ॥
ताकोदशदिशिअमृतवरषै । ताकेदरशऔर सब हरषै ॥
ज्यों काहू कंगालहि लीजे । ताके शशि छत्रलै दीजे ॥
सो ह्वै भूप महासुख पावै । अरु औरनके दुःख मिटावै ॥
त्योंतुवचरणछत्रशिरधारै । सोअपने सबदुःख निवारै ॥
सोभे तीनों लोकनमाहीं । ता सम और कहूं को नाहीं ॥
अरु जेताकी शरणहि आवैं । तेते सकल परम सुखपावैं ॥
या भवकूप पऱ्यो बेहाल । तापर डस्योमहा अहिकाल ॥

ताते विषयविषयिसुखजानै । तिननिमित्तबहुउद्यमठानै ॥
ताते सदा अमित दुखपावै । जाको कबहूं अंत न आवै ॥
ताको कृपापियूषपियावौ । काढि कूपतेमृतकजियावौ ॥
वचनामृतकी वर्षा करौ । अपने गुणन बांधि उद्धरौ ॥
तुमहींजगतपिताजगस्वामी । जगपालकजगअंतरयामी ॥
ऐसे वचन सुने भगवान । तब उद्धवसों भाष्यो ज्ञान ॥

श्रीभगवानुवाच ।

उद्धव प्रश्न करी तुम जोई । धर्म पुत्रकी नीती सोई ॥
शरशय्यामें भीषम परे । हमको सुनत वचन उच्चरे ॥
तेई अब मैं तुमहिं सुनाऊं । भक्ति ज्ञान विज्ञान जनाऊं ॥
प्रकृतिपुरुषमहतत्त्वअहंकार । शब्दादिक जे पंचप्रकार ॥
त्रयगुणअरुइंद्रियदश एक । पंचभूत मिलिभये अनेक ॥
थावर जंगम विविधप्रकार । इन अट्ठाइसको विस्तार ॥
इन बिन और कहूं कछु नाहीं । एक दृष्टि देखैं सब माहीं
जाकर सकल एक करि जानैं । ताको साधूज्ञानबखानैं ॥
अरु जब ये अट्ठाइस तत्व । माया जानैं सकल अतत्व ॥
आतम ब्रह्म एक करि जानैं । देहादिक सबमिथ्यामानैं ॥
रज्जु जानि ज्यों सर्पनिवारै । त्यौं समस्त मम रूपविचारै
जैसे दिशा मोहमिटिजावै । आठौंदिशिकी खबरिहिंपावै
करत निरंतर ज्ञान विचार । देख ब्रह्म मिटै विस्तार ॥
ताको कहियतुहै विज्ञान । ताते लैहु मोहिं तजि आन ॥

आदि हुतौ अरु रहि है अंत । सोई है अबहूं वरतंत ॥
वर्णाकार प्रगट हैं जेते । आदि रु अंत नहीं है ते ते ॥
ताते अबहूं मिथ्या देखै । तिहूं काल मोहीं को लेखै ॥
जैसे तिहूंकालमें धरणी । घटनामादिक मिथ्या करणी॥
श्रुतिकोमतोहृदयमेंआनैं । नेतिनेतिश्रुतिसदा बखानैं ॥
नानाकार बेद भ्रम भाषै । ब्रह्म सत्य दूजो सब नाषै ॥
सकल घटनमें एक बतावें । ऊंच नीच सब भेद मिटावें॥
ऐसी भांति विचारै वेद । जानै मोहिं मिटावै भेद ॥
अरु त्योंहीं सब पगंट लेखै । सप्तधातुके सब तन देखै ॥
अरु देख उपजत बिनसंत । यों प्रत्यक्ष विचारै संत ॥
अरुसतपुरुष भये हैं जेते । तिनके वचन विचारै तेते ॥
एकहि मतो सबनको देखै । जानै मोहिं भेद भ्रम लेखै॥
अरुत्योंअनुभवहृदयविचारै । चेतन राखि अचेतनडारै ॥
सब देखै चेतन आधार । इंद्रिय देह विविध विस्तार ॥
चेतनते जड अर्थनि गहैं । चेतन बिन कोई नाहिं रहैं ॥
यों वेदांत तथा दृष्टांत । अनुभव अरु त्योंही सिद्धांत ॥
इन चारिहुको मतो विचारै । मोहिं जानि सब भेदनिवारै
सकल दृश्यते होय विरक्त । चेतन ब्रह्म सदा अनुरक्त ॥
कर्मरचित सब मिथ्यामानैं । ब्रह्मलोकलौं नश्वर जानैं ॥
देख्यो सुन्यो हृदयमें आवै । सो सब बंधन जान बहावै ॥
मेरी भक्ति हृदयमें धरै । जिनतें भक्ति होइते करै ॥

भक्त रु भक्ति हेत हैं जेते । तुमसों पछि भाषे तते ॥
अब बहुरो तुवहेत विचारौं । भक्तभक्तिसाधन उच्चारौं ॥
मेरी कथा सुने अरु कहै । प्रीति सहित उर अंतरगहै ॥
पुजामें अतिनिष्ठा धारै । बहुतभाँतिअस्तुतिविस्तारै ॥
बंदन करै प्रदाक्षिण देई । अरु अष्टांग प्रणाम करेई ॥
सब भूतनमें मोको जानै । परमम जन मेरो तन मानै ॥
ममभक्तनकोबहुविधिसेवै । तनमनधनातिनहींको देवै ॥
मेरे हेतु करै जो करै । मो बिन और सकल परिहरै ॥
मेरे गुणनि कहै उरधारै । दूजि कामना सकल निवारै ॥
मेरे अर्थ अर्थ सब त्यागै । सुख अरु भोगनिते वैरागै ॥
जपतपयज्ञयोगव्रतदान । शयनासनभोजनजलपान ॥
इत्यादिक सब मम हित करै । याते अंतर सो परिहरै॥
सदा आपको मोहिं निवेदै । प्रेम शस्त्र उर ग्रंथहि भेदै ॥
ऐसे जब मम भक्तिहि लहै । तब अवशेष कछू नाहिं रहै॥
साधन साध्य लहै सो सकल । काल कर्मते होवै अकल
जब मोविषै चित्तको धारै । तबह्वैसात्विकरजतम टारै ॥
धरमैश्वर्य ज्ञान वैराग । इनको सहज लहै बडभाग ॥
अरु जो मेरी युक्ति न पाव । देह गेहसों चित्त लगावै ॥
तब होवै रजतम अधिकार । बढे अधर्म परै संसार ॥
बंधमुक्तको चित्तै कारण । बोरे चित्त चित्तहै तारण ॥
मोमे धारै मोको लहै । भवमें धारै भवमें वहै ॥

तातें धर्म ज्ञान वैराग । ईश्वरता आदिक जो भाग ॥
समस्त मेरे आधीन । तातें होवै मम लवलीन ॥
सेवतमोहिंसकलये पावै । मोबिन कोई निकट न आवै ॥
मेरी भक्ति कहावै धर्म । उद्धव दूजो सकल अधर्म ॥
एक ब्रह्म परसन सो ज्ञान । या बिन औरसकलअज्ञान॥
अरु उद्धव सो है वैराग । जो समस्त विषयनकोत्याग॥
अरुऐश्वर्यसिद्धि अणिमादि । मम सेवककीसवो आदि ॥
तातें जे मम शरणहिं आवैं । तई भक्ति मुक्तिसुखपावैं ॥
दोहा-ऐसे अद्भुतवैन जब, कहेकृपा करिकृष्ण ॥
तबउद्धवजनहर्षिकारि, कीन्हीहरिसोंप्रश्ण ॥

उद्धव उवाच ।

हे प्रभु पूरण करुणाकरो । ज्यों है त्योंसबविधिविस्तरो॥
ज्योंतुमधर्मभक्तिकृतभाष्यो । ब्रह्मदृष्टिकोज्ञानहिराष्यो ॥
अरु वैरागादिक समुझाये । मेरे सब संदेह मिटाये ॥
त्यौंहीं सकल तत्त्व सो भाषो । मेरे सब संदेह न राषो॥
यमकाहिये सो कई प्रकार । अरुत्योंकहोनियम विस्तार॥
अरुसम कौनकौनदम देवा । कौनक्षमाअरुधृतिकोभेवा ॥
कौन शूरता अरु तपदान । कौन सत्यको झूठ बखान॥
कौन त्याग को धन है इष्ट । कौन यज्ञ दाक्षिणा वरिष्ट ॥
बलअरुदयालाभअरुसुःख । विद्या लज्जा शोभा दुःख ॥
पंडित मूरुख पंथ सपंथ । स्वर्ग नरक बंधू गृह ग्रंथ ॥

कौन दरिद्रकौन धनवंत । कौन कृपण कोई स्वरवंत ॥
अरुइनते उलटे हैं जेते । अशमअदमआदिक सबतेते ॥
मोसोदेवकृपाकरि भाषौ । राखौतत्त्वअतत्त्वहि नाषौ ॥
यों सुनिबहु उद्धवके प्रश्न । तबकरुणाकरिबोले कृष्ण ॥

श्रीभगवानुवाच ।

हिंसा रहित सत्य अस्तेय । संगविवर्जित सबको हेय ॥
लज्जामौनरुआस्तिकधीर । ब्रह्मचर्य अरु क्षमा अभीर ॥
एद्वादशयमगहै निवृत्ती । अरुत्यौं द्वादश नियमप्रवृत्ती ॥
शौचरुकपटरहितधर्मादर । जप तपअरुममपूजासादर ॥
तीरथअटन अतिथिको पोष । गुरुसेवाअरुहठ संतोष ॥
परउपकार होम विस्तारै मुक्ति भुक्ति चाहै सो धारै ॥
सम जो मोमें निष्ठाबुद्धि । दम इंद्रिय निग्रहमन शुद्धि ।
जो दुःख न उपजावै कोई । तिनते जाके दुःख न होई ॥
सकलसहै कछुमननहिंआनै । ताकोममजनक्षमाबखानै ॥
जिह्वा इंद्रिय चंचल होई । तिन दूनोंको त्यागै सोई ॥
रस अरु अबलाकोनहिं गहै । ताको मेरो जनधृतिकहै ॥
भूतद्रोह त्यागसो दान । भोगतजन सो तप नहिं आन ॥
सोई शूर जो जितै स्वभाव । सोई सत्य सकलममभाव ॥
मोको लिये वचनसो सत्य । मो बिन बोलैसकलअसत्य ॥
कर्मनमें जो होय असंग । सो वह परम शौच है अंग ॥
सो है त्याग तजै फल कर्म । सो धन इष्ट परमभम धर्म ॥

यज्ञरूप मैं हों नहिं आन। सो दक्षिणादेइ मम ज्ञान॥
प्राणायामपरमबल कहिये। जाकरिबडोशत्रुमनगहिये॥
मम ऐश्वर्य भाग्य जो पावै। चेतन निजानंद ह्वै आवै॥
मेरी भक्तिएकयहलाभ। भक्ति विनासोसकल अलाभ॥
जाते भेद मिटै सो विद्या। उद्धव दूजी सकल अविद्या॥
लज्जा मानि अकर्म न गहै। मम जनताको लज्जा कहै॥
निःकिंचननिरपेक्षनलोभा। इत्यादिकजे गुणतेशोभा॥
सो सुखजो सुखदुःखअतीत। पुण्यनपापउष्णनहिंशीत॥
विषयनकीइच्छादुखजानौ। गुणसम्पन्नआयसो मानौ॥
बंधमुक्तकीमुक्तिहिजानैं। मम जन पंडित ताहि बखानैं॥
अहंकार जाके जग आदि। अपने कहै देह गेहादि॥
सोसमस्तमूरुखहा जानौ। याते और भांतिमतिमानौ॥
जा करि मोहि लहै सो पंथ। जो प्रवृत्तिसोसकलकुपंथ॥
नितसंतोषीशीतलहृदय।सात्विकचित्तसबनपरसुहृदय॥
यहै स्वर्ग सुखको भंडार। नरकनमें तामस अधिकार॥
सतगुरुएकबंधु करिजानै। और सकलकरिवैरी मानै॥
सतगुरु है सो मेरो रूप। जाते जीव तजै गृहकूप॥
सतगुरु विना बंधु नहिं कोई। सतगुरुबिन जो वैरीसोई॥
मानव तन सोई गृह कहिये। ताके गृहे गृही ह्वै रहिये॥
सो दरिद्र जो तृष्णावंत। कृपण इंद्रियन वश वरतंत॥
विषयनअनाशक्तसो ईश। विषयनिवशते सकलअनीश॥

इतने प्रश्नकह्यों मैं तोसों । जो जो विधितुमपूछी मोसों ॥
विधिनिषेधकेलक्षण जैसे । महापुरुष जानत हैं तैसे ॥
विधिनिषेधको जौलौं जानैं । ऊंच नीच बहुभेदनमानैं ॥
सोयहसकलनिषेधै जानौ । भेदहष्टिमें विधिमतिमानौ ॥
विधिरुनिषेधनिषेधैदेखौ । दुहुँते परे ताहि विधिलेखौ ॥
विधिनिषेधपशुमानवमानैं । पंडितकबहुँहृदयनाहिंआनैं ॥
ताते विधिनिषेधभ्रमजानो । मेरोरूप सकल करिमानो ॥

दोहा--विधिनिषेधभ्रमजाननो, ज्ञानकह्योजवकृष्ण ।
वेदवचनतबसुमिरिकरि, उद्धवकीन्ही प्रश्न ॥

इति श्रीभागवते महापुराणे एकादशस्कंधे श्रीभगवदुद्धव संवादे भाषायां एकोनविंशोऽध्यायः ॥ १९ ॥

विंशोऽध्यायः ।

दोहा--कहतबीसवेंध्यायमें, भक्तिक्रियात्मकज्ञान ।
अधिकारीहुविभागते, सुलभयोगत्रयजान ॥

उद्धव उवाच ।

हेप्रभुजीतुमकरुणाकरौ । मेरो यह संशय परिहरौ ॥
तुम्हरी आज्ञा कहिये वेद । ताहीमें दीसतु है भेद ॥
विधिनिषेधसो वेदबखानैं । ताहीते सब कोई मानैं ॥
तुम्हरी आज्ञाक्योंभ्रमलेखै । जाते विधिनिषेधनाहिंदेखै ॥
अरुयहप्रगटाहिदीसै देवा । विधिनिषेधकेबहुविधिभेवा ॥

प्रगटहिविविधवर्णआश्रमें। तिनकोविविधभाँतिविधिकर्म॥
तिनकेपरगटफलस्वर्गादि। अबको नहिंयहपंथअनादि॥
अरुनिषेधप्रगटहिप्रतिलोम। अंबष्टादिकजे अनुलोम॥
वर्णनमें संकर हैं जेते। अरु तिनके कर्मौं पुनि तेते॥
तिनके फलप्रगटहिं नरकादि। कहे हुते फलजाइँनबादि॥
जाके फलहि वेद ज्यों कहै। ताको करिनरत्योंहीं लहै॥
अरु त्यों द्रव्यदेयसबकाल। प्रगटहिविधिनिषेधगोपाल॥
अरुजोविधिनिषेधनहिंसत्य। तोसुखअरुदुखफलौअसत्य॥
कोई स्वर्ग नर्कनहिंजावै। तौ बहुश्रमकरिविधिनकरावै॥
अरु का कहिये बारंबार। तुम्हरे वचनन आनप्रकार॥
यह तौ कह्यो तुम्हारो वेद। जाते विधिनिषेधके भेद॥
देव पितर मुनि मानव जेते। वेद नयन देखतहैं तेते॥
विधि निषेधतिनकेफल जानैं। अरुत्योंहित्योंतेऊठानैं॥
सकलतुम्हारीआज्ञामाहीं। ज्योंज्यों थापेत्योंबरताहीं॥
सो मिथ्या क्यों कहिये वेद। याको मोहिं बतावोभेद॥
द्वै विधि वचन बढै संदेह। वेहै सत्य किधौं प्रभु येह॥
यह पूरण संदेह मिटावौ। एक भांतिके वचनसुनावौ॥
याविधि परमज्ञान विस्तारौ। अपनेरचेजीवनिस्तारौ॥
सुनि ऐसी उद्धवकी वाणी। तब बोले श्रीशारंगपाणी॥

श्रीभगवानुवाच।

उद्धव परम ज्ञान अब कहौं। तेरे सब संदेहहि दहौं॥

मैं भाषेहैं तीनि उपाय । कर्म रु भक्ति ज्ञानसमुझाय ॥
ज्योंजाकोदेख्यों अधिकार । ताकोंतैसोकियो विचार ॥
जो भाषों सबहिनसों ज्ञान । तौ ते विषया तजैंनआन ॥
तातेंक्रमक्रम सकलछुडाऊं । लैकर ज्ञानमध्यठहराऊं ॥
ताते वचनसकलममसत्य । विधिनिषेधसोंनहींअसत्य ॥
परये सकलज्ञानके कारण । ज्ञानलहेतेसकलनिवारण ॥
ये तुम सिद्धी ब्रह्मकी जानौ । ताते कछुसंदेहनआनौ ॥
जिनभवसुखज्योंहैं त्यों जाने । ब्रह्मलोकलौंनश्वरमाने ॥
ताते तिनके उद्यम दहै । और सकल तजिथिर ह्वै रहै ॥
तिनको ज्ञानयोगअधिकार । थिर ह्वै करनो ब्रह्मविचार ॥
अरुजिनविषयदुःखनहिंजानें।अरुतिनकेउद्यमनाहिंभानें ॥
परमगुणसुनकरसुखमानैं । मेरो भजनभलोकार जानैं ॥
ताको भक्ति योगहितकारी । ऐसे जानै तत्त्वविचारी ॥
अरु जे विषयनके आधीन । तिनकउद्यमसों लवलीन ॥
कथासुननकोनाहिं अवकास । अरुममप्रीतिनहींआभास॥
तिनको कर्मयोग सुखदाई । इनते और न श्रेय उपाई ॥
ये तीनोंभाषतहोंतोसों । निश्चल चितह्वै सुनियोमोसों ॥
प्रथमाहि कर्मयोगविस्तारौं । विषयी जीवनकोनिस्तारौं ॥
मेरेबहुविधिगुणविस्तारा । कथाप्रसंगहिविविधप्रकारा ॥
तिनिमेंप्रीतिनउपजैजौलौं । कर्मयोगनाहिं तजियेतौलौं ॥
अरु जौलौं न बढै वैराग । विषयिनको नमिटैअनुराग ॥

तौलौं कर्म योग नाहिं तजै। कर्म नहीं करिमोकोभजै ॥
अपने धर्म माहिं थितरहै। कबहूं भूलि निषेध नगहै ॥
यज्ञमहोत्सवबहु विधिकरै। सकलकर्ममहितविस्तरै ॥
मनते इच्छासकलमिटावै। सोजनस्वर्ग नरकनाहिं जावै ॥
ऐसे ज्ञान भक्तिको लहै तातें कर्म कालिमा दहै ॥
उद्धवयहमानव तनु ऐसो। सकल सृष्टिमें नाहीं जैसो ॥
स्वर्गनरकके बंछैं जाको। परंक्योंही नाहिं पावैं ताको ॥
ज्ञानभक्ति यातनुकरि लहै। औरसबनकरभवजलबहै ॥
जो ऐसो मानव तनु पावै। सो समस्तकामनामिटावै ॥
तजै निषेध सकलही कर्म। अरुकामना हेत जे धर्म ॥
अरु फिरिनाहिंबंछै नरदेहा। परमरत्न नाहिं खोवै एहा ॥
यद्यपि बहुरो नरतनु पावै। परकछुज्ञानादिकनरहावै ॥
मात पिता भाई कुललोग। ज्ञान मिटावैं करि संयोग ॥
खानपानआदि कबहुँसाधैं। बालापनसों ताको बांधैं ॥
तातें जौं लगि नाहीं मरै। तौ लगिजतन प्रथमहीकरै ॥
यातनुकोमिथ्याकरिमानैं। अरुपुनिब्रह्मदानिकरिजानैं ॥
तातें जतन निरंतर करै। सावधानता हृदय धरै ॥
यातनुमें आशक्त न होई। करै उपाय मुक्तिको सोई ॥
ज्यों पक्षी तरुवासा करै। तामें प्रीति मानि मन धरै ॥
अरुतावृक्षहि काटै कोई। जिनके हृदयदयानहिंहोई ॥
वृक्षसंग जो पक्षी परै। तौ तिनके वश ह्वै करि मरै ॥

परजोप्रथमहि वृक्षहि त्यागै । काटतदेखिआपुउठिभागै ॥
आपुहिं ऐसी भांतिबचावै । पछि तहाँ रहै जहँ भावै ॥
त्योंही नरतनुतरुआधारा । आतम पक्षी किये अगारा ॥
ताको निशिदिन करै प्रहार । सदा निरंतर वारम्वार ॥
ऐसोदेखि धरै मन त्रास । प्रथमहिं त्यागै तरुकोवास ॥
मोमें आय बसेरा करै । तातै बहुरि न जन्मै मरै ॥
मानव तनु भवसागर नावा । मेरि कृपाहूते यह पावा ॥
जामेंगुरुखेवट सुखदाई । सानुकूल मैं पवन सहाई ॥
तौहूं आपुहिं जो नहिं तारै । नावछोडि भवसागर डारै ॥
ताको आतमघाती जानौ । दूजो आतमघातनमानौ ॥
अरु जो भवते होय विरक्त । दुखमय जानिनहोवै रक्त ॥
सो समस्त इंद्रिय वशकरै । मन निश्चल करि मोमेंधरै ॥
जो मन धारत अचल न होई । तौहूं आतुरहोयनसोई ॥
एकहि वारनसकलनिवारै । क्रमक्रमसकलउपाधिहिटारै॥
कछु इक पूरै आशा मनकी । हृदय धारै मूलखननकी॥
देवै सो तजिवेके हेत । सावधान नित रहै सुचेत ॥
आगे फलकी अवधि बतावै । दुःखदिखायविरक्तिउपावै॥
ऐसे क्रमही क्रममनधारै । क्रमक्रमसकलविकार निवारै ॥
इंद्रियगुणहृदयनाहिं आनै । श्वासजीतमनकी गतिभानै ॥
मन जीतनको परम उपाई । जाते मन गतिजानीजाई ॥
जैसे अवश तुरंगम होई । अश्ववार वश होय न सोई ॥

तब तापर चढिकै असवार । हठ नहिं करै एकही बार
कछु हयको रुखसहित चलावै । पीछे दै चाबुकदौरावै ॥
ऐसी विधि हयको वशकरै । त्यौं योगी क्रमक्रममनधरै॥
सांख्य विचार निरंतर करै । जो विधि यहजगउपजैमरै ॥
तत्त्वनकीउत्पत्तिविचारै । ज्यों ज्योंविनशैत्योंमन धारै ॥
सकलउपाधिउरेकीदेखै । आपुहिं परे सकलते लेखै ॥
याविधिजौलगिमनवशहोई । तौलगिकरैविचारहिसोई ॥
ऐसी विधि जबसांख्यविचारै । गुरुकेवचनहृदयमेंधारै ॥
तब सबहीते होय विरक्त । मम धरमैं होवै अनुरक्त ॥
योगपंथ जे अष्टप्रकार । अरु यह आतमदेह विचार ॥
अरुममश्रवणकीर्तनध्यान । मनजीतनकोपथनहिंआन ॥
योग अरुसांख्यभक्तियेतीनि । सबपंथनमें लीन्हेंबीनि ॥
इनते चौथो नहीं उपाइ । जाते मनमों मैं ठहराइ ॥
ताते चौथो कछू न करणों । इनपंथनमोकोअनुसरणों ॥
अरु जो कबहुँ पाप है आवै । सावधानता उर न रहावै ॥
तौहूं और न करे उपाई । सो सो पाप इनहिं ते जाई ॥
और करैनानाविधिजोई । सोसोअधिकअधिकमलहोई ॥
विधिनिषेधसबहीमलजानौ । कबहूंकछुउत्तममतिमानौ॥
विधिनिषेध ये कीन्हे दोई । जाते बँधे रहैं सब कोई ॥
भयते बहु आरम्भ न करै । अपने अपने विधिआचरै ॥
ता पछि सब बंध जनाऊं । करौं अबंधे सकलछुडाऊं ॥

सकल न त्यागै एकहिंबारा । ताते कीन्हे बहुतप्रकारा ॥
ताते विधिनिषेधनहिं करना । सकलत्यागमोमेंमनधरना ॥
विधिनिषेधजिनिमिथ्याजानैअरुभवसुखसबदुखकरिमानै ।
परसमरथताजिवेकोनाहीं । प्रबलज्ञानप्रगट्योनाहिंमाहीं ॥
ताको भक्तियोगअधिकार । सहजै छूटै सकल विकार ॥
मेरी कथा निरंतर सुनै । हृदय माहिं मेरे गुण गुनै ॥
दृढविश्वास हृदयमें राखै । मेरे गुणनामनानितभाखै ॥
यों यद्यपि विषयनमें रहै । पर मन वचकमत्यागहि चहै ॥
सो नितभक्ति योगसों भजै । मोबिच अंतरायसबतजै ॥
तंत्र पंथ पूजा विस्तरै । ममहित जो कछु सो सब करै ॥
याविधिसकलवासनानाशै । मेरोरूप हृदय परकाशै ॥
ताते ब्रह्मरूप करि जानै । द्वैतभाव मिथ्या करि मानै ॥
संशय कर्म भर्म भय भागै । अहंकार तजि सोवतजागै ॥
जहां तहां मोहींको देखै । मो बिन और कछूनहिंलेखै ॥
ऐसो ह्वै ममरूप समावै । याही जन्म और नहिं पावै ॥
ताते जाके मेरी भक्ति । निशिदिनममचरणनअनुरक्ति ॥
ताके यद्यपि नाहीं ज्ञान । अरु नाहीं वैरागनिदान ॥
तौहूं सोमोंको अनुसरै । अतिदुस्तर भवसागर तरै ॥
वर्णाश्रमके धर्म न करै । बहुत भांति तमको अनुसरै ॥
निशिदिनसांख्यहिज्ञानविचारै।गहिवैरागसकलअघजारै ॥
साधै योगहि अष्टप्रकारा । दानव्रतादिकबहु बिस्तारा ॥

ये सब आपुहिं ते चालि आवैं। मम जनके आधीनरहावैं॥
मेरी भक्तिसकल शिरताजा। जैसे सकल नरनमें राजा॥
भुक्तिमुक्तिपलनाहिंपरिहरैं। मम जनकी नितसेवा करैं॥
अरुयद्यपिमैंबहुविधिकहौं। भुक्तिमुक्तिकछुदीन्हीचहौं॥
परमेरो निजजन नाहिं लेव। सकलत्यागिममचरणन सेवै॥
निर्पेक्षता परम है श्रेय। मो विन सकल वस्तुको हेय॥
निस्पृहतायहसुखहिअपार। जहांनकालकर्मअधिकार॥
मैं निस्पृह निस्पृह जो होई। मेरो भक्त कहाजै सोई॥
मेरे समलक्षण हैं जामें। मेरो रूप जानियो तामें॥
सबते निस्पृह नितमम भक्त। मैंनिस्पृहतासोंअनुरक्त॥
ताते निस्पृहता सुख ऐसो। सकल विश्वमें नाहींजैसो॥
निस्पृह जनमेरो सुख पावै। स्पृहावंतक निकट नआवै॥
ज एकान्त भक्त हैं मेरे। तिनक पुण्य पाप नाहिं नेरे॥
राग द्वेषवर्जित समदरसैं। त्रिगुणातीत ब्रह्मको परसैं॥
योग रु भक्तिसांख्य य तीन। तीनौं एकै कहैं प्रवान॥
इनको पाइ मोको पावै। ये विन पायन मोमें आवै॥
ये साधन हैं तीनों नीके। इन विन और न तारकजीक॥
ये साधन हैं मेरो रूप। इनत तत्त्व न और अनूप॥
मेरो गोप्य रहस्याहियोग। जीवब्रह्मको क्षिप्र संयोग॥
छूटै सकलअविद्या भोग। कालजाल नाहिं संशय रोग॥
ऐसे तीनि पंथ विस्तारे। इनकरि बहुत जीवनिस्तारे॥

जेई जेजन इनमें आवैं । तेईते मेरो पद पावैं ॥

दोहा-जे इन पंथनको तजैं, करैं कर्म अधिकार ।
तिन पशुजीवनको कहे, विधिनिषेध विस्तार ॥

इति श्रीभागवते महापुराणे एकादशस्कंधे श्रीभगवदुद्धव
संवादे भाषायां उपायत्रयनिरूपणं नामविंशोऽध्यायः ॥ २० ॥

एकविंशोऽध्यायः ।

दोहा-श्रीधरश्रीलक्ष्मीनृसिंह, परानंद संदोह ।
तिनकीकृपाकटाक्षते, दूर होत मनमोह ॥
ज्ञानक्रियाहरिभक्तिमें, जिनकोनाहिंसंतोष ।
तिनकाम्याक हितकहै, द्रव्यदेशगुण दोष ॥

श्रीभगवानुवाच ।

ज्ञानभक्तिअरुकर्म उपाई । आप्नु मिलनकोदियेबताई ॥
परजे अतिहीं पशुअज्ञान । इनको छोडिकरैकछुआन ॥
बहुत कामना हिरदे धारै । तिनहित बहुकर्मनविस्तारै ॥
ते पशु दुःखनिरंतर पावैं । भवप्रवाह माहीं बहि जावैं ॥
तिनहित विधिनिषेध उच्चारे । तिनके बहुआरंभनिवारे ॥
अपनो अपनो जो अधिकार । तामें बरतैंतजिविस्तार ॥
ऊँचो नीचो सब परिहरै । अपने कर्म माहिं अनुसरै ॥
सोसोतिनातिनकोविधिजानो । तातेऔरनिषेधहिमानो ॥
ये कछु वस्तुबुद्धि मति देखौ । जीवपशुनकोबंधनलेखौ ॥

उपजी वस्तु समस्त अशुद्ध । परकहि भाषे शुद्धअशुद्ध॥
क्रमक्रमसकलछुडावनकारण । मैंयहक्रियाभेदउच्चारण ॥
पाप छुडाइ धर्म गहवाऊं । या विधि बहुआरंभ छुडाऊं॥
यह समस्त जगको व्यवहार । याते जगको वार न पार॥
क्षितिजलतेजपवनआकाश । सब जगपंचभूतपरकाश ॥
ब्रह्मासे स्थावर पर्यंत । पंच भूत करि सब वरतंत ॥
अरु एक आतम सबमाहीं । ताते भेद कहूं कछु नाहीं॥
पर तथापि मैं भाष्यौ वेद । ता करि कीन्हे नाना भेद ॥
तिनके स्वारथ सुखके हेत । विधि उच्चारे फलन समेत॥
देशकाल गुण द्रव्य स्वभाव । इनक भाषे नाना भाव ॥
एक निषेध एक विधि भाषे । यों संकोच माहिंसब राखे ॥
जानेदेश कृष्ण मृग नाहीं । अरु जहँ द्विज सेवान कराहीं॥
अरु जो कृष्ण मृगौ बहुरहैं । परमलेच्छ तहँ वासा गहैं॥
अरु यद्यपि तुरकौ तहँ नाहीं । परम गहरआदिनकेमाहीं
अरु जो मगधादिक परिहरे । परकदर्यता दूरि न करे ॥
अरु कदर्यता मेटी होई । पर जो होवै ऊपर सोई ॥
सो सो देश निषेध कहीजे । तिनमें वासादिक नहिंकीजे॥
तिनते और देश शुचि जानै । तिनमाहींवासादिकठानै॥
अरु जो कालकर्मको नाहीं । सूतक आदिभये जानाहीं॥
सो सो कालनिषेध कहीजै । उत्तम सो जामें विधि कीजै॥
वस्त्रादिकहि जलादिक शुद्ध । मूत्रादिकते होहिं अशुद्ध ॥

शुद्ध अशुद्ध वचनते त्योंहीं । सूंघेते पुष्पादिक त्योंहीं ॥
तबहीं पाक कर्‌यौ सो शुद्ध । बहुतकालको होयअशुद्ध ॥
कहिये भूमि मशान अशुद्ध । बहुत कालते होवै शुद्ध ॥
भूमें जब वरषा जल होई । बहुत कालते शुद्धै सोई ॥
ऐसी भांति और हू जानै । शुद्ध अशुद्ध भेद पहिचानै ॥
विन स्नान शुद्ध बालादिक । स्नानादिक शुद्ध युवादिक ॥
जीरण वस्त्र अधनको शुद्ध । द्रव्यवंतको परम अशुद्ध ॥
औरोसकलशक्तिअनुमान । शुद्धअशुद्धहिकियोबखान ॥
सो सब देशकाल अनुसार । विधिनिषेधकोकह्योविचार ॥
धन अरु पात्र वस्त्र गजदंत । तेल रु घृत हेमादि अनंत ॥
काल अग्नि जल माटी बाइ । यथायोग है शुद्ध कराई ॥
अरु जो कछू लग्यो दुर्गंध । जौ लगि धोये मिटै न गंध ॥
तौ लगि जानि अशुद्ध न गहिये । गंध गयेतनिर्मलकहिये ॥
शक्ति अवस्था तप स्नान । संसकार शुभ कर्म रु दान ॥
मम सुमिरणते होवै शुद्ध । करै अन्यथा होय अशुद्ध ॥
मेरो मंत्र लिये विधि जानै । मंत्रविहीन निषेधहि मानै ॥
अपैं मोहि शुद्ध सब कर्म । करै विपर्य होहिं अधर्म ॥
देश रु काल कर्म अरु कर्त्ता । द्रव्य मंत्र ये षट आचर्त्ता ॥
ये जो शुद्ध होहिं तौ शुद्ध । ये अशुद्ध तौ होइ अशुद्ध ॥
अब कहूं होवै शुद्ध अशुद्ध । कहू अशुद्ध यों होवै शुद्ध ॥
शुद्ध अशुद्ध भेद है जाके । राजदुहूंको है तानाके ॥
जो कहिये ऊंचेको धर्म । नीचेको है वहै अधर्म ॥

अरु जो कछू धर्म नीचेको । सोई है अधर्म ऊंचेको ॥
ताहीते दोऊ भ्रम जानै । मेरो भक्त कबहुँ नहिं मानै ॥
जो कबहूं विष अमृत लीजे । लै ऊंचे नीचेको दीजे ॥
तौ तिनमें तो भेद न होई । मरनो अमर एक सम दोई ॥
योंही विधि निषेधहू होवै । ऊंच नीचकी ओर न जोवै ॥
पर ये दोऊ हैं कछु नाहीं । आपु विचारौ अंतरमाहीं ॥
नीचे नीच कर्म आचरैं । मादिरापानादिकहू करैं ॥
तौहूं उनको दूषण नाहीं । नितहीं हैं दूषणही माहीं ॥
अरु जो गृहीकरत है संग । ऋतुके समय युवतिपरसंग ॥
तौ ताको कछु दूषण नाही । सो नित है दूषणही माहीं ॥
जैसे पऱ्यो धरणिमें कोई । ताहि न परनेको भय होई ॥
परजे कछू चढ हैं ऊंचे । संग करे ढहि आवैं नीचे ॥
तातेतिनकोसंगनकरणो । मनक्रमवचनसकलपरिहरणो॥
ज्यों ज्यों प्राणी छोडै कर्म । त्यों त्यों छूटै पावै शर्म ॥
क्षेम धर्म सबहिनको एह । मेटै शोक मोह संदेह ॥
या निमित्त म भेद सुनाये । थोरे थोरेमें ठहराये ॥
पीछे भ्रम कहि सकल निवारे । ऐसी भाँति जीव निस्तारे
जब नर विषयन उत्तम जानै । तबतिनमेंआशक्तिहिठानै
ताते हृदय ऊपजै काम । ताते तहां कलहको धाम ॥
ताही हुते क्रोध उपजावै । तब अविवेक आपुही आवै ॥
सो अविवेक हरै सब ज्ञान । ताते प्राणी मृतक समान ॥

तातै काज अकाजनजानै । निशिदिनबहुविधिचिंताठानै
सब पुरुषारथ होवै हीनि।निशिदिन रहै दुखित अरु दीन॥
तातै समुझै आपु न आन । मिथ्या जीवै वृक्षसमान ॥
ज्यों होवै लुहारके खाल । श्वासलेत यों खोवै काल ॥
अरु पुनि कहै कर्म फलजेते । स्वर्गादिकनानाविधि तेते॥
तेते कहि करि रुचि उपजाई । मेटि निषेधनविधिकरवाई॥
जैसे औषधि कटुक पियैये । बालकको लड्डू दिखरैये ॥
औषधिको फल लड्डू नाहीं। औषधि पियेरोगसबजाहीं॥
स्वर्गहेत जो कर्म न करै । पुनि सुनि तत्त्व फलहिपरिहरै॥
तब अनर्थ तजि अर्थहि पावै । मोमें ह्वै निःकर्म समावै॥
अरु यह जबतें जन्महि पावै । तबतेंआपुहि विषयकमावै॥
पुत्र कलत्र कुटुंब अरु प्राना । इनके हेत चहैसुख नाना॥
आप आपको करै अनर्थ । तिनको मूरुख जानैं अर्थ ॥
ऐसे या भवमें नित भरमै । कबहुँ न जानै सुखके मरमै ॥
अरु तिनको जो भरमत देखै । सदा निरंतर दुःखितलेखै॥
सो तिनको कबहूं न बहावै । अर्थ रु काम न कबहुँ दृढावै।
तातै मैं तो सबविधि जानौं । कैसे कर्म रु काम बखानौं ॥
परजे कछु श्रुतिमाहिंसुनाये । अर्थ धर्म अरु कामबताये॥
तेते सकल छुडावनकारण । हितविचारिकीन्हयोउच्चारण।
ऐसो वेद तत्त्व नाहिं जानै। मूरुख पुष्पित बैन बखानै ॥
फलन हेतु आरंभै कर्म । तिनको कबहुँ न छूटै भर्म ॥

कामीकृपणलोभअधिकारी। तृष्णाआकुलसदाविकारी॥
फूलहिमाहींफलक्करिमानै। कामिनिलागितत्त्वनाहिंजानै॥
मैं तिनके नित हिरदै माहीं। परतौहूं ते जानै नाहीं॥
जाते यह सबजगत पसारा। अरु समस्त जाकीआधारा॥
जाकी शक्ति पाय सब वर्त्तैं। चुंबक संग लोह ज्यों नर्त्तैं॥
जाकी आज्ञा सबही मानै। कोई मरयादा नाहिं भानै॥
ऐसो है सबहिनमें ईश। जैसे सकल देहमें शीश॥
परते काम कर्म तम अंध। ना मुहि देखैं अरुनाहिं बंध॥
जैसे नयन रोगमय होवैं। आगे होती वस्तु न जोवैं॥
यों अज्ञान अंध कामिष्ट। देखैं नहीं निकटमें इष्ट॥
ते मो विनमम मतो न जानैं। हतिजीवनयज्ञादिकठानैं॥
ते फिरि तिनाहिं हनैं परलोक। जन्मजन्मपावैंभयशोक॥
जब याके बहु हिंसादेखी। हनि हनिजीवजीवको पेखी॥
तिनके हेत कहीयहबानी। हिंसायज्ञहिंमाहीं बखानी॥
पशुवध एकयज्ञमें भाष्यो। औरसमस्तदूरिकारिराख्यो॥
जब प्राणी तामें ठहरावै। तब पुनि वेद हिंसकलमिटावै॥
या निमित्त पशुहिंसा भाषी। सोमूरखनतत्त्वकारे राषी॥
ताते बहुविधि कर्म न करैं। बहुकामना हृदयमें धरैं॥
पशुहिंसा कारि करैं विहार। जे जे पावैं बहुपरकार॥
देव पितर भूतनको जजैं। उरते सुख इच्छा नहिं तजैं॥
स्वप्न तुल्य स्वर्गादिकलोक। तिनकोउत्तमसुनियओक॥

तिनकी इच्छा हिरदै धरैं। द्रव्य खरचि कर्मनि विस्तरैं ॥
विघ्न होहिं बहुकर्मन माहीं । स्वर्गादिकहू पावैं नाहीं ॥
ज्यों कोइ सागरपारहिंजावै । धनहितगृहकेधनहिलगावै ॥
पीछे परै विघ्न जो कोई । तौ दूनोंते जावै सोई ॥
त्यों जे बहुविधि कर्म उपावैं । ते पशु दुहूंलोकते जावैं ॥
सात्विक जेते देव न भजैं । यक्षादिक न राजसी जजैं ॥
तामस भूतप्रेत बहु सेवैं । तन मन धन तिनतिनकोदेवैं ॥
इहाँ यज्ञहू बहुविधिकीजै । विप्रन बहुत दक्षिणादीजै ॥
ताते स्वर्गादिक सुखपैये । तहां बहुत विधि भोगभोगैये।
पुनि जब होवै तिनको अंत । तबहूजै भुवमें धनवंत ।
ऐसी भाँति कामना करैं । तिन निमित्त कमन विस्तरैं।
तिनको मेरी बात न भावै। भक्ति कहांतेहिरदय आवै ॥
यद्यपि वेद कर्म उच्चारै । धर्म रु अर्थ काम विस्तारैं ॥
पर तथापि ब्रह्महीं बतावैं । क्रम क्रम दूजोसकलछुडावैं॥
पर श्रुतिको आशय नाहिंजानैं । तेकछुऔरै औरबखानैं॥
शब्द ब्रह्म महादुबोध । जाको कोई लहै न शोध ॥
सूक्षम थूल रूप द्वै याके । मो बिन भेद लहैको ताके ॥
प्राण स्वरूप परासे नाम । पश्यंतीको मनमें धाम ॥
तीजीकंठ मध्यमा मूल । चौथी प्रगट वैखरी थूल ॥
भेदहि तिनको कोइ न जानै । ताते औरै औरबखानै ॥
अन्तपार कोई नाहि पावै । ज्यों सागर थाह्यो नहिंजावै ॥

अति गंभीर अर्थ है याको । कोई भेद न जानै जाको॥
मैं सबहिनमें अंतर्यामी । शक्ति अनंतसकलको स्वामी॥
सर्वव्यापक ब्रह्मस्वरूप । लिप्त न कतहूं परम अनूप ॥
सोई व्यापक सबहिन माहीं । शब्दरूप दूजा कोउनाहीं॥
कमलनालमें तंतू जैसे । शब्द रूप सबमें मैं ऐसे ॥
सोई प्रगट्यो बहुविस्तारा । मनकरिहृदयहुतेमुखद्वारा ॥
ज्यों मकरी तंतुन विस्तारै । करि विस्तारबहुरिसंहारै ॥
वेद रूपत्यों मम विस्तार । ओंकार मूल आकार ॥
ताते अक्षर बहुत प्रकार । तिनते छंद वार नहिं पार ॥
चारिचारि अक्षरअधिकाहीं । छंद होत ऐसीविधिजाहीं॥
एकहुते यों होहिं अनेक । बहुरो सकल एकको एक ॥
गायत्री अक्षर चौबिस । उष्णिक छंद अष्ट अरु बीस ॥
जो बत्तीस अनुष्टुप सोहै । बृहती नाम तीस षटको है॥
पंक्ति नाम अक्षर चालीस । त्योंही तृष्टुप चौवालीस ॥
जगती छंद अष्ट चालीस । कहत पार नहिं कोटिबरास॥
या विधि प्रगट वेद विस्तार । जाकोकछूवारनहिं पार ॥
कहाहृदयमें कहा बतावै । लै कर अंत कहा ठहरावै ॥
ऐसो मतो न जानै कोई । मो बिनभावैविधिकिनहोई ॥
यज्ञरूप कहि मोको राषै । सकल देवमय मोकोभाषै ॥
मेरे हेत कर्म करवावै । मोंते उपज्यौ सकल बतावै ॥
अंतसकलको भाषै नाश । मोको कहै नित्य परकाश ॥

नानारूप न वृथा जनावै । एक ब्रह्म कहि सकल सुनावै ॥
जैसे साँप जेवरी माहीं । यों सब जगत बतावै माहीं ॥
मोको नित्य निरंजन भाषै । अंजन सकल दूरिकरिनाषै ॥
ताते श्रुति नित मोहि बतावै । पर यहतत्त्व न कोई पावै ॥
सो पावै जो मम आधीन । ह्वै निःकाम होय लवलीन ॥

दोहा-योंमुनिकरिश्रुतितत्त्वको, उद्धवलह्योअनंद ।
प्रश्न करी पुनि कृष्णसों, जाते छूटै द्वंद ॥

इति श्रीभागवते महापुराणे एकादशस्कंधे श्रीभगवदुद्धव संवादे भाषायां वेदस्थब्रह्मपरतत्त्व निरूपणं नाम एकविंशोऽध्यायः ॥ २१ ॥

द्वाविंशोऽध्यायः ।

दोहा-तत्त्वगणितद्वाविंशमें, कहों भेद सब एक ।
जन्ममृत्युविधिआदिलै, प्रकृतीपुरुषविवेक ॥

उद्धव उवाच ।

हे देवेश तत्त्व हैं केते । कहो कृपा करि मोसो ते ते ॥
जिनको रचित सकल संसार । जोदीसैनानाविस्तार ॥
तुम तौ अष्टाविंशति कहे । ते मैं दृढ करि मनमें गहे ॥
परबहुते ऋषिबहुविधिकहैं । अरुतिनते सुनित्योंहीगहैं ॥
कोई कहत हैं तत्त्व छबीस । अरु त्यों कोई कहैं पचीस ॥
कोई षट अरु कोई चारि । कोई भाषै सप्त विचारि ॥

कोई नवको करें विवेक । कोई भाषैं दश अरु एक ।
कोई तत्व बतावै षोडश । अरु त्यों एकै कहैंत्रयोदश ॥
कोई भाषै दश अरुसात । ए ऋषिमतेस्मृतिविख्यात ॥
कौन प्रयोजन लै लै भाषैं । यों अपने अपने मत राषैं ॥
कृपा करौ निजबैनसुनावो । सत्य मतो सोमोहिंजनावो ॥
सुनि उद्धवके बैन रसाल । कृपा सिंधु बोले गोपाल ॥

श्रीभगवानुवाच ।

हे उद्धव ज्योंज्यों सब भाषैं । जितने जितनेतत्वनिराषैं ॥
तेते तुम सब जानौं सत्य । तत्व बिचारें सबै असत्य ॥
माया देखि कहैं जो जेते । माया माहिं सत्य हैं तेते ॥
मोहिंदेखिजोतिनको देखै । तौसमस्तमिथ्याकरिलेखै ॥
माया माही युक्ति विचारैं । अपनो अपनो मतो उचारैं ॥
यह यों यहयों यहयों नाहीं । कहैं सबैमिलिआपुनमाहीं॥
यह यों ही है ज्योमैं भाषौं । तेरी कही सत्यनाहिं राषौं॥
या विधिममायाभरमाये । तिन नानाविधिपंथचलाये॥
ममभायाकी शक्ति अनंत । तिनके पंथनिको नाहिं अंत ॥
शम दमउरजब अंतरआवैं । तबयेभेदसकलमिटिजावैं ॥
जेते तत्व सकलमायाके । जिनते भये मते ता ताके ॥
क्रम क्रमतत्वउपजतेगये । त्यों त्यों भेद बहुतविधिभये ॥
जैसे एक वृक्ष विस्तार । ताकी संपति बहुपरकार ॥
कछुशाखाबहुतेपरशाखा।अरुतिनकेबहुविधिउपशाखा॥

तिनकोबहुतभांति विस्तार । पानफूलफलविविधप्रकार ॥
अरु तावृक्षहिंवरणै कोई । ज्यों ज्यों कहै सत्यत्यों होई ॥
थोरे होहि कहै जो शाखा । बहुते होहिं मिलेपरशाखा ॥
उपशाखामिलि बहुविधि होवैं । तेसवपंथसत्यसवजोवैं ॥
यों संसार वृक्ष विस्तार । माया मूल बहुत परकार ॥
तत्वसकलशाखापरशाखा।अरुतिनकेबहुविधिउपशाखा।
ताते ज्यों वरणैं त्यों सत्य । पर सबमायासकलअसत्य ॥
ज्योंहींज्योंजिनकेमनआयो।त्योंहींत्योंतिनवरणिसुनायो ।
माया करि बंध्यौ सो आत्म । ताते छोरैसो परमात्म ॥
ये द्वै अरु जडते चौबीस । तिनको मिलैंसकलछब्बीस ॥
अरु जे बंधमुक्त हैं होई । ते भ्रम माया सत्य न कोई ॥
ताते जीव ब्रह्म द्वै नाहीं । यों पचीस जानौ मन माहीं ॥
सत रज तम ये गुण हैं जेते । जडस्वरूपमायाके तेते ॥
रज उतपतिसात्त्विक प्रतिपाल । तामसरूपयसतहैकाल ॥
राजसहुते कर्म अधिकार । तामसते अविवेक अपार ॥
सात्विक गुणते उपजै ज्ञाना । ये हैं मायाके गुण नाना ॥
इनते परे आत्मा मानौ । ताते ब्रह्मरूप करि जानौ ॥
पंचवीस ताहीतें कहैं । अरु त्योंही सुनि औरौ गहैं ॥
सोहैकाल गुणन विस्तारै । सूत्र स्वभाव सोशक्तिपसारै ॥
ताते कालरूपहरि जानौ । अरुस्वभावमहँतत्वहिमानौ ॥
ताते तत्व अधिक नाहिं गहिये । पंचवीसछब्बीसैकहिये ॥

प्रकृति पुरुष महतत्त्वअहंकार । तनमात्राते,पंचप्रकार ॥
कर्ण रु त्वचानयनरस घ्राण । येपंचौ इंद्रय हैं ज्ञान ॥
पायु उपस्थ चरण करवानी । पंचकर्म इंद्रिये जानी ॥
मन दशहू इंद्रियको राजा । जाकी शक्ति करै सबकाजा॥
क्षिति जल तेज पवन आकास । अट्ठाइंसतीनिगुणपास॥
गतिउत्सर्ग कर्म अरु वचना । ये पांचौइंद्रियफलरचना ॥
ताते अष्टाविंशति तत्व । अधिक न भाषै ज्ञानी सत्व ॥
सृष्टि आदिथी माया एक । पुरुष शक्तिते भई अनेक ॥
तनमात्रा महतत्व अहकार । ये हैं कारण सप्त प्रकार ॥
पंचभूत मन इंद्रिय दश । कारज रूप प्रकृति एषोडश॥
सतरजतमगुणतीनिप्रकार । तिनतेरच्योसकलविस्तार ॥
कारणकरणप्रकृतियेजानौ । पुरुषनिमित्तरुसाखी मानौ ॥
इच्छाशक्ते पुरुषते पावैं । मिलिसमस्ततबसृष्टिउपावैं ॥
सप्त धातुको सब विस्तार । आतम द्रष्टाके आधार ॥
सकल त्व सप्ताहिमें आये । तातें एकनि सप्त बताये ॥
पंचभूतआपुहि उपजाये । तिनके बहुविधि देह बनाये॥
आपु प्रवेश कियाहारि तिनमें । चेतनदीसतहैजिनाजिनमें ॥
ऐसीविधि षटको विस्तार । आपु माहिं बहुकरै विचार॥
पृथिवंआपतेज त्रयतत्व । अरुआतम निमितसबसत्व ॥
या विधि चारि तत्व विस्तार । ऊँचो नीचो सबसंसार ॥
पंचभूत तनमात्रा पंच । पंचइंद्रिय मिलि सब परपंच ॥

मन आत्मा मिलें दश सात । तत्व सत, दशजानौ तात ॥
मन आत्मा एक करि जानैं । तेजनषोडशतत्ववखानैं ॥
पंचभूत अरु इंद्रिय पंच । ब्रह्मजीव मनको परपंच ॥
ऐसी विधि करि पंथ चलावैं । तेरहको सवजगत वतावैं ॥
इंद्रिय पंचपंचही भूत । आतम मिलि सब जगउद्भूत ॥
ऐसी विधि एकादश कहैं । त्योंही त्यों सुनिहृदयगहैं ॥
पंचभूतमन बुद्धिअहंकार । आत्मामिलिनवकोविस्तार ॥
ऐसी विधि वहु मारग कहैं । युक्ति विचारि हृदयमेंगहैं ॥
प्रकृति पुरुषको लहै विवेक इनको जानि एकको एक ॥
ऐसो सुनि तत्वनको ज्ञान । उद्धव पूछ्यो परमसुजान ॥

उद्धव उवाच ।

हे प्रभुजी यह ज्ञान सुनावौ । मेरे उरके भ्रमहि मिटावौ ॥
चेतन ज्ञान रूप अविनाशी । शुद्धानंद परम परकाशी ॥
ऐसो आतम तुम्हरो रूप । परे गुणनिते परम अनूप ॥
जड विनाशमय परमअशुद्ध । दुःखरूपफलसुखनहिंशुद्ध ॥
ऐसी प्रकृति पुरुषते न्यारी । तोहू भई परस्परप्यारी ॥
प्रकृतिमाहिंआतममिलिरह्यो । अरुआत्माप्रकृतिकोगह्यो ॥
इनमें भेद न जान्यो परै । एक मेक है सब अनुसरै ॥
इनमें प्रकृति कहाँलौं कहिये । कौनआत्माजोहृदगहिये ॥
करि करुणावाणी विस्तरौ । वचन बाण संशयपरिहरौ ॥
तुव माया वंध्यो संसार । तुमहीं ते होवै उद्धार ॥

तुमहीं मायाकी गतिजानौ । कृपाकरोतबतुमहीमानौ ॥
वाणी सुनी भक्तअपनेकी । तब बोले श्रीकृष्णविवेकी ॥

श्रीभगवानुवाच ।

हे उद्धव यह ज्ञान अगाध । कोई एक लहै मम साध ॥
सो यह ज्ञान सुनाऊं तोहीं । तूहै सदा अनुव्रत मोहीं ॥
उद्धव प्रकृति रचै संसार । सूक्षम थूल विविध परकार ॥
उपजै बरतै होय विनाश । तामें आतम नित्य प्रकाश ॥
उद्धव यह है मेरी माया । तिन सतरजतमगुणउपजाया ॥
तिनकोत्रिविधिसकलविस्तारा। जाकोकछूवारनाहिंपारा ॥
त्रिविध कहनको परि बहु भेद। जिनतेंजीव लहैंबहुखेद ॥
अध्यातम अधिदैव अधिभूत।त्रिविधरूपसबजगउद्भूत ॥
दृढअध्यात्मरूपअधिभूत । रविअधिदैवतामिलिअद्भूत॥
तीनौ मिलैं परस्पर जबहीं । तिनको कारजसूझैतबहीं ॥
तीनौ बिना कछू नाहिं होई । तीनोंमिलिबरतैसबकोई ॥
त्वचास्पर्श पवनत्योंजानौ । कर्णरुशब्दादिशायोंमानो ॥
नासागंध अश्विनी सुता । जिह्वारस रु वरुणजलयुता ॥
चित्तचेतना अंतरयामी । बुद्धिबोधना ब्रह्मास्वामी ॥
अहंकार अहंकर्त्ता रुद्र । मन मानिबा देवता चंद्र ॥
याविधित्रिविधिप्रपंचपसार । सकलपरैआतमनिजसार ॥
इनतीनौ विन जगत न होई । तेआतमाबिनरहैं न कोई ॥
आदि सकलके आतमएक । जातें चेतन होहिं अनेक ॥

आतमस्वप्रकाशअविनाशी। चेतनरूपसकलपरकाशी ॥
ये सब आतमके आधार । अरु आत्मासकलकेपार ॥
विना आत्माकछुनहिं होई । अरुआतमनाहिंजानैकोई ॥
महत्तत्वते उपज्योअहंकार । तिहूंगणनकोत्रिविधप्रकार ॥
सोअज्ञानमूलकरिमानौ । ताकोकियोजगतभयजानौ ॥
सोआतमाआपुमहिलियो। भवभयआपुआपुकोकियो ॥
आतम सदा एकही रूप । अहंकारते परै अनूप ॥
सो जब रूप आपनोजानै । तबहींसकलउपाधिहिंभानै ॥
सो कछु है यह नहींउपाधि । परआत्मालई करि व्याधि ॥
समुझै जबहिं आपनोरूप । तब आत्मा तजै भवकूप ॥
अरु तब रूप आपनोजानै । जबममचरणहृदयमेंआनै ॥
यद्यपि मिथ्या सब संसार । जो कछुदीसै विविधप्रकार ॥
पर जौलौं नहिं मोको भजै । तोलौंनिजअज्ञानन तजै ॥
जबहींमेरी शरणहिं आवै । तबहीं आतम ज्ञानहि पावै ॥
दोहा-ऐसे श्रीमुखबैनसुनि, प्रकृतिपुरुषकोज्ञान ।
उद्धवकीन्हों प्रश्नतब, हरिजनपरमसुजान ॥

उद्धव उवाच ।

तुमकरिरहितबुद्धिहैजिनकी । कहियेदेवकौनगतिनकी ॥
सकलवियापी आतमएक । क्यों करि पावै देहअनेक ॥
अरुशुभअशुभकर्महैं जेते । त्रिगुणरचितकहियेसबतेते ॥
तिन कमन निःकर्मबँधावै । क्योंकरिजोनिजयोनीपावै ॥

अमर मरै कैसे करि देवा । याको मोंहिं बतावौ भेवा ।
यह तुम बिना न कोई जानै । यद्यपि विद्यादेव बखानै ॥
जो कछु पढै बंधसो होई । ताते तत्व न जानै कोई ॥
या विधि उद्धव पूछ्योज्ञान । तबहरिबोले श्रीभगवान ॥

श्रीभगवानुवाच ।

उद्धवयहमनपरमविकारी । सबइंद्रियनमाहिं अधिकारी ॥
इंद्रिन ह्वै मनही सब करै । सुखहितबहुउद्यमविस्तरै ॥
सो तन तजि दूजे तन जावै । तहँई तहाँ आत्मा आवै ॥
जिनजिनसुखनसुनैअरुदेखै । तिनातिनकोउत्तमकरिलेखै ॥
तिनकोसोमननिशिदिनध्यावै । यहतनक्षीणभयेतहँजावै ॥
वहतनपाय विसारै याको । जनममरणकहिहितु है ताको ॥
जा तनमें बाँधै अभिमान । छोडै पूरब तन जो आन ॥
जन्ममरणआतमको सोई । दूजोजन्ममरण नहिंकोई ॥
जैसे स्वप्नमनोरथ जावै । यह तन छोडि औरही पावै ॥
तबयातनकीशुद्धि न रहै । वाही तनको आपुहिं कहै ॥
जन्मरुमरणस्मृतिकोहोइ । आतमजन्म मरण है सोई ॥
और कछू आतम नहिं मरै । अरु कबहूं नाहीं अवतरै ॥
यों तनमें मनको अभिमाना । तातेतनउपजतहै नाना ॥
ते सबआतमकेआधारा । तनमनबुद्धिचित्तअहँकारा ॥
तिनसंगतिआतमकोदुःख । तिनहितजेबिनपलनहिंसुःख ॥
उद्धव सकल देह हैं जेते । सदा सकल बिनशत हैं तेते ॥

कालनदी परवाह प्रचंड । ता करि पलकपरतनहिंखंड ॥
जैसे नदी निरंतर बहै । पर देखनको त्यौंही रहै ॥
अरुज्यौंअर्चिनिरंतरजावै । परिदीपकद्युतित्योंहि रहावै ॥
अरु जैसे सब वृक्षनके फल । दीसैंत्योंपरथिरनाहींपल ॥
त्योंही सब देहनिकोजानौ । कालहिंग्रसतानिरंतरमानौ ॥
यद्यपिअवस्थाजाती लेखै । बालकुमारयुवादिक देखै ॥
पर तौहू मूरखनहिं जानै । मैं वह इहौं यों करि मानै ॥
यह आत्मसों सदा अजन्मा । देह संगतें पावै जन्मा ॥
अरु त्यौंअमरनिरंतर नजाै । देह संग मरतोसोमानौ ॥
जैसे अग्निदारुके संग । सदा लहै उतपति अरु भंग ॥
जौलगितनकीसंगतिरहै । तौलगिआतमअतिदुखसहै ॥
गर्भप्रवेश वृद्धि अवतार । बाल अवस्था तथा कुमार ॥
यौवन मध्य जराअरुमरणा । नवअवस्थादेहआचरणा ॥
आतम एकरूपसबहिनमें । कबहूंनहींलिपैतिनतिनमें ॥
ऐसे जानि मुक्ति तबहोई । मेरी शरणागत जो कोई ॥
अपनो दादो पिता विचारै । तिनको मरणोउरमेंधारै ॥
भाई ज्यों अबमैं अनुरक्त । त्योंही तेऊ हुते आसक्त ॥
तेतो प्रगट काल वश भये । परवश परे छोडिसबगये ॥
मेरी यों हैहै गति ऐसी । भई बाप दादेकी जैसी ॥
अरु मेरे अब बालक जैसे । हमहूं हुते पिताके तैसे ॥
सकल अवस्था सो मम गई । यह तो प्रगटओरहीभई ॥

याही विधि जैहै सब देह । छुटिहै सबै पुत्र धन गेह ॥
यों उरमें बहु भाँति विचारै । अपने बंधन सकल निवारै ॥
देहादिक सब संगति तजै । सदा निरंतर मोको भजै ॥
बीज जनम पाके ते अंत । खेती खेत माहिं वरतंत ॥
खेती करन हार सो न्यारा । यों तनन्यारो करै विचारा ॥
कर्म बीज विस्तारै नाहीं । दग्ध करै जैहै तन माहीं ॥
तनते आपुहि न्यारो जानै । संग करे ते सुखदुखमानै ॥
ताते तनको संग निवारै । या विधि आपुआपुको तारै ॥
जो तन न्यारो आपु न जानै । तन सुख हेत कर्म बहुठानै ॥
तिनते नाना देहनि पावै । नितहीं जनमिजनमि मरिजावै ॥
सात्त्विकते सुरकै ऋषि होई । राजस नरकै दानव होई ॥
तामस पश्वादिककै भूत । या विधित्रिगुणजगतउदभूत ॥
यद्यपि आतम सदा अनीह । कबहूं कछू न करै समीह ॥
परि तन करते करता होई । संगदोष बंधतु है सोई ॥
जैसे नाचै गावै कोई । तिनको दूजो द्रष्टा होई ॥
त्यों त्यों आपुहि बैठे करै । तान ताल रागहि उरधरै ॥
त्यों माया गुण कर्मनि ठानै । आतम करैआपुकोमानै ॥
तिनही कर्मनि बंधै आप । जो कछु करै होइ सब पाप ॥
तिनको जानितजैनाहिंजोलौं । जन्ममरण दुखमिटैनतोलौं ॥
जलप्रवाह ढिग ठाढो कोई । तट वृक्षन देखै चल सोई ॥
नयन भ्रमत ज्यों कोई देखै । तब सब धरणीभ्रमतीलेखै ॥

तैसे यह आतम थिर जानो । और सकलचंचलकरिमानो ॥
निश्चल मन करि देखै जबहीं। निश्चल ब्रह्मरूप सब तबहीं।
जैसे स्वप्न मनोरथ मृषा । यों सब जग अरुविषया सुषा ॥
पर यद्यपि जग सत्य न कोई । तौहूं कबहुँ निवर्त्तनहोई ॥
जैसे स्वप्न सत्य कछु नाहीं । पर जौलौं है निद्रा माहीं ॥
तौ लगि सकल सत्यही जानै । सुखदुख पावैउद्यमठानै ॥
त्यों अज्ञान नींदवशजौलौं । जन्म मरणभयामिटै नतौलौं
ताते उद्धव सब भ्रम जानो । महा अनर्थ रूप करिमानो
विषयनिको उद्यमछिटकावो । अरु जेहैं ते सकलमिटावो
जो लगि आपुहि समुझै नाहीं । तौलगि है नानाभयमाहीं
अरु आपुहिनहिं समुझै तौलौं । मम आधीनन होईजौलौं।
मम आधीन निरंतर रहै । जग उपहास शीश सब सहै ॥
कोई एक करै अपमान । कोई गहि बाँधै अज्ञान ॥
कोई मूतै थूकै तनमें । डारै धूलि भीखके अनमें ॥
एकै डहकैं मूढ डिगावैं । एकै निंदैं चोट लगावैं ॥
ऐसे बहु विधि दुख उपजावैं। बहुविधि भयकेबैनसुनावैं॥
पर जो अपनो श्रेय विचारै । सो एको मनमें नहिं धारै ॥
बहुकष्टनतेमन न डिगावै । सोभवताजिममचरणन आवै ॥
मेरो पंथ खडगकी धार । जो न डिगै सो उतरै पार ॥
हरिके बैन न दुष्कर जानी । उद्धव प्रश्न करी भयमानी।

उद्धव उवाच ।

हे प्रभु तुम ये बैन सुनाये । ते मेरे उर दुष्कर आये ॥

जो असाधु वे काजधकावैं । ते तौ सहै कौन विधि जावैं॥
मेरे हृदय ज्ञान ठहरावो । सहन उपाय मोहिं समुझावो ॥
जे सहनो उत्तम करि जानैं । अरु त्यों औरनपास बखानैं॥
परिते आय परे नहिं सहैं । अंत प्रकृतिक वश ह्वै रहैं ॥
केवल जे तुव चरण अधार । तिनके कोई नहीं विकार ॥
ते नित निश्चल शीतल रूप । नित्यअनंदितपरमअनूप॥
तिनकोकबहुँलिये कछु नाहीं । सदावसैतुवचरणनमाहीं॥
औरै सकल प्रकृति आधीन। सदा विकारनि आगेदीन॥
ताते तुमही करुणा करौ । ज्ञानादिक मम हिरदै धरौ ॥

दोहा—ऐसी कीन्हीप्रश्नजब, उद्धव परमसुजान ।
भाख्योसहनउपायतब, भवभंजनभगवान ॥

इति श्रीभागवते महापुराणे एकादशस्कंधे श्रीभगवदुद्धव संवादे
भाषायां द्वाविंशोऽध्यायः ॥ २२ ॥

त्रयोविंशोऽध्यायः ।

दोहा—तिरस्कारमनसहनता, संयमबुद्धिप्रकार ।
कही ध्याय त्रयबीसमें, भिक्षूगीत मझार ॥
दुष्टवचन शरते बुरे, भले शत्रुके बान
श्रीधरजोनरसहतहै, तासमसाधुनआन ॥

श्रीभगवानुवाच ।

हे उद्धव ऐसो नहिं कोई । दुर्जन वचन क्षुभित नहिं होई॥

दुर्जन वचन बाण जो सहै । मन क्रम वचनक्षोभनहिंलहै ॥
जो ऐसो सो साधु कहावै । यों बिन साधु पदहिनहिंपावै ॥
खैंचि कसीस हनै गहिबान । अरुते भेदैं मर्म स्थान ॥
तौ तिनतें दुख होइन एसा । दुष्टवचन बाणनते जैसो ॥
पर मैं तोहिं उपाय सुनाऊं । सहनशीलताउरठहराऊं ॥
मोसों सुनो एकइतिहास । जाते होय हृदय परकास ॥
भिक्षुक एक ज्ञान मैं भाषी । ताका तोहि सुनाऊंसाषी ॥
कियोअसाधुनबहुअपमाना । तिरस्कारठान्योविधिनाना
तब ताभिक्षुकगाथा कही । कुमति आपनी सबहीदही ॥
सोअबसुनौसुचितह्वै मोसों । निजजनजानिकहतहौं तोसों
मालव देश रहै घर जाको । खेती वनिजजीविकाताको ॥
क्रोधवंत लोभी अरु कामी । विप्रनकेअपयशको नामी ॥
जाके होय द्रव्य अधिकाई । अरु जो नहीं देइ नहिंखाइ ॥
आपनको पीडा उपजावै । पुत्रादिक खाने नहिंपावै ॥
देव रु पितर अतिथि नहिं पोषै । बैनहु कौन कबहुंसंतोषै ॥
सो कदर्य जो ऐसो होई । ताते नीचो और न कोई ॥
ताते सो कदर्यद्विज भयो । सबजगमें जिनअपयशलयो ॥
ज्ञातिअतिथि बांधवनिजतनको । इनहूहेतनखरचैधनको
पुत्रादिक कलपैं दुख लहैं । ज्ञाति भृत्य दुर्बैनन कहैं ॥
पुत्र कलत्र अरु कन्या भाई । जहाँ लगे सबबंधु सगाइ ॥
ते सब द्रोह निरंतर करैं । ताको अप्रिय सब आचरैं ॥

ऐसो देखि पापअति ताको। यक्षसमान वित्त है जाको ॥
धर्मकाम दूनो करि हीन। दुहूं लोकके सुखते क्षीन ॥
जिन हित पंचयज्ञ नितकरैं। सकल गृहस्थदंडको भरैं ॥
तिन तब किया देवतानि कोप। ताते भयो विप्रधनलोप ॥
कछू द्रव्य ज्ञातिन हरि लयो। चोरी भये हुते कछुगयो॥
कछू अग्नि लागेते जरयो। कछू धरणि माहीं वसिऱ्यो॥
कछू राजविग्रहते गयो। यौं बहु भाँति क्षीण सबभयो॥
जबताकोसबधनहारिलियो। तिरस्कारतबसबाहिनुकियो॥
बहुतकष्टकरिधनउपजायो। सोनहिंदियोनआपुहिखायो॥
ताते उपजीचिंताचित्त। निशिदिन बस्योहृदयमेंवित्त॥
होवै तप्त खेदको पावै। आँसू कंठ बहुत्त बिधि धावै ॥
ऐसी विधि उपज्यो वैराग। जाते सकलदुखनकोत्याग ॥
तब सो विप्र वचनउच्चारै। बहुत भाँतिआपुहिं धिक्कारै ॥
अहो वृथा मैं कष्टहिपायों। आप आपकोदुखउपजायों॥
बहुते श्रम उपजायो दर्व। स्वप्न समान भयो सो सर्व ॥
ना मैं खर्च्यो ना मैं खायो। ना मैं एकहु अर्थलगायो ॥
द्रव्य कदर्यनिको है जेतो। एकहु अर्थ न आवै तेतो ॥
ना इह लोक नहीं पर लोक। केवल बढैदुःखभयशोक॥
बहुत कष्टसहि इहां उपावैं। पुनि परलोक नरकमें जावैं ॥
परम यशस्विनको यश शुद्ध। अरुजेपंडितज्ञानप्रबुद्ध ॥
सकल गुणिनके हैं गुणजेते। लोभ लेशते नाशैं तेते ॥

जैसे रूपवंत अतिकोई । केहूं अंगहीन नहिं होई ॥
श्वेत कुष्टको छिटका एक । मेटै गुण अरु रूप अनेक ॥
यों थोरोहू होवै लोभ । मेटै सकल रूप गुण शोभ ॥
जबते धनको साधन करै । वृद्धि हेत उद्यम विस्तरै ॥
तब तेत्रास शोक भय लहै । चिंताअग्नि निरंतर दहै ॥
सिद्ध भये अरु रक्षत भोग । नाशलगे नहिं सुखसंयोग ॥
चोरी हिंसा मिथ्या दंभ । काम क्रोध विस्मरणाथंभ ॥
बैर अरु गर्व सपर्द्धा भेद । अप्रतीति चिंताभय खेद ॥
ये पंद्रह जब होहिं अनर्थ । तब तिनहुते होतु है अर्थ ॥
ताते परम अनर्थ कहावै । भलो चहै सो दूरि बहावै ॥
अर्थ नाम सुनि भूलै लोक । विन विचारपावैदुखशोक ॥
पुत्र कलत्र बंधु अरु भाई । मात पिताहितसजनसहाई ॥
द्रव्य हेत सब करैं विरुद्ध । आप आपमें ठानें युद्ध ॥
द्रव्यकाज अतिक्रोधहिं करैं । तिनको मारैं अपनोमरैं ॥
धनहितप्रिय प्राणन छिटकावैं । आपुहि मूढ नरकमेंजावैं ॥
जाको देव बहुत विधि ध्यावैं । पर यानरदेहहिं नहिं पावैं ॥
सो नर तन तामें द्विज देह । करुणामय हरिजीको गेह ॥
ताको पाई अर्थनाहिंसाधैं । सबताजि हरिकोनाहिंआराधैं ॥
महा अनर्थ अर्थको गहैं । सो भवसिंधु आपुते बहैं ॥
ताते दूजो नाह मतिमंद । परै दुःखमें तजि आनंद ॥
देव पितर ऋषि भूत सहाई । पुत्र कलत्र आपु हितभाई ॥

धनहि पाइ जोइनहिं नपोषै । और न हूंको नहिं संतोषै ॥
सो सब त्यागि नरकमें जावै । तहां मूढ नानादुखपावै ॥
सो तन धनमें वृथागँवायो । भवदुखतेनहिंआपुबचायो ॥
जाहि पाय बुध ऐसी करै । जाते बहुरि न जनमै मरै ॥
सो नरतन मैं वृथा गँवायो । छोड्यो अर्थ अनर्थउपायो ॥
वय बल आयु सकलममगये । नखशिखवृद्धअंगसबभये ॥
अब मैंअर्थकौनविधिसाधौं । दुराराधहरिक्योंआराधौं ॥
भाई जे अनर्थ सब जानै । तेऊ क्यों आरंभानि ठानै ॥
छोडै अर्थ अनर्थ उपावै । क्यों सब आयुआपुदुखपावै ॥
पर ये कोई नहीं स्वतंत्र । सकल देखियत हैं परतंत्र ॥
तेजाकी माया करि मोहे । नटबाजीके सम सब सोहे ॥
भाईसो प्रभु बडो बलिष्ट । ब्रह्मा आदि सकलको इष्ट ॥
जेधन अरु जेधनकेदाता । जेकामदअरुकामविख्याता ॥
अरु बहु धर्म कर्म हैं जते । मातपिता सुखदायी कते ॥
कहो कहाँते हित आचरैं । मृत्यु ग्रसत जे नहिं परिहरैं ॥
कालस्वरूप शत्रु है जाको । कहो कहाको सुखहैताको ॥
पर जे दीनबंधु भगवान । करुणासागर परम निधान ॥
तिनहीं मोको करुणाकरी । जाते मम उर ऐसी धरी ॥
भवसागरते तारै जाको । देहि नाव वैरागहि ताको ॥
ताते मोहि दियो वैराग । मेरे प्रगटे पूरण भाग ॥
अब जोआयुहोयकछुमेरो । ता करि भजनकरौंहरिकेरो ॥

या तनके गुण सकलनिवारौं । मनतेसकलकामनाटारौं ।
सकल साधु अनुमोदनकरैं । तथाअस्तुयों कहि उच्चरैं ।
यद्यपि आयु थोरो है मेरो । तौहूं हरिको पद अतिनेरो ॥
नृप खट्वांग जवहिं हरि ध्यायो । एक मुहूरतमें प्रभुपायो ॥
ताते प्रभुसमकोई नाहीं । जनको प्रगट होत पलमाहीं ॥
मनवचक्रम अव ताको भजौं । दूजी सकल कामनातजौं ॥
ऐसो निश्चय मनमें धऱ्यो । भिक्षुकभयोसकलपरिहऱ्यो ॥
शीतलहृदयतृषासबत्यागी। निश्चलभयोविप्रवडभागी ॥
अहंकार ममता कछु नाहीं । एकाकीविचरै भूमाहीं ॥
इंद्रिय प्राण वचन मन गह्यो । अंतर बाहर संगहिं दह्यो ॥
आपुहिं काहूको न लखावै । भिक्षा हेत गृहनिमें जावै ॥
संस्कार नहिं तनको जाके । जीरण टूक वस्त्रतनताके ॥
भिक्षुक वृद्ध विप्रको जोवैं । तब वहु दुष्ट घातकी होवैं ॥
कोई ताको दंड छुडावै । कोई पात्र खोसि ले जावै ॥
कोई लेहि कमंडलु करते । कोई निकसै देहिं न घरते ॥
कोई धूलि भीखमैं डारैं । कोई मूढ क्रोधकरिमारैं ॥
कोई आसनको लै भागै । ऊरध करि कोई पगलागै ॥
कोई कंथाको परिहरैं । मारु मारु वाणी उच्चरैं ॥
कोई खोसि लेहिं जपमाला । कोई वस्त्र जाहिं लैवाला ॥
कोई आनि आनि करि देवैं । कोईखोसिखोसिपुनिलेवैं ॥
कोई भीख अन्न लै जाहीं । भोजन करने पावै नाहीं ॥
कोई तनमैं थूकैं मूतैं । कोई निंदा करैं वहुतैं ॥

कोई कानन लागि पुकारैं । कोई शीशधूलि जलडारैं ॥
कोई मौन छुडाय बुलावै । कोई बोलत मौन गहावै ॥
कोई ताहिं बाँधि करि राषै । कोई जाननपावै भाषै ॥
कोई करै बहुत अपमान । निंदै बहुविधि मूढ अयान ॥
यह है चोर जान नहिं पावै । दिन देखै निशिचोरीआवै ॥
याको क्षीण भयो है वित्त । ताते यहहै व्याकुल चित्त ॥
सकलकुटुम्ब याहि परिहऱ्यो । जीवनकाजभेषयहधऱ्यो ॥
देखो यह कैसो है मोटो । महाप्रबल अंतरको खोटो ॥
देखो हम पचहारे केते । पर याके उर भिदे न तेते ॥
धीरजवंत अडिग यह ऐसो । पवन प्रचंड मेरु गिरिजैसो ॥
याके जानन हम कछु कह्यो । बकज्योंध्यानमौनगहिरह्यो ॥
यों करि क्रोध बंदि लै डारैं । काठ माहिं दै ऊपरमारैं ॥
हासी सहित विनती करैं । हितसे विष बैनन उच्चरैं ॥
ये भौतिक दुख भाषे जैसे । दैव आतमिक पावै तैसे ॥
शीत उष्ण बरषादिक दैविक । जरारोगआदिकतदैहिक ॥
ऐसे बहुविधि पावै दुःख । कबहुँ न आवै तनको सुःख ॥
परसो कछू न मनमैं आनै । अपने करे कर्म सब जानै ॥
तब तिन भाषो गाथा एक । हिरदै धाऱ्योपरम विवेक ॥
भिक्षुक कहै वचन तब जेई । मैं तोसों भाषतहों तेई ॥

भिक्षुक उवाच ।

सुख दुखदायक लोगन एते । अरुनहिंदेहनहींस्वरजेते ॥

माग्रह नहीं कर्म नहिं काल । ये समस्तहैंमन केख्याल ॥
जगत चक्रमैं मनैं फिरावै । जीव महादुख मनते पावै ॥
मनैं करै विषयनिको भोग । ताते होय कर्म संयोग ॥
होवै सत रज तम विस्तार । ताते योनिविविध परकार ॥
ताते दुःख निरंतर लहै । देह योगते निशिदिन दहै ॥
ताते दुखदायक मन एक । संत कहैं यह परम विवेक ॥
आपु आत्मा सदा अनीह । परसो मन करिकरै समीह ॥
मनसो बँध्यौ अविद्या माहीं । ताते बंधन जानै नाहीं ॥
विष समान विषयनिको खावै । ताकेसंगजीव दुखपावै ॥
यह है जीव ब्रह्मको अंग । याको ससृंति मनके संग ॥
मनकरि रहित ब्रह्म सुखरासी । सदाएकरसपरमप्रकासी ॥
ताते बंधन मनही करै । संग आत्मा जन्मै मरै ॥
जबमनरहित जीवयह होई । तबशिवजीवभेदनहिंकोई ॥
ताते जिन अपनो मन गह्यो । ताहिकछूकरनोनहिंरह्यो ॥
अरु जो मनवशकीन्होंनाहीं । तौश्रमसकलवृथाहीजाहीं ॥
स्वर्णादिक देवै बहुदाना । एकादशीआदि व्रत नाना ॥
अपनेअपने धर्मनिकरै । शमदम यम नियमनिविस्तरै ॥
विद्या वेद पढै उच्चारै । औरौ सकल धर्म विस्तारै ॥
पर जो वशनाहीं मन एक । तौ मिथ्याआचरणअनेक ॥
मन वशकाज कहे सब तेते । विधिआचरणवेदमें जेते ॥
मन निग्रह सो उत्तमज्ञान । मननिग्रह विन सबअज्ञान ॥

तातें जो मन निग्रह करै । सो विधिकाहेको विस्तरै ॥
ताकोविधिनहुतेकछुनाहीं । सब विधिहैमननिग्रहमाहीं॥
अरु जो वशनाहीं मन एक । तौ विधिकीन्हेंवृथाअनेक॥
सबहिनकोफलमनवशकरनो।मनवशकाजसकलआचरनो
मनको वश्य करै जो कोई । इंद्रियगणआपुहिं वशहोई ॥
मनवशविनइंद्रियवशनाहीं।करिकरिजतनबहुतमरिजाहीं॥
मन वशभये सकल वश देवा । तीनोंभवनकरैंनित सेवा॥
सकल बलिनते मन बलवंत । मारिकरैसबहिनकोअंत ॥
मनको काईजीतिन सकै। बहुत उपायनिकरिकरिथकै॥
ऐसे मनको जीतै कोई ।सबहिनमाहिं प्रबल है सोई ॥
सो दुर्जय रिपु वश नहिं करैं । बाहरयुद्धादिकविस्तरैं ॥
वैरी मित्रबहुतविधि ठानैं। अनहित अरुहिततिनतेजानैं ॥
तेअतिमूढ सुखी नहिं होवैं । मन जीतेविनयुगयुग रोवैं ॥
दुःखरूपजडमिथ्यातनको।आपमानिकरिबाध्योमनको ॥
तब बहुकिये देह संबंधी । तिनसों मूरख ममताबंधी ॥
यह मैं ये समस्त हैं मेरे । मित्र शत्रु ठानैं बहु तेरे ॥
तातें मूढमहादुख पावैं । उपजि उपजिपुनिमरिमरिजावैं॥
तातें दुखको मनहीकारण । आतमको भवजलमेंडारण ॥
अरु जो सुख दुख दाता येते । मोको दुःख देतेहैं जेते ॥
ते सब सुख दुख मोकोनाहीं । देह एक सबआपनमाहीं ॥
ते सुख दुःख देहही पावैं । आतमके कहुँ निकटनआवैं ॥

अरु यद्यपि तनके संयोग । करै जीवही सुखदुखभोग ॥
तौ हूं मैं दुखदेवो काको । रूप सकलमनदेखो जाको ॥
आपआपकोक्योंदुखदीजै।अपनोअहितआपक्योंकीजै ॥
या तनमें मैं हौं दुख पाऊं । अरु तिनहूंमैंक्योंउपजाऊं ॥
दंतनि भूलिजीभकाटीजे । तौ फिरिकहातिन्हैंदुखदीजै ॥
दंतनि अरु जीभहि दुख देई । सोतौसकलआपुकारिलेई॥
इंद्रिय अधिपति देवताजेते । जो दुखदानिहोहिं सबतेते ॥
तौहूंआपकोपक्योंकीजै । परउपाधि क्यौंशिरकारिलीजै ॥
करदीजे मुखमाहिंअसनसों । सोमुखकाटैकरहिदशनसों॥
तौ पावक अरु वासव जानैं । राग दोष भावै त्योंठानैं ॥
त्यों सबइंद्रिनके सब देवा । करै आपु मैं दोष रु सेवा ॥
तेते सब जानैं त्यों करैं । ज्ञानी अपने मन नहिं धरैं ॥
अरु जो सुख दुखदाता आप । दूजेको कछु नहिं पाप ॥
तौ यह सब आपनो स्वभाव । कौनेकोआनियेअभाव ॥
अरुआतममेंसुखदुखनाहीं । उपजेज्ञानसकलमिटिजाहीं॥
आपभूलिसुखदुखकारिलीन्हें।सबमिटिजाहिंआपुकेचीन्हें ।
ताते दोष कौनकोधरिये । जोअपनोमनवशनहिंकरिये ॥
अरुजोग्रहउसुखदुखकेदाता । लोकवेदकहियतविख्याता ॥
तौ आपुनुक्योंक्रोधहिकीजे । परकोदुःखआपक्योंलीजै॥
ग्रह आकाशमाहि हैं जेते । द्वादश राशि बसैं सब तेते ॥
राग द्वेष आपनमें करैं । तिनको सुख दुखनितहीं परैं ॥

जाजा राशि जन्मजे पावैं। तिनकीसंगतिसुखदुखआवैं ॥
ताते आतम सदा अजन्मा। बारबारदेहनिको जन्मा ॥
ताते सुखदुख तनही पावै। निकटआत्माके नहिं आवै ॥
अरु यद्यपि संगति दुखपरै। आप क्रोधतौकासों करै ॥
कर निहारते ग्रहई जानै। रागद्वेष भावै त्यों ठानैं ॥
अरु दुखदानिहोहिजो कर्म। तेतोसकल आपही भर्म ॥
यह जडदेहकर्मतामाहीं। आतमानिकटदेहही नाहीं ॥
आतमचेतनज्ञानस्वरूप। परे सकलतैं परम अनूप ॥
ताते क्रोध कौनसों करा। काको दोष हृदयमें धरौं ॥
अरु जो दुःखकालतेकहिये। तौआपनमैंकबहुँनलहिये ॥
तनही कालहुते दुख पावै। ते आतमकेनिकटनआवैं ॥
काल आतमाब्रह्मस्वरूप। देह विलक्षण सकलअनूप ॥
ताते कालहुते दुख नाहीं। कालभनायक देहनमाहीं ॥
ज्यौं अग्नि आग्निमें डारै। सोनह अग्निनअग्निहिजारै ॥
अरु ज्यौं पालाको कणलीजे। लैबहुत पालामें दीजै ॥
तौतापालाको भय नाहीं। यद्यपि रहै सदा तामाहीं ॥
यौंहीएकआतमाकाल। दुखसुखादि देहनके ख्याल ॥
आतमसबते सदा अतीत। इच्छारहित अनाद्यअभीत ॥
अरु आत्मा परे त परै। द्वंद्व जहांलौंते सब वरै ॥
कोई आतमको नाहिंजानैं। सुखदुखकौनकौनकोठानैं ॥
सुख अरु दुःख जहांला जेते। एक प्रकृतिहीकेसबतेते ॥

सो प्रकृतियेआपजडरूप । चेतन आतम ब्रह्म स्वरूप ॥
केवल मानालियेसंसार । सुखदुखतनमनसकलअसार ॥
मोहनिशाते जागें जेते । निर्भय भए ततक्षण तेते ॥
ताते अबमैभयनाहिंआनौं । आपुहिपरेसकलतेजानौं ॥
हरिचरणनकीसेवा करौं । ऐसी विधि भवसागर तरौं ॥
जेई जे आए हरिशरणा । तिनहीं तिन पाये हरिचरणा ॥
ताते मैं हरिचरणन भजौं । मन क्रमवचनऔरसबतजौं ॥
उद्धव यौं द्विज भयो विरक्त । तनहूंमैनरह्यौ अनुरक्त ॥
बहुत असाधुनबहुतडिगायो । परसोकछूनमनमैंलायो ॥
ये भाषे दश अष्ट श्लोक । कारि विचार मेट्याभयशोक ॥
ताते उद्धवसुखदुखदायक । आतमको कोयेते लायक ॥
सुखदुखदातानाहीं कोई । जोतौ कहू द्वैत कछु होई ॥
सुख दुख भ्रमतेजानैंसकल। आतमएकअजन्माअकल ॥
भ्रम छूटे दूजाको नाहीं । मेरोरूप मिलै मो माहीं ॥
जबसुखदुखमिथ्याकरिजानैं। मानामानहृदयनहिं आनैं॥
धीरजधीर मम चरणन भजै । देहादिककी आशा तजै॥
तब भवसागरको तरिआवै । मेरो निजानंदपदपावै ॥
ताते उद्धव मन वच कर्म । सकल द्वैतको जानौ भर्म ॥
सबतै मनको निग्रह करौ । निश्चलकारिममचरणनधरौ ॥
याहीको कहि यतुहै योग । जाकारि होवै मन संयोग ॥
अरु जे या गाथाको धारैं । सुनैं सुनावैं सदा विचारैं ॥

तिनके निकटद्वंद्वनाहिंआवै। अंतकालममचरणन पावै॥
ताते याको सदा विचारो। मेरो बल अंतर्गत धारो॥
दोहा—यह उद्धव तोसों कह्या, मनसंयम दृढज्ञान।
अबभाषतहौंसांख्यको, सुनतामिटैज्योंआन॥

इति श्रीभागवते महापुराणे एकादशस्कंधे श्रीभगवदुद्धव संवादे भाषायां भिक्षुकगीताकथनं नामत्रयो- विंशोऽध्यायः॥ २३॥

चतुर्विंशोऽध्यायः।

दोहा—सांख्ययोगकारिकैकह्यो, मनकोमोहसुदह्न।
चिंताते सब योनिमें, आतम आवागवन॥
भेदभावजिनके हृदय, श्रीधरभेद मिटाय।
कृष्ण कह्या उद्धव प्रती, चौबिसों अध्याय॥

श्रीभगवानुवाच।

उद्धव तोसों सांख्यहि कहौं। द्वैतभ्रमहिसमहीबिनदहौं॥
जाहि सुनतही छूटै द्वैत। दखै एक ब्रह्म अद्वैत॥
प्रथमहिं महापुरुष जे भये। ते यहसांख्यप्रगटकरिगये॥
मुक्ति सांख्य जानतहीं होई। सांख्य विनानाहिं छूटैकोई॥
सोई सांख्यकहौंमैंतोसों। निश्चल मनह्वै सुनियो मोसों॥
उद्धव प्रथम हुतौ मै एक। मो बिन कछू न हुते अनेक॥
तबमैं प्रकृति आपुते करी। जड चेतन द्वै विधिविस्तरी॥

तिन दूनोंते उपज्यो पुत्र। महातत्त्व जो कहियत सुत्र ॥
एकप्रकृतिके त्रयगुण कीन्हें। लक्षण भिन्नतिहूंको दीन्हें॥
सूत्रहुतेत्रयविधिअहंकार। भरभावनकोबडो विकार ॥
पंचभूत जे पृथिवी आदि। अरु पंचै सूक्ष्म शब्दादि ॥
तामस अहंकारते एते। राजसते इंद्रिय सब जेते ॥
सात्त्विकते मन अरुसबदेवा। जिनकोपाइभयेबहुभेवा ॥
तबसबहिनमेंप्रेरिमिलायो।तिनसबहिंनमिलिअंडउपायो॥
अंडसलिलमाहींथिरकरयो। तामेंमैंनिजअंशहिं धरयो ॥
आदिपुरुषसोमेरो रूप। त्रिगुण नियंता ज्ञानस्वरूप ॥
तासुनाभिते उपज्यो पद्म। जामें सकल भवनको सद्म ॥
पद्महुते तब ब्रह्मा भयो। वरलै मोसों जग निर्मयो ॥
राजसअधिपतिभयोविरंचि। तातेप्रगट्योसकलप्रपंचि ॥
लोकपाललोकनसोंकरे। तीनों लोक त्रिविधिविस्तरे ॥
स्वर्गलोकदेवनको दियो। अंतरिक्ष भूतनगृह कियो ॥
भूमिलोकमें मानव राषे। असुर अहिनको नीचे भाषे ॥
महरलोक जन तपास्त्रिलोक। चारोंमें सिद्धनके ओक ॥
जे निर्गुण कर्मनिको करैं। ते तीनों लोकनमें फिरैं ॥
तप अरु योग तथा संन्यास। इनते तिनचारोंमें वास ॥
भक्तिहुते जावै वैकुंठ। जो सबहिनकारि सदा अकुंठ ॥
परबलकाल रूपहै मेरो। सकलजगत भक्षणतहिकेरो ॥
सत्यलोकमें हूं जो जावै। काल तहाहूं जो ताकोखावै ॥

कबहूं जाहिं कष्ट करि ऊंचे । कबहूं काल ढहावै नीचे ॥
ऐसी विधि सब भ्रमत रहैं । जनमैं मरैं बहुत दुख सहैं ॥
उत्तम मध्यम नीचे जेते । छोटे बडे थूल कृश केते ॥
जे कछु जहां लगे आकार । ते सबप्रकृतिपुरुषविस्तार॥
प्रकृति पुरुष विन और न कोई । इंद्रियमनगोचरहै जोई॥
प्रथमहि निराकारमें एक । ताते ये आकार अनेक ॥
अरु पुनि मैंहीं रहि हौं अंत । ताते अबहूं मैं वरतत ॥
जाकी आदि अंत है जोइ । ताके मध्यहुमें पुनि सोई ॥
ज्यौं माटीते बहु घट भये । अंत फूटि माटी मिलिगये ॥
माटी आदि माटि ए अंत । तौ माटिय मध्यहुँ बरतत ॥
ज्यों कंचनकेबहु आभरणा । आदिअंत एकही सुवरणा॥
ता मध्यहूँ और कछु नाहीं । नामरूप मिथ्या है जाहीं ॥
त्यों जब देखै ताजि व्यवहार । तब मैं हौं हौं सब विस्तार
आदिऽरु अंत मध्यमे एक । मिथ्या नाम रु रूप अनेक॥
मायाते महतत अहकार । तिनते होय सकल विस्तार॥
बहुरो नाश सकलको होई । महदादिको रहै नाहिं कोई॥
प्रकृतिमूलअरुपुरुषअधार । अरुजोकालसकलकरतार ॥
मेरी शक्ति तीनियों जानौ । मोते द्वैत कबहुमति मानौ॥
या विधि चलो जाय विस्तार । नदी प्रवाहतुल्य संसार॥
परमातमकी इच्छा जौलौं । वर्त्तै सकल निरंतर तौलौं ॥
बहुरों प्रलय सकलको होई सूक्षम थूल रहै नाहिं कोई ॥

महाबलिष्ठ शक्ति मम काला।ताकोसकलजगतयहख्याल॥
काल विनाश सब ब्रह्मंड । कतहूँ कछू न राखै खंड ॥
अनावृष्टि होवे शत वर्ष । ताते देहनको आकर्ष ॥
छोटे बडे देह हैं जेते । लीन असनमें होवैं तेते ॥
असन भूमिमें होवे लीन । भूमि गंधमें होवै क्षीन ॥
गंधलीन होवै जल माहिं । जल सूक्षम रस माहिं समाहिं॥
रस तब तेज माहिं मिलि जाई । तेज रूपमें जाय समाई॥
रूप पवन माहीं मिलि रहै । पवन हित स्पर्श गुणगहै॥
स्पर्श लीन होई तब गगन । गगन शब्दमें होवै मगन ॥
शब्द मिलै तामस अहंकार । सोअरु इंद्रिय दशपरकार॥
तेसबमिलिराजसअहंकारहिं।मिलिकरिसकलहोहिंसंहारहिं
देवरुमन सात्त्विकअहंकार । मिलिकरिसकल होहिंसंहार
अहंकार महत्तत्वहिं मिलै । प्रकृति तबै महतत्वहि गिलै
प्रकृति काममें होवै लीन । काल पुरुषमिलि होईक्षीन॥
पुरुषमिलैपुरुषोत्तममाहीं । पुरुषोत्तमकहुँ जावै नाहीं ॥
भेदा भेद रहित तब एक । नित्यानंद द्वैत वितिरेक ॥
चेतन निर्मल ज्ञान स्वरूप । पूरण अक्षय परम अनूप ॥
ताते उद्धव मिथ्या द्वैत । आदि अंत मध्यहुँ अद्वैत ॥
जलबुदबुद समसब आकार।उत्तम मध्यम विविधप्रकार॥
ऐसे सदा विचारै जोई । ताकू कौन भाँति भ्रम होई ॥
रवि उद्योत रहै तम कैसे । नदी मध्य दावानल जस ॥

यह मैं भाष्यों सांख्य प्रकार।सकल द्वैत उतपाति संहार॥
याके ज्ञान न संशय रहै। अहंकार दृढ ग्रंथि हि दहै॥
छोडै रूप अरूप समावै। जाते बहुरिं न दुखको पावै॥
ताते याको सदा विचारौ। मोको जानि आपुको तारौ॥

दोहा–उद्धव यह तोसों कह्यो, सांख्यहि ज्ञानविचार।
अब गुण वृत्तिनको कहौं, भिन्न भिन्न परकार॥

इतिश्रीभागवते महापुराणे एकादशस्कंधे श्रीभगवदुद्धव संवादे
भाषायां सांख्यनिरूपणं नामचतुर्विंशोध्यायः॥ २४॥

पंचविंशोऽध्यायः।

दोहा–पंचबीस अध्यायमें, निर्गुण नासुविवेक।
चितमें वरतैं तीनगुण, गुणकी वृत्ति अनेक॥

श्रीभगवानुवाच।

उद्धव अब भाषौं गुणवृत्ति। जिनको जाने लहै निवृत्ति॥
जा गुणते जो लक्षण होई। भिन्न भिन्न भाषौंसो सोई॥
शमदम क्षमा विवेक स्वधर्म। लज्जामानिन करै बिकर्म॥
सत्य दया नाहिं भूलै सुद्धि। उत्तम मारग म थिर बुद्धि॥
यश अरु शोभा धीरजवंत। पर उपकार सदा बरतंत॥
बुद्धि अस्तिक नितनिहसंग। संतोषी अरुदानि अभंग॥
कोमल विनयदीनचतुराई। शीतल हृदयसकलसुखदाई॥

ऐसी भाँति बहुत संपत्ती । सात्विकगुणकी जानौ वृत्ति ॥
आतम इन सबहिंनतेन्यारा । चेतन करिवरतावनहारा ॥
भोगासक्ति हृदय बहुकाम।धनअभिलाषाजसअभिराम॥
तृष्णाहास गर्व बलवंत । रिपु मित्रादिक भेद अनंत ॥
करि कामना भजे बहुदेव । परमारथको लहै न भेव ॥
बहु आरम्भनमें उत्साह । सदा कठारसदा अतिचाह ॥
बहुत वृत्तिराजसकी ऐसी । ये तुमसों भाषी मैं जैसी ॥
हिंसा क्रोध लोभअधिकाई । जहँतहँ दीन रु दंभढुठाई॥
श्रम अरुकलहशोकअरुमोहा।निद्राआलसभयपरद्रोहा ॥
निशिदिन चिंता उद्यम हीन । हिरदैआशासाहससुछीन ॥
ऐसी बहुतामसकी वृत्ति । जिनते कबहुँ न लहै निवृत्ति॥
उपजै ममता अरु अहँकार । ताते करै विविधव्यवहार ॥
ते सब मिलितगुणनकी वृत्ति।तिनतेबाढैबहुतप्रवृत्ति ॥
धर्म रु अर्थ काम अनुशक्ति । श्रद्धा लोभ तथाआसक्ति॥
धर्म प्रवृत्त परायण जेते । बहुत भाँति विस्तारै तेते ॥
वर्तै अपने अपने धर्म । प्रिय गृह आग्रह सुखगृह मर्म ॥
ये सबमिलितगुणनकी वृत्ति । जिनतेबहुविधिहोयप्रवृत्ति॥
शमदम आदि युक्त नर जोई।सात्विक लक्षणकहियेसोई॥
राजस कामादिक अधिकार।तामसजहँ क्रोधादिविकार।
जब स्वधर्म सो मोको भजै । दूजी सकलकामनातजै ॥
त्रियापुरुषभावैसो होई । सात्विक प्रकृति कही जै सोई ॥

जब कामना हृदय धारि लेवै । अपने कर्मन मोको सेवै ॥
यह स्वभावराजसकोकाहिये । मुक्तिहेतकबहूँनाहिगहिये ॥
जबहिं सो हृदयमें आनै । निज कर्मन मम सेवा ठानै ॥
सो वहतामस प्रकृति कहावै । ताते ममसुखकबहुँनपावै ॥
सत रज तमतीनों गुणजे हैं । जीवहिको बंधनसबतेहैं ॥
ते गुण मेरी आज्ञा करैं । ताते मोहिं भजै ते तरैं ॥
चित्तहुते उपजै ये सकल । इनको तजें आत्मा अकल ॥
इनको छोडि रहै मोमाहीं । बहुरो उपजै विनशै नाहीं ॥
करिसाधनरजतमपरिहरै । सात्विक गुणकीबुद्धिहिं करै ॥
सात्विकसूरजज्योंपरकास । अतिशीतलज्योंचंदबिगास॥
सबकल्याणमूलसुखकारी । निश्चलकरणसकलदुखहारी॥
ताते धर्म ज्ञान सुख लहै । चिंता शोक मोह भय दहै ॥
जब सात्विक तामस नाहिं रहै । राजस आयं बसेरागहै ॥
राजस्वरूप संग बल भेद । ताते मान कर्म भय खेद ॥
जब सत अरु रज छूटैं दोय । केवल एक तमोगुणहोय ॥
तमाविवेक नाशक आवरण । उद्यम हरता जडताकरण ॥
तातेशोकमोहकोबासा । निद्राआलसनिशिदिनआसा ॥
जब छूटैं इंद्रिनकी वृत्ति । हृदय नहीं ईहा उतपत्ति ॥
चित्त प्रसन्न सकल निहसंग । सों सात्विकसमगृहहैअंग ॥
जब तनमनइंद्रियमनबुद्धि । थिरनाहिंहोहिंलहैंनाहिंशुद्धि ॥
ठानैं विविध कर्म विस्तार । सो जानो राजस अधिकार॥

जबविकार बहु विधि मन गहै । आशावद्ध निरंतर रहै ॥
शोक विषाद चेतना हीन । सो तामस उद्यमबलछीन ॥
जब उपजै सात्विकको भाव । तब सब होवै देवस्वभाव॥
राजसते असुरनकी वृत्ति । भूतगणनकी तमउतपत्ति ॥
सात्विकते जागरणो होई । राजस पावै सुपना सोई ॥
तामसहुते सुषुप्तिहि लहै । ब्रह्मतुरीय निरंतर रहै ॥
सात्विकऊरधलोकनिजावै । राजसनरआदिकतनपावै ॥
तामस नीचे थावर आदि । याविधि भरमैंजीवअनादि ॥
सात्विक वर्द्धमान जो होई । तामैं मरण लहै जो कोई ॥
सो देवनके लोकहि जावै । राजसमें मरि नर तन पावै ॥
तामसमें मरि नरकन लहै । तीनों गुण तजिमोमैं रहै ॥
मेरे हेत कर्म जो करै । तामें दूजो फल नहिं धरै ॥
सो वह सात्विक कर्म कहावै । ताते जीवमहासुखपावै ॥
फलनिमित्त मम कर्म न ठानै । ताकोराजसकर्मबखानै ॥
हिंसाहेत करै मम कर्म । सो तामस है वडो अधर्म ॥
भेदरहित सो सात्विक ज्ञान । देह भेद सो राजसज्ञान ॥
वालक मूक तुल्य जो होई । तामस ज्ञान कहावै सोई ॥
आतमदेह रहित जो एक । सो है मेरो ज्ञान विवेक ॥
है विरक्त वशये एकंत । सात्विक वास कहै सो संत ॥
गृहमें कहिये राजस वास । तामस जूप सुरा आवास ॥
थावर चलमम सूरति जहां । निर्गुण वास कहीजै तहां ॥

सात्विक कर्ता जो नहिं संगी । सोराजसफलकर्मप्रसंगी ॥
विधिकरिरहिततामसीकर्ता । आशालागिकर्मविस्तर्ता ॥
आपुहि मेटिरहैममशरणा । ताकोसबनिर्गुणआचरणा ॥
सो जन निर्गुण कर्ता कहिये । ताके संगपरमपदलहिये ॥
जो निष्कर्म आतमा जानै । सकलतजनकीश्रद्धा ठानै ॥
सकलत्यागिनिश्चल जो होई । सात्विकश्रद्धाकहियेसोई ॥
राजस श्रद्धा ठानै कर्म । तामस श्रद्धा करै विकर्म ॥
निर्गुण श्रद्धा मेरी भक्ति । जाते मिटै सकल आसक्ति ॥
पथ्य पवित्र विना श्रम आवै । जासैं अपनोधर्मन जावै ॥
जाते उपजै नहीं विकार । सो कहिये सात्विक आहार ॥
खाटा मीठा तीखा खारा । दुखदायक राजसआहारा ॥
जो अशुद्ध हिंसाते आवै । सो तामस आहारकहावै ॥
मम जन अरु मेरो उच्छिष्ट । सोनिर्गुण भोजन अति इष्ट ॥
इंद्रिय सुख तृष्णादिकदहै । तजि आरंभानि थिर ह्वै रहै ॥
आतमते उपजै सुख जोई । सात्विक सुखकहियतहैसोई ॥
इंद्रिय सुखराजसनाहिंगहिये । निद्राआलसतामसकहिये ॥
मेरे प्रेम भक्ति सुख जोई । निर्गुण सुख कहियतहै सोई ॥
द्रव्यदेश फल काल अरुज्ञान । कर्त्ताकर्म अवस्थादान ॥
श्रद्धा निष्ठा अरु आकार । निर्गुण निर्मितसबविस्तार ॥
जो कछु कहुंसुनौअरु देखो । मनअरुबुद्धिजहांलगुलेखो ॥
सोसबप्रकृतिपुरुषविस्तार । त्रयगुणनिर्मितसकलसंसार ॥
इनते जीव लहै संसार । त्रिगुण कर्म मय वारंवार ॥

जो इन तीनों गुणन निवारै । चित्त आपनो मोमें धारै ॥
सो मेरो निर्गुण पद पावै । बहुरो या भवमें नहिं आवै ॥
ताते यह ऐसी नरदेह । जाकरि मिटै सकल संदेह ॥
होवै प्रगट ज्ञान विज्ञान । पावै मोहिं मिटै सब आन ॥
ताते पंडित सकल निवारैं । मोको सेइ आपुको तारैं ॥
यों बिन सकल अपंडित जानौ । जेते आतम घातीमानौ ॥
सकलहुते होवै निहसंग । सावधान पल परै न भंग ॥
इंद्रिय प्राण देह मन जीतै । मम चर्चा दिनरैनि व्यतीतै ॥
सकल सात्विकी संगति करै । राजसअरु तामसपरिहरै ॥
देहादिकते निस्पृह होई । आगे इच्छा करै न कोई ॥
मोमें धारै निश्चल बुद्धि । तब पावै अंतर्गति शुद्धि ॥
या विधि सात्विकहूं छिटकावै । तातेंलिंग शरीरमिटावै ॥
लिंग शरीर मिटै भव तजै । निर्मल रूप आपनो भजै ॥
ऐसो है मोहींको जानै । बाहर भीतर द्वैत न मानै ॥
मोमें मिल मोहींमें रहै । बहुरो काल अग्नि नहिं दहै ॥
रहै निरंतर मेरे संग । ताते कबहू न होवै भंग ॥

दोहा–उद्धवये तोसों कही, तीनोंगुणकी वृत्ति ।
अबऔरोज्ञानाहिकहौं, जातेहोयनिवृत्ति ॥

इति श्रीभागवते महापुराणे एकादशस्कंधे श्रीभगवदुद्धव
संवादे भाषायां गुणवृत्तिनिरूपणं नाम
पंचविंशोऽध्यायः ॥ २५ ॥

षड्विंशोऽध्यायः ।

दोहा—योगभ्रंशयोगिनको, होतकुसंगति पाय ।
कहै सुसंगति कारणे, छब्बीसै अध्याय ।
जाय योषिता संगते, योगधारणाध्यान ।
श्रीधरसदाविचारिये, ऐलगीतआख्यान ।

श्रीभगवानुवाच ।

उद्धव यह नर तन है ऐसो । सकल सृष्टिमें नाहीं जैसो ॥
या तन करि ममज्ञानहिपावै । जाते भवतजिमोमेंआवै ॥
ताते ऐसे तनको पाई । मोहिं मिलनको करै उपाई ॥
अंतरमाहीं मोहिं विचारै । औरै सकल वासना टारै ॥
मम भक्तनिके लक्षण जानै । त्यों त्यों आपआपमेंठानै ॥
अनायास तब मोको पावै । कालव्याल बहुरो नहिंखावै ॥
माया गुण तब मिथ्या जानै । मेरो ज्ञान पाइकरिमानै ॥
यों ह्वै रहै देहहूं माहीं । तौहूँ फेरि लिपै कहुँ नाहीं ॥
परयद्यपि होवै ऐ सोऊ । करै असाधु संग नहिं सोऊ ॥
शिश्न रु उदर परायण जेते । मनक्रमवचनत्यागिये तेते ॥
करै असाधु एकको संग । तोहूं ज्ञान ध्यानको भंग ॥
असत संग नर जबहीं करै । ताके संग नरकमें परै ॥
जैसे अंध अंधके संग । कूप परै होवै सुख भंग ॥
याकी गाथा भाषों एक । जाते उपजै परम विवेक ॥
जब उरवशी विरहतन दह्यो । शोकमोह सागरमेंबह्यो ॥

तव पुरूरवा भाषी जोई । तोसों गाथा भाषों सोई ॥
राजापुरूरवा चक्रवर्ती । ताकी आन जहाँलौं धर्ती ॥
आपुहिंते उतरी उरवसी । सो मिलिके नृपके उरवसी ॥
बहुरो शाप मुक्ति जब भई । तब तजिनृपहिंउरवशीगई ॥
नृपति विलाप करै बहु रोवै।परसो नृपकी ओर न जोवै॥
राजा नग्नदेह सुधि नाहीं । वाणी विकल दनितामाहीं ॥
लज्जा रहित मत्त मद जैसे । चल्यो उरवशी पीछे तैसे॥
अहो प्रिया तुम ठाढी होवो । मेरी ओर कृपाकरिजोवौ ॥
मोको मारे काहे जावौ । कृपाकरौ मेरे गृह आवौ ॥
मिलि उरवशीसंगसुखपायो । सोसोसकलदुःखह्वैआयो ॥
तृप्त न भयो भोगवत भोग । पाइ उरवशीको संयोग ॥
ता उरवशीज्ञानआकर्ष्यों । ताते भलोमानिकरिहर्ष्यों ॥
तनमयहृदयकछूनहिंआनैं।निशिदिनमासवरषनहिंजानैं॥
तव ता नृपके पूरण भाग । ताते प्रगट भये वैराग ॥
तव नृप वचन बखाने जेई । तोसो मैं भाषत हौ तेई ॥

पुरूरवा उवाच ।

अहो एक देखौ मम मोह । आपुहिंकियो आपनोद्रोह ॥
गहियो कंठ देवकी माया । जिन मेरोसबआयु गँवाया ॥
इन मोको डहक्यो बहु तेरो । सबहु आयुलियोहारिमेरो ॥
मैं दिन रातिन जानेजात । अमृत कारि मान्योविषखात ॥
वर्षसमूह गये मम बीति । सकल विकार न लीन्हों जीति ॥

देखो मैं कैसो डहकाया । स्त्रीके कर आपु बिकायो ॥
जा मैं राजराजाचक्रवर्ती । जीतिसमस्तकरीबशधर्त्ती ॥
सकल भूपमम चरणनसेवैं । तनमनधन सबमोको देवैं ॥
सुमैं बिकान्यो स्त्री हाथ । ज्यों बानर बाजीगर साथ ॥
ज्योंज्यों स्त्री मोहिं नचायो । त्योंत्यों मैं मूरखसुखपायो ॥
तापरराजसहिततजिमोहिं । तृणसमानकरिचलीबिछोहिं ॥
नग्न भयो मैं पछि धायो । ज्यों उनमत्त आपबिसरायो ॥
कौनभाँतिताकेबलहोई । तेजप्रताप रहै नाहिं कोई ॥
जो होवै इस्त्री आधीन । जैसे खरी संग खरदीन ॥
विद्यामौन तपस्या त्याग । बनमें बसिवो दृढ वैराग ॥
येसमस्तकीन्हेंकछुनाहीं । जौंलाग त्रियाबसैमनमाहीं ॥
यहउरबशीजबाहिंते पाई । कामआग्नि बहुभाँति गँवाई ॥
परयहअग्निनशीतलभई । अधिकअधिकबाधततितगई ॥
जैसे अग्निप्रज्वलित होई । तामैं ईंधन डारै कोई ॥
सोत्यौंअधिकअधिकपरजरै । पलकोनाहिंशीतलताकरै ॥
मैं आपनो न जान्यौं अर्थ । आपआपकोकियोअनर्थ ॥
मूरखआपुहिंपंडितमानौं । परोमृत्युमुखअमृत जानौं ॥
जोमैं ईश सकलभू केरो । सो ह्व रह्यो त्रियाको चेरो ॥
मैं मूरखताको धिक्कार । जिननकियोकछु ज्ञानविचार ॥
स्त्रीकरिजाकोचितहरयो । ज्ञानविचारसकलपरिहरयो ॥
ताको हरि बिन कौन छुडावै । दूजो आपुनछूटनपावै ॥

तातें मैं हरिचरणन गहौं । सकल त्यागि हरिकोह्वैरहौं ॥
यद्यपिदेवीमोहिंबुझायो । त्रियाप्रीतिदुखकाहिसमझायो ॥
तौहूमैंमूरखनाहिंजान्यो । काम अंध सुखही करिमान्यो ॥
तातेंताको नाहिं अपराध । यह मेरो मन बडो असाध ॥
जौमैंस्वर्गनरकमेंदेख्यो । दुखहीमाहीं सुखकरि लेख्यो ॥
गुणमैं शाप जानि दुख पावै । अग्निपतंग परै मर जावै ॥
तौ तिनको अपराधनकोई । आपु दुःखकरिलैवै सोई ॥
तातें इनको इहै स्वभाव । मैं मनमें क्यों धरो अभाव ॥
जो मैं आपु अग्निमें परौं । तौ उरदोष कौनको धरौं ॥
देहमलीन महा दुर्गंध । सो करिजानी विमल सुगंध ॥
सो आपनी अविद्या कर्‍यौ । निजानंद आतमबीसर्‍यौ ॥
यहतनतौबहुतनकोकाहिये । तामें ममतागहिक्यों रहिये ॥
मातपिता अपनो करि कहै । स्त्री एक मेक मिलिरहैं ॥
कै यह तन काहिये राजाको । कै पावक भक्षणहै जाको ॥
कै भूको कै श्वान शृगाल । कै आपनों मित्रकै काल ॥
यहतनयौंकाहियेकिनकिनको ।परगटदीसतहोतिनातिनको ।
महा अशुद्ध देह यह ऐसी । परगट नरकखानिहै जैसी ॥
तहँको मन बांधै मति मंद । इस्त्रीनामकालको फंद ॥
त्वचा रुधिर आमिष अरु अंत । मज्जामेदरोमनखदंत ॥
विष्टा मूतरेत कृमि हाड । स्त्री प्रगट नरककी खाड ॥
तातें स्त्री अरु तासंगी । तिनके नाहिं हूजे परसंगी ॥

तिनके दरश क्षुभित मन होई । देखेबिना बिकारन कोई॥
ताते तिनको दर्शन करिये । आपहिं आपनरकनहिंडारिये
जो यह इंद्रिय अर्थनिवारै । मन वच क्रम दुहुँसंगति टारै॥
तव यह मन सहजहिं थिर होई । कबहुँ विकार न परसै कोई
ताते जे इस्त्रिनको भजैं । अरु स्त्री तिनको बुध तजैं ॥
दरश पर्श अरु श्रवण निवास । सब भावनते मानै त्रास ॥
इंद्रिनको विश्वास न करै । ज्ञानवंत नितही परिहरै ॥
महापुरुष जे जीवनमुक्त । तिनहूंको सब संग अयुक्त ॥
तौ जे जगते छूटै चहैं । ते हमसे क्यों संगहि गहैं ॥
ताते मैं सब संग निवारौं।श्रीपति चरण कमल उर धारौं॥
दीनबंधु करुणा मय स्वामी । कृपा करी यह अंतर्यामी॥

श्रीभगवानुवाच ।

या विधि वचन कहे नरराज । तजि उरवशी लोक सबसाज
ज्ञान लह्यो सब संशयटाऱ्यो । मन निश्चलकरिमोमेंधाऱ्यो
ताते उद्धव यह पुरुषारथ । नर तन पायो तबहींस्वारथ॥
जब समस्तकी संगति तजै । सतसंगति गहिमोकोभजै॥
संत बतावै हित उपदेश । जिनते संशय रहै न लेश ॥
मनकी सब आसक्ति निवारै । संत महा भवसागर तारैं॥
निस्पृह निरारंभ समदरसैं । संग्रह रहित द्वंद्व नहिं परसैं ॥
अहंकार ममता नहिं आनैं । मोहिं भजे दूजो नहिं जानैं॥
ते यद्यपि उपदेश न देवैं । तौहू मोहिं चहै ते सेवैं ॥

तहां कथा मेरी तित होवै। तेई अघ संदेहनि खोवै॥
मेरी कथा श्रवणजे करैं। ते सब पापनतें निस्तरैं॥
सुनैं कहैं अंतरगत ध्यावैं। अति आदरसों प्रीति बँधावैं॥
ते सहजही लहैं मम भक्ति। सहजहिं होवैं सकल विरक्ति॥
मेरी भक्ति लहै नर जबहीं। पूरण काम भयो सो तबहीं॥
ताको कछू न करनो रहै। ज्ञानानंद रूप मम लहै॥
शीत निशाकहुँ होवै कोई। तहां अग्नि परजारै सोई॥
तम तुषार भय सहजहिं जावैं। त्यों साधूसबदोषमिटावैं॥
यह अपार सागर संसार। जामें बूडे जीव अपार॥
तिनको नाव एकही एह। संतरूप परगट मम देह॥
ज्यों प्राणन राखै आहार। मेरी शरण दुःख संहार॥
ज्यों परलोक धर्म धन जानौ। त्यों भवतारकसाधूमानौ॥
जिनके हृदयप्रगट मम चरण। तिनबिनयाभवऔरनशरण
ज्यों उर नयन उघारैं नेक। त्यों बाहर है सूरज एक॥
संतै मात पिता हितकारी। संतै देव बंधु दुखहारी॥
ताते संत संगनित करनो। और उपाय हृदय नहिंधरनो॥
तिनते अनायास भवतरैं। अनायास मोको अनुसरै॥
तब पुरूरवा ऐसो कर्‌यो। सो उरवशी लोक परिहर्‌यो॥
सब तजि भयो आत्मा राम। विचर्‌यो भूमैं है निष्काम॥
ताते असत संग परि हरिये। साधू संग निरंतर करिये॥
साधूजन सुखही भवतारैं। सुखही मम चरण न चितधारैं॥

दोहा–ऐसो साधु असाधुको, सुनि हरिजीसों संग ।
तब उद्धव जन पूछियों, कर्मयोग परसंग ॥

इति श्रीभागवते महापुराणे एकादशस्कंधे श्रीभगवदुद्धव संवादे भाषायां ऐलगीतोपाख्यानेषड्विंशोऽध्यायः ॥ २६ ॥

सप्तविंशोऽध्यायः ।

दोहा–श्रीधरपूजन विधि सबै, मूरतिअष्टप्रकार ।
सत्ताइस अध्यायमें, चित्तशुद्ध निजसार ॥
रागादिक जाचित्त विषै, सो क्योंहोयअसंग ।
तिनहित पूछत कृष्णसों, उद्धव पाय प्रसंग ॥

उद्धव उवाच ।

हेप्रभुकृपाकरौअबऐसी । भाषो क्रियायोग विधि जैसी ॥
जाके करत होय सतसंग । पावै ज्ञान होय निःसंग ॥
यह जो तुव प्रति मांकी पूजा । ताते श्रेयकहैनहिं दूजा ॥
याकोकहैव्यासअरुनारद । गुरुबृहस्पतिपरमविशारद ॥
औरहुसकलमुनीश्वरजेते । परमश्रेय यह भाषै तेते ॥
कलपआदिविधिसोंतुमकह्यो । सोहठकारिविधिहृदय गह्यो
तिनभृग्वादिकसुतनसुनायो । सो भवहुतेभवानीपायो ॥
जेते सकल वर्ण आश्रमं । इस्त्री अंत्यज सबको धर्म ॥
या बिन और धर्महै जेते । याही काज कहे हैं तेते ॥
या बिन और धर्मजे करैं । तौ तिनते फिरि बंधन परैं ॥

यहही सब धर्मनको धर्म । याही हुतें कटैं सब कर्म ॥
तातें पूजा विधि विस्तारो । कृपा करोजीवन निस्तारो॥
तुम दयालुसबके हितकारी । सुमिरतसकलदुःखअघहारी
सुनिये परउपकारी बैन । बोले हरषि कमलदल नैन ॥

श्रीभगवानुवाच ।

उद्धव याको अंत न पार । ममपूजा विधि बहुविस्तार ॥
परतोको संक्षेप सुनाऊं । तामें तत्व सकलको लाऊं ॥
पूजा विधि है तीनि प्रकार । वैदिक तांत्रिक मिश्रितसार
वेद मंत्र अरु वैदिक अंग । सो कहिये वैदिक परसंग ॥
योंही तांत्रिक मिश्रित जानैं । भावै तासों पूजा ठानैं ॥
विप्र अरु क्षत्री वैश्य त्रिवर्ण । इनको जानिविधिपूजाकर्ण
सोसमस्त विधि तुमहिसुनाऊं। जीवनको कल्याणउपाऊं॥
प्रतिमा भूमि अग्नि जलबाइ । द्विज अरुआपुअर्कअरुगाइ
अरु सबहिनमें मोको जानैं । यथायोग्य सब पूजा ठानैं॥
गुरु अरु मोमें भेद न राखै । मानुष बुद्धि दूरि करिनाखै॥
शुद्ध होइ जल माटी संग । असनानादि सकलही अंग ॥
जेजे प्रगट वेद अरु तंत्र । तेते सकल पढै मम मंत्र ॥
संध्योपासनादि जे कर्म । प्रगट तिहूं वर्णनके धर्म ॥
तिन तिनसों नित मोको भजै।होइ निषेधसकल सो तजै ॥
जाही करि मम सुमिरण होई।काटै सब कर्म न को सोई॥
सोई सो कहिये मम धर्म । मम सुमिरण बिन बंधन कर्म॥

अब भाषौं प्रतिमाके भेदं । सेवत जिनहिं मिटैं भव खेद ॥
एक शिलाकी कहिये मूरति। एककाठकीत्योंममसूरति॥
एकलेपि चंदनकी करिये । एकचित्रपुस्तकलिखिधरिये ॥
प्रतिमा एक सुवर्ण सँवारी । एकमनो मय मनमें धारी ॥
एकमृत्तिकाकोलैकीन्हीं । एकरत्नमणिकीकरिलीन्हीं ॥
ये ममप्रतिमा अष्टप्रकार। जानैमममंदिर निजसार ॥
तिनमें होवैं निश्चल जेती । शयनादिक न करावैतेती ॥
शालिगराम आदि हैं जेती । मेरोतन जानैं नितलेती ॥
और सबनको पूजाकाल । किंवा जानै नित गोपाल ॥
लेपीलिखीमार्जन करै । औरन अस्नानहि विस्तरै ॥
उत्तम सामग्रीसे सेवैं । तन मन धन सबमोंको देवैं ॥
जो निःकाम निःकपटी होई । करै भाव सबमोकोसोई॥
उत्तमवस्तुनमनकारिलावै । प्रेम सहित सब मोहिं चढावै ॥
उत्तमविधि अस्नान करावै । वस्त्राभरणादिकपहिरावै ॥
अग्निघृतादिकहोमहिंकरै । धरणीरवि अस्तुतिविस्तरै ॥
जलको पूजे जलफल फूल । जानै मोहिं सकलमें मूल ॥
भक्तिसहित जो अर्पै ताय । ताहूंते मोको सुखहोय ॥
तौ जोधूप दीप नैवेद । मोको बहुविधि करै निवद ॥
ताकी महिमा कहां बखानौं । ज्योंहैत्योंमैंही पैजानौं ॥
ताते मैं नित प्रीति अधनि । तोषनमानौंप्रीतिविहनि ॥
अब भाषौं पूजाविधितोसों । सावधान ह्वै सुनियोमोसों॥

होइ पवित्र करै स्नान । मनमें राखै मेरो ध्यान ॥
पूजा साज प्रथम सब लेई । फिरि उठिवेको रहनदेई ॥
बैठे उत्तरके पूरव मुख । निश्चलप्रतिमा केवलसन्मुख ॥
दर्भनसों निज आसन करै । अंगनके न्यासहि विस्तरै ॥
न्यास करै मम मूरति अंग । तब ठानै अस्नान प्रसंग ॥
उत्तम कलश तोयसों भरै । दूजे जलके पात्रहिं धरै ॥
जलमें बहुत सुगंध मिलावै । तासों मोहिं स्नानकरावै ॥
अर्घपाद्य अरु विष्टरकैरै । तीनि पात्र ताते जल भरै ॥
गंध पुष्प तिनमें बहुधरै । गायत्री अभिमंत्रण करै ॥
तब आपनों करै तन शुद्ध । केहूं कारन होय अशुद्ध ॥
हृदय माहिं मम रूपहि ध्यावै । ॐकार जहांते आवै ॥
जैसे गृहमें दीप प्रकास । यों ध्यावै तन माहिं उजास ॥
पूजि प्रेमसों तन्मय होई । पुनि मूरतिमें थापै सोई ॥
साङ्गो पांग करै तन पूजा । कोई भावन उपजै दूजा ॥
देवै अर्घपाद आचमन । रचै अष्टदल पंकज भवन ॥
तापर अस्थापैधर्मादि।शकल शक्तिरविशशिअग्न्यादि ॥
शंखरु चक्रगदाअसि अस्त्र । धनुषरु वाणमुशलहलशस्त्र ॥
ये आठहू आठदिशि आनै । वनमाला लक्षा उरजानै ॥
नंद सुनंद महाबलचंड । कुमुदेक्षण बल कुमुदप्रचंड ॥
अष्टदिशा पारषद समग्र । ठाढो गरुड जोरिकर अग्र ॥
विष्वक्सेन व्यासगुरु देव । गणपति दुर्गा अरु सबदेव ॥

करजोरे हरि सन्मुख ठाढे। हर्षित वदन प्रेम अति बाढे॥
सबहिनको पूजे अर्घादि। विनय नम्रता वंदन आदि॥
चंदन अरु कर्पूर उसीर। कुंकुम अगरु सुगंधित नीर॥
प्रथमहि कछुमधुपर्कचढावे। निर्मलजलआचमनकरावे॥
पुनि सुगंध जल देइ स्नान। मंत्रवदन मन क्रम नहिं आन
पुंडरीक लोचन भव भावन। आदिपुरुषसबकेउपजावन॥
जय जय ब्रह्म सकल आधार। नमो नमस्ते वारन पार॥
ऐसे तंत्र मंत्र उच्चारे। सहस्रशीर्षा श्रुति विस्तारे॥
वस्त्र जनेऊ अरुआभरण। अंग अंग तिलकादिककारण॥
उत्तम माला बहुत सुगंध। प्रेम सहित मोसों मनबंध॥
बालभोगआचमनकरावे। कुसुमगंध अरु धूप बनावे॥
बहुत भाँति आरती उतारे। नाना विधि नैवेद्य सँवारे॥
खीर खाँडघृतदधिअरुलपसी। लाडूपुवासुहारी सुरसी॥
व्यंजन करै और बहुतेरे। विभव लगावे बहु हित मेरे॥
नित दाँतून उबटनो तेल। अन्हवावे पंचामृत मेल॥
अलंकार दर्शन आदर्श। गीत नृत्य वाद्यंत्र सुपर्श॥
बहुत भाँति नैवेद्य सँवारे। नित नाहीं तौ पर्व न टारे॥
बहुरि करै पावकमें पूजा। मोबिन ताहि न जाने दूजा॥
अग्निकुंडमें अग्निहिधरे। समिधि घृतादिक होमहिंकरे॥
होम करै पढि पढिममंत्र। जिनको कहै वेद अरु तंत्र॥
करिहोमहि आचमन करावे। ताको मेरे रूपहिं ध्यावे॥

तप्त सुवर्ण तुल्यछबिअंग । चारु चतुर्भुज आयुध संग ॥
पीतवसनकुंडलमणिमाला।शीशमुकुटकटिसूत्रविशाला॥
भृगुलत्ता अरुलक्ष्मीआदि । बहुविधिध्यावैरूपअनादि ॥
पुनि नंदादि पारषद जेते । बलिविधानसों पूजै तेते ॥
जपै मूल मंत्रहि बहुवार । जा विधि बढै प्रेम अधिकार॥
पछि ता परसादहिं लेवै । लेकर सब भक्तनको देवै ॥
आज्ञा पायआपु तब पावै । प्रीति सहित जेतोजियभावै॥
पुनि अर्पै सुगंध तांबूल । उत्तम माला उत्तम फूल ॥
मेरे गुण ऊँचे स्वरगावैं । नामानि भाषै प्रेम बढावै ॥
मेरे गुण अरु कर्म सराहै । पूरणप्रेमसिंधु अवगाहै ॥
कथा नित्यमम सुनै सुनावै । मो बिनकहूंनपलठहरावै ॥
चरणपलोटै शयन कराय । मुखते नाम भूलिनाहिंजाय ॥
प्राकृत अरु संस्कृत अरु वेद । जे ईजे अस्तुतिके भेद ॥
तिन तिनसों मम अस्तुति करै । बार बार चरणनमें परै॥
पीछे धारि जोरिकर दोइ । करैं दीन ह्वै बिनती सोइ ॥
हे प्रभु भवसागरते तारौ । काल मृत्यु भय शोक निवारौ॥
तुम बिनु मेरे और न कोई । पाऊ चरणन कीजे सोई ॥
हिरदै ज्योति ज्योतिमें धारै । मूरतिको शय्याविस्तारै ॥
यों ओंकार जहाँ लौ देखै । ते समस्तमम मूरतिलेखै ॥
करै यथाविधि सबमें पूजा । मोको छोडि नजानै दूजा ॥
या विधिक्रियायोग मन लावै । सो नरभुक्तिमुक्तिफलपावै॥

मोको उत्तम गृह सँवरावै । तामें मम प्रतिमा पधरावै ॥
मोको करै बागफुलवाई । जन्म महोत्सवकी अधिकाई ॥
मम हित सदाव्रतादिक देवै । बहुतभाँतिममभक्तनसेवै ॥
मम पूजा प्रवाहके हेत । देइगांवपुरहाट अरु खेत ॥
सो मम सम ईश्वरता पावै । तिहूँलोकको ईश कहावै ॥
जो मम प्रतिमा थापन करै । सो सब भूपति ह्वैअवतरै ॥
जो मेरो मंदिर सँवरावै । तिहूँलोककी प्रभुता पावै ॥
पूजादिकनब्रह्मको लोक । जहाँ नहीं नाना भय शोक ॥
तीनों किये लहैं वैकुंठ । कालादिक सबहुते अकुंठ ॥
जो यों सेवै ह्वै निःकाम । सो मम भक्ति कहै सुखधाम ॥
निहकामी भावै त्यों सेवै । जो तन मन धन मोको देवै ॥
सो पावै मेरो निज ज्ञान । लहै मोहिं छूटै सब आन ॥
वृत्ति सुरनि अरुविप्रनिकेरी । अरु जोकरीहोइकछुमेरी ॥
देइ औरकी किंवा आप । ताके हरें कऱ्यो सब पाप ॥
सो होवै कृमि विष्ठा माहीं । वर्षकोटिहूँ निकसै नाहीं ॥
कर्त्ता प्रेरक तथा सहाई । अनुमोदक जिनरुचिउपजाई ॥
सबहिनको फल होय समान । भावै उत्तम भावै आन ॥
तते ममहित कर्मनि करै । सो बहुतनि ले भवजलतरै ॥
दोहा--या विधिपूजाको करै, ताके उपजे ज्ञान ।
जातेमेरो पदलहै, ताको करौं बखान ॥

इति श्रीभागवते महापुराणे एकादशस्कंधे श्रीभगवदुद्धव
संवादे भाषायां महापुरुषपूजाविधि वर्णनं नाम
सप्तविंशोऽध्यायः ॥ २७ ॥

अष्टाविंशोऽध्यायः ।

दोहा—अष्टाविंशाध्यामें, ज्ञानयोगपुनि सार ।
श्रीधरश्रीउद्धवप्रती, वर्णतनन्दकुमार ॥
पूर्वकहेविस्तारसों, ज्ञानयोगहरिजोइ ।
सारसबैसंक्षेपकर, पुनिवर्णतप्रभुसोइ ॥

श्रीभगवानुवाच ।

उद्धव तोको भाषौं ज्ञान । जाते लहै मोहि तजिआन ॥
उत्तम मध्यम कर्मस्वभाव । जे सब जगमें नाना भाव ॥
तिनतिनकीनिंदानाहिंकरै । अरुनहिंकछुअस्तुतिविस्तरै ॥
प्रकृतिपुरुषनिर्मित सबजानैं । एकजानिसबभेदाहिभानैं ॥
ब्रह्मा आदि कीटपर्यंत । एक रूप देखै मम संत ॥
जेजे बहुविधि कर्म स्वभाव । तिनको आनैं भावअभाव ॥
तिनसों होइ अर्थते भ्रष्ट । माया मोह चित्त आकृष्ट ॥
मिथ्या माहिं चित्तको धरै । ताते मूरख जन्मै मरै ॥
लीन होहि जब इंद्रिय देह । स्वप्न लहै तब आतमयेह ॥
जहँ मन लग्योतहाँतहँ जावै । बहुतभांतिकेसुखदुखपावै ॥
पुनि सुषुप्तिमें होवे लीन । मरणों कहै अहं मम हीन ॥
योंसुषुप्तिअरुदेखतसुपना । जन्ममरणबहुदुखसुखउपना ॥
जौं लगि सोवै तौं लगि पावै । जागतही कछुवैनरहावै ॥
त्यों यह सुखदुखपाप रु पुन्य । जन्ममरणसबजानैशुन्य ॥
जोपै यह सब द्वैतअसत्य । मो बिन और कछूनहिंसत्य ॥

देखन सुनन कहनमें आवै । मनअरुबुद्धिजहाँलौं जावै ॥
ते समस्त जो कछूबनाहीं । तौशुभअशुभकहौकामाहीं॥
यद्यपि है मिथ्या संसार । तौहूं दुखको वार न पार ॥
जौ लगि देहबुद्धिनहिं छूटै । तौ लगिभवभयपलकनटूटै॥
जैसे अपनीधुनिकीझांई । अरु अति बिंबसिंहकीनाई ॥
सीपरूप ज्यौंरीमें साप । अरु मृगतृष्णा मां है आप ॥
है नाहीं परहै सो जानै । तिनते सुख दुख बहुविधिमानै॥
जौ लगि मिथ्याजानैनाहीं । तौ लगिसकलअनर्थनजाहीं॥
ब्रह्म रूप यह सब संसार । जहां लगे कछु है विस्तार ॥
ब्रह्म रूप ब्रह्महिं उपजावै । ब्रह्म ब्रह्म आधार रहावै ॥
ब्रह्महिं करै ब्रह्म प्रतिपाल । ब्रह्मै रूप ब्रह्मको काल ॥
जैसे जलबुदबुदजलमाहीं । जलको छोडिद्वैतकछुनाहीं॥
त्योंहीं ब्रह्म रूप सब एक । देखैं भ्रममें जीव अनेक ॥
पर यह सब जानौ निर्मूल । ज्योंमृग बारिगगनमें फूल ॥
त्रिगुणरचितयहसब जग जानौ । तेगुणहीमायाकेमानौ ॥
जो या विधि सब मिथ्याजानैं । ब्रह्मभावनाहृदयआनै ॥
पर यद्यपि सो जगमें रहै । तौ रवि ज्यों गुणदोष न गहै ॥
या जगमें शुभअशुभ न देखै । मिथ्याजानिब्रह्मकरिलेखै॥
ज्यों प्रत्यक्षछटादिकदेखै । उपजत बिनशतमिथ्यालेखै ॥
धरणी आदि कालत्रय सत्य । नामरूपतेसकलअसत्य ॥
त्योंही ब्रह्म सत्यातिहुँकाल । नाम रूपामिथ्या जंजाल ॥

अरु त्यों करिदेखै अनुमान । भाईयहजडतनमनप्रान ॥
शक्ति कौनकी चेतन रहैं । अपने अपने अर्थ न गहैं ॥
निराकारते चेतन होई । सब आकार जहांलौं कोई ॥
ताते सब मिथ्या आकार । चेतन ब्रह्म सकल आधार ॥
अरु श्रुतिको परिणामविचारै । नेतिनेतिकरिसदापुकारै ॥
अरु त्यो देखै अनुभवमाहीं । नामरूपकछु हैये नाहीं ॥
अंत न रहिहैं हुते न आदि । आतमानिश्चलब्रह्मअनादि ॥
ऐसे बहुविधिको विस्तार । मिथ्याजानि वर्ण आकार ॥
मन क्रमवचनहोइ निःसंग । ब्रह्म विचारहि करै अभंग ॥
ऐसे वचन कहे भगवान । तब उद्धव पूछ्यो दृढ ज्ञान ॥

उद्धव उवाच ।

हे प्रभु यह आतम अविनाशी । चेतनरूपस्वयंपरकासी ॥
निर्गुण निराकार नित शुद्ध । सदा आनवृतसदाप्रबुद्ध ॥
ईहारहित सदा आनंद । सकल प्रकाशक लिपै न द्वंद ॥
अरु यह देह शक्ति करिहीन । जड अशुद्ध हैजावैलीन ॥
ताते तिनको संग न होई । महा विशेष परस्परदोई ॥
कछु इच्छानहिंआतममाहीं । अरुतनसों कछुहोवैनाहीं ॥
आतमको बंधन नाहिं कोई । अरुआतमआवरणनहोई ॥
यह संसार लहैसो कौन । आतम शुद्ध सदा सुखभौन ॥
यह करि कृपामोहिं समुझावो । मेरो भ्रमसंदेहमिटावो ॥
ऐसो उद्धव पूछ्यो ज्ञान । तब बोले भवपति भगवान ॥

श्रीभगवानुवाच ।

आतमको नाहीं संसार । अरु तिनको नाहीं आकार ॥
तिन दूनोंते जो अविवेक । ताहीको भवदुःख अनेक ॥
इंद्रिय देह प्राण मन बंध । इनसों जो आतम संबंध ॥
ताते आभासै संसार । महादुःख नाना परकार ॥
जौ लगिलौं इनसों संबंध । तौलगि आतम जानै बंध ॥
सो अज्ञान कह्योसबजानौ । नाहींकछूसकलकारिमानौ ॥
यद्यपि मिथ्या है संसार । परतौहूं कहुँ वार न पार ॥
सदाजीव दुखहीमें रहै । बार बार तन छोडै ग्रहै ॥
ज्यों स्वप्ना कछु है ये नाहीं । पर सब साँचो निद्रामाहीं ॥
जो जो दुखसुखमनमेंध्यावै । सो सो सकलस्वप्नमेंआवै ॥
है नाहीं पर है सो जानै । नाना विधिके सुखदुख मानै ॥
जागतही कछु है ये नाहीं । सब व्यवहार वृथा है जाहीं ॥
हरष शोक भयमोहऽरुलोभ । इच्छाक्रोधअशोभाशोभ ॥
जन्म रु मरणाविकारजहाँलौं । अहंकारकेसकलतहाँलौं ॥
आतम सदा एकरस रहै । अहंकार संगति दुख सहै ॥
इंद्रिय देह बुद्धि मन प्राण । सूत्र रु महातत्वअभिमान ॥
इनसों मिल कर आतम एक । मायाके सुखगहै अनेक ॥
तिन तिनके हित कर्मनकरै । कर्मनके वशजनमै मरै ॥
लिंग बँध्यो देहनिमें जावै । तिनके संग महा दुख पावै ॥
बुद्धि वचन मन प्राणसमीर । महतत इंद्रिय कर्मशरीर ॥

सुख अरुदुखममताअहंकार । तिनकोनानाविधिसंसार ॥
सो निर्मूल सकलही जानै । ज्योंजेवरीसाँप त्यों मानै ॥
ज्ञानखड्ग भाजि मोहिं उपावै । गुरुसेवासों सानधरावै ॥
तासों काटि होइ निस्संग । विचरै सब देखत मम अंग ॥
गुरुके वचन हृदयमें धारै । आदि अंतलोंश्रुतिहिंविचारै ॥
जन्म मरण देखै प्रत्यक्ष । तजि अज्ञानहि होवै दक्ष ॥
साधन धर्ममाहि थित होई । आतम देह विचारै दोई ॥
जो याजगकी आदि रु अंत । सोई मध्य विचारै संत ॥
आदिऽरु मध्य अंतमें एक । नाम रूप भ्रमरूपअनेक ॥
हेम एक ज्योंआदिऽरु अंत । मध्यकिये आभरणअनंत ॥
तौ कछु हेम छोडि नाहिं आन । जो विचार करिदेखैज्ञान ॥
मिथ्या सकल नाम आकार । हेमकालत्रयकरैविचार ॥
ज्यों जग आदि मध्य अरु अंत । मोहिं अरूपविचारैसंत ॥
आदि अंतमैं एक अरूप । सोई मध्य वृथा सब रूप ॥
जाग्रतस्वप्नसुषुप्तिअवस्था । आदिऽरुअंतमध्यमास्वस्था ॥
इनके नाश भये जो रहै । सकल छोडि ताकोबुधगहै ॥
इंद्रिय अरुइंद्रिनके देव । इंद्रिय विषयनिके बहु भेव ॥
ते सब जो एकहि बिन नाहीं । सत्यब्रह्मसोजोउरमाहीं ॥
जाहि प्रकाशतसकल प्रकासै । जाकीशक्तिसत्यसभासै ॥
सुखको सुख करणनको करण । करकेकरचरणनकेचरण ॥
नासा नास नैनके नैन । जिह्वा जीभ बैनके बैन ॥

याविधिसकलप्रकाशकएक। ताबिनमिथ्यासकलअनेक ॥
येजे नाम रूप विस्तार। जिनसों पूरण सब संसार ॥
ते सब आदिहुतेकछू नाहीं। अरुनाहिंरहिहैंअंतहुमाहीं ॥
ताते अबहूं मिथ्या मानै। कारण ब्रह्मनिरंतरजानै ॥
नाम धर्यो सो सकल बिकार। तिहूंकालमेंमाटीसार ॥
यह जो कछुसोब्रह्मसमस्त। आदिमध्यअरुसबकेअस्त ॥
ऐसे बहु बिधि बेद बखानैं। ब्रह्मबताई द्वैत सब भानैं ॥
आदिसमस्तहुतोकछुनाहीं। अबआभासतहैमोंमाहीं ॥
याते परे ब्रह्म मम रूप। सकल प्रकाशक आपुअरूप ॥
यहविचित्रतामेंआभासै। ताकी शक्तिहिशक्तिप्रकासै ॥
तातेसकलब्रह्महीलेखौ। तजिकरिरूपअरूपहि देखौ ॥
इनतेपरेरूपनिज जानौ। अरु ये सब मम रूपहिमानौं ॥
द्वैत छोडि निश्चल ह्वै रहौ। जानि ब्रह्मतौ ब्रह्महि लहौ ॥
ऐसे जो नित करै विचार। मिथ्या जानैं सब आकार ॥
गुरुसेवाकरिज्ञानबँधावै। चेतन मोहिं अखंडित ध्यावै ॥
यहजोतनसोआतमनाहीं। तनघटरूप विचारै माहीं ॥
अरुइंद्रियतेदीप समान। इनहिं प्रकाशक आतमआन ॥
अरुत्योदेवपवन मन बुद्धि। आतमकी नहिंजानैंशुद्धि ॥
क्षिति जलतेपवनआकाश। अहंकार गुणचित्तप्रकाश ॥
सौम्य प्रकृति तनमात्रापंच। इनहीको सब द्वैत प्रपंच ॥
तेजड आतमको नहिंजानैं। आतम शक्तिइहाँसबठानैं ॥

सकलप्रकाशकआतमएक। ये जडजानि न सकैं अनेक ॥
याविधिजोममरूपविचारै । सकल उपाधि उरैकी टारै ॥
सो बन रहै इंद्रियन थंभे । किंवा पुर विषयनिआरंभे ॥
तोहूंताको नहिं गुण दोष । जीव तहाँ निज पायोमोष ॥
जैसेघनरविआडेआये । तौतिनसों कछु रवि नहिंछाये ॥
अरु जोमेघदूरि ह्वै गये । तौ कछुरविनप्रकाशितभये ॥
रवि है परे उरै घन वृंद । जानै लिप्त लोक मति मंद ॥
जैसे प्रगट पवन घनताये । धूम धूलिअरुदामिनिहोय ॥
ऋतुकेगुणशीतलउष्णादि । उपजतविनशतरहैअनादि ॥
परनहिंलिप्तअलिप्तअकाश । त्योंआत्मा परमप्रकाश ॥
पर तौहूंसंगति नाहिं करै । मायागुणन दूरि परि हरै ॥
जौलौंकरि मेरी दृढ भक्ति । छूटी नाहिंरजतमआशक्ति॥
द्वंद्व भेदन भूलै जोलौं । मम जन संग करैनाहिंतोलौं ॥
जैसेरोग होई तनमाहीं । दृढकी मूल उखार्यो नाहीं ॥
सोतजिऔषधिअपथ्याहिकरै । तौ सोरोगबहुरिविस्तरै ॥
त्यों अहँकार रोग भवमूल । सोजौलगि न भयोनिर्मूल ॥
तौलगि संग अपथ्यहि करै । तो बहुरो जगमें अवतरै ॥
बंधु कुटुंब शिष्य बहु तेरे । आवैं सकल सुरनके प्रेरे ॥
तेते अंतराइ बहु करैं । योगीको कर्मन विस्तरैं ॥
सो तिनमें पावे अवतार । बहुरो करै भक्ति विस्तार ॥
कर्मपंथमें भूलै नाहीं । मैं प्रेरक ताके उर माहीं ॥

या विधि पाय ज्ञानविज्ञान । देखै मोहिं मिटावै आन ॥
तब ताको तनकर्मनिकरै । लेन देन भोजन विस्तरै ॥
पूरवसंस्कारकरवाव । विधिको लिख्यो न मिथ्या जावै॥
सो पुनि मगन ब्रह्म सुख माहीं । तातेकरते जानेनाहीं ॥
जो वैठै अरु ठाढो होई । आवै जाय कहूं जे सोई ॥
अन्न खाय जल पीवैसोवै । जो व्यवहार देहको होवै ॥
सो सो कछू न जाने योगी । निश्चल रहै ब्रह्मरसभोगी ॥
जो कबहूं देखै संसार । इंद्रिय गोचर विविध प्रकार ॥
तेते कछू सत्य नहिं जानैं । स्वप्नहि समज्यों जागमानैं ॥
प्रथमआत्माहुतो अबंध । आपुहि भयो प्रकृतिसोंबंध ॥
बहुरो मोसों विद्या पावै । तबदुखजानिप्रकृतिछिटकावै ॥
तब बहुरो ताको नहिं गहै । मोहि जानि मोहींमेंरहै ॥
प्रथमहिजबमोकोंनहिंजान्यो।तबमायासुखउत्तममान्यो ॥
बहुरो जब ममचरणहिंआवै । ममप्रसादअज्ञान मिटावै ॥
तब मायाको दुखमयजानै । परमानंदरूप मुहिं मानैं ॥
ताते आपुहिंगहीउपाधि । ताकोतजै जानिकरिव्याधि ॥
सदा निरंतर मोमें रहै । बहुरो भवसागर नाहिं बहै ॥
ज्योंरविअंशसकलही अक्ष । पररवि विन न लखैपरतक्ष॥
रवि संयोग बहुरि जब होई । तब समस्त देखै सोसोई ॥
रवि विन अंधकार अतिहोवै । ताते कोई नैनन जोवै ॥
रवि संयोग प्रकाशहिं पावै । तब सबदेखै तमहिं मिटावै॥

पर ते नैन त्रिकाल अलेप । अंधकारसों भये न लेप ॥
ते त्योंके त्यों तमहूं माहीं । पररवि बिनकछु देखैंनाहीं ॥
रविते तम उपाधि परिहरैं । पाइ प्रकाश प्रकाशहिकरैं ॥
यों यह आतम मेरो रूप । स्वयंप्रकाशक परे अरूप ॥
जन्म मरण मर्यादा रहित । काहू करिं कबहूं नहिंगहित ॥
दूजे रहित आपही एक । ताही करि यह देह अनेक ॥
महानुभाव सकलअनुभाव । जामें कबहुं नकर्मस्वभाव ॥
नित्यानंद सदा अति शुद्धि । सदा निरीह सदापरबुद्धि ॥
जाकरि इंद्रिय तनमन प्राना । चेतन है बरतैं विधिनाना ॥
जहँलौंमन अरुबचनन जावै । औरक्नौनविधिताकोपावै ॥
पर जब मोते रहितो भयो । तबताकोसब बलमिटिगयो ॥
अंधकार आयो अज्ञान । जाते दूरि भयो मैं भान ॥
जब बहुरोममशरणहिंआवै । तब सो ज्ञानप्रकाशहिपावै ॥
ताते छोडै सकलउपाधि । जो मो बिनकरिलीन्हीव्याधि ॥
ताको अबहूं परसे नाहीं । परमो बिना तजी नहिंजाहीं ॥
मोको पाइ सकल परिहरै । मेरे चरणनको अनुसरै ॥
रवि प्रकाश मिटै तम जैसे । मम प्रकाश द्वैत भ्रम ऐसे ॥
सो पुनि मोको नाहिंबिसरावै । मोहिं सेइ मोमाहिंसमावै ॥
मोमें हुते न माया लावै । अरु सो मायामें नाहिं आवै ॥
ताते नितही मोमें रहै । मो मिलि परमानंदहि लहै ॥
उद्धव इतनोही अज्ञाना । जाके बल मै जाने नाना ॥

ब्रह्म विना कछु दूजो नाहीं । जैसे साँप जेवरी माहीं ॥
द्वैत देह जड मिथ्या जानैं । चेतन एक ब्रह्म थिर मानैं ॥
अरु यह पंच बरण विस्तार । उपजै विनशै वारं वार ॥
जाको मिथ्या वेद बखानैं । अरु त्योंही गुरु साधू मानैं ॥
अरु अनुभवते त्योंही देखै । जागे स्वप्न जगतत्यों लेखै ॥
ऐसो जगत सत्यजे जानैं । पुष्पित वाणी वेद बखानैं ॥
अंत न श्रुतिके वचन विचारैं । उरै कहे तेई उरि धारैं ॥
ताते कर्मकाम बहु कहैं । ते मूरख या भवमें बहैं ॥
कर्म विक्षिप्त है तिनकी बुद्धि । ताते कबहुँ नपावैं शुद्धि ॥
ताते तिनके लगे न ज्ञान । मूरख आपादि जानैं जान ॥
ताते विषयी जीव समस्त । तिनहिंभ्रमाय करै ते अस्त ॥
ताते उद्धव यह ईज्ञान । ब्रह्म ज्ञान करि छोडै आन ॥
मेरो भजन निरंतर करै । जा प्रकाश द्वैतहि परिहरै ॥
अरु उद्धव जो योग कहावै । अष्ट अंगको वेद बतावै ॥
सो ज्यो औरैविधित्योंजानौ ।भवमोचककबहूंमतिमानौ ॥
जब याकेतनप्रबलविकार।करि नहिंसकैभक्तिअधिकार ॥
ताते बहुावाध विधि विस्तरै । मम विश्वास पाय परिहरै ॥
प्रथमाह योग धारणा करै । शीत उष्ण रोगन परिहरै ॥
जैसे करि तप पाप निवारै । मंत्र न ग्रह बाधादिक टारै ॥
भोजन क्षुधा औषधिसे रोग । यों तन जतन एकहै योग ॥
कामादिक मानसिक बिकार । जीतैमम सुमिरणआधार ॥

श्रम भक्तनकी सेवा करै । ता करि दंभादिक परिहरै ॥
या विधि विघ्न समस्त निवारै । मेरो भजनहृदय विस्तारै ॥
अरु एकै मूनढक राजा । साधैं योग देहके काजा ॥
जो यह देह मिटाई चाहय । देह मिटे मेरो सुख लहिये ॥
मेरो अंश आत्मा एह । याको दुखदाता सो देह ॥ ॥
ता देहहि राखो चहैं । ते आपुहि या भवमें रहैं ॥
तनके रोग जरादिक टारै । श्वास जीति करिमृत्युनिवारै ॥
अंत मृत्यु होवै कलंपत । बहुरो पाव देह अनंत ॥
ताते वृथा करै श्रम मूढ । मेरो भजन न पावै गूढ ॥
ताते मैं अरु संतन माहीं । तिनको कबहुं आदर नाहीं ॥
अरु प्रथमहि जो योगहि करै । विघ्न निवारि भक्तिविस्तरै ॥
ताको तन जो निश्चल होई । तौहूं आदर करै न सोई ॥
छोडै योगसमाधि समेत । गहि मम चरण बढावै हेत ॥
योग माहिं बाढै अहँकार । ताते नहिं छूटै संसार ॥
ताते सब तजि मोको भजै । मम अधीन ह्वै आपो तजै ॥
मम प्रसादते मोको पावै । बहुरो भव दुखमें नहिं आवै ॥
जो होवै मेरो आधीन । आपुहिं मानै सब बलहीन ॥
मैं अधीन होउं ताजनके । ज्यों आधीन देह यह मनके ॥
केवल जो मम शरणहि आवै । ताहीकी सब इच्छा जावै ॥
ताते विघ्न न आवै कोई । विघ्न तहां इच्छा जहँ होई ॥
मम आनंद रहै आनंदित । सब देवनके होवै वंदित ॥

तातें उद्धव यहही करनो । मेरो भजनहृदमें धरनो ॥
जग अरु आप ब्रह्ममय जानै ।द्वैत भावकबहूं नहिंआनै॥
ब्रह्म भावते ब्रह्महि पावै । जन्म जन्मके दुख विसरावै ॥
ब्रह्म भाव नाहिं उपजै जौलौं ।जन्ममरणदुखमिटैनतौलौं॥
तातें ब्रह्म भावको करो । दूजो सकल यत्न परिहरो ॥
दोहा–ऐसोसुनिश्रीकृष्णसों,अतिहीदुष्करज्ञान ।
पूछ्योसुगमउपायतब, उद्धवपरमसुजान ॥

इति श्रीभागवते महापुराणे एकादशस्कंधे श्रीभगवदुद्धव संवादे भाषायां परमार्थनिर्णयो नामाष्टाविंशोऽध्यायः ॥ २८ ॥

एकोनत्रिंशोऽध्यायः ।

दोहा–उनतीसै अध्यायमें, आगेको विस्तार ।
श्रीधरभक्तीयोगपुनि, कहेभक्तहितधार ॥
अतीक्लेशवतजानिहिय,सम्पातियोगअसंग ।
सुखोपायपुनिकृष्णसों, पूछ्योउद्धवअंग ॥

उद्धव उवाच ।

हेप्रभु यहतुमज्ञानबखान्यों। सोतोमैं अतिदुष्करजान्यों॥
वश नाहीं इंद्रियमनजिनको । कैसेकाजहोइप्रभुतिनको॥
जेहैं परमहंस दृढ चित्त । तिनके ब्रह्म दृष्टि है नित्त ॥
औरै जे यह ज्ञान विचारैं । खैंचिखैंचि या मनको धारैं ॥
तिनकोमनवशहोइनज्योंत्यों । महाकलेशलहैंतेत्योंत्यों ॥

तिनकोमनवशह्वैइनक्योंहीं । श्रमकरिजन्मगवावैंयोंहीं ॥
तुवपद परमानंदसमुद्र । ताको भेद न मानैं क्षुद्र ॥
करैं योग यज्ञादिक कर्म । तिनके कबहुँन छूटै भर्म ॥
ताते गर्व बढै जो करैं । ताते युग युग जन्मैं मरैं ॥
केवल भक्त तुम्हारे जेते । परमानंद लहैं सब तेते ॥
जबहींते तुव चरणन आवैं । तबहींते पूरण सुखपावैं ॥
मायानिकटनआवै तिनके । तुम्हरे चरणहृदयमेंजिनके॥
ताते सहजहिजगतामिटावैं । तुव चरणनमें सहजसमावैं ॥
तुमब्रह्मादिकसकलकेनायक।सबहिनकोप्रभुताकेदायक॥
तिनके चरण गहै ह्वै दीन । तुम ताके होवो आधीन ॥
अरु यह कहाअचंभास्वामी । तुमसबकेप्रभुअंतर्यामी ॥
तिनको सब तजिसेवै जोई । करैआपुवशतुमकोसोई ॥
शीश मुकुट धारीहैं जेते । तव पद मुकुटनिकारैं तेते ॥
रामरूप तुम भये मुरारी । तिन कीन्हे बानरअधिकारी॥
बानर सकल सखातुमकरे । सबहिनकेसबहितआचरे ॥
ताते जो तुवकृतहि विचारै । सोक्योंपलतुवभजननिवारै॥
तुमहीं नखशिखदेहसँवारी । चेतन शक्तितुमहिंपुनिधारी॥
सदा रहै तुम्हरे आधार । तुमही नित प्रतिपालनहार ॥
ता पर जीव तुम्हें नाह जानैं । कर्ता भर्ता आरनि मानैं
तौहूतुम औगुण नहिंआनौ । बहु विधि जहँतहँरक्षाठानौं
पुनि जबही तुव शरणहिआवैं । तब तुमसोंचारों फलपावैं

पर तथापि सो अतिअज्ञान। तुमको सेइ लेई जोआन॥
चारि पदारथ सेवक ताके। तुम्हरी भक्ति बिराजैंजाके॥
एकजहांनहिं तुम्हरो भजनो। नरकजानि सोईसोतजनो॥
ताते जो होवै सर्वज्ञ। तुमरे उपकारनको तज्ञ॥
अरुविधिसम आयुर्बलपावे। बहुविधिप्रत्युपकारबनावे॥
तौहूं तुमहि अनृण नहिं होई। ब्रह्माआदिजहाँलौजोई॥
जे तुम बाहर सतगुरु रूप। भीतर चेतन शक्तिअनूप॥
यों जीवनके पाप निवारो। आपुहिदे भव संकट टारो॥
ताते भाषो भजनानन्द। सहज मिलौ तुम छूटै फंद॥
य सुनि प्रिय उद्धवके बैन। बोले कृष्ण कृपाके ऐन॥

श्रीभगवानुवाच।

धन्य धन्य उद्धव मम भक्त। सबजीवनके हित अनुरक्त॥
तोसों कहों आपने धर्म। जाते मिटै सहज सब कर्म॥
करते सुख आगे सुख पावे। छोडै भव भय मोमैं आवै॥
उद्धव कर्म करै नर जेते। मेरे हेत करै सब तेते॥
कर्मनमें भाषै मम नाम। मेरे कारि राखै धन धाम॥
माम अरपै मनकी वृति। ताकेसब आचरण निवृति॥
मेरी प्रीति करै जो करै। मेरा प्रीति रहित परिहरै॥
जिन देशनमें मेरे भक्त। तिन कारि वास होइअनुरक्त॥
सुरअरु असुर नरनमें जेते। मेरे भक्त भये हैं केते॥
तिन तिनके आचरण न जानै। त्योंही त्यो आपनहूठानै॥

मेरे यज्ञ महोत्सव करै । पर्वनिमें मिलाप विसतरै ॥
मेरी जहँ तहँ यात्रा होई । तहाँ तहाँ चलि जावै सोई ॥
गीत नृत्य वादित्र करावै । छत्रचवँर आदिक अधिकावै ॥
अति उदारताकरि सब ठानै । ममहितलगैभलोसोजानै ॥
सब भूतनिमें मोको देखै । अंतर बाहर एकै लेखै ॥
आपु आदि जगमोमें जानै । ज्यों अकाश अनावृतमानै ॥
योंसबमें जानै मम भाव । त्यागै सकल प्रवृत्त स्वभाव ॥
सबहिनके सत्कारहि करै । ज्ञान दृष्टि भेदहि परिहरै ॥
एकै विप्रवेद अधिकारी । एकै अंत्यज महा विकारी ॥
एकै विप्रनके धनहर्त्ता । अरु एकै धनके विस्तर्ता ॥
एकै तेजहीन बहु देखै । तेजवंत बहु एकै पेखै ॥
एकै क्रूर सकल दुखदाई । एकै सात्विक सकल सहाई ॥
इत्यादिक नाना विध देखै । पर जो भेद कहूं नाहिंलेखै ॥
मेरी दृष्टि सबनमें आनै । मम जन पंडित ताहिबखानै ॥
या विधि सबमें मोको जानै । देहभेद कछुवै नहिं आनै ॥
थोरे कालमाहिं ताजनके । सबविकारमिटिजावैमनके ॥
स्पर्द्धा तिरस्कार अहँकार । सकल मिट कछुलगै न वार ॥
तातें देहदृष्टि नहिं धरै । लोक कुटुम्ब लाज परिहरै ॥
हांसी करैं सकल इलोक । परसो आन हर्ष न शोक ॥
तिनकी कछूनमनमें आन । सब जीवनमें मोको जानै ॥
खर खच्चर चंडालनि अंत । जहांलौं मेरी सृष्टि अनंत ॥

नमस्कार तिन तिनको करै। दंड समान धरणिमें परै॥
जो लग थावर जंगम माहीं। मेरो भाव होइ थिर नाहीं॥
तौ लगि मन वच काय समेत। यों सबमें ठानै ममहेत॥
या विधि करत रहै नर जोई। ताको सकलब्रह्ममयहोई॥
मिटै अविद्या विद्या आवै। ताते बंधन सकल मिटावै॥
उद्धव सकल मते हैं जेत। वेद मध्यमें भाषै तेते॥
तिनमें इहै मतौ मम सार। जाते वेग मिटै संसार॥
मन वच कर्म जहांलौ जेते। मम रूपहि जानै सबतेते॥
उद्धव इसो धर्म है मेरो। कहा प्रभाव कहूं तिहि केरो॥
अणुरूप ऊ प्रगट जो होई। क्योंही बहुरिमिटैनहिंसोई॥
जहां लगे गुण निर्मित वस्तु। तहां लगे सब होवैअस्तु॥
मैं निर्गुण सबगुणनप्रकाशी। ताते ममधर्मोअविनाशी॥
मेरो नाश कबहुं नाहिं क्योंहीं। मम धर्मोथोरोहूत्योंहीं॥
अरु उद्धव यह कहा कहीजै। मेरो धर्म कबहुँनहिंछीजै॥
उद्धव जे लौकिक व्यवहार। राजसतामस विविध प्रकार॥
जिनते केवल होहिं अनर्थ। प्रवृतिहुको सब मेटै अर्थ॥
नरकन माहिं डारै निहार। काम क्रोध द्वेषादि विकार॥
जोते ऊतेमो मैं करै। तोहूं मोहि लहै भवतरै॥
जैसे कंस मरण भय कर्‍यो। मेरो धर्म नहीं आचर्‍यो॥
पारि सोभयऊकारिमोमाहिं। मम पदपहुँच्योभवमेंनाहिं॥
अरु गोपिकनकियेव्यभिचार। लंघे वेदं तजे भरतार॥

परव्यभिचारी मोमें कऱ्यो । तौहूं तिन भवजलपरहऱ्यो ॥
अरु ज्यों द्वेष कियो शिशुपाल । जाते जीवनग्रासैकाल ॥
पर सोऊमोमें करिदोष । भवजलताजि करिपहुँच्योमोप ॥
यों विषरूप विकारो जेते । मोमें आये अमृत तेते ॥
ताते यह विवेक चतुराई । यहै बुद्धि दूजी नाहिं कोई ॥
जो झूठै सो साँचहि लीजै । पूरण काज आपनो कीजै ॥
यह झूठी क्षणभंगुर देह । सकल विकार नहीं को गेह ॥
ता करि पैये हरि अविनासी । निर्विकार पूरणसुखरासी ॥
यह सब ब्रह्मज्ञानको सार । जाते मिटै सहज संसार ॥
मैं संक्षेप माहिं सब कह्यो । याते सार न कहिवे रह्यो ॥
यह नर तनअरुयहमम ज्ञान । देवनहूंको दुर्लभ जान ॥
यद्यपि जीव लहै नरदेह । तौहूं ज्ञान न पावै एह ॥
ताते मैं भाष्यों निज ज्ञान । ताते मोहिं लहै तजि आन ॥
उद्धव प्रश्न करी तुम जेती । उत्तर सहित कही मैं तेती ॥
ते सब तत्व वेदको जानौ । मेरो परम रूपकरि मानौ ॥
यह तुम्हरो मेरो संवाद । अध्यातम परमातम वाद ॥
ताको सुनि हिरदैमें धारै । पावै मोहिं आपको तारै ॥
जो यह मेरो पूरण ज्ञान । मेरे भक्तन देवै दान ॥
सो कहियतु है मेरो दाता । जहां तहां होवै विख्याता ॥
जो जो देइ लहै सो सोई । लोक वेद भाषत हैं दोई ॥
ताते दान देइ जो मेरो । मैं आधीन होहु तिहि केरो ॥

मोहिं देइ सो मोको पावै । तिनको लै मोमाहिं समावै॥
जो नर याको नितहीं पढै । ता जनसों मोसों हितबढै॥
सो जन मेरे अतिप्रिय होई । ताके समदूजा नहिं कोई॥
जो यहसुनैनित्यकरिआदर । औरसकलको करैअनादर॥
सो कर्मनिसों लिप्त न होई । मेरी भक्ति लहै दृढ सोई ॥
म यह परमज्ञानउच्चार्यो । उद्धव तुम कछु हृदयधार्यो ॥
शोक मोह भय भयो निवर्त्त । निश्चलगयोहृदयआवर्त्त॥
उद्धव यह जो मेरो ज्ञान । सो मति जानौ मोते आन ॥
ताते दंभ सहित है जोई । अरु नासतिक डहकुवाहोई॥
प्रीति न जानै नहिं ममभक्त । दुर्विनीताविषायिनआसक्त॥
तिनको ज्ञान न देनो एह । ज्यों कालर भूबीज अरु मेह॥
इन दोषन करि होइ विहीन । मेरो भक्त प्रीति दृढदीन॥
स्त्री स्त्री शूद्रौ ऐसो होई । ताहू सों अंतर नाहिं कोई ॥
ऐसिनसोंयाज्ञानहिकहिये।तौतिनसहितपरमसुखलहिये॥
जो यह मेरो जानै ज्ञान । ताहि जानिबे रहै न आन ॥
ज्यों कोई पीवै पीयूष । ताके रहै न दूजी भूष ॥
ज्ञानऽरु कर्मयोगअष्टग । कृषि वाणिज्य नीति सब अंग ॥
अर्थऽरु धर्म मोक्ष अरुकाम । इनसबाहिनकोमोमें धाम॥
ताते मोमें आवै जोई । इन सबहिनको पावै सोई ॥
पर मेरो जन कछू न लेवै । सकल त्यागिकरिमोकोसेवै॥
ताते साध्यऽरु साधन जेते । मम जन देखैं मोमें तेते ॥

सब तजि जब ममचरणनसेवै । आपनिवेदकछूनहिंलेवै ॥
ताके सम दूजो प्रियनाहीं । सो नित मोमें मैंतामाहीं ॥
तब सुनि ऐसे हरिके बैन । उद्धव आंसुकला कुल नैन ॥
आगे ठाढे अंजलि बाँधे । प्रेममगन तन मन दृढसांधे ॥
बैनहुते बोल्यो नहिं जावै । कंठहुते गद्गद स्वरआवै ॥
ताते उद्धव चुप करि रहै । कछू बेर कछु बैनन कहै ॥
बहुरो चित्तथंभि करिधीरज । पूरणप्रेमभयो अबकीरज ॥
निश्चय आप कृतारथमान्यो । सबसंदेहहृदयते भान्यो ॥
हरिके चरणनि माथोधार्‍यो । उद्धवभक्तवचन उच्चार्‍यो ॥
जिनते हरिसों बाढै प्रेम । जिनको कहि सुनि पैयेक्षेम ॥

उद्धव उवाच ।

नाथ अजन्मा अरुअविनाशी । परमानंदपरमपरकाशी ॥
तिनके संनिधान जबआयो । तबहींसबअज्ञानामिटायो ॥
संनिधान पावकके जावै । सहजहि तमभय शीतिगँवावै ॥
अरु तापरतुमपरम दयालु । मोनिजजनपरभये कृपालु ॥
यहविज्ञानदीपसुहिंदीन्ह्यौ । जातेसकलशुभाशुभचीन्ह्यौ ॥
तुम्हरे चरण शरणभवमाहीं । दूजे ठौरकबहुँ सुखनाहीं ॥
जे कोई तुव कृतको जानैं । अरु तापरभवको दुखमानैं ॥
सो तुव चरण नहीं जे आवैं । तो दूजे काते सुखपावैं ॥
प्रभुजी तुम अतिकरुणाकरी । मममायापासी परिहरी ॥
सकल यादवनमें अस्नेह । अरु युवती सुत वितगृहदेह ॥

ये सब मेरे मनते टारे । अपने चरण कमल उर धारे ॥
तुमविस्तारीअपनीमाया । जिनयहसकलजगतभरमाया ॥
सो तुम ज्ञान खड्गसोंछेदी । हैकृपालुनिजप्रीतिनिवेदी ॥
नमो नमस्ते ज्ञान प्रकाशी । योगेश्वरईश्वरअविनाशी ॥
दीजै मोहिं एकवर देवा । निश्चल हृदय निरंतर सेवा ॥
तुमहिं छोडि दूजो नहिं जानों । परिसेवकह्वैसेवाठानों ॥
मोहिं प्रसाद दीजिये एह । तुमसों निश्चल बढै सनेह ॥
करी विनती उद्धव भक्त । बोले हरिजी ह्वै अनुरक्त ॥

श्रीभगवानुवाच ।

तथा अस्तु उद्धव मम भक्त । ममचरणननिश्चलआसक्त ॥
अब तुम उद्धव ऐसी करौ । लोकनको शिक्षा विस्तरौ ॥
बदरिखंड आश्रम है मेरो । अतिपुनीतदर्शनजिहिंकेरो ॥
तहँ तीरथ मम चरणनकोजल । दर्शपर्सअस्नानहरैमल ॥
नाम अलकनंदा सो गंगा । निर्मल करै दर्श सब अंगा ॥
तहाँ जाइ तुम वासाकरौ । फलभक्षणतनवलकल धरौ ॥
द्वंद्व शीत उष्णादिक सहौ । विनयादिकशुभलक्षणगहौ ॥
इंद्रिनके अर्थनि परिहरौ । यह विज्ञान ज्ञान उरधरौ ॥
मोते सिख्यो ज्ञान तुम जोई । बैठि एकांत विचारौसोई ॥
वचन चित्त सब मोमें धरौ । मेरो धर्म सदा विस्तरौ ॥
तबतीनोंगुणकोपरिहरिहौ । ममनिर्गुणपदकोअनुसरिहौ ॥
यह उद्धव परतिज्ञा मेरी । फिरि उत्पत्ति न ह्वै है तेरी ॥

या विधि कृष्ण वचन उच्चारे । ते उद्धव लैमस्तक धारे ॥
चरणनपर परदक्षिण दीन्ही । तब चलिवेकीइच्छाकीन्ही ॥
यद्यपि द्वंद्व हृदय नहिं आवैं । तौहूं हरिजी तजे न जावैं ॥
अश्रुकंठ अतिआरत बुद्धि । तन्मय भयोनतनकीशुद्धि ॥
कृष्णवियोग नक्योंही सहै । बारबारचलिफिरिफिरिरहै ॥
तब अंतरयामी गोपाल । जिनको जानि प्रेम बेहाल ॥
निकट बुलाइ मिलदै अंग । ज्ञानरूप कीन्हों सर्वंग ॥
तब आपनी पावरी दीन्हीं । ते उद्धवजनमाथेलीन्हीं ॥
तौहूं प्रथमहिं कृष्ण पधारे । यादव लै प्रभास संहारे ॥
तबहीं तहँ उद्धव चलि आये । कृष्ण एकही बैठे पाये ॥
पुनि मैत्रेय पधारे तहां । कृष्णदेव बैठे हैं जहां ॥
दुहूं कियो हरिकोपरनाम । दरशनपायोअतिअभिराम ॥
ठाढे भये जोरि कर दोई । प्रेममगन कछु कहैं न कोई ॥
तब तिनको हरि भाष्योज्ञान । जैसे अंधकारकोभान ॥
मैत्रेको दीन्हों आदेश । विदुरहि कहियो यह उपदेश ॥
आज्ञादीन्हीउद्धवजनको । अपनीशक्तिकियोथिरमनको ॥
तब उद्धव हरि चरणनपरे । हरि हिरदयनिश्चल करिधरे ॥
पुनि उद्धव जन पहुँचे तहां । नरनारायण प्रगटे जहां ॥
तहां जाइ कीन्हें आचरण । जे जे हरि भाषे ते करण ॥
वलकल अंबर फल आहार । प्रेममगननित ब्रह्मविचार ॥
तब त्रय गुणविस्तार मिटायो । उद्धवब्रह्मनिरंजनपायो ॥

यह हरि उद्धवको संवाद । हरिजिको है परम प्रसाद ॥
जाको कृपाकरैं सो पावै । तजि भव सिंधुब्रह्ममें जावैं ॥
जबते याको भाषै सुनैं । प्रेमसहित हिरदयमें गुनैं ॥
तबते पावै परमानंद । श्रमही विना मिटैं दुखद्वंद्व ॥
यह स्वयमेव आपु हरि कह्यो । जामें कछु संदेह न रह्यो ॥
यामें ऐसो कृष्ण प्रभाव । मिटै जगत उपजै हरिभाव ॥
जिन हरि प्रगटअमृतद्वै करे । भक्तनप्यायसकलदुखहरे ॥
एक जलधिते अमृत उपाया । निजाधीनदेवनकोप्यायो ॥
जरा रोग आदिक दुखहरे । बल उपजाइ विगतभयकरे ॥
अरु दूजो यह अमृत एक । वेदसिंधुते ब्रह्म विवेक ॥
सो अपने जननको प्यायो । जन्ममरण भवभयहिमिटायो ॥
ऐसेआदिपुरुषअविनाशी।सुमिरतजिन्हहिंमिटैभवपाशी॥
कृष्ण नाम लीन्ह्यो अवतार । तिनको वंदन वारं वार ॥

दोहा—ऐसोसुनि शुकदेवसों, परम तत्व उपदेश ।
कृष्ण कथाके प्रेमसों, कीन्ही प्रश्न नरेश ॥

इतिश्रीभागवते महापुराणे एकादशस्कंधे श्रीभगवदुद्धव
संवादे भाषायां उद्धवमुक्तिनिरूपणंनामै
कोनत्रिंशोऽध्यायः ॥ २९ ॥
इति भगवदुद्धवसम्वादसम्पूर्णम् ।

त्रिंशोऽध्यायः ।

दोहा–इच्छाहै निजधामकी, मूशल छलको धार ॥
कहत तीसअध्यायमें, यदुकुलको संहार ॥
प्रथमसुनी संक्षेपजो, अब पूंछी विस्तार ।
श्रीधरकथाऽवसानमें, नृपति श्रीशुकसार ॥

राजोवाच ।

हेप्रभुहरिकी कथासुनावौ । करणपुटनयहउअमृतप्यावौ ॥
हरिउपदेशउद्धवहि दीन्ह्यो । पीछेआपकहातहँकीन्ह्यो ॥
यादवकुलकोप्रगटचोश्राप । हरिजीकहाकऱ्योतबआप ॥
ईश्वरको बाधा नहिं कोई । अरुद्विजश्रापनमिथ्याहोई ॥
सबके तन मन मोहन देह । परमानंद स्वधाको गेह ॥
जेनारी हरिदर्शन पावैं । तिनसों नैनन खैंचे जावैं ॥
अरु जे हरिके रूपहिं गावैं । वाणीसहित मानते पावैं ॥
अरुजे सुनि करि हिरदय धारैं । तेपलको नहिं छोडैंपारैं॥
भारतमें अर्जुन रथमाहीं । बैठे दरश लहे जाजाहीं ॥
तिनतिन हरिकी समता पाई । सबसंसृतितत्कालगँवाई॥
ऐसो तनहरित्याग्यो कैसे । कोई हरै नागमणि जैसे ॥
ऐसे वचन कहे नरदेव । उत्तर दीन्ह्यो श्रीशुकदेव ॥

श्रीशुक उवाच ।

द्वारावती उठैं उतपात । तिनको देखि कही हरि बात ॥
उग्रसेन आदिक सबलोक । सभासुधर्मादुःख न शोक ॥

तिनसों कृष्ण वचन उच्चारे। हरिको मतोनलखैं विचारे ॥
निजमायासों मोहित कर। ज्ञान विवेक सबनके हरे ॥

श्रीभगवानुवाच।

हे यादवहु सुनौ मम बाता। द्वारावती उठैं उतपाता ॥
ये उत्पातहि मृत्यु निशान। ताते तजिये यहअस्थान ॥
युवती बाल वृद्ध सब जेते। शंखोद्धार पठैये तेते ॥
औरैसकलप्रभासहिजैये। तहँ पश्चिम सरस्वती अन्हैये ॥
करिअस्नानतनानिर्मलकरिये। शुद्धहृदयतीरथव्रतधरिये ॥
जे जे बहुत पितर अरु देवा। तिनकीकरिये पूजा सेवा ॥
अरु विप्रनकी पूजा कीजै। करि सन्मान दानबहुदीजै ॥
गाइभूमिसोनो वस्त्रादि। हय हाथी रथ अन्न गृहादि ॥
आशिर्वादद्विजनके लीजै। जाते विघ्न सकलही छीज ॥
देवऽरुविप्र गायकी पूजा। पाप हरणविधिमध्य न दूजा ॥
एसी सुनिहरिजीकीवाणी। सबयादवनभलीकरिमानी ॥
नावनबैठि सिंधु ऊतरे। चढिकरि रथनप्रयाणे करे ॥
ज्योंहरितिनकोआज्ञादीन्ही।त्योंत्योंसबनसबैविधिकीन्ही
करि अस्नान धर्म बहु ठानै। मध्यप्रभासआपुबहुमानै ॥
तबतिनकीन्हो मदिरापान। जाते भूलिगयोसबज्ञान ॥
तबते मत्तसकलही भये। हरिमाया विवेक हरिलये ॥
तिनमें कलह भयो उत्पन्न। सबमें प्रेरक हरि परछन्न ॥
तबतिनकी तासभामँझारी। सात्विकवीरगिराउच्चारी ॥

कृतवर्माकोकरि अपमान । सात्यकि छोडे वाणबान ॥
भाईजोक्षत्रियतन धारा । अरु बहुमेंकाहियेअधिकारी ॥
सो ऐसो ऐसी क्यों करै । सोवत बालनके शिरहरै ॥
यहप्रद्युम्नवचनसतकाऱ्यौ । कृतवर्माकोअतिधिक्काऱ्यौ ॥
तब कृतवर्मा कीन्हो क्रुद्ध । वाणी बाणप्रकाश्योयुद्ध ॥
अरे करै क्षत्रीको ऐसी । व्याधक्रूर तू कीन्ही जैसी ॥
भूरिश्रवा निरायुध भयो । जाको बाहुयुगल कटिगयो ॥
ताको वध तू कीन्हो ऐसे । व्याध कसाई करै न जैसे ॥
तबसात्यकिउठिबोलेवाणी । सुनौसुनौहो शारँगपाणी ॥
इनकोयशअरुआयुसिरायो । ताते इसो मतौ है आयो ॥
एकाहिवचनखड्गतिनकाढ्यो।कृतवर्माकोमस्तकबाढ्यो ॥
यद्यपिसबमिलिबहुतनिवाऱ्यौतोहूंसात्यकिक्रोधनटाऱ्यौ
ताते सकल भए तब क्रुद्ध । सात्यकिहीं सोठान्योयुद्ध ॥
तबते सकलभये द्वै ओर । युद्ध रच्यो सागर तट घोर ॥
कोई धनुष भालसों लरैं । कोई खड्ग गहे संहरैं ॥
कोई फरसा गदा कुठार । कोई लै सैंहथी प्रहार ॥
कोई गुरुद गोफणा केई । वृक्षादिक न लरैं ते तेई ॥
हर्षित सबै करैं संग्राम । बैठे दखैं कृष्णऽरु राम ॥
हयसों हय हाथीसों हाथी । रथसों रथसाथीसों साथी ॥
खरसोंखरऊँटऊंटनसों । महिषऽरु महिष बैलबैलनसों ॥
खच्चरसोंखच्चरमिलि लरैं । नरसों नर मिलि युद्धहिकरैं ॥

महामत्त कछु लखैं न ऐसे । युद्ध करैं वनमें गज जैसे ॥
सांब प्रद्युमन ठान्यो युद्ध । त्यौं अक्रूर भोज अतिक्रुद्ध ॥
तहँ संग्राम जितऽरु सुभद्र । करै युद्धवीरनको भद्र ॥
गदसे नाम कृष्णको भ्राता । नामसुचाअरुपुत्रविख्याता ॥
त्यौंसात्यकिसोंमिलिअनिरुद्ध।सुरथसुमित्रकरैंमिलियुद्ध॥
उल्मुकनिसठसहस्रजितसत।जितभानुआदिदैयोंवअपरिमित
आपआपमैं युद्धहि ठानै । हरिकरिमोहित कछू नजानैं ॥
वृष्णिवंश दाशारह वंश । सात्वत अंधक भोजवतंस ॥
अर्बुद शूरसेन मधु माथुर । देश विसर्जनकुंतिरुकुकुर ॥
आपुआपुमिलियुद्धहिठान्योसब निपरपरस्परसोंहृदभान्यो
पुत्रपिताभाईअरुभाई । मामा अरु भानेज लराई ॥
चचा भतीजे नातीनाना । मित्र मित्रमिलि युद्धहिठाना॥
सुहृदसुहृदज्ञातिनसोंज्ञाती।सबमिलिभयेपरस्परघाती ॥
तबशरक्षीणभयेसबहिनके । टूटेतथा धनुषतिनतिनके ॥
आयुधसकलक्षीणजबभये। तब तिनकरन एरका लये ॥
भये मुशल चूरण ते जेते । वज्रसमान सिंधु तट तेते ॥
तेतेसकलकरनकरिलीन्हें । हरिसोंयुद्धहिक्रोधहिकीन्हें ॥
रामकृष्णबहुभाँति निवारैं । परते मूरख कछुन विचारैं ॥
रामकृष्णको रिपुकरि जानैं । युद्धबुद्धिअंतरगत आनैं ॥
तबआपहूंकियोतिनकोप । कियोचहैंसबहिनकोलोप ॥
तब एरका करन तिनलिये । थोरेमाहिंप्रलयसबकिये ॥

विप्र श्राप आच्छादितकरे । हरिमाया विचारासबहरे ॥
पावकक्रोधप्रगटतहँभयो । बांसाविपिनकुलजरिबरिगयो ॥
तबकुलसकलनष्टहरिदेख्यो । भूकोभारउतार्‌योलेख्यो ॥
जाकारण लीन्ह्यो अवतार । सो परिहर्‌योधरणिकोभार॥
तबसमुद्रतटमें बल भद्र । कीह्यो ब्रह्मध्यान अति भद्र ॥
आपुहिब्रह्ममाहिं लैराख्यो । मानवदेहदूरिकरिनाख्यो ॥
राम प्रयाणलख्योहरिजबहीं । लघुपिप्पलतलबैठेतबहीं ॥
निरमलरूपचतुरभुजधार्‌योदशहूँदिशिकोतिमिरनिवार्‌यो
ज्यों विधूमपावकपरकास । ऐसो परगट भयो उजास ॥
पीतवसन द्वैतन घनश्याम । तप्तस्वर्णशोभाअभिराम ॥
सुंदरहास सहित मुखपद्म । कमलनैन शोभाके सद्म ॥
कर्णनिकुंडलमकराकार । शशिमुकुटशोभा अधिकार ॥
रुचिरनीलशिरकेशविशाल । उरभृगुलतामणिवनमाल ॥
कंठ सूत कटि सूत विराजैं । क्षुद्रघंटिका नूपुर राजैं ॥
बहुआभूषण भूषित अंग । देखत मोहैं अमित अनंग ॥
आयुधमूरतिमंत समस्त । सुमिरतजिनहिंहोइभयअस्त॥
उत्तम चरण कमल आरक्त । जिनकोउरध्यावैंतिनभक्त॥
दक्षिण जंघानीचे कर्‌यो । वामचरण ता ऊपर धर्‌यो ॥
यो निश्चलह्वै बैठे कृष्ण । सुमिरतजिनहिं मिटैंभयतृष्ण॥
अतिलघु मुशलखंडजो रह्यो । जलमेंडार्‌योमच्छीगह्यो॥
सो वह मच्छ जालमें आयो । ताके उदरलोहसोपायो ॥

जराव्याधभल्कासोकीन्ह्यो । लेकरशरकै आगे दीन्ह्यो॥
सोवहव्याधहुतो वननाहीं । हरिको पदतिनजान्योनाहीं॥
हरिकोचरणदृष्टिजबपऱ्यो।मृगमुखजानिघात तिनकऱ्यो॥
सोई बाणलगायो चरण । विप्रवचन नहिं मिथ्या करण॥
सोवह वधिक निकटचलिआयो।रूपचतुर्भुजदरसनपायो॥
चरणलग्यो जब देख्योबाण । जराभयोतबमृतकसमान॥
चरणनपरिबोलैभयभीत । कंपत अंग लग्यो ज्यों शीत॥
हेप्रभु मैं कीन्ह्यो अपराध । तुमहिं नजान्योमूरखव्याध॥
यह मैं कीन्ह्योसकलअजाने । बाणचलायों मृगकेजाने॥
या अपराधहि तुमहीं टारौ । जे तुमनाम लियेते तारौ॥
तुवसुमिरणसबपापविनाशै । मिटै अज्ञानज्ञानपरकाशै॥
ब्रह्मा आदिकरैं आराध । तिनको मैं कीह्यों अपराध॥
ताते प्रभुजी विलम न करौ । मो पापीके प्राणन हरौ॥
जाते बहुरो करौं न ऐसो । यह अपराध कऱ्योमैंजैसो॥
जिनकीमायाको विस्तार । ब्रह्माशिवसनकादि कुमार॥
औरो श्रुतिद्रष्टाहैं जेते । क्योंहीं जानि सकैं नहि तेते॥
मोहित सकल तुम्हारी माया ।ताते किनहू पारनपाया॥
तिनको पाप योनि हम जेते । कौन भांतिकारिजानैतेते॥
ताते अब दूजी न विचारौ । वेगाहिमो पापीको मारौ॥
ऐसी जरावाधिककी वाणी । सुनींनिःकपटशारँगपाणी॥
तब प्रभुआपवचनउच्चारे । ताके सकलशोक भयटारे॥

श्रीभगवानुवाच ।

उठुउठुजराभयहिमतिमानै । अपनोकऱ्योपापमतिजानै ॥
यह समस्त लीला है मेरी । यामें कहा शक्ति है तेरी ॥
मेरी कृपा जाहितू स्वर्ग । जहां महासुख नहिं उपसर्ग ॥
ऐसे वचन कहे हरि जबहीं । धऱ्योविमानस्वर्गतेतबहीं ॥
तीनि परिक्रम अरुपरनाम । करिकै वधिकगयोसुरधाम ॥
चढि विमानसुरलोकहिगयो । जयजयशब्दजहांतहँभयो ॥
तब रथलिये सारथी देखै । पर हरिजीको कहूं नपेखै ॥
तुलसी गंध पवन जब पायो । ताके काज कृष्णपैआयो ॥
पीपलमूलकियेहैंआसन । प्रभा मनोशशि सूरहुतासन ॥
आयुध आगे मूरतिवंत । यों निज पति देखै भगवंत ॥
तबदारुकधीरजनहिंकऱ्यो।रथतजिविह्वलचरणनपऱ्यो ॥
उमँग्यो हृदयनैनजलछायो । प्रेम मगन मुखबन नआयो ॥
तबकरि धीरज आंसु निवारे।करुणासहितवचनउच्चारे ॥
हे प्रभुमैं तुव चरणन देखे । तेपलकल्प कल्प करिलेखे ॥
तबते नष्ट दृष्टि मैं भयो । सबदुख एकबार अनुभयो ॥
भूलीदिशानकहुँसुखपायो।ज्योंउडुपतिनिशिमाहिंछपायो
तुम विन मैं ज्यों तनविनप्राण । जैसेनयनअंधविनभान ॥
ऐसे वचन कहतही सूत । देख्यो एक चरित अद्भूत ॥
गगनहुतेउत्तमरथआयो । हयति सहितअरुगरुडसुहायो ॥
मूरतिमय हरि आयुधजेते । रथमें जाय चढे सब तेते ॥

यहचरित्रदारुकजबदेख्यो । विस्मतभयोअचभालेख्यो॥
तबहरि सूतहि बैन सुनाये । करि सन्मानदुःखविसराये॥

श्रीभगवानुवाच ।

सूतद्वारिकाको तुम जावो । समाचार सब जायसुनावो॥
सबकोमरण रामनिजान । अरुमोको अबकरतपयान ॥
द्वारावतीरहै माति कोई । तनको धरे जहांलौं जोई ॥
यह नर लोकतज्यौमैंजबहीं । सिंधुद्वारिका बोरीतबहीं॥
हमरे मात पितादिक जेई । लै अपने लोगनि तेतेई ॥
दिल्ली जैयो अरजुन संग । रहें द्वारिका ह्वै है भंग ॥
तिनको यह संदेशसुनावो । अरुतुममधर्महिमनलावो॥
मम मायारचनायहजानौ । नाम रूप सब मिथ्यामानौ॥
क्षणभंगुर सब नाना रूप । निश्चल जानौ मोहिं अरूप॥
जहँतहँथापकमोकोजानो । नाम रूप मम मायामानो॥
मेरे चरण निरंतर भजौ । दूजी सकल वासना तजौ ॥
एस ह्वै आवो मो माहीं । जाते फिरि दुख पावो नाहीं ॥
यहसुनिसूतकृष्णसो ज्ञान । छोड्योशोकमोहभयआन॥
नमस्कार करि बारम्बार । परदक्षिण दीविविधप्रकार ॥
हरि वियोगतेअतिदुखपायो । ज्ञानविचारिचित्तठहरायो॥
हरिके चरणकमल उर धारे । तबदारुक द्वारिकापधारे॥

दोहा–यहनृपमैंतुमसोंकह्यो, यदुकुलकोसंहार।
अबभाषौंहरिकोगवन,अरु हरिजनउद्धार॥

इति श्रीभागवते महापुराणे एकादशस्कंधे श्रीशुकपरीक्षित
संवादे भाषायां बलदेवानिर्याणोनाम
त्रिंशोऽध्यायः॥ ३०॥

एकत्रिंशोऽध्यायः।

दोहा०कृष्णपधारे धामको, एकतीसवें ध्याय।
तिनके पीछे प्रीतिते, वसुदेवादिकजाय॥
हरिभजनके हेतको, लीला विग्रहरूप।
श्रीधरभजैस्वभावते, तजैअंधभवकूप॥

श्रीशुक उवाच।

तब ब्रह्मासनकादिन लिये। भृग्वादिकनतथासंगाकिये॥
सहित भवानी शंकरदेव। इंद्रादिक सुर अरु उपदेव॥
विद्याधर किन्नर गंधर्व। पितर महोरग चारणसर्व॥
गरुडलोक पक्षी अरुसिद्ध। हरिके दर्श कामनाविद्ध॥
सब मिलि हरि दर्शनकोआये। सबहिनहरिकेदर्शनपाये॥
हरिकेजन्मकर्मगुणगावैं। सबमिलिजयजयशब्दसुनावैं॥
सकल विमानानि छायो गगन। वर्षैंपुष्पप्रेमकरि मगन॥
बारंबार करैं परनाम। मुखते भाषैं हरिको नाम॥
ब्रह्मादिक सब कृष्णविभूति। कृष्णाहितेतिनकीउदभूति॥

तसमस्त देखैं भगवान । नन मूँदि ततठान्यो ध्यान ॥
ब्रह्म रु आप एक करि ध्यायो । द्वैतभावसबदूरिबहायो ॥
निजतन लोकनिको अभिराम । ध्यानधारणामंगलधाम ॥
ताको अग्नि धारणा धरी । अग्नि उपाइ भस्मसो करी ॥
तब हरिजीवैकुंठ सिधारे । या विधि सबके कारजसारे ॥
तब दुंदुभि बाजे सुरलोक । उपज्यो हर्ष मिटे भयशोक ॥
सत्य रु कीराति धीरज धर्म । शोभा अरुजेते उत्तमकर्म ॥
ते सब गये संग जगदीश । जाते हरि सबहिनके ईश ॥
ताते जहां कथा हरिजीकी । पूजाध्यानधारणा नीकी ॥
तहां समस्तरहैं ते ईजे । सत्यादिक विधि सबजे ईजे ॥
ब्रह्मा आदि सकलसुरजेते । हरिकी गतिहि नजानैतेते ॥
हरि वैकुंठ प्रयाणों कऱ्यो । सो न कहूंकोजानिनपऱ्यो ॥
कहूंनहींतिनहरिकोदेख्यो । बडो अचंभासबहिनलेख्यो ॥
जैसे मेघहोहिं आकास । अरु दामिनि प्रगटै घनपास ॥
ह्वै कर प्रगट गुप्तह्वै जावै । ताको खोज न कोई पावै ॥
त्योंहरि कियोप्रयाणोंजबहीं । काहूंतिनहिंनदेख्योतबहीं ॥
भूमें प्रगट हुते तब देखै । गुप्त भए किनहूं नाहिं पेखै ॥
हे नृप एह अचम्भा नाहीं । शक्ति अनंत सदाहरिमाहीं ॥
यदुकुलमें हरिको अवतार । अरु करिवोनाना व्यवहार ॥
सो समस्तमायाकरिजानौं । हरिकीशक्तिहोतसबमानौं ॥
हरिजी सदा एक रस रहैं । कर्म न करैं जन्म नाहिं गहैं ॥

औरै कर्म करत सब जानैं । जन्म लियो हरिजीको मानैं ॥
ये सब देहनिके व्यवहार । हरिजी इन सबहिंनके पार ॥
जैसे नट बाजी विस्तारै । बहुरो आपहिंसकल निवारै ॥
बाजीगर सबहिंनते न्यारा । योंहरिकरमऔरअवतारा ॥
जिनहरिरच्यो त्रिगुणसंसार । नानाभाँति प्रगटआकार ॥
आपुप्रवेशकियो तिनतिनमें । सबवरतायविनाशैछिनमें ॥
अंत आपुके आपुहिं रहैं । त्योंहीं इन अवतारन गहैं ॥
गुरुकेमृतकपुत्र निज आन्यो । कालमृत्युकेगर्वहिंभान्यो ॥
ब्रह्मशस्त्रते तुम्हहि बचायो । वधिकहिं स्वर्गसदेहपठायो ॥
ते जो अपनी रक्षा करते । तौ तनको काहे परहरते ॥
सबजगकीउतपतिप्रतिपाल । नाशकरैजिनकोबलकाल ॥
ऐसे सकल शक्ति मय देव । ब्रह्मा आदि करैं जो सेव ॥
हरिबेको धरणीको भार । धर्‍योहुतो मानुष आकार ॥
तासों भूको भार उतार्‍यो । पीछे उहै दूरि करिडार्‍यो ॥
ज्यों कांटो भागे पगमाहीं । सो कांटे विन निकसैनाहीं ॥
कांटे कांटो काढ्यो जबहीं वहहूं डारिदियोपुनितबहीं ॥
त्यों हरिमृतकदेह क्यों राखैं । निजानंदपदसोक्योंनाखैं ॥
अरु एके अतिहीं अज्ञान । तिनकोप्रगटदिखायोज्ञान ॥
योग साधिकारि राखे देह । पुरुषारथ करि मानैं येह ॥
सकल विकारनको आगार । ताकोराखितजैसुखसार ॥
ताते तिनको मोह मिटायो । देहतजेते ब्रह्म बतायो ॥

ऐसे तनको कियो अनादर । जाते कोई करै नआदर ॥
ताते हरि वैकुंठ पधारे । बाजी ज्यों देहादि निवारे ॥
ब्रह्म रुद्र इंद्रादिक जेते । देखि प्रयाणों हरिको तेते ॥
विस्मित भये कृष्णगुणगावैं । अपने अपनेलोकनजावैं ॥
जो यह चरित पढै उठि प्रात । कृष्णदेवकीनिर्मलजात॥
सो दृढभक्ति कृष्णकी पावै। जातेकृष्णलोकमें जावै ॥
हरि दारुक द्वारिका पठायो । वसुदेवऽरु नृपपैं आयो ॥
कृष्ण वियोग विकलअतिचित्त । जैसेकृपणगयेते वित्त ॥
तिन दूनोंके चरणन परे । तब सारथी वचन उच्चरे ॥
आंसु प्रवाह चलै नैननते । अतिव्याकुलअटपटबैननते॥
जबयदुकुलकोनाश सुनायो । अरुबलकोनिर्जानजनायो॥
यों सुनि शोक तप्त सबभये । करतविलापप्रभाषहिंगये॥
तहाँ जाइ हरिजी नहिं देखे । तब वैकुंठ गये करि लेखे॥
तब देवकि रोहिणी वसुदेव । उग्रसेन राजा नरदेव ॥
हरिवियोग उपज्यो जोशोक । ताते चहूं तज्यो नरलोक॥
राम कृष्णको ऐसे वियोग । जाते मिट्यो देह संयोग ॥
बल युवती सबलै बल देह । अग्निप्रवेशकियोअतिनेह ॥
वसुदेवहिलै षोडश नारि । कियो सहगमनचितासँवारि ॥
प्रद्युम्नादि जहांलौं जेते । तिनकी त्रियनि लियेसबतेते ॥
सबहिंनके अति कृष्ण वियोग । तातेकर्‌योअग्निसंयोग॥
हरिकीवधूजहांलौंजेती। रुक्मिणिआदिसकलमिलितेती॥

हरिको रूपहृदयमें धऱ्यो।अग्निप्रवेश सबनिमिलिकऱ्यो॥
अर्जुन परम सखाहरिजीको । कृष्णवियोगप्रहारकजीको॥
तातें अर्जुनअतिदुख पायो । कृष्णज्ञानतबहृदयेआयो॥
गीतामाहिं कह्यो हरिज्ञान । मिथ्या देहसत्यभगवान ॥
ऐसोबहुविधिज्ञानविचाऱ्यो।कृष्णवियोगशोकसबटाऱ्यो॥
आप आपमें मारे जेते । अपने बंधु ज्ञाति, प्रिय तेते ॥
तिनकोजोपिंडादिकदाना।मृतकक्रियाजेतीविधिनाना ॥
सोई सो अर्जुन सब करी । कृष्ण प्रीतितेनहिंपरिहरी ॥
तब द्वारका कृष्ण विन भई । सागर बोरि पलकमेंलई ॥
केवल हरिजीके गृह जेते । त्योंहीं रहे सकलहीं तेते ॥
नित्यविहारतहांहरिजीको । सुमिरतसुनतउधारणजीको॥
मंगल सकल मंगलनिकेरो । त्रिभुवन सुखहोवैनितचेरो॥
इस्त्री बाल वृद्ध सब जेते । मरत मरत उबरेते केते ॥
ते अर्जुन दिल्लिलै आये । समाचार पांडवन सुनाये ॥
तुम्हरे सकल पितामहजेते । कृष्णप्रयाणहिंसुनिकरितेते॥
तुम्हहिं वंशधर राजा कियो । मथुरातिलकवज्रकोदियो ॥
ते सब तजि उत्तर दिशिगये । कृष्णहिसेइकृष्णमयभये ॥
जो यह हरिजीको अवतार । जामें कर्मऽरु गुणविस्तार॥
तिनको कहै सुनै नर जोई । सब पापनते छूटै सोई ॥
या विधि हरिके जे अवतार । बालापनते कर्म अपार ॥
लोक वेदमें पर्गट जेते । गावैं सुनैं विचारैं तेते ॥

तबते लहैं परम आनंद । मिलै कृष्ण छूटै दुख द्वंद ॥

दोहा–यह हरिको अवतारमैं, तुमसोंकह्योसुनाय ।
याकोकहिसुनिसुमिरिनर, नारायण पै जाय ॥

ब्रह्मनिरीहनिरंजनस्वामी । सकल लोककेअंतरजामी ॥
भक्तन हेत धरै अवतार । नाना भाँति करैं उद्धार ॥
तिनमेंकृष्णस्वयं भगवान । ज्ञानाक्रियासबशक्तिप्रधान ॥
जिनकेगुणनिकह्यो शुकदेव । सुनताहितन्योपरीक्षितदेव ॥
जिनकोनामलियेभवनाहीं । लैकरिराखैनिज पदमाहीं ॥
इसे कृष्णसंतनकोवित्त । नमस्कारतिनप्रभुको नित्त ॥
ते अब संत दाससे नाम । देह धरै जीवनके काम ॥
कृपानिधानभक्तिकरवावैं । अपनीशक्ति हृदयमें ल्यावैं ॥
ऐसीविधिभवदुःखमिटावैं । अपने परम पदहिं पहुँचावैं ॥
कृष्णरूप तिनज्ञानसुनायो । उद्धवजननिजपदपहुँचायो ॥
सोलै कह्यो संस्कृत व्यास । ताते होइ न अर्थ प्रकाश ॥
जो पंडित जानैपै सोई । दूजो कबहुँ न जाने कोई ॥
तातेतिनअबकरुणाकीन्हीं । मोसेवकको आज्ञादीन्हीं ॥
सबलोकनकी हितमनधारी । ममउर ह्वै भाषाविस्तारी ॥
याको बाँचै सुनै सुनावैं । ध्यान करैं ऊंचे स्वर गावैं ॥
तेते लहैं ज्ञान वैराग । प्रेम भक्ति हरिको अनुराग ॥
प्रेमप्रवाहैं मगन नित रहै । भव दावाग्नि कबहुं ना दहै ॥
ऐसे ह्वै करि ब्रह्म समावैं । तजि आनंदजगतनाहिं आवैं ॥
कबहूं करैं कामना कोई । याते लहैं सकल सो सोई ॥

तातें जेजे होहिं सकाम । अरु जे बड भागी निःकाम ॥
तिनसबहिनको भाषा एह । भुक्तिऽरुमुक्तिभक्तिकोगेह ॥
ताते यासों कीजै प्रीति । यहै सकल संतनकी रीति ॥
संवत सोलहसय बानवा । ज्येष्ठ शुक्ल षष्ठी कुज दिवा ॥
संतदास गुरु आज्ञादीन्हीं । चतुरदासयहभाषाकीन्हीं ॥

दोहा–परमज्ञानपरगटकियो, ममघटहैनिजदेव ।
ते मेरे उर नित बसैं, संतदास गुरुदेव ॥

इति श्रीभागवते महापुराणे एकादशस्कंधे श्रीशुकपरीक्षित
संवादे भाषायां श्रीकृष्णवैकुंठप्रयाणो
नामैकत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३१ ॥

इति एकादशस्कंधभाषासमाप्त ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना–

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्
प्रेस कल्याण–मुंबई.

खेमराज श्रीकृष्णदास
"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस,
खेतवाडी–मुंबई.

श्रीः ।

नानकविलास.

विलास पहिला ।

चौपाई ।

आपुहि लेखनिकागजआपू । आपुहिलिखैंआपुनाजापू ॥
कामक्रोधके संग न दीजै । अपनेको अपना करलीजै ॥
परनिंदन वंदनते छूटैं । भरम गागरी चहुटैं फूटैं ॥
तृष्णाहिंसा अरु ज्ञान । लोभ विरोध मान अपमान ॥
इनके हाथ विकावै नाहीं । तुम विन इत उतजावैं नाहीं ॥
ननुएकौअपुनाहीं करना । वाहवाह प्रभु तेरी करुना ॥
जपतप तीरथ संयम वासा । दयादानयज्ञऽरु उपवासा ॥
काशी और गयाको आवन । वर्णाश्रमकेधर्मकमावन ॥
बरतगह्यो गाढेतेगाढौ । तीनकालसंध्यापरठाढौ ॥ इ० ॥
पवनाभ्यास जायमें धरना । कुंभकरेचक पूरक करना ॥
दशवेंद्वार पवन लेजावन । त्रिकुटीकेबिच दृष्टिलगावन ॥
चक्रचक्रकीयुक्तिबतावत।नाडिनाडिकेभेददिखावत ॥इ०॥
बैठि सभामें ज्ञानहिं मंडै । जो कोई बात कहैं सोखंडै ॥
तत्वतत्वगुनगनको गुनैं । जैसे राज ईंटको चुनैं ॥

बातबातमेंबातबतावैंऔहिंबातकेहाथविकावें॥ इनके० ॥
ध्यानी होइ गुहामें पैठैं। अंतरहूके अंतर बैठैं॥
गह्यो गहत अगहन नाहिं गयो। अंतरबैठत अंतररह्यो॥
ऐसोबहुविधिमाननमान्यो। जान्योसबपैआपनजान्यो॥
कबलगि केतक केतककहैं। अपनिआगिआपकोदहैं॥
नतु एको प्रभु राखी लेहू। मानके हाथ बांधि मतदेहू॥
ये सब तुमरोरूप पिछानैं। जानिजानि ऐसेही जानैं॥
तुम विन नाहीं जानैं दूजा। आठपहरकी लागी पूजा॥
ये तो सुनि प्रभुजी मुसकाते। आये महाप्रेमसों माते॥
मीठे मीठे वचन सुनाये। रोम रोम जनके तृपताये॥
धोषा भेद भरम सब काटा। धर्मराजका कागद फाटा॥
पुण्यपापकाखोज मिटाना। नरकस्वर्गकागयाबहाना॥

विलास दूजा ।

दोहा- करुणाकरीकृपालजी, आयेव्याकुलधाय।
नतुभा अपने हाथते, लीनो बेगि छुडाय॥

संज्ञा जप तप संयम पूजा। संज्ञा जो कछु मानै दूजा॥
संज्ञा ज्ञान ज्ञात अरु ज्ञेयं। संज्ञा ध्यानध्यात अरुध्येयं॥
संज्ञाते राजान अजानं। संज्ञाते रामान अमानं॥
वही वही जीवही वही। संज्ञेसकली सृष्टी दही॥
धोखा बैठि गुहामें रहैं। धोखा जित तित भ्रमता बहैं॥
धोखा जानै मैं कछू हुआ। धोखे बंध्यो देख्यो सुआ॥

धोखावंध मुक्तिहू धोखा । इन वडवानल सागरसोखा ॥
धोखानरकस्वर्गकीकथा। सुनोयथाजोनरहेतथा॥वही०॥
भर्म सवै नारी अरु पुरुषा । भर्म सवै छायाअरुविरषा॥
भर्म सवैसेवक अरुस्वामी। भर्मसवै कामिनिअरुकामी॥
नाहानी दादि भर्मके जने। ससुरा सास भर्मके मने ॥
सकलअंगतेरेसव भर्म। भर्ममिटाइगहोनिजधर्म॥वही०॥
सव अज्ञान यह तेरोज्ञान । सवअज्ञानयहतेरोध्यान ॥
सव अज्ञान यह ज्ञानसुनावैं । निःसंशयमें संशा पावैं ॥
वहतोस्वतःसिद्ध विज्ञानी । कहा सुनावे ज्ञानकहानी ॥
यहतोस्वतःसिद्ध अविनासी । ज्ञानकहानीतेरी हांसी ॥
यहतो स्वतःसिद्धविनसाधन। साधनकहाऔरआराधन॥
ननुएअपनासंशाखोया। आपमेलआपुकरधोया॥वही०॥
आपाकी जवकाढी खाल। तबहीं प्रकटे दीनदयाल ॥
आपाके जव फूल गिराये। तव फल रूप आपप्रकटाये॥
आपायहकछुमानि न मेरी। आपयही कछु जानिनतेरी॥
आपादेख न बोलन तेरा । आपाई थिर डोलत नेरा ॥
आपा वंध मुक्त अभिराम । आपा यहिसवजानअजान॥
आपावर्णाश्रम सव आपा । आपा माई आपा बापा ॥
कितिविधिमायासंकलटूटैं। कितिविधिआपआपतेछूटैं॥
आप आपपर करुणाकरैं । तवै आप आपाहिते मरैं ॥
आपछूटकै आप पिछानै। तव सव आपआपकरिमानैं॥

ननुएके मुख आपै बोल्यो । अपनो घुंघुट आपै खोल्यो॥
आप आपसो मेलाभया । दुविधा धोपा सब मिलिरया॥
आपाकीजबकाढीखाल। तबहीप्रकटेदीनदयाल॥वही० ॥

विलास तीसरा ।

तुमही सब कछु मेरे माहीं । मैं नाहीं नाहींहों नाहीं ॥
तुमही सबकछु मेरे अंतर । अंतर अंतरमाहिंनिरंतर ॥
जिह्वामें अनंत गुण गुने । काननमाहिं शब्द ह्वै सुने ॥
नासामाहिं गंध ह्व लेवैं । नैननमाहिं दृष्टि ह्वै देखैं ॥
नखशिखशीतउष्णपहिचानैं । जानिजानिकैकछूनजानैं॥
पूरि रहाजी पूरि रह्या । नेरे हूते दूरि भया ॥
मनमें चंचलता ह्वै रह्या । बुद्धिमाहिं निश्चय ह्वै गह्या॥
चितमें चेतनता ह्वै बूझैं । अहंकार ह्वै हिंसा सूझैं ॥
तत्वतत्वतेतत्वपिछाने।जानिजानिपुनिकछुहुनजाने॥पू०।
हाथनमाहिंगहनकोगहता । पायनमाहिं मगन ह्वै वहता॥
रसनामाहिं स्वादको लहता । सोरसरोमरोको वहता ॥
गुदउपस्थमेंआयनभाव । जानबूझनहिंजानेदाव॥ पूरि०॥
माटी आप अगन अरुबाई । भिन्न भिन्न ह्वै देतदिखाई॥
आतम परमातमको बूझैं । बूझि बूझिके कछू न सूझैं॥
द्रष्टासबतत्वोंकाआपै । आपनदेखेयहसंतापै ॥ पूरि० ॥
मात पिता भाई सुत बंधू । नीके जानैं सबकी संधू ॥
जोरु भगिनिको करै विवेका । वैरी मित न जाने एका॥

आपपराईसमझिविचारे। अपुनिसमुझीजियतेडारे॥पू०॥
कर्म विकर्मको लेवे नाउ। धर्म अधर्मको करे नियाउ॥
ब्राह्मण क्षत्रियको पहिचानैं। वेश्या शूद्रनते से जानैं॥
वर्णाश्रमकोऐसे बूझैं। सबको बूझनआपै बूझैं॥पूरि०॥
ऐसे सबविधि चतुरप्रवीना। आपु न चीन्हैंकायरदीना॥
पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण। भिन्न भिन्न सबकेलेलक्षण॥
सूर चंदतारागणजाने। जाननहारेको न पिछाने॥पूरि०॥
पंडित होके करे बखाना। श्रोताहोके धरे जु ज्ञाना॥
दीरघ लघुको नीके शोधे। शोध शोध जगकोपरबोधे॥
अक्षर अक्षरको पहिचाने। आपनअच्छरको नहिं माने॥
ननुआ अमृत पूरि रह्या। दूर निकटते दूर भया॥

बिलास चौथा।

दोहा—एकदृष्टिकरतारकी, सबअदृष्टिकोनाश।
वेगि करैं ननुआगहैं. जैसे आगिक पाश॥
मौन गहे में एकहै, सबको साखी सोइ।
ननुआनिज पहिचानिये, सहजे होइसुहोइ॥

छाडिराम जो इत उत जाई। ये सब वाको मिलें सजाई॥
नागाहोइ वस्त्रको त्यागैं। रैन दिवस इकटक ह्वै जागैं॥
अन्न छोडिके घासाहिखाई। होमैं जायोदशदिशिजाई॥
मौनगहैं कर राखैं उंचैं। उंचेसाहिबकहांपहुंचैं॥एसब०॥

शीतलकालमें सिगरी रैना । मगन रहै जलमेंविनचैना ॥
पंचाग्नी साधै ग्रीष्मको । जाय मिलैं जीवतही यमको ॥
महाकष्टकरतनको साधैं। शोखेतनहोमैंकोपोषैं॥एसब०॥
वरत करैं विधिसों उपवासा। शुचिसंयमअरुतीरथवासा॥
शिखा सूत्र धोती कटि बांधैं । तीनकालसंध्याकोसाधैं॥
मंत्रसूरके ठाढे गावैं । गुनहगारक्योंबैठनपावैं॥एसब० ॥
दृढवैराग गहैं नख शिखते । लखै नहीं इकबातअलखते॥
त्यागैं गृहवनकोउठिजाई । टोपीकंथासेलीपाई॥एसब०॥
ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्यऽरु शुद्रा । सौदा करैं न पावैं मुद्रा ॥
कराइंकरमधर्मबहुतेरे । विधिकेअक्षरजायँनफेरे॥एसब०॥
गलगृह्या गेहनको फंदा । छूटै नाहिं जबलगि शिरकंधा ॥
जोरूकी जोरू होइ रह्या । नाहरिनेनाहर ज्यों गृह्या ॥
पूतभयोपूतनकोभाई।भकुएबापकिदेखिबडाई॥एसब०॥
आय पयो घर मांझ जमाई । धयों धरा यासब लेजाई ॥
भकुवा ससुरा मनमें जरै । बहुप्रकारके भोजन करै ॥
वस्तरनानारंगबनावै। अपनाकियाआपहींपावै॥एसब०॥
कबहूँ करैं साज रोजगार । बांधी दावन होइ सवार ॥
घर घर दर दर अंधा धावै । इक दरमें आदरनाहिं पावै ॥
हाथजोरिआगेहोइठाढा । छरीदारधक्कादेकाढा॥एसब०॥
कबहू सौदागिर होइ चाले । अपनी आग लिये सोजाले ॥

लोहे ऊपर लाया टोटा। आवै निशि दिन सौदाखोटा॥
कवहूँवदनखोलिनाँहस्योनानाविधिकेरोगनिग्रस्यो॥ए०॥
कव कहूं जिमीदार ह्वै बैठैं। भयते भाजि पारमें पैठैं॥
ननुआको कावाजैं दंड। बांहआपकोंकसभंड॥एसब०॥
कवहूं रीति भिखारी गहैं। गांउ गांउमें भ्रमता बहैं॥
हाट हाटके आगे आसन। शिरपर फोडैं बानियाबासन॥
दाधेको फिर फिरउठदहै। आगेआगेआगेकहै॥एसब०॥
सुखनिधिसुखस्वरूपनाहिंध्यायोप्रेमभक्तिसोंनाहिंलडायो॥
सुखसागर सबसुखकीखानी। जानैं नहा महा अज्ञानी॥
सुखनिवास सबसुखकी राश। छांडिदियोदेखेनहिंपाश॥
सुखको सुखऽरुचैनकोचैन। निकट हुतउं देख नहिंनैन॥
देखैं तो जो देखनपाइ। गुनहगारको मिलै सजाई॥
लेहु क्षमा करि अपनी दया। ननु आ तुमरे द्वारे पया॥
रोम रोममें करौ प्रकास। होमेंका हो म तब दास॥
चितमें चतन रूप समाई। मनेंम मन मोहनकी झांई॥
हाथनमाहिं हाथ तुं आवैं। पाइनमांहि पाइ तुंपावैं॥
रसनाने हार रसको स्वाद। स्वाद और जाने सबवाद॥
अंग अंगमें तेरो रंग। रंग रंगमें तुं सर्वंग॥
ननुआ ननु एते पुनि जाई। ऐसे सबमें रहैं समाई॥
गुनहगारको लेहु मिलाई। याते ऊपर नहीं सजाई॥

औ सजाइ जेति कछू गिनी । तुम्हरे लायक नहिनघनी॥
इतनेमें प्रभु कियो निवास । कीनो कोटिभानुपरकाश॥
बकसि लेहु अपनेको जान्यो । जैसो तैसोमान्योमान्यो॥

इति नानकविलास समाप्तः ।



विक्रय्य पुस्तकोंकी-संक्षिप्त सूची।

आत्मपुराण भाषा [चिद्घनानन्द स्वामिकृत] १६-
योगवासिष्ठगुटका "वैराग्य, मोक्ष. प्रकरण" वेदांत
उत्तम कागज अक्षर बडा १-४
वासिष्ठसार भाषा वेदांत ६ प्रकरण ... २-८
विचारसागर सटीक निश्चलदासजीकृत ... २-०
अमृतधारा वेदांत ०-१२
संतोषसुरतरु वेदांत ०-६
संतप्रभाव वेदांत ०-६
विचारमालासटीकपंचीकरणसहित ... १-०
अभिलाषसागर भाषा (वेदांत) २-०
आत्मबोधतत्त्वबोधवेदस्तुति भाषा ... ०-३
अध्यात्मप्रकाश भाषा (वेदान्त) ... ०-३
विज्ञानगीता कविकेशवदासकृत ०-१२
सुंदरविलास (ज्ञानसमुद्र, ज्ञानविलास, सुन्दराष्टकादि
सहित) सटिप्पण १-८
प्रत्येकानुभव शतक भाषा (वेदान्तका ग्रंथहै) ०-५
पक्षपातरहित अनुभवप्रकाश-वेदांत वर्णन (कामली
वाले बाबाकी बनाईहुई) ५-०
मुक्तिकोपनिषद् भाषाटीका ०-५
कैवल्योपनिषद् ०-१
मोक्षगीता बडी (सवालक्ष) रामनाम ... १-४